

भाखल दरिया साहेब सत सुंत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।

### ग्रन्थ बीजक

(भाखल दरिया साहेब)

अर्जी

(१)

तुम सब ऐगुन मेटनिहारा।

जाके हाथ जगत की डोरी, गुन गहि खैंचनिहारा॥

पूत कपूत पिता की लज्जा, जो मैं भूलि बिगारा।

जैसे मणि मंदिल के भीतर, निशि बासर उजियारा॥

तुम जिन्दा हो जागृत जग में, 'बेबाहा' बे कीमती।

खाक से पाक कियो पल मांही, यही हमारी बिनती॥

सहज योग आमृत रस चाखो, परे कबहिं नहिं सूखा।

अनवां चीज दीजै भरि पूरा, आतम रहे न भूखा॥

नख-शिख ले तुम सुन्दर बनायो, ओर भुजाबल नीका।

अदल तुम्हारा ज्ञान हमारा, दूजा कहे, सो फीका॥

बचन तुम्हारा अजर अमर है, हाल हजूरे सूना।

कहे 'दरिया' दया के सागर, गनिये पाप ना पूना॥

(२)

साहब तुम पारस को मूला।

जाके पारस योग दृढ़ाना, सोई सजीवन फूला॥

पारस बिनु कंचन नहिं होखे, तामाँ को गुन नासा।

सोई पारस भृंगा रचि लिन्हा, देखा अजब तमासा॥

श्रवन ज्ञान अभियंतर पारस, सार शब्द की रीती।

तुम अजीत जग जीते न कोई, है मेरो परतीती॥

उग्र ग्यान हृदय चित चेतनि, कुदरत नहीं छपाया।

ममिता मरे साधु वहि जीवे, जो तुम्हारे गुण गाया॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	<p>साबुन मिलै मैलि सब काटे, काया कापड़ धोवे।  गया धोबी घर निर्मल हुआ, अघपातक सब खोवे॥  हैं गरीब तुम गरीब नेवाज हो, बांह पकड़ि के लीजै।  कहे 'दरिया' दर्शन को फल है, सब विधि अच्छा कीजै॥</p> <p>(३)</p> <p>तुमते कौन बड़ी यह बातें।  सकलो मैलि समानी तन में, मैलि निकालो वाते॥  मणि मुक्ता कुंजल के मस्तक, चुंगल पारस धाया।  पारस लागे धातु फिरि गयऊ, सोना सुगंध बनाया॥  जैसे भृंग कीट प्रति पालेव, आपु बरोबर कीन्हा॥  सीप सेंधु में बुंद स्वर्ग का, उन्ह मोती रचि लीन्हा॥  केदली पारस मही के ऊपर, जले कपूर बनाया।  केदली वाके कहे न कोई, महंगे मोल बिकाया॥  जैसे फूल तिल के ऊपर, घैंचि बासना आया।  तिल को तेल फुलेल हुआ है, तिल की जाति मिटाया॥  यह निज बैन सुनो श्रवण दे, अरजी लिखि पठाय।  कहे 'दरिया' मम दास तुम्हारो, पारस को गुन गाया॥</p> <p>(४)</p> <p>साहब दया के सागर हो, उदित उजागर हो।  लाज के जहाज हो, गहरि गरकाब हो॥  जगत में लाल हो, संतन्ह प्रतिपाल हो।  काल के गंजन हो, पाप के भंजन हो॥  सर्व गुण गामी हो, आमृत आमी हो।  गरीब नेवाज हो, हंसन सिरताज हो॥  'बेबाहा' बेकीमत हो, साधुन्ह संग हिम्मत हो।  'दरिया' दिल दरस हो, मुक्ति के पारस हो॥</p> <p>(५)</p> <p>साहब! मैं गुलाम हैं तेरो।  लिखि लीजै यह कागज कोरे, जन्म जन्म का चरो॥</p>	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

जैसे पूत कपूत जो होवै, पिता करे प्रतिपाला।  
 बहुत प्रेम मोद मन भरिके, नजरन्ह कीन्ह निहाला॥  
 अन्न कपड़ा तुम आगे दीन्हा, दया कीन्ह बहु भांती।  
 रहों असोच सोच कछु नाहीं, बिते दिवस औ राती॥  
 यहि धरनी पर दैत केते हैं, महि को कहत जो मेरा।  
 'बेबाहा' के देई दोहाई, ताको करहु निमेरा॥  
 जीव के गुन ऐगुन जनि खोजिये, तुम अस रहनि न आई।  
 उठत बैठत नाम तुम्हारा, शरन गोहराई॥  
 यह मम अरज सुनो श्रवण दे, हंस बिगोई न जाई।  
 कहे "दरिया" ले नाम तुम्हारा, मुक्ति सदा फल पाई॥

(६)

साहब! मैं गुलाम हौं तेरो।  
 लिख लीजै यह कागज कोरे, जनम-जनम का चेरो॥  
 रज और बिन्द की कच्ची काया, तुम्हते बने निमेरो।  
 बहु साधुन को कष्ट मेटा है, तनिक कटाछन हेरो॥  
 बन्दी छोर है नाम तुम्हारा, अवनी पताले फेरो।  
 जो जन निश्चय प्रेम में चुभेव, ताहि हृदय बीच डेरो॥  
 तुम्हके जांचो हृदय नाचों, कबहुँ ना रहों अनेरो।  
 यह सब कुदरत अहे तुम्हारी, अन्न कपड़ा का ढेरो॥  
 जो निजु होवे दास तुम्हारा, यम जालिम नहिं घेरो।  
 कष्ट नष्ट कबहीं नहिं व्यापे, भव जल लांघु सबेरो॥  
 गुन ऐगुन का खोज न करिये, गुनहगार बहु तेरो।  
 कहे 'दरिया' जब सिंह शरण में, कुंजल भागु घनेरो॥

(७)

हौ गाफिल बन्दा जन तेरो।  
 साहेब सही सदा सिर ताजे, बकसु गुनाह सबेरो॥  
 करे कूफ़ काफिर के घर में, निपट खिलाफत घेरो।  
 पाँच यहूदे संग पियादा, तलब-तलब पर फेरो॥  
 इनसे लड़ों करों सर कैसे, एक के बहुत घनेरो।  
 दीजै मोसादत कोटि खर्च का, तब मोजरा है मेरो॥

जाकर नफर लड़े हामिक से, कूच न कीजै डेरो।  
 हौं गरीब तुम गरीब निवाज हो, करहु जबर को जेरो॥  
 अपने शरन सदा ले राखो, भव जल करहु निमेरो।  
 कहे 'दरिया' कोरे कागज लिखिए, जनम-जनम का चेरो॥

(८)

तेरो सीपित कहाँ तक कीजै।  
 बे सुमार सुमार में नाहिं, काको पटतर दीजै॥  
 मही कही नहिं मही बरोबर, सर्व स्वर्ग सुखदाता।  
 हो सतवर्ग तुले ना कोई, वेद बिरंचि कथि ज्ञाता॥  
 भानु कही नहीं भानु बरोबर, उदय अस्त फेरि होवे।  
 उदया गिरि में प्रगट होतु है, पंथ सभे कोई जोवे॥  
 इन्दु कही नहिं इन्दु बरोबर, ओ भी खंडित देखा।  
 परिवा बीते दूइज जब आवे। सकल सृष्टि सब पेखा॥  
 सागर कही नहिं सागर बरोबर, वाके राम ने बाँधा॥  
 हनुमत कूदि गया गढ़ लंका, उनने सागर साधा॥  
 अति अधीन लीन चरनन में, दास पास तुम आयो।  
 कहे 'दरिया' धन्य भाग हमारा, निजु गहि गोद खेलायो॥

(९)

हो तुम ऐसो शील के सागर।  
 जा पर दृष्टि तुम्हारी लागी, सो जन भयो उजागर॥  
 जब तुम दया कीन्ह दासन पर, कहि न जात सुखसागर।  
 सुरसरि मिलि सब सुरसरि भैगो, कवन कहे तेहि भागर॥  
 जैसे परिमल काठहिं बेधेव, भौ गौ चन्दन आगरा।  
 पारस परसि लोहा भयो कंचन, परखि सके नहिं टागर॥  
 जैसे भृंग कीट प्रति पालेव, अपनी जाति सुलागर।  
 कहे 'दरिया' जब दया तुम्हारी, मेटि गये यम को झागर॥

(१०)

साहब! तेरो गति सब विधि पूरा।  
 गाफिल बंदा मर्म न जाने, हाजिर हाल हजूरा॥

सरन गये तेहिं बहुत नेवाजो, चारि पदारथ जूरा।  
अर्थ, धर्म, फल काम, मोक्ष है, कादर से करु शूरा॥  
चाहे तो मारे फेरि जिआवे, यह अचरज नहिं दूरा।  
खाक से पाक कियो पल माहिं, सत वचन नहिं फूरा॥  
राव से रंक-रंक से राजा, पल महँ बाजत तूरा।  
कहे 'दरिया' तेरा अविगति लीला, गर्व मिलायो धूरा॥

(११)

साहब! काह कभी धर तेरो।  
जो किछु चाहों सभे सम्पूरन, दया दृष्टि करि हेरो॥  
भूखे अन्न पियासे पानी, कपड़ा से तन घेरो।  
जो कुछ न्यामत सबे महल में, खर्चु खजाना ढेरो॥  
तनिक दृष्टि से पाप कटित होय, यम जालिम भौ चेरो।  
भव से काढ़ि कियो तरनी पर, खेई उतारु सबेरो॥  
संत के कष्ट काटेवो पल माहिं, यह सामर्थ बल तेरो।  
कहे 'दरिया' दर्शन फल दीजै, अवरि के बार निमेरा॥

(१२)

ऐ साहब! तुम गरीब निवाज।  
गर्व गरुरी खाकी बन्दा, तुम जिन्दा सबको सिरताज॥  
पल-पल मेहर कीजै मेरे ऊपर, बाँह गहे की करि लेहु लाज।  
हो सफा सर्वज्ञ संभन्धि से, हो तुमहीं-तुमहीं से काज॥  
सिकिलि कियो सिकम के भीतर, अच्छा तन मन दीन्हों साज।  
काल कुबुद्धि के मलि डालेव, ज्यों तीतिर पर झपटे बाज॥  
दर्द वंत के दारु दीजै दरद मिटा तुम नाम है सांच।  
कहे 'दरिया' दिल जीकिर धनीका, लगे कबहीं नहिं दोजक आँच॥

(१३)

'बेबाहा' तुम जागृत जिन्द।  
जहाँ देखों तहाँ तुमहीं नजरि में, उठत बैठत सोवत नींद॥  
हौं गाफिल तुम गाफिल नहीं, कच्ची काया रज और बींद।  
पल-पल मेहर करो तुम साहब, सब घट व्यापक प्रगट चंद॥

अजर अमान अमर पद दीन्हों, सिर न उठावत पांचों रींद।

हुकुम तुम्हारा जहाँ ले, काल कुबुद्धि के किन्हों छींद॥

जैसे भँवर पुहुप पर आशिक, दरस दिवाकर सदा अनंद।

जब वृगसे तब बास अनूपम, कहे 'दरिया' मेटा दुःख द्वंद॥

(१४)

तुम मेरो 'साहब' मैं तेरो दास, चरण कमल चित तेरो पास।

जीवन जग में देखों उदास, पल-पल सुमिरों नाम सुबास॥

जल में कुमुदनी चंद अकाश, छाय रहे छवि पुहुँप विलास।

उन्मुनि गगन भया प्रकाश, कहे 'दरिया' मेटा यम त्रास॥

(१५)

दयानिधि! तेरी अविगति लखि न परे।

निगम सो चारि पुकारि थकित भौ, विमल सो विहित करे॥

शिव विरंचि शुकदेव सारद, सुर सब ध्यान धरे।

शेष सहस्र फनि थकित भयो हैं, को कवि कहि के सरे॥

गोरख दत्त वशिष्ठ व्यास मुनि, नारद नाद भरे।

सरिता सर्व मीलि सागर में, सो गमि अगम झरे॥

संत मत गुन ज्ञान गमि जेहि, प्रेम प्रतीति तरे।

कहे 'दरिया' दया सतगुरु की, सकलो भर्म जरे॥

(१६)

मेरी अरज करो मंजूर।

दस्त जोरे खड़ा रहना, साँच है खूबर॥

तालबी को तलब देना, मेहर कीजै जान।

देसरा ना मेरा कोई, एक की पहिचान॥

दिल दानम् मम दानम्, दोसरि नहिं बात।

हेमा चीज बाजार बसिया, रुखी रोटी खात॥

बकसि दीजै वख्त मेरा, सख्तियां नहिं होय।

भूखे को अनाज देना, वासना खुश बोय॥

फका ते यह फकर कहिए, दर्द ते दुर्वेश।

जान तुझ पर वारिया, पनाह में है पेश॥

बन्दा है गुनहगार तेरा, लिखना सौ बार।  
कहे 'दरिया' गुन घैचों, किशितया होय पार॥  
(१७)

तेरो! दरश को शुभ घरी।  
धन्य सो भाग सुहाग जन को, प्रेम मन्दिर भरी॥  
जो-जो आयो शरण तेरो, नाम की गति तरी।  
अम्बुज नयन में दृष्टि पेखो, ज्योति जगमग बरी॥  
गंगा यमुना सरस्वती यह, बुन्द अमृत झरी।  
मिलवे सरिता सिन्धु के बीच, लहरि उल्टी परी॥  
मानसरवर मनी मुक्ता, चुंगत हंस ना टरी।  
उड़न चाहत मानसर ते, प्रेम के बसि परी॥  
थाके शेष महेश ब्रह्मा, वेद की मति धरी।  
संत को मत निर्मल दया, सकलो दोबिधा जरी॥  
अटल ब्रह्म विचारि के यह, धरणी धीरज धरी।  
कहे 'दरिया' दया सतगुरु, देखि यम यूथ डरी॥  
(१८)

तेरो चरण में चित लाय।  
भँवर भर्मित कंज ऊपर, घ्राणि में छकि जाय॥  
दवन लागे दरस के यह, परसि प्रेमहिं पाय।  
अग्र के यह लपट लागेव, कपट जात बिहाय॥  
तनिक पारस लागु ताम्बहि, निखरि नेक सोहाय।  
भयो कुन्दन कनक शोभा, भेद लखि नहिं जाय॥  
कपूर केदली कर्म काया, बुन्द अविगति पाय।  
जाति के यह कवन चाले, भृंग को मति पाय॥  
सीप सुन्दर सिन्धु के बीच, बिहरि बुन्द समाय।  
भयो मोती श्वेत निर्मल, निझर झलके जाय॥  
जीव से जब शिव भैगो, सर्व दीसे आय।  
कहे 'दरिया' धन्य सोई, एक रस ठहराय॥

(१६)

तुमते कवन बड़ा बलिवंडा ।

अनंत भुजा बल जाके कहिये, सात दीप नौ खंडा ॥

गर्विहिं ढाहेव गर्द मिलायो, दियो अदल का डंका ।

‘बेबाहा’ यह तख्त दिन्हों हैं, मेटि गया सब संका ॥

एके हाकिम हुकुम है एके, टूटि गया गढ़ बंका ।

जो माया सुर नर मुनि छरिया, कंद्रप छोड़त हंका ॥

दया तुम्हारी हुकुम जो राखे, सार शब्द गहे सांचा ।

‘बेबाहा’ के देइ दोहाई, सो जन काल से बाँचा ॥

वाही बचन अमर यह जानों, जो जाके विस्वासा ।

धोखा धन्धा दुरि करो यह, काटि दिहें यम फांसा ॥

तब कहा सो अब कहा है, मानो नर प्रतीति ।

कहे ‘दरिया’ वोय साहब सलामत जन को यम नहिं जीति ॥

(२०)

“सत साहब” गुरु मेरा, ताते कीन्ह भवन बीच डेरा ॥

अग्नि से पवन पवन से पानी, पानी से पिण्ड बनाया ।

जन्तर मन्तर तन्तर भीतर, वस्तु अनुपम पाया ॥

बारह मंडल नौ खंड पृथ्वी, चाँद सूरज को बासा ।

अवघट घाट बाट सभ देखा, मेटि गयो यम को त्रासा ॥

सुरति-निरत में ज्योति समानी, प्रेम तत्व की बानी ।

ब्रह्मा वेद पढ़े घट भीतर, कहे ‘दरिया’ सुनु ज्ञानी ॥

(२१)

तुम बिनु शरण राखे कवन ।

भक्त जन सह तुमहिं जानत, दनुज दानव दवन ॥

सोच मोचेव निकट नाहीं, विकट तन में तवन ।

चक्रधर यह अक्र केते, पतित पावन पवन ॥

भानु के छवि छाय जग में, काह दीपक भवन ।

यम के त्रास न तन में आवत, जानु जगपति रवन ॥

अजर अंग सो भंग नाहीं, सर्व व्यापक तवन ।

जगत् जीवन सर्व योगी, भोग सोग न भवन ॥



दरद दारु दया युक्ता, जिन्द जागृत गवन।

सत शब्द स्वरूप आगर, आवत अवनि अवन॥  
प्रह्लाद के जब दैत्य तड़पेव, काढ़ि खर्ग ही जवन।  
कहे 'दरिया' गैव धक्का, बीर बिजुली पवन॥

(२२)

जीवन मुक्त अमान जग में, हरत हौ पर पीर।  
सात सागर चरण जाके, अवर कोटिन मीर॥  
बाण धनुष ना हाथ देखा, काया सामर्थ धीर।  
यम डरत है सब परत पायन, अनंत में एक बीर॥  
हरिणाकुश हरि भक्ति ते, प्रह्लाद संकट तीर।  
खम्भ के फारि विदारि डारेव, नख से डालेव चीर॥  
जनके निकट विकट नाहिं, हरत हो भव भीर।  
द्रोपदी के नग्न चाहेव, सहस्र बाढ़ेव चीर॥  
पाण्डोवन्ह जो यज्ञ कीन्हा, सेख भेख खमीर।  
सुपच के प्रसाद पायो, जै-जै मंगल थीर॥  
नाम देव हरि दरश पायो, पकड़ि कीन्ह अमीर।  
उलटि के हरि तासु ऊपर, सुलतान नायो सीर॥  
मुनि पंडित योग जागहिं, चरण चित जेहिं थीर।  
बुड़त जल से काढ़ि लिन्हो, प्रकट कीन्ह कबीर॥  
जहाँ देखो तहाँ तुमहिं नजरि में, गगन मंडल समीर।  
कहे 'दरिया' दया सतगुरु, कपट कागज कीर॥

(२३)

तुम प्रभु दीन को दुःख हरन।  
समुझि भजु निर्वाण पद के, चरण चित में धरन॥  
दुखित जन के सुखित किन्हों, काल भंजन करन।  
सर्व व्यापक दया सागर, पाप अध सभ जरन॥  
भर्म भव दरिद्र नासेव, नेकु नजरीन ढरन।  
टूटि मढ़िया कनक कलशा, सिद्धि नौ निद्धि भरन॥  
प्रह्लाद ध्रुव तुम शरण आयो, नाम देव को ढरन।  
अचल पद तेहिं जानि दिन्हा, ज्योति जगमग बरन॥

चीर खैंचत वीर ठाढ़ेव, राखि लिन्हों शरन।  
 द्रोपदी पत प्रकट किन्हा, जगत में जन तरन॥  
 जीवन मुक्त जो जिन्द जाहिर, कबहिं नाहिं मरन।  
 कहे 'दरिया' दरस तेरो, शाली सुखी भरन॥

(२४)

तेरो बल देखी दनुज डेराये।  
 बिना धनुष अलेख हारेव, किमति बरनी न जाय॥  
 पुहुँमि काँपे पाताल काँपेव, सिन्धु रहे अकुलाय।  
 चलेव सुर पति धनुष हाथे, पाँव नहीं ठहराये॥  
 संशय ग्रासेव यम की फौजे, त्रासे चलहिं पराये।  
 दैत्य दलि मलि मीजि डारेव, रोवहिं मुख गौ आये॥  
 कमठ शेष के श्रवण ध्वनि सुनि, पुरुष अवनि आये।  
 जग में जीव मुक्ताय लिन्हों, अमर लोक ले जाये॥  
 अक्षय अशोक निरालेप निर्मल, देखि मन पति आये।  
 सिंह के जब शरण आये, जुमुसि कीति करि खाये॥  
 संत स्तुति करहिं निशि दिन, धन्य-धन्य सहाये।  
 कहें 'दरिया' दास के प्रण, कब ना राखेव आये॥

### संध्या आरती

(१)

संध्या आरती साम्रथ की है, सिर पर छत्र सुगंध सही है।  
 नहिं तहाँ चौका न चन्दन पानी, अविगति ज्योति है आमृत बानी।  
 नहिं तहां तिलक जनेऊ न माला, पूरण ब्रह्म अखंडित काला।  
 नहिं तहां जाति बरन कुल कोई, वर्षत अमृत चाखहीं सोई।  
 अजर अमर घर लेहिं निवासा, नहिं तहां काल कुबुद्धि के त्रासा।  
 आवा न गमन गर्भ नहिं बासा, कहे 'दरिया' सोई सतगुरु दासा।

(२)

आरति साम्रथ करों तुम्हारी, दीन दयाल भक्त हितकारी।  
 ज्ञान दीपक ले मंदिर बारों, तन मन धन लेई आगे वारों।  
 चित चन्दन के रगरी बनाई, ब्रह्म पुहुँप लेई आनि चढ़ाई।

अनहद ध्वनि गहि घंट बजाओं, शब्द सिंहासन चरण मनाओं।  
आपुहिं छत्र औरि सिर छाजे, कहे 'दरिया' तहां संत बिराजे।

(३)

सतपुरुष दया कीन्ह मोहीं, चरण कमल चित रहों समोही।  
सुख सागर दुःख मेटनिहारा, दीन दयाल उतारहिं पारा।  
जहँ-जहँ गाढ़ सन्तन पर डारा, साम्रथ बन्दी छोड़ावनि हारा।  
जाके डर कापहिं धर्म धीरा, बुड़त उबारहिं दास कबीरा।  
दया सिन्धु गुण गहिर गम्भीर, कहे 'दरिया' मेटा दुःख पीरा।

(४)

मैं कुलवन्ती खसम पियारी, पाँच तत्व लेइ दीपक बारी।  
गंध सुगंध थार भरि लिन्हा, चन्दन चर्चित आरति किन्हा।  
फूलनि सेज सुगंध बिछावों, अपना पिया के पलंग पवड़ावों।  
सेवत चरण रैन गई बीती, प्रेम प्रीति तुमहीं सो रीती।  
कहे 'दरिया' ऐसो चित लागा, भई सुलच्छनि प्रेम अनुरागा।

(५)

सुमिरहु सत पद प्राण अधारा, सत शब्द लेई उतरहु पारा।  
गुरु के वचन जब पावल बीरा, अचल अमर निश्चय घर थीरा।  
हंसा जाइ मिलहिं कर्तारा, बहुरि न आवहिं एहि संसारा।  
तीन लोक से न्यारे डेरा, पुरुष पुरान जहां हंस घनेरा।  
सतगुरु बचन शिष्य जब धरई, जाय सतलोक नरक नहिं परई।  
कहे 'दरिया' जब बीरा पावे, जाय छपलोक बहुरि नहिं आवे।

शब्द बिहंगरा

(९)

विहंगम कवन दिसा उड़ि जइहो।  
नाम बेहूना सो पर हीना, भर्मि-भर्मि भव रहिहो॥  
गुरु निंदक मद संत के द्रोही, निन्दहिं जन्म गँवइहो।  
पर दारा पर संग परस्पर, कहहु कवन गुन लहिहो॥  
मद्यपि माति मदन तन व्यापेव, अमृत तेजि विषि खइहो।  
बिसरि गये तेहि दिन की बातें, अब बहु घात लगइहो॥

चरन कमल बिनु सो नर बूड़े, उभि चुभि थाह न पइहो।  
कहे 'दरिया' सतनाम भजन बिनु, रोये-रोये जन्म गवइहो॥

(२)

विहंगम बोलु बचन बन बासी।

उड़ि उड़ि आय तरुवर पर बैठे, निशिदिन रहत उदासी॥  
अति चिकन तरुवर सुठि सुन्दर, तहां अमीफल आसी।  
पिया-पिया प्रेम मगन तन वारों, तब वा फलहीं ग्रासी॥  
डोरीयहिं डोरीया गगन चढ़ि गयेऊ, परिमल मलहिं निकासी।  
अति सुगन्ध गगन घन बरिसे, सकल भर्म भौ नासी॥  
ब्याधा बधिक तहाँ नहिं जइहें, काटु कर्म की फांसी।  
कहे 'दरिया' अमर पुर बसि ले, होय रहु नाम उपासी॥

(३)

सुनु पंक्षी चलु अक्षय वृक्ष करु बासा।

चोंचन चुनि-चुनि अमृत खइहो, चोर ना मूसे चौमासा॥  
बावरि बिल्ली बैठी दरवाजा, एक यम उड़े अकाशा।  
पल-पल प्रलय जीव घात है, एहि विधि सबके नाशा॥  
कबहीं के रूखा-सूखा बदि रहिये, कबहीं के भोजन सुबासा।  
कबहीं के पलंग सुफेद दुलैचा, कबहीं पुहुँमी पर घासा॥  
एहि पिंजरा सुख कबहीं ना देखों, दसो द्वार यम फाँसा।  
उड़त अंख पंख नहिं लगिहें, कहे 'दरिया' सुनु दासा॥

(४)

सुनु पंक्षी तेरो बचन भया निजु हीरा।

गहि घन मारेव थीर थीरानेव, परखेव सकल शरीरा॥  
नख पंक्षी से हीरा भयेऊ। व्यापक जल के तीरा।  
सतगुरु सनदि हाथ बसि परिगौ, कवन कहे तेहि कीरा॥  
अब तोर मोल अवरि नहिं होइहें, हाट गये नहिं फीरा।  
जहां रहे तहां जगमग दीसे, ज्यों जग भयो कबीरा॥  
जो गति ऐसी ज्ञान मुक्ति है जुगता गहिर गम्भीरा।  
कहे 'दरिया' कुंजल के मस्तक, चुंगल पारस फीरा॥

(५)

सुनु सुगना सुफल बचन निजु दाखहीं चाखो ।  
 छोड़ो सेमर भुआ लपटइहें, टेक ठवनि गहि राखो ॥  
 ललनी ललचि कबहिं जन बैठो, उलटि जैहें पर पांखो ।  
 बिनु सर जोरे तुमहिं धरि लीहें, बधिक भँवन में नाथो ॥  
 निसि बासर में जागत रहिहो, विषय कबहिं जनि माँखो ॥  
 आठ काठ का पिंजरा तेरो, तामें दसो सुलाखो ।  
 प्रेम मगन उड़ि अक्षय वृक्ष चलु, कहे 'दरिया' सत भाखो ॥

(६)

सुन पंक्षी उड़ि कहाँ तुम जइहो ।  
 बिना वृक्ष यह ठवर कहाँ है, फेरि एहि द्रुम अइहो ॥  
 सब मिलि चले जो सुन्य स्वर्ग के, अहे बेगमि अथाहा ।  
 टूटा नेह खसे घमसाने, परिगौ अगम अगाहा ॥  
 पश्चिम पूरब उत्तर दक्षिण, तहाँ अमर पुर अहई ।  
 सदा अमर है मरे ना कबहीं, सतगुरु गमि जो गहई ॥  
 है छपलोक छपा है वेदे, भेद कोई जन पावे ।  
 आखर एक मुक्ति का महिमा, बिनु आखर भव आवे ॥  
 है बेकीमति यह सिफ़्त कहाँ तक, सत पुरुष निर्माया ।  
 यह सब जाल जगत में बंधन, वा गुण बिरले पाया ॥  
 याहि पेड़ के सब मीलि लागे, सुर नर मुनि की रीति ।  
 कहे 'दरिया' गुरु ज्ञान विचारो, सतगुरु पद से प्रीति ॥

(७)

हंस कोई सतगुरु गमि पावे ।  
 तेजे मान पीवे ममिता के, तब छपलोक सिधावे ॥  
 उज्ज्वल दसा निसि बासर दिसे, सीस पदुम झलकावे ।  
 राव रंक एक सम जाने, संत प्रकट गुण गावे ॥  
 अति सुख सागर स्वर्ग नरक नाहिं, दुर्मति दुरि बोहावे ।  
 आड़ अटक भटके नहिं कबहीं, घट फूटे मिलि जावे ॥

वरण विवेक भेद नहीं जाने, अवरण सभे मिलावे ।  
जहाँ देखो तहाँ दर्शिता चन्दा, फणि मणि ज्योति बरावे ॥  
रमे जगत में ज्यों जल पुरइन, एहि विधि लेप न लावे ।  
जल के ऊपर कमल वृगसाना, मधु कर घ्राणि लोभावे ॥  
जासो मिलना अब मिलि रहिये, बिछुरत दूरि देखावे ।  
कहे 'दरिया' दर्पण के मुर्चा, सिकिल किये बनि आवे ॥

(८)

हंसा चलहु अमरपुर नीका ।  
जरा मरन ते रहित होहुगे, सतगुरु के कर बीका ॥  
यहाँ दुःख सुख है शोक संताप, कुसुम रंग भयो फीका ।  
जन्म-जन्म के बिछुड़ा साथी, मिलवे खसम वोय नीका ॥  
सत की नाव सुकृत कनहरिया, सभ विधि बात बनीका ।  
धन्य सौभाग्य सुहाग ताहि को, कहि नहीं जात गनीका ॥  
अति सुख सागर अमि अनूपा, क्षुता बुतानी जी का ।  
पुहुँप पलंग पर पुहुँप बिछौना, बृगसेव अमि कनीका ॥  
अति विलास तहां रूप राशि है, को कवि कहत भनीका ।  
एक मुख कहा सहस्र मुख जाके, कहि नहीं सकत फणीका ॥  
मानहु सत धोखा जनि जानहु, तेजहु मान मनीका ।  
'दरिया- दरस "पुरुष" पति जाके, पर दुःख दूरि अनीका ॥

(९)

बुधजन चलहु अगम पंथ भारी ।  
तुमसे कहों समुझि जब आवे, अवारि के बार सम्भारी ॥  
काँट न कुश पाँहन नहीं तहँवा, नाहिं रे विटप बन झारी ।  
वेद कितेब पंडित नहीं तहँवा, बिनु मसि अंक सँवारी ॥  
नहिं तहाँ गनपति, फनपति ज्ञाता, नाहिं तहां सृष्टि सँवारी ।  
नहिं तहाँ सरिता समुद्र न गंगा, ज्ञान की गमि उजियारी ॥  
स्वर्ग पताल मृत्यु लोक के बाहर, तहाँ "पुरुष" मठधारी ।  
कहे 'दरिया' तहां दर्शन सत है, संत जन लेहु बिचारी ॥

(१०)

कब मिलिहें मोहीं प्राण पति ।

नयनन निन्द निमिषि नहिं आवत, कल न परत मोहिं एक रति ॥

भोजन भवन भूषण नहिं रुचित, चित चातृक होय चिहुँकि छति ।

जोहत पंथ पथिक नहिं आवत, उलटि दिवस फिरि रैनि बीती ॥

अवनि विदित भई पवनन्हि से, प्रबल प्रीतम प्रेम अति ।

सोक संताप हिये अति ब्यापेव, किमि करि त्यागो प्रान गति ॥

जीवन मुक्त जगत गुरु ज्ञाता, सिद्ध न कहिये नाहिं यती ।

कहे 'दरिया' सोई सांच सोहागिनि, पतिव्रता वोय संत सती ॥

(११)

मेरो मन पिया रे पिया ।

जैसे पपीहा रटत पिया पिया औरो जल नहिं लिया ॥

जैसे कुमुदिनी जल के भीतर, चंदा ने छवि दिया ।

जैसे चुम्बक लगा लोहा में, यों करि लागु मेरो जिया ॥

जैसे अलि पंकज के खेजत, अवरि पुहुँप सब छिया ।

जैसे जल बिनु मीन ना भावत, बिछुरत प्राणहिं दिया ॥

जैसे पतिंग दीपक के ऊपर, तन मन खाकहिं किया ।

कहे 'दरिया' सोई पाँच साँच सोहागिनि, नाम बसे निज हिया ॥

मेरा मन पियारे पिया ॥ टेक० ॥

(१२)

जब ते पिया पर प्रीति लई ।

कहि न जात निजु भाग हमारो, सुनत सुजस सब सकल मई ॥

जब होती तरुनी जौवन मद माँति, गुन तेजि ऐगुन काम लई ।

अब चित हित दे चितवों नयन में, अघ मोचन सभ पाप गई ॥

अब तो प्रीति कमल जल जैसे, अलि पंकज ज्यों टेक लई ।

वृगसित कुमुदिनी देखि कला, शशि सरद पूर्णिमा चंद मही ॥

तन मन वारि पिया पहुँ आयो, फूलन सेज सुगंध दर्ई ।

जेहिं पिया चाहे सोई सोहागिनि, कहे 'दरिया' तन तप्त गई ॥

## शब्द प्राती

(१)

तुम अंतर्गति जानिया, गति जाननिहारा ।  
 तुम संतन प्रति पालिया, पालेव संसारा ॥  
 जेहि दिन ग्रंथी, गांठि नहिं, नहिं दूध के धारा ।  
 दस मास तुम जतन कियो, हो निजु करतारा ॥  
 कीट पतिंग जहाँ न जहाँ ले, सो तुम्हरे सिर भरा ।  
 सभके भच्छ तुम देतु हों, गति अपरम् पारा ॥  
 ज्यों द्रुम सिंचेव प्रेम से, फल अमृत सारा ।  
 कहे 'दरिया' ऐसो सिंचिये, मेरो प्रान अधारा ॥

(२)

कुमित खेले मन बावरी, नाहिं पिया की दासी ।  
 मद माया माते फिरे, नाहिं चरन उपासी ॥  
 तन मन धन आपनो बुझे, लिये काल की फांसी ।  
 धोखा में दवरत फिरे, प्रयाग और कासी ॥  
 धूँघट के पट वोट में, नहीं प्रेम की गाँसी ।  
 दिल खोले नाचे नहीं, दोनों कुल नासी ॥  
 जन्म-जन्म के चूकते, नाहिं मिलवे अविनासी ।  
 कहे 'दरिया' चित चेतिये, अमरपुर जासी ॥

(३)

क्या रे सोये मन बावरा, तेरो जन्म सिराना ।  
 ज्यों सेमर सेइ सुगना, पीछे पछताना ॥  
 जेहि माया के कारने, दिल हुआ दीवाना ।  
 सो पल में छीन लेत है, फिरि होत बेगाना ॥  
 बोंवत में सुख होत है, उलटि के ताना ।  
 निकलि परा घायल हुआ, हरि लिन्ह खजाना ॥  
 हृदय तेरा कठोर है, कठिन वहाँ जाना ।  
 श्वान की ऐसी प्रीति है, जिमि लपटाना ॥



चिड़िया फंदे बांझिया, व्याधा सर ताना ।  
 चेहुँ-चेहुँ करि मरि जाहुगे, फेरि गर्द समाना ॥  
 जम यम पकड़ि पछारिहें, नहिं सतगुरु ज्ञाना ।  
 कहे 'दरिया' चाकी चली, परते पीसि माना ॥

(४)

क्या उपर तन माजिया, हिये मैलि ना छूटा ।  
 कपट चतुराई चित में बसे, ताते यम के लूटा ॥  
 देखन के बक उजला, मन मैलि है खोटा ।  
 आंखि मुँदि मौनी हुआ, मच्छा धरि घोंटा ॥  
 चचल चपल चातृक डोले, पाखंड की ओटा ।  
 विषय विकार छूटे नहीं, बाँटे धरि मोटा ॥  
 सतगुरु से करु एकता, पल नेह न टूटा ।  
 कहे 'दरिया' तन वारिया, भय भाजन फूटा ॥

(५)

सुमिरहु काहें न नाम के, सुख परम निधानि ।  
 आवत सब मिलि देखिया, केहु जात न जानि ॥  
 कंचन कोट लंका बना, रचि पचि बहु बानी ।  
 सोउ गर्व करि गर्द मिला, नहिं रही निशानी ॥  
 जर जराव हाथी घोड़ा, बहल राज धानी ।  
 संग सेना दुर्योधना, पल माँह बिलानी ॥  
 बहुते गर्वी गर्द मिले, ऐसो अज्ञानी ।  
 कहे 'दरिया' सोई बाँचिहें, यह शब्द जो मानी ॥

(६)

लीला अजर अनूप है, गति लखे न कोई ।  
 दरस किये भूलि जातु है, माया बसि होई ॥  
 क्षीर से दही जमाइया, मथि घृत अलोई ।  
 घृत से घ्राणि जो आइया, बिनु मूल न होई ॥  
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, कथि अंत न पाया ।  
 कहते रूप रेखा नहीं, सब जग भर्माया ॥

साहब हैं हृद ऊपरे, मेदनी है माया ।

साहब नहीं हृद भीतरे, गुरु ज्ञान लखाया ॥

अक्षय वृक्ष सतपुरुष हैं, क्षय कबहीं ना हुआ ।

जो रे आया येहि गर्भ में, प्रकट होय मुआ ॥

नाना रंग बनाय के, नाचे औ सब गावे ।

कहे 'दरिया' देखे बिना, कहु कहाँ बतावे ॥

(७)

रावण सम माया नहिं, समुझो नर लोई ।

कंचन कलस संवारिया, भयो गर्द समोई ॥

माटी महल बनाय के, थोरे धन ऐंठा ।

टेढ़ि चाल टेढ़ि बोले, कर्ता होय बैठा ॥

दोय भुजा नर पाय के, कहे मेरो मेरो ।

बीस भुजा दस शीश है, भयो खाक के ढेरो ॥

मक्खी मधु कहँ संचिया, पक्ष जात अँधेरा ।

डाक परे धन लूटि जात हैं, पछताहिं घनेरो ॥

बीस औ तीस पचास ले, सौ वर्ष न जीवे ।

चारोपन बीति जात है, विषय रस पीवे ॥

एहु जड़ जन जातु हैं, खर्चे नहिं खावे ।

कहे 'दरिया' यम बाँधिया, पीछे पछतावे ॥

(८)

शूरा सोई सराहिये, सनमुख रण मंडे ।

बहु वक्ता बहुत बात है, तोते यम डंडे ॥

बाना पहिरे सिंह का, हस्ती सो बांके ।

बोली बोले सियार का, कुत्ता हु देखी डाके ॥

कर में तेग समाही के, बोले बहु बानी ।

काम परा मैदान में, पीछे धरि तानी ॥

ज्यों बक करहीं मराल की गति, गुण को निरुवारे ।

लाल मृदंग समाज करी, बहु भेष सँवारे ॥

पान फूल सुख बेलसही, बहु बीजन भावे ।

भरि पेट खावहीं खुशी तबे, सतनाम न आवे ॥

गनिका बुढ़ी तपेश्वरी, दारिद्री त्यागी ।  
 रोगी परम सेवक भयो, अपनो सुख लागी ॥  
 दुखी सुखी घनवंत है, तीनों गुण नासी ।  
 ज्ञान बिना भव बुड़िया, लिये काल की फाँसी ॥  
 'सतगुरु' से नहीं एकता, पशु पक्षी है सोई ।  
 कहे 'दरिया' दर त्यागिया, अवघट में रोई ॥

(६)

क्या काहु के निन्देव, आपनो व्रत कीजै ।  
 साँचा दिल साँचा साँई, जरते प्रेम ना छीजै ॥  
 शूरुवाँ मंडे मैदान में, कादर मुख फीरा ।  
 क्या कादर को काम है, खाड़ो नहीं भीरा ॥  
 ऊरुआ तम खात है, चोरी के आसा ।  
 मरद जो कहिए बाँज को, दिन करत तमासा ॥  
 सिंह साधु को एक मता, नाहीं गिदर संग्गा ।  
 कोटि गीदर का जूथ है, नाहीं भागु मतंग्गा ॥  
 ज्यों बक रहहीं किनारे, सरवर नहीं अंता ।  
 कहे 'दरिया' ऐसो जानिये, सतगुरु निज मंता ॥

(१०)

जग में सुमिरु जागृत जीद ।  
 मोह माया सकल व्यापेव, सोय रहा सब नीद ॥  
 अगम आपु है निगम वेद है, डारि दिन्हों जाल ।  
 अनन्त फंदा भर्म बाजी, जीव जीतेव काल ॥  
 देवा देई पथल पानी, धर्म दया नाहिं ।  
 पूजहु पाहन पंडित होय के, बहि गयो भव माहिं ॥  
 अजहूँ मूरख मूरति तेजो, या में कर्ता नाहिं ।  
 यह तो पाहन काटि काढ़ेव जइबहु केकरि बाहिं ॥  
 चारि वेद है चौदह विद्या फंद दीन्हों डार ।  
 चतुरजन चौ मुखी ब्रह्मा, सोउ गये भव हार ॥  
 रोवहिं यमपुर सीस धुनि-धुनि, जहर खायो जानि ।  
 कहे 'दरिया' दुग दानी, करत जीव के हानि ॥

(११)

जग में मोह जालिम जोर।  
 एक पल नहिं रहन देत है, धैचत अपनी ओर॥  
 शक्ति शोभा नयन देखत, ज्ञान किन्हों भोर।  
 पकड़ि के यम कैद किन्हों, जीनिसि मुसेव चोर॥  
 भेष तो अलेख कहिए, गनत नाहिं थोर।  
 घेरि के नचाय लिन्हों, जीव जंगली मोर॥  
 राज काज में मगन बैठे, द्रव्य है करोर।  
 धक्का ऊपर धक्का खाते, धृक जीवन है तोर॥  
 सोग सागर रोग व्यापेक, भोग है नीपोर।  
 माया झिलमिल चाँदनी, नाहिं चौका बैठे तोर॥  
 चूक ते यह भूँकि मुआ, बहुत किन्हो शोर।  
 कहे 'दरिया' बाँध डारेव, महा नरक अघोर॥

(१२)

तन में मोह बहुत विकार।  
 जीवन धन्य कछु अधिक बुझत, बोलत बैन हंकार॥  
 जैसे अघ उर शूल सहते, ऐसहीं भ्रम जाल।  
 अर्ध लटके काल पटकेव, कठिन है यम साल॥  
 जैसे मरकट बाजीगर ने, डारिया ग्रीव फाँस।  
 नाँचत मगु में मगन बहुते, देत जीव के त्रास॥  
 जैसे ब्याधा बाझु फंदे, कष्ट महल मोकाम।  
 लोहा के सीकर डारि ग्रीव में, गनत आठो जाम॥  
 ऐसे नृप नर माँति मद ते, मीन मांस अहार।  
 पाप करते ताप मन में, जात यम के द्वार॥  
 यह तन थाके मन ना थाके, जतन जानत माल।  
 चरण थाके चक्षु भी थाके, निकट आवत काल॥  
 पाप पुन्य के मोटरी सिर पर, गाँठि खोटा दाम।  
 भजन वाके भजत नाहिं, भजत रति औ काम॥  
 नर कहे दिन जात है, सो दिन कहे नर जात।  
 कहे 'दरिया' तेजि अमृत, जानि विषि के खात॥

तेरो नाम निर्मल गनी ।

निरखी नयन में देखि आवत, ज्ञान गुण को धनी ॥

पीठ पीछे दृष्टि तुझ पर, सृष्टि सकलो बनी ।

बरत मणि यह झरत निर्मल, स्वेत सुन्दर कनी ॥

चकोर को चित लागु चंदही, चुभूकि चाहत फनी ।

आशिक के दिल दाग नाहिं, दरश ऐना बनी ॥

कंज के यह कली ऊपर, मान मधुकर सनी ।

सुपट खुले घ्राणि घन में, बासना बसि अनी ॥

अमर कोस ज्यों देखि मृग मद, धुँआ उलटि तनी ।

लगन जाके लव न छूटत, जानि कवि जन भनी ॥

दया सागर सर्व तुमही, देखि यम यूथ हनि ।

कहे 'दरिया' दरस कीजै, तेजि ममिता मनि ॥

(१४)

तेरो ऐसही गुण गनी ।

आपु अमर अमिय पीवहीं, साधुन के सुख धनी ॥

जात मरि मरि रहत नाहिं, हर्फ तेरो तनी ।

योगी जंगम यति जेते, ताहि पकड़ि के हनी ॥

सनकादि आदि जो ब्रह्मा कहिए, शम्भू सारद भनी ।

सुखी सरिता, सागर जल बिनु, शेष सहस्र फनी ॥

हाथ पर्वत तरैलि थाके, सेतु सागर बनी ।

बीर धीर यह धनुष धुनही, मर्द कहिये जनी ॥

बलि बावन राम रावन, एक संग सम सनी ।

शिशुपाल गोपाल कर गहि, केश कंय ही हनी ॥

केते कवि सब कथा कहते, दधि मथि घ्रीत अनी ।

कहे 'दरिया' धन्य सोई, तेजु ममीता मनी ॥

(१५)

तेरो स्तुति कीजै सुखी ।

दुःख से बड़ भूख्ख कहिए, या ही ग्रामे बसी ॥

दैत्य के यह द्रव्य दीन्हा, मीन मांस ही रसी।  
 गज बाज यह हाट किन्हा, ऐसे ही तुम जसी॥  
 जीव बधन के बध न जाने, व्याघ्र कीसी फसी।  
 चारि पदारथ तासु घर में, तहाँ केकर दसी॥  
 गणिका के ग्रीव मोती माला, खासा मलमल तसी।  
 पान फूल दुशाला ओढ़े, बहुत जीवन कंह नसी॥  
 पतिव्रत करते जरत निसिदिन, सहत जग की हँसी।  
 फटा वस्त्र लाज नहीं, ऐसे हीरा कसी॥  
 देहू दियावहु सबनि ते, शुम्भ मुसुकन्ह तसी।  
 कहे 'दरिया' धन्य सोई, प्रेम सागर धसी॥

(१५)

वोय तो ऐसही गुण सार।  
 रमिता राम जो रमित सभनि में, दृष्टि गगन सार॥  
 सखा सघन घन पत्र जेते, जीव शिव संसार।  
 वह तो अमर मरे न कबहीं, अक्षय पुरुष निनार॥  
 वोय तो जिन्द हे जागृत जग में, ऐसा है करतार।  
 काढ़ि भव से पार किन्हों, घेंचि तरनी पार॥  
 दस सीस बीस भुजा जाके, गरद मिलि गौ झार।  
 दो-दो भुजा केते गनिए, झोकि दिन्हों भार॥  
 सर्वहत्या पशु घात करते निगम सासी वार।  
 वोयल को वह वोयल दिन्हों, खड़े हैं दरबार॥  
 संत सुमिरही पलक प्रेमहीं, निशा सातो वार।  
 कहे 'दरिया' अरज एता मेटिये यम जार॥

## शब्द मंगल

वार्षिक षट् वार्षिक पूजा (विशेष पूजा प्रसाद) के अवसर पर पाठ करने के लिए  
स्तुति और बन्दन

स्तुति

(१)

साहब तुम गति अगम अपार, दया बहु कीन्हों जी॥

प्रथम बन्दों सत चरन, शीश साहब कहँ नाया।

यह लीला अगम अपार, भेद बिरला कोइ पाया।

अगम पुरुष सत वर्ग हैं हो, सोई मिले हमें आय।

हंसन के सुख कारने हो, हृद दियो हैं पाव। दया०॥

झलकत पदुम बहुत उजियार, बदन छबि सुन्दर रेखा।

अविगति ज्योति अर्ध प्रकाशित, ज्ञान अगम गमि पेखा॥

बिरला जन कोई चिन्हि के हो, नाम सजीवन पाय॥ दया०॥

वोय जिन्दा रूप अजर मणि, निर्मल ज्योति अमान।

कहेव अकूफ सर्वज्ञ सभनि ते, सुनों श्रवण दे ज्ञान।

बृगसित कमल शीतल होय आवे, सुनि बचन निर्बान।

हंसन बन्दि छोड़ावहीं हो, यम के मरदहु मान। दया०॥

काल रोह यह चोर, जीव जहड़ावहीं।

जो करे सुरति लव लाय, ताहि विलमावहीं॥

करे विवेक बिचारि के हो, निर्मल धरि सो ध्यान।

खुलित कमल गगन झरि लागे, झलकत श्वेत निशान। दया०॥

जो बूझे यह भेद सोई है, संत सुजान।

भौ निर्मल जौं परिमल बास, सुबास समान।

पारस पाय जन उधरे हो, निर्मल भजि सो ज्ञान।

जाय छपलोक रहित घर पावे, जहाँ सब हंस सुजान॥ दया०॥

जो करे पारख लवलाय, नाम बिलगावहीं।

यह ब्रह्मा विष्णु महेश, अन्त नहिं पावहीं।

धरि धरि ध्यान समाधि करे हो, सपने सो नहीं पाय।  
 दीनदयाल कृपाल दयानिधि लियो है हंस 'बोलाय'॥ दया०॥  
 करहु भक्ति वे भर्म कर्म बिसरावहु भाई।  
 जब होय ब्रह्म भरिपूर सो, नाम अचल पद पाई।  
 अमृत पोषन पावहीं हो भक्ति करहिं लव लाय।  
 धन्य भाग तेहि जीव के हो साहब लियो हैं छोड़ाय॥ दया०॥  
 कहे 'दरिया' सुनु सत शब्द यह बानी।  
 कहाँ छपा यह मूल अगम सहिदानी।  
 सत सुकृत दृढ़ लाय के हो, गहिर जो गलि ले ज्ञान।  
 सो जनके प्रति पालहीं हो यम से राखु अमान। दया०॥

### अर्पण

(१)

सतगुरु यह प्रसाद तुम्हारा।  
 तन मन धन जिन्हि अर्पन किन्हा हंस उतारो पारा॥  
 दही सोहारी शक्कर मेवा खीर भरो है थारा॥  
 अम्बर श्वेत तहाँ यह सोभे यही भक्ति ततु सारा॥  
 खुश वोय मंदिर खुश नर नारी, सतगुरु खुश सौ बारा।  
 सेवा माँह कसूर न करिये छूटि जाय यम जारा॥  
 धन्य-धन्य साहब धन्य भक्त हैं, धन्य है दास तुम्हारा।  
 कहे 'दरिया' दरसन को फल है, दृष्टि भयी उजियारा॥

### वन्दना

अवरी के बार बकसु मेरो साहब, तुमहीं लायक सब योग हे।  
 ऐगुण बकसिहो सब भर्म नसिहो, रखिहो अपने पास हे॥  
 अक्षय वृक्ष तर लेई बैठइहो, जहवाँ धूप न छाँह हे।  
 चाँद न सूरज दिवस नहिं तहवाँ, नहिं निसि होत विहान हे॥  
 अमृत फल मुख चाखन दीहो, सेज सुगन्ध सोहाय हे।  
 युग-युग अचल अमर पद दिहो, इतना बिनती हमार हे॥  
 भवसागर दुःख दारुन मेटिहें, छूटि जइहें कुल परिवार हे।  
 कहे 'दरिया' यह मंगल मूला, अनूप फूले तहाँ फूल हे॥



अबरी के बार बकसु पिया, मेरो, जनम जनम की चेरि हे।  
 चरन कमल हम हृदय लगाइब, कपट कागज सभ फारि हे॥  
 मैं अबला बल किछुवो न जानल, परपंचिन के साथ हे।  
 पिया मिलन बेरि बाट इन रोकल तब जीव भइले अनाथ हे॥  
 जब हम दिल में निश्चय जानल सुझि परल यम फंद हे।  
 खूलल दृष्टि दिया मनि लेसल मानो शरद के चन्द हे॥  
 सुख के सागर अमृत फल मुख सुकृत नाम सहाय हे।  
 कहे 'दरिया' दर्शन सुख उपजल दुःख सब दूरि बोहाय हे॥

(शब्द मंगल राग प्रसाद)

करी लेहु नाम से प्रीति, कत दिन इह जग जीवन॥  
 सुन्दर देह देखी जनी भूलहु, जनी आगे बांधहु मीती।  
 विनसत विलम्ब ना लगिहें, जैसे रे बालू केरी भीती॥  
 काल करते हंसा जैहों, जैहें सकल सभ बीती।  
 दसो द्वार यम रोक़ी लीहें, लिन्हें काया गढ़ जीती॥  
 मातु पिता सुत बन्धौ, कोई ना जैहें साथ।  
 विषम बान जम मारिहिं, चलिहो मरोरत हाथ॥  
 राजा रंक सकल सभ, गावहीं सगुन गीती।  
 सार शब्द बिनु संसै, फिरि फिरि होहीं अनीती॥  
 छोड़हु चित चतुराई, परखहु भेद निजु सार।  
 सतगुरु साहब सरनन्हिं, 'दरिया' करहिं पुकार॥

(२)

कोटिन्ह कामिनी गावहीं, रंग बहुत सोहाये।  
 पुरुष पुरान जहाँ बैठहिं, सिंहासन बरति न जाये॥  
 ताहि देश चलहु संतो हो, जहाँ धूप ना छांह।  
 तहँ हंही सतगुरु शीतल, शीतल शब्द सोहाही॥  
 हंसा करहीं कोताहल, अमृत पीवहीं अघाये।  
 अनहद धुनि ताहाँ बाजहीं, सेत धजा फहराये॥  
 छूटहीं या जग संसै, कहे 'दरिया' समुझाये।  
 अजर अमरपुर बैठहु, बहुरि ना या जग ओय॥

## शब्द तेग पक्ष अर्जी

(१)

अब तुम काहें डेरानेव संता ।

सिंह ठवनि मम ठनकन लागे, भागु मतंग अनंता ॥  
 शाहजादा मम साहब के हौं, “बेबाहा” सत सोई ।  
 तख्त दीन्ह यह वख्त बड़ा है, जागृत जग में ओई ॥  
 जीयते कफन पेन्हो मरदाना, शब्द सांगि का गहना ।  
 भागे भूमि न ठवर कहीं है, शूरा सनमुख रहना ॥  
 जग में आयो अदल करन के, दूरि करो यम फंदा ।  
 तेरो सिर पर साहब बिराजै, सब विधि होत अनन्दा ॥  
 बड़-बड़ गर्बी कैद कियरे हैं, रज में राज मिलाई ।  
 दुई भुजा के कवन चलावे, बीस भुजा ढहि जाई ॥  
 शूरा रन में पैठि गयो है, काके ढूढ़े साथी ।  
 कहे ‘दरिया’ तेरो तीन साथी हैं, हिये कटारी हाथा ॥

(२)

साहब हमके लीन्हा बचाई ।

बकसा तेग बेगि हम धायो, ऐसी है प्रभुताई ॥  
 सत सनाह का बख्तर पेन्हा, सिर पर क्षत्र फिराई ।  
 ज्ञान घोड़े को चाबुक मारा, रन में पैठा जाई ॥  
 हना निशान गगन के ऊपर, गरजि घुमरि घहराई ।  
 कुहुक बान कमाने कसि के, गर्वी गर्द मिलाई ॥  
 सिंह ठवनी मम ठनकन लागे, मन मतंग दूरि जाई ।  
 भै गौ सोर रोर सब भागे, ठवर कतहिं नहिं पाई ॥  
 कोट ओट कतहिं नहिं कबहीं कसि के मुसुक चढ़ाई ।  
 वोय तो जिन्द निन्द नहिं सोवहिं, जागृत जग में आई ॥  
 कहे ‘दरिया’ धन्य-घन्य वोय साहब, कीमति वरणी नहिं जाई ।

(३)

सभते संत सिपाही भारी ।

“बेबाहा” वोय बादशाह हैं, ऐसा अदल बिचारी ॥

होहु तैयार घोड़े पर मरदो, चाबुक चटक सुधारी।  
 शब्द सांगि गहि तेग बहादुर, रन बीच हाँके पारी॥  
 फरक फरक है दोनों फौजें, ता बीच घोड़ा डारी।  
 बात कहत इन्ह दुश्मन मारा, ये जीता वोय हारी॥  
 कोर्निस करि हजूरे ठाढ़े इन्हने, फौजें टारी।  
 सिरो पाँव औ खास जुबाना, ऐसा तेगा झारी॥  
 ऐसा अकिल अकूफ कायम है, हुकुम कबहीं नहीं टारी।  
 मस्त हुआ महबूब के आगे, मेटा कल्पना कारी॥  
 वाह-वाह सीफित्त करो वाहि के, जिन्हि यह तन मन वारी।  
 कहे 'दरिया' धन्य संत जगत में बोले बैन सम्हारी॥

(४)

है कोई संत सिपाही तेरो।  
 हुकुम सदा राखे सिर ऊपर, जाय मवासा घेरो॥  
 लाखन में दीसे नहिं कोई, कोटिन में कहिं हेरो।  
 जैसे सिंह ठवनि ठहराने, मनमतंग कियो चेरो॥  
 ज्ञान घोड़े पर लव लगाम दे, तापर पाखर फेरो।  
 घोड़ा कुदाय गगन गढ़ भीतर, शब्द सांगि रण टेरो॥  
 गर्वीहि मारेव गर्द मिलायो, मांझा दीप कियो डेरो।  
 कहे 'दरिया' रण जीति चलहुगे, जब मोजरा है मेरो॥

(५)

साहब साधुन के सुख देनी।  
 रेज रेज है मरकब जड़ को, पाहन काटत छेनी॥  
 सिंह ठवनि यह साधु रहनी है, मनि माथे है छाजा।  
 कुंजल भागि कंदला दबका, केहरि ठनकत भाजा॥  
 सिंह से बड़ा सहदुल के महिमा, चंगुल पकड़े हाथी।  
 एहि विधि काल बधिक है जग में, कोई संग नहि साथी॥  
 एक बाज सहस्र बक है, पर बाजे जिमि सटका।  
 केते नृप दल साजे महि पर, धरि धरि सबके पटका॥  
 कोई विमान कोई बाँधि जंजीरे, चलो सिताब बोलाया।  
 साधु असाधु की येहि महिमा, निगम सदा गुण गाया॥

गर्जत फिरे गर्व के माँते, ममिता मद के पीवे।  
कहे 'दरिया' धृक सो प्रानी भक्ति बिना जो जीवे॥

(६)

टरो जनि तुम टरो जनि, यह टरे नहीं काम।  
साँच के तुम जान लीजै, सुमिरु आठो जाम॥  
समुझि के यह कदम दिन्हाँ, नाम देव कबीर।  
सुलतान कहिए बलख का, सरदार सबको मीर॥

ध्रुव और प्रह्लाद कहिए, भूप को फरजंद।  
थूक दिन्हीं राज के, यह होत नहीं मंद॥  
मीरा तो मैदान कीन्हा, विषि गयी पीव।  
धन्य-धन्य सब लोग कहते, वाह वाहि जीव॥  
स्वपच तो यह गोप रहते, प्रगट हुए आय।  
जाके भोजन घंट बाजे, सीस सभे नाय॥  
करार तो कमान कहिए, काल का सिर चोट।  
हनुमान तो कुदि गये, लंका कंचन कोट॥  
सती तो संसार सागर, यति कहिये एक।  
तीन बातें जीति लिन्हो, लखन का यह टेक॥  
सरकार में जब सही होते, दुर्वेस वलि संत।  
कहे 'दरिया' तौल तूला, पूरो जाको मंत॥

(७)

जग में एक है मरदान।  
एक पाखर लाख पाखर, तेग गहि के ज्ञान॥  
सत का शिलाह पेन्हे, अर्ध ले तुम ढाल।  
शब्द का यह सांगि गहिके, जितिया यम जाल॥  
अदल किन्हाँ अदब दीन्हाँ, फौज का है जोर।  
पकड़ि के यह कैद कीन्हाँ, बाँधि लिन्हाँ चोर॥  
शूर के मुख नूर झलके, ब्रह्म पूरो चन्द।  
गरजि बोले गगन में यह, होत नहीं मन्द॥  
भर्म पर्वत ढाहि के यह, भला है मैदान।  
अजीत साहब हित किन्हीं, जितिया निशान॥

मेहर किन्हों कहर नाहिं, अमर है सिर ताज।

कहे 'दरिया' सागर, हंस के सुख राज॥

(८)

जब ते कड़ी कमानें खींचा।

कुहुक बान जब कसि के मारा, तब दुर्जन दल नीचा॥

भागै भूमि न ठवर कहीं है, बड़े बीर हैं बंका।

जीरह तोरि बख्तर के तोरा, लगा सो बड़ा धमक्का॥

भागि गलिम गलि में पैठा, ममिता गढ़ी ढहाया।

मनसफदार हुकुंम सिर ऊपर, दरस दादनी पाया॥

है वह एक विवेक करे जो, गर्वीहिं गर्द मिलाया॥

बाजा तबल ताजि के ऊपर, श्वेत ध्वजा फहराया॥

भला मरद मर्दान मरद है, भला चौक मैदान।

नहीं चले छपा छिपे कहै, छिति पर मस्त देवाना॥

“बेबाहा” को शाहजादा मम, फहम करे फरजन्दा।

कहे 'दरिया' सब मुवे मंलिज में, जागृत जग में जिन्दा॥

(९)

साधो सब पर आनि बियावे।

माया माशुक महल के भीतर, मंद चले फेरि दावे॥

कसे कमान बाम काम ते, तीर अचूक चलावे।

ज्ञान कृपाण तबे मम झारा, तब वोय बदन छपाये॥

बिचलि चले फेरि भीरे हाँक दे, बाँक बिकट वोय आई।

तब हम कुहुँक बाण कसि मारा, टूक-टूक होय जाई॥

गुप्त रहे फेरि प्रकट देखाई, मन के ठाट ले आई।

नेजा भाँजि भरम के मारा, निफरत वार न लाई॥

हमसे हारि बारि के बैठी, अति छबि सुन्दर नारी।

नख सिख अभरन बसन झलाझलि, हमके काहें बिसारी॥

सिंह ठवनि धरि धरि लड़ो शूर होय, भागे भूमि न पाई।

कहे 'दरिया' मेरो सिर पर साहेब, बल प्रभुता अधिकाई॥

(१०)

हमने देखा बहुत तमाशा ।

जहँ-जहँ जन्मा तहँ-तहँ देखा, बहु दासी औ दासा ॥

राव हुआ फेरि रंक कहाया, बहुरि भयो सुलताना ।

बैठे तख्त पर शोभा सुन्दर, सो नहीं मन माना ॥

कहीं पंडित होय वेद विचारा, व्याकरण के साधा ।

योग कर्म में योगी होते, पांच पचीसहिं बाँधा ॥

कहीं देग कहीं तेगहिं पकड़ा, इन बातन में भनते ।

एता कौतुक हमने किया, बहु दुर्जन के हनते ॥

कहीं भक्त कहीं दास कहाया, कहीं निर्मल गुण गाया ।

चारि बरण में हम चलि आया, देह धरि जग समुझाया ॥

अंधरन आगे अर्सी दिन्हा, चभु बिहुँना हीना ।

कहे 'दरिया' नर बहुत भुलाना, मानुष हमको चीन्हा ॥

(११)

हमके चिन्हहुँ रे नर बवरे ।

भेष कहा कबहीं जनि मानहु, काह फिरत हो दवरे ॥

आपन थिति चीन्हों घर माँही, बाहर देखो साँचा ।

छापा सनदि हमारा राखे, सो जीव यम से बाँचा ॥

है वह श्वेत फिटिक ज्यों हीरा, वाके दाग न लागा ।

खोटा-खोटा मैलि समाना, काह कथे अनुरागा ॥

झूठा रुठा पीठ दे बैठा, मक्कर शक्कर खावे ।

फारिक हुआ फकर के हुवे, प्रेम पियाला पावे ॥

भेष अलेख कहाँ तक कहिए, आपस में अरुझाना ।

जैसे लता गथा दुर्म में, कहों कहाँ सझुराना ॥

यह माया जैसे कलवारिन, मद्यपीय सभे मतावे ।

कहे 'दरिया' दर छेकि परेगा, भरि मुख क्षार लगावे ॥

(१२)

सुनु रे सुनु रे जीव बेचारा ।

कहा हमार काहें नहिं मानहु, पकड़ि जैहो यम द्वारा ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नहिं हम ब्राह्मण नहिं हम क्षत्री, नाहिं हिन्दू तूर्क का चेला ॥	सतनाम	नहिं हम योगी नहिं बैरागी, तीर्थ व्रत नहिं मेला ॥	सतनाम	काम बीज से जीव जन्माया, फैलि गया जग केता ॥	सतनाम
सतनाम	जोतते-जोतते जन्म सिरानी, वोय किसान वोहि खेता ॥	सतनाम	छूठी बात मुट्ठी जनि बाँधहु, मरकट को गुण ऐसा ॥	सतनाम	ऐसी प्रीति लगी माया से, निकट लिये यम फाँसा ॥	सतनाम
सतनाम	ऊपर की फूटी भीतर की फूटी, चारो फूट बिलाना ॥	सतनाम	श्रवण के तेरी सनदि मुदानी, रसना झूठ बखाना ॥	सतनाम	हमरा शहर मुवे नहीं कोई, जहवां से हम आई ॥	सतनाम
सतनाम	कहे 'दरिया' दर बिचारो, यम से लेंव छोड़ाई ॥	सतनाम	(१३)	सतनाम	वह दर्जी तुम खोजो भाई, जिन्हि यह बाग खूब बनाई ॥	सतनाम
सतनाम	पानी से पिण्ड पवन से धागा, आठ मास नव सीवन लागा ॥	सतनाम	सीयन सीवे खूब बनाई, वह दर्जी के पटतर नहिं पाई ॥	सतनाम	वह दर्जी है अपरम्पारा, कोई जाने कोई जाननि हारा ॥	सतनाम
सतनाम	मन पवन को सुई किन्हाँ, सत सुकृत के धागा ॥	सतनाम	आठ काठ यह कल छतीसा, बर बाँधन तब लागा ॥	सतनाम	सोरह खाई दस दरवाजा, बावन लगा कंगुरा ॥	सतनाम
सतनाम	तीन सौ साठ चिराबंद लागा, कोटि बना चौफेरा ॥	सतनाम	सिकिलि किया सिकम के भीतर, निरखत रूप संवारा ॥	सतनाम	दस माँस गर्भ में बीता, तब चोला भव तैयारा ॥	सतनाम
सतनाम	सतगुरु साहब आपे आपा, दुजा जानु गँवारा ॥	सतनाम	'दरिया' अहे सुई का नोखा, उन भी राह सुधारा ॥	सतनाम	(१४)	सतनाम
सतनाम	साधो कुहुँक बान हथियारा ॥	सतनाम	जहाँ लगे तहाँ झूके न कबहीं, निफरि जात उर पारा ॥	सतनाम	सत सनाह सुरति है नेजा, ज्ञान घोड़ा तहाँ डारा ॥	सतनाम
सतनाम	सतगुरु हुकुँम नगारा बाजे, फरके भुजा सारा ॥	सतनाम	संत सिपाही बड़े जगत में, बाँधे कमर कटारा ॥	सतनाम	कुदि परा मैदान के बीच में, जहाँ फौज है सारा ॥	सतनाम
सतनाम	31	सतनाम		सतनाम		सतनाम

काम क्रोध मद लोभ समेता, बड़े वीर है कारा।  
 तहवाँ लोहा झमकल लागे, मारि दिया हुई फारा॥  
 मंडी रहा मैदान के बीच में, सनमुख फौजे टारा।  
 सनसफ दीन्ह धन्य है सोई, पलंग दिया सुख सारा॥  
 केता महिमा संत के कहिए, चारों युग उजियारा।  
 कहे 'दरिया' सुनो हो संतों, गहिहो तेग सम्भरा॥

### शब्द प्राती (राग रामकली)

(१)

जागो भाई जागो भाई, साधो भाई जागो।  
 नाम सुमिरु सब हिये भर्म भागो॥  
 योगी जागे सुर नर मुनि धरें ध्याना।  
 पंडित जागहिं पढ़हीं पुराना॥  
 कालू जागे नामदेव संत सुजाना।  
 गोरख जागे उन्मुनि धरे ध्याना॥  
 राम के कटक में जागे हनुमाना।  
 चौकी में चोर मूसे सोचत बिहाना॥  
 ऐसे जनि जागो जैसे जागहिं मछिन्द्रा।  
 सींघल दीप में काम कला, गयो योग निन्द्रा॥  
 जैसे जागी गणिका कुल धर्म नाशा।  
 वाके सब जगत जाने अजब तमाशा॥  
 जैसे आगे सुपच अर्ध घंट बाजा।  
 राय युधिष्ठिर यज्ञ किन्हों पुरन सब काजा॥  
 मीरा जागी भई दिवानी, खसम कृष्ण कीन्हा।  
 लाल गिरिधर प्रेम मुरति तन मन दीन्हा॥  
 चारि युग चौकड़ी जागहीं कबीरा।  
 कहे 'दरिया' शब्द सही हंस हिरम्पर हीरा॥

(२)

माया के गुलाम गीदी, दिल तोर करिया।  
 जन्म सीरानी जात, करत बेगरिया॥





(५)

तेजि दे रे मालिनि तैं मन के अझूरा, फूले फूले फिरसी कवन गुन सझूरा।  
मालिनि न चिन्हे भँवर दरबारा, करिया की गोर तोर सँवरो भतारा॥  
एक से अनन्त जाकर बिस्तारा, चुनि-चुनि खायसि सकल संसारा।  
गुन नाहिं गहसि कवन गुन सारा, दरिया दरस बिनु घर अँधियारा॥

(६)

बाझे जाल में जीव बिचारा, टूटे छूटे नहिं होहिं निनारा।  
सावज पीछे अहेरिया फिरे, जाय जंगल जीव बहुते पीरे।  
जंगल झारि करे मैदाना, औरी काल करे पिसि माना।  
सुगनी नरनी रहे अरुझाई, बिनु फंदे वोय बाझे जाई॥  
चुंगल छूटे न होय निनारा, काल बधिक जीव करे अहारा।  
अमरकोस मृग प्रेम लगाई, नाहक जीव कुहावन जाई।  
अमर छोड़ि जो जाय पराई, काहें के काल बँधे तेहिं भाई॥  
ऐन भवन में श्वान जो परई, भूकि-भूकि वोय आपुहिं मरई।  
कहे 'दरिया' झक झगर झगरा, बिनु फंदे ज्यों बाँझे बगरा

(७)

तुहुँ पिया तुहुँ पिया तुहीं पति मेरो, हौं पत्नी पति नयनन्हिं हेरो।  
नैहर नेह नहीं तृण तन तोरों, पुहुँप पलंग पर प्रेम प्रीति जोरो॥  
जाति नाहिं पाँति कोई निमिषि निमेरो, तेरो मगु जोहत सो पहुँचु सबेरो।  
ज्यो चित चातुक निशि दिन टेरो, कहे दरिया धन भाग्य भौ मरो॥

(८)

सुनु मेरो सुनु मेरो, सुनु मेरो सइयाँ।  
कोने सुनो नयना देखो, गहो मेरी बहियाँ॥  
ऐगुन गुन कछु दिल में न लाइयाँ।  
मैं तो तेरो चेरी भई, काहें के दुरइयाँ॥  
तेरो रुठे ठँवर नाहीं, तीन लोक ठाइयाँ।  
यह तन त्रिगुन, तुमहिं बनाइयाँ॥  
अमृत नाम निजु, हृदय में लगाइयाँ।  
कहे 'दरिया' दास, नित्य गुण गाइयाँ॥

(६)

है कोई गुरु ज्ञानी जो उल्टी भेद बूझै।

अपने से आपु देखो अंधरे में सूझै॥

अनल बीच कमल शोभे प्रेम पत्र फूला।

पवन पानी मगन मधुकर भँवरा रस भूला॥

सीस बिहूना जगत दीसे सीस वालहीं खाया।

पर पांख वाके न देखने में आया॥

जाके प्रभु पारथ कहिये उल्टी बांध सो बांधा।

धनुहा के पनच नाहीं जुझी गया बड़ जोधा॥

उल्टी-उल्टी सुघट कीन्हों कुघट मो डारी।

‘दरिया’ दिल लहरि घनी खोजिएं बनवारी॥

(१०)

जो कोई ज्ञानी ज्ञान बिचारी।

बाट चले तेहिं कांट चुभि गौ, उबट चला भव नारी॥

अन्धरहिं सूझे दूर देश ले, बहिरा सुने अगोचर।

बोधा रहा सो अकथ कथत है, चतुरा भै गौ भोचर॥

अर्थ रहा निःअरथ सो भै गौ, बिना अरथ निजु माले।

बकता रहा सो बहि छितराना, गूँगा बोले बहु हाले॥

शून्य देखे तहाँ कह-कह रहिगौ, जहाँ कर्म उजियारी।

अग्नि वरे ताहाँ मीन उमंग है, यह अचरज बड़भारी॥

आस रहा निराश सो भै गौ, बिना आस ताहाँ आवै।

चलता रहा सो मृतक भै गौ, मृतक उठि के जावे॥

बेध रहा निरबेध सो भै गौ, बिना बेध सो झरई।

कहे ‘दरिया’ यह जग का कौतुक, सोई तरनी भव तरई॥

## शब्द भजन

(१)

सतनाम भजन बिनु बावरे, दिन बीतो रीतो रे॥

छुटिहें जगत स्नेह सगाई, दौलत हाथी घोरे।

जब यमदूत जोरावर के संग, चलिहो हाथ मरोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

सुन्दर देह खेह होई जइहें, का भूनहुँ तन गोरे।

पावक पवन अकाश नीर छित, पाँचो तत्व परखोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

या जग जन्म जिया नहिं कोई, चारो युग निरखोरे।

जो आया सो मृतक हुआ है, बहुत दिनन के थोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

निशि बासर यह चित में राखे, भक्ति भाव मन मोरे।

क्षण-क्षण प्रेम नाम उर अन्तर पलक करहु जनि भोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

अनहद ध्वनि सुनि मगन गगन में अविगति अलख लखोरे।

झलकत पदुम गगन झरि लागी बिना घटा घनघोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

सोहं सुरति ध्यान अजपा करु चितवत चन्द्र चकोरे।

कहे 'दरिया' साहब सतगुरु से रहो सदा कर जोरे।

दिन बीतो रीतो रे॥

(२)

सतगुरु पद रज शुभ बंदि के मन पायो री चैना॥

काम क्रोध मद लोभ मोह जत यह सब मन के सैना।

बीर सधीर एकाएक आगर काहु के मान रखैना।

मन पायो री चैना॥

संत सिक्किलगर भाव भक्ति में, सिक्किल करायो ऐना।

पारब्रह्म की प्रतिमा पायो, सत संगति बिसरै ना।

मन पायो री चैना॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जाकी सुरति शून्य में लागी, छकित भयो छकि नैना। अविगति अकह अलख अन उपमा, काह कहै मुख बैना। मन पायो री चैना॥	सतनाम	जिन्हिं देखा तिन्हिं सुना सबन्हिं के, आपन बात कहै ना। ज्यों कृपनी धन अधिक प्रान ते, राखत कोई लखै ना। मन पायो री चैना॥	सतनाम	मंजिल मोकाम दूरि है जाना, बिनु सतगुरु पहुँचैना। सत जहाज सुकृत कनहरिया, भवजल शोक रहे ना। मन पायो री चैना॥	सतनाम
सतनाम	सुर दुर्लभ तन पाय जगत में जो यह लाभ लहै ना। कहे 'दरिया' धृक जीवन जगत में, नाम बिमुख पठतैना। मन पायो री चैना॥	सतनाम	(३)	सतनाम	जाके अनुभव आगी लागी। कस मर सभे जरेव तन भीतर, ऐसो प्रेमहिं पागी॥ बिनु मसि लिखे कलम बिनु कागज, अगम निगम तत्वसारा। ब्रह्म निरुपन भेद बिचारे, ज्ञान रतन को धारा॥ ज्यों मराल नीर क्षीर विवरण, करि ऐसी बुद्धि शरीरा। हंस दसा कुल बंस है उज्जवल, सभ मति भई गयो थीरा॥ अमृत बुन्द परे फुहकारा, परिमल बास सुबाशा। गगन मध्य सुरति तहाँ रोपो, देखो अजब तमाशा॥ विमल विमल पद करु अनुरागा, निर्मल निरखत मोती। कहे 'दरिया' सतगुरु की महिमा, जगमग झलके ज्योति॥	सतनाम
सतनाम	(४)	सतनाम	जाके एऊ गगन झरि लागी। बिना घट घन वर्षन लागे, सुरति सुखमना जागी॥ अजपा जाप जपे निसि बासर, रहे जगत में बागी। मूल अकह में गमि बिचारे, सोई सदा जन भागी॥ अष्ट दल कमल झरोखा जहवाँ, नाम विमल रस पागी। तिल भर चौकी दने दरवाजा, ताहि खोजो अनुरागी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	37	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

जोरे जारे शब्द बनावे, राग गावे सो रागी।

अलख लखे कोई पलक बिचारे, सोई संत वैरागी॥  
थकित भयो मन गीत कवित्तं, भव विषया के त्यागी।  
शब्द सजीवन पारस परसे, शीतल भयो तन आगी॥  
इत उत कहत काम नहिं आवे, सार शब्द ले मांगी।  
कहे 'दरिया' सतगुरु की महिमा, मेटा करम की दागी॥

(५)

नर तुम गर्व करो सो झूठा।  
सोना रूपा सहन भंडारा, ले न गयो भरि मूठा॥  
छूटा महल भाजन जब फूटा, टूटा नेह सगाई।  
चार जना मिलि काँध उठाया, घाट तुरंते जाई॥  
दाह किया तिल अंजूरी दिन्हा, अब करुणा करि रुठा।  
कहे 'दरिया' दर यम के छेंका, ले न गयो भरि मूठा॥

(६)

तूँ त साहब के बिसरवला हो, दीन बिसरु।  
कौल कइल बहुत भुलइला, बीज बोवला खेत उसरु॥  
मातु-पिता सुत बंधु नारी, तेहि संग कोनवा में घुसरु।  
केश श्वेत अचेत सोवत हो, आई गइलें पन तिसरु॥  
चरन भी थाके चक्षु थाके, कोई नहीं साथ अकसरु।  
कहे 'दरिया' दर यम ने छेंका, कौन राह निकसरु॥

**शब्द रागी झूमरी**

(७)

जइबों वोहि देश जहाँ सतगुरु साई, दुःख नहीं सुख जहाँ क्रोध नसाई।  
तरुवर ऊँच जहाँ फल एक होई, तन मन ध्यान धरि पहुँचे सोई।  
देखा देखी बहु विधि चढ़े सब धाई, बिनु गुरु थीर नाहिं परे भव आई।  
वर्ष दिवस मह अमृत पाई, युग-युग जीये जाके नाम सहाई।  
कहे 'दरिया' शब्द समुझाई, सुरति की डोरी पर होहिं सहाई।

## शब्द मुसलमानी

(१)

खबरी करो बेखबरोँ से।

खबरदार होना है मरदों, काम परेगा जबरोँ से॥

तेजि दे मकर फकर होना है, वुजू साफ करि लीजै।

जाहीर और बातन में दीदीम, हरदम सिद्धः कीजै॥

आप खाय बीबी अब बाँदी, करे कोई मत फाका।

वादर पर दर्वेश पुकारे, कहते हका हका॥

हुकुम हुआ सका वरदारे, फुहुकार करि दीजे।

ना जाने दौ कद निकलेंगे, फर्स बिछवना कीजे॥

निकले बाहर बहुत गरुरी, इधर उधर पेखा।

छरीदार फकीरोँ के परजा, ये चोपदारे छेका॥

रोष हुआ अन्दर के तरफे, कोर्निस करि करि नीचे।

अत्र मँगाया बेइली चमेली, गुलाबां से खींचे॥

अच्छा पलंग बिछवना अच्छा, बीबी खुस मो रहना।

अच्छा पोलाव रकीबी भरि के, अब सिकम में कसना॥

केते मालिक बैठे तख्त पर, मरि मरि मंजिल जाना।

कहे 'दरिया' कोई दर्द दिवाना, फेरि फने का फाना॥

(२)

तेरी बाँदी बड़ी हराफें।

आलिम एलिम तालिम बैठे, तहवाँ कतला काफे॥

जरी वफ्त अव पेन्हे जराऊ, ऐसा जुलुमी जुलुफें।

योगी जंगम ताडि लाये, खोलि दिया तहाँ कुलुफें॥

देगचा चढ़ा बाबरची खाना खाते, सैयद शेख रू हेला॥

बाह-बाह लज्जति बखाने लव ते, बे कलाम की बातें।

पढ़ा कुरान अव कलमा सारा, मुकुरम क्यों हो जाते॥

कादिम के बीच बुजरुक बैठे, तहाँ पियाला फेरा।

लागी बाव भये मतवाला, यों करि सबके घेरा॥

हैफ परा हादी के घर में, मुरसीद खबरें पाया।  
 यह फरजन्द खुदा ने बक्सा, नौबत सभी बजाया॥  
 दस्त वै फिरि तासो होते, सूबे अवर अमीरे।  
 हीर्स हवा में हाफिज कहिये, हरफे किया खमीरे॥  
 हमको कहा कहन को ऐसा, महरमी होय सो बूझे।  
 कहे 'दरिया' दर्वेश महल में, जिन्हके जैसा सूझे॥

(३)

फीट पाजी गाफिल नादाना।  
 कामचोर नेवाले हाजिर, यह तेरो मन माना॥  
 मादर पेदर बिरादर खुश है, दौलत गर्व भुलाना।  
 हरदम मौला दर्द न जाने, जो कादिर फुरमाना॥  
 हक हराम नहीं पहचाने, दोजक दाग दिवाना।  
 दुनियाँ जिकिर फीकिर में लागा, अल्लह नाम नहिं जाना॥  
 लाल पलंग गलैचा लाले, फाजिल बड़ा सयाना।  
 रंग महल में बीबी के सुख, खासा कहत जुबाना॥  
 जिन्ह यह सिकिल किया सिकम में, साहब पाक निशाना।  
 मुट्ठी बाँधे हाँथ पसारे, सो तन गर्द समाना॥  
 गर्व गनीम गर्द गलतान है, जाने ना हक अमाना।  
 कहे 'दरिया' सो बन्दा गन्दा, साहब बकसे दाना॥

(४)

हरदम दम जिन्दा लव लाय।  
 एकदम जो खाली जाये, यम कस बीती देय लगाय॥  
 यह तन तो मस्जिद बनी है, सनमुख सिरिदा करिये जाय।  
 पाँच यहूदे कुफरान ना करिहें, नेकी कागज तब ले जाय॥  
 दौलत दुनिया माल खजाना, यह मति जानहु संग सहाय।  
 खोदि खाद के कब्र में डरिहें, यह तन मिट्टी दिहें मिलाय॥  
 पढ़ि कुरान मौलाना भौ फाजिल, दिल की तसबीह गई भुलाय।  
 बाहर शैल अन्दर नहि जाने, रोशन करो चिराग जलाय॥  
 हाजिर हाजिर सभी पुकारे, बे नमून कहीं देखा जाय।  
 फरज रोज कयामत बन्दे, काके करो दीदार बनाय।  
 'बेबाहा' बे कीमति जो कहिए, अल्लाह अलिफ निशान देखाय।  
 दिल 'दरिया' गुस्ल करु बन्दे, पाक हुआ सभ गई बलाय॥



(५)

इल बीच दर्द राखु दर्वेशा ।

बे दरदी के ठवर कहाँ है, सुनि ले हक संदेशा ॥

काजी मौलना बरबस बोलहीं, पढ़हिं किताब कुराना ।

वा घर की वोय मरम न जाने, पढ़ि पढ़ि भये दीवाना ॥

खुन खराब शराब जो पीवहिं, मुरसिद आपु कहावे ।

दिल में दरद अजहुँ नहिं राखहिं, कलमा बहिश्त बतावे ॥

खून करे खून सो पावे, खून-खून मिलि जाई ।

जाकी गर्दन तुमने मारा, हाजिर हाल खुदाई ॥

हाजिर तख्त बैठा है आपे, करे निसाफ बनाई ।

दिल चश्मा यह खोल कर देखो, नूर जहूर सफाई ॥

पाक हुआ तब पाके मिलिया, खाक ते पाक बनाई ।

कहे 'दरिया' यह दिल की बातें, सो दुर्वेश कहाई ॥

(६)

क्यों बन्दे गाफिल मगरुर ।

बे तालिब तालिब वोय साई, बे तालिब से हैगा दूर ॥

गई सियाही आई सफेदी, लैला मंजनु प्याला पूर ।

गले किताब पढ़ा है मौलाना, जायज हो दर लिखा जरूर ॥

बे दरदी है दर्द न जानै, जीव जबह करि सकनाचूर ।

मुरसिद माफिक काम न किया, घर का पूंजी टूटा मूर ॥

खोलो पलक दीदार करो वहाँ निसिदिन, जहवाँ बाजत तूर ।

आसिक वोय माशूक मोसाफिर, जल थल सदा रहे भूरिपूर ॥

दोय फरिश्ते जबर जोरावर, मुसुक चढ़ाय चलावें कूर ।

कहे 'दरिया' छूटा जग दावा, कागज हुआ हक हजूर ॥

(७)

तैं वोये साफ करु वजूद ।

पकड़ि के यह कैद कीजे, काफिरा जहूद ॥

बारह गुम्बज तीस दर है, हरदम दाना, खूब ।

वोये आसिक मासुक यारा, साहब है महबूब ॥

दर्द ते दर्देस कहिये, ये चर्ब कीजै दूर ।

लव लगाय चाखना है, प्रेम पियाला पूर ॥

फना केते मंजिल जाना, कफन कबुर कीन्हा ।  
 वोय साहब बेकिमति कहिये, आँखे हैं दूरबीन ॥  
 जो हद बिना जरब लागा, फहम मैं फरमीन ।  
 नेकी बदी गवाह दोनों, हिन्दु मसुलमीन ॥  
 वोय हैं तफरीक सभसे, दिल दीदम साफ ।  
 दीदार 'दरिया' दरस करु, तकसीर होगा माफ ॥

(८)

बन्दे मगन रहु महजूद ।  
 हफ्त में यह फना होगा, क्या तेरा वजूद ॥  
 खाक बाव यह आब आतस, पाक तुझे किया ।  
 बंदगी में गाफिलत है, एक रोज फेरि मुआ ॥  
 हराम हक पहचान ले, हैरान जनि तुम होय ।  
 दोय फरिश्ते जबर जाहिर, बदी न राखहीं गोय ॥  
 शराब सारा मना है, जनि जबह करदन जीव ।  
 खून वाहाँ तुझे देना है, जनि लज्जत बुरा पीव ॥  
 मुरसिद महर खोज ले, जेव खोजत अकूत ।  
 अकूफ आगे फहम करु, यह अकिलि बिना बूत ॥  
 दरियाव में दर, पेस करु, जो दर्द है दर्वेस ।  
 दरगाह 'दरिया' देख ले, तब जायेगा यह पेसै ॥

(९)

मियाजी काजी चतुर सयाना ।  
 कहवाँ तेरा साई बसतु है, कछु मरम तुम जाना ॥  
 जाहि गाय से अमृत चुवत है, ताहि मारि के खाना ।  
 पकड़े जइहो यमपुर बासी, तुमके नहीं फुरमाना ॥  
 पीयत शराब खराब हो जइहो, बहिश्ति भेद नहिं जाना ।  
 कुरान कितेब सुनावत सभके, आपहिं फिरत भुलाना ॥  
 रोजा नमाज करत नहिं कबहीं, नाहिं बन्दगी बाना ।  
 साहब से परिचय नहिं कबहीं, मेटि तोहार अभिमाना ॥  
 रोजा दिल में ध्यान धरो तुम, तसबी करो इमाना ।  
 जीवा जन्तु कबहीं जनि मारो, तब कादि मन माना ॥

कहे 'दरिया' यह रब का हुकुंम है, तेजो सभ अभिमाना ।  
जब वोय साहब लेखा मगहिं, निकली कवन जुबाना ॥

(१०)

मोलना पढ़ो किताब कोराना ।

हक हराम नहीं पहचानों, फेरे तसबिह का दाना ॥  
दरद बिना दुर्बेस कहावे, छुरि बगल तर राखी ।  
बिना गुनाह जबह जीव किया, वाकी लजते चाखी ॥  
जेता जान तुम वरवस मारो, खैंचो वाकी खाले ।  
सो फरियाद भयी अल्लाह से, यही तुम्हारी हाले ॥  
रोजा रखे नमाज गुजारे, बोले बांग सुनाई ।  
तुम्हारी खबर ले गये फरिश्ते, बहिरा नहीं खुदाई ॥  
दोज़ख बहिश्त नहीं पहचाने, करे मुरीद घनेरो ।  
पीर कहावहिं पीर न जाने, यम जालिम का चेरो ॥  
नेकी बदी दोनों है खड़ी, जिन्हने जैसा किया ।  
कहे 'दरिया' वोय "साहब" सलामत, वोयल के वोयल दिया ॥

(११)

तुम दरद कफनी पेन्ह ले, दोय तरफ दोय हैं गवाहा ।  
दोय चश्में दिल अन्दरुने, जहाँ जिकिर वाहि वाह ॥  
हर्फ है हदीस महरम, मेहर है महबूब ।  
तुम शैल में साबुत हो, महजूद साहब खूब ॥  
बे ऐब साहब ऐब तुझको, जीकिर करता दान ।  
जनि करद ले करु दर्द तुझको, फाजिल है फरमान ॥  
मुसलमीन हिन्दु रब नाहीं, वोय जात वाहिद पाक ।  
फना केते मंजिल जाना, रक्त बुन्दम खाक ॥  
हादि हद पर अहद बांधेव, सुकुर है सुकुरान ।  
चहार दह है तबक आगे, देखिये अमान ॥  
अजार देवे जार होगा, दिल दिदम दार ।  
कहे 'दरिया' दरद बिना, दोज़ख है सिर पर जार ॥

(१२)

हजरत हज के क्यों कर जावे ।

यह मस्जिद महल नहीं तेरी, मैं मेरी बिसरावे ॥

तुझमें मेहर कहर है तुझमें, कुदरति शहर बसाया ।

रहम किया रहिमान नजर में, तब किबिला हज पाया ॥

बड़े पैगम्बर सारा साफ है, सिफ़्त कोरान बनाया ।

यह फुरमान फाजिल नहिं तुझको, दरद बिना दुःख पाया ॥

रुखी रोटी खात पैगम्बर, ओ भी खुदा से डरते ॥

कलमा पाक पाक है सोई, खाक से पाक बनाया ।

हरदम दम दीदार करो, तुम, दोज़ख आँच न आया ॥

अलिफ़ इलाही इल्म तुम्हारा, गुजर गया गुजराना ।

कहे 'दरिया' तब करम करीमा, रहम किया रहिमाना ॥

(१३)

हज़रत वोय रहिमान हमारा ।

“बेबाहा” बेबाक जो कहिए, पाक सभनि ते न्यारा ॥

वोय रहिमान मुवा नहिं कबहीं, सफ़न सफ़ा उजियारा ।

अस्सी लाख पैगम्बर दर पर, है भी कुदरति सारा ॥

मजलिस दूरि मर्म के पावे, वा पर तन मन वारा ।

सत्रह सै सैलारी जाके, खड़े ऐसा पर दारा ॥

दोय फरिश्ते पढ़े किताबें, नेकी बदी पर यारा ।

दोज़ख बहिश्ति खुन है खुदी, तहाँ पकड़ के डारा ॥

बाबा आदम मामा हऊआ, मियाँ बीबी को प्यारा ।

आसिक दिल का मरहम सोई, तासो परदा फारा ॥

दरद रखे जनि फर्ज बिसारे, हैफ़ हेवानी जारा ।

कहे 'दरिया' दरपेस महल में, अलिफ़ इल्म तुम्हारा ॥

(१४)

यारों वोय रहिमान हमारा ।

वोय हमारे हम उन्हके हैं, इसमें बीच न डारा ॥

दिल चश्मा जो खोल के देखो, सफन सफा उजियारा।

पाक साफ है साहब मेरा, दूर निकट है न्यारा॥

जाके दर्द सोई दर पहुंचे, बे दरदी सो वारा।

आसिक वोय माशूक महल में, वोय है प्रान पियारा॥

चाखे लज्जत जो प्रेम प्याला, मस्त हुआ मतवारा।

कहे 'दरिया' वोय मस्त फकिरा, हरदम दम है सारा॥

(१५)

हजरत कैसी नजर तुम्हारी।

वाँदी एक बड़ी गै बानी, कहर शहर में डारी॥

परदे बैठी खून करे यह, ऐसा जुलुम पसारी।

बीबी होय मियाही खायसि, सेहरा जबर यह डारी॥

नाजुक बहुत नजुली बोली, आखों आसिक यारी।

योगी के घर चेली होती, पंडित के घरवारी॥

कहीं फातमाँ मामा होती, कहीं देवी भौ दरबारी।

हिन्दु तुर्क दोनों करु सिरिदा करते, ऐसी प्रान पियारी॥

मीर उमराँव मलीक जो कहिए, पीर औलिया हारी।

खायेसि सभ कंह खबरी न पाये, आपे रही कुंवारी॥

कहीं टेली कहीं पाठी पूजा, जार जो हद में डारी।

कहे 'दरिया' यह मोरसिद महरम, जीन्ह यह अकीलि सँवारी॥

(१६)

हजरत करो निसाफ बिचारी।

पढ़ी कोरान अदल पर बैठो, जो हद करो सम्भारी॥

खोलि किताब नसीहत करते, हवा हिरिस नहिं टारी।

बिना गुनाह जबह जीव किन्हाँ, दोज़ख जार में जारी॥

किस्ति परी कहर दरियाव में, बोझ लिए सिर भारी।

अति गरकाब परा यह गहिरे, अब को सके निकारी॥

दोय फरिश्ते बायें दहिने, हक हजूर पुकारी।

जाकी गर्दन तुमने मारा, सो दर छेके तुम्हारी॥

रुखी रोटी खात पैगम्बर, उमर तमाम गुजारी।

वोय तो डरते सदा खुदा से, लज्जत बुरा बिसारी॥

बिना दर्द दर किमि कर पहुँचे, बेदरदी तुम मारी।

कहे 'दरिया' दिल साफ नहीं है, बंदगी बाद बिसारी॥

(१७)

पटु पटु बे फकीरा, तुम पढ़ि ले नाम खुदाई।  
 वाकी वहिश्ति खड़ी है आगे प्रेम पियाला पाई॥  
 यह मस्जिद करो तन आपन, बांग चोव चित लाई।  
 पाँच वक्त नमाज गुजारो, हरदम हज के जाई॥  
 मन कर तसवी अज़ब वज़ीफा, दीदम दार लगाई।  
 अलिफ निशान खड़ा है आगे, किबिला सीस नवाई॥  
 कादिर गनी करीमा कर्म है, रहम सलामत पाई।  
 इश्क अल्लाह अलिफ के देखो, तब दर्वेस कहाई॥  
 हक हराम दोनों पहिचानो, सरा यह फुरमाई।  
 कहे 'दरिया' दिल जीकिर धनीका, मक्कर सभे उड़ाई॥

(१८)

वाह-वाह ऐसी लज्जति बखाना।  
 चर्ब कबाब चखा नहिं कबहीं, भंग भुजा नहिं जाना॥  
 सादी गमी तोसा नहीं तुरुस, है दर्वेस दिवाना।  
 छरी न छुवे परी नहीं खावे, कलिमा पाक अमाना॥  
 आसिक मिया माशूक महल में, है महबूब एगाना।  
 सीने साफ जमाल जहूरा, दिल बिच दरद बेगाना॥  
 हरदम तसविह दाना गनते, कुंज किनारे आना।  
 दिल में जीकिर फीकिर क्या करना, फका फकर रकाना॥  
 सिरी इलाही सीफित सफाई, कर्म करश्मा जाना।  
 कादिर गनी मनि दूर करना, है हफ्ते बीच फाना॥  
 दोजख दाग दरोग बिसारे, है भी साँच इमाना।  
 कहे 'दरिया' दर्वेश वलि है, सो रब के मन माना॥

(१९)

मोलना वाये पीर हम नाई।  
 गुप्ती छूरी बगल तर राखे, जबह की बेरि पजाई॥  
 काढ़ि करेजा गर में गुर्दा, भुनि कबाब लगाई।  
 लजत बखानहि वाह-वाह टुक, तुम भी लीजै भाई॥  
 मुरसिद कादीम महरम वाते, पढ़े ओजीफा जाई।  
 हक हराम नहीं पहिचाने, वहिश्ति कहा तुम पाई॥

पीर पंजा ले सिजरा लिखे, गुजरे संग न जाई।  
 हरदम मौला हक न जाने, क्या ततबीर बताई॥  
 साराअ सफेदी अन्दर साफि, रोशन करो सफाई।  
 कहे 'दरिया' वोय वहिश्ति पियाला, दोजक आँच न आई॥

(२०)

तैं वोय रंग महल बीच आसिक हुआ।  
 आम खास में खासी औरत, दिया फकर ने दुआ॥  
 खासा तख्त वख्त भी खासा, सख्त हुआ दिल तेरा।  
 तख्त बख्त सभ खाक मिलेगा, फेरि मिट्टी बिच ढेरा॥  
 खासा खाना खासा पेन्हना, खासि मजलिस सोई।  
 खास दोस्त को याद न किया, गोर कफन बिच होई॥  
 खासा किताब कुरान भी खासा, दिल खासा नहीं हुआ।  
 खास साहब को खुस नहीं किया, खसर फसर होय मुआ॥  
 खास जाना जबह नहीं करना, दिल बीच दरद न आया।  
 जाकी खून है वाकी गर्दन, जिन्ह तदबीर बताया॥  
 खासा वहिश्ति दोजक नहीं खासा, खुसी करे सो जावे।  
 कहे 'दरिया' दर छेके फरिश्ते, मंजिल मोकाम न पावे॥

(२१)

वै मैं हुआ-हुआ हौं आसिक तुझ पर।  
 तुम मुझको देखा मैं तुझको देखा, यही दीदारे बुझकर॥  
 दरस तुम्हारा दीदम हमारा, यही दीदारे पाई।  
 पाक साफ है साहब मेरा, रोशन जमीर सफाई॥  
 अज़ब जहूरा अजब करश्मा, अजब तुहिं गुलसीन बनाई।  
 अज़ब जमाले नूर बरि सदा, बेइलि चमेली लाई॥  
 अज़ब सो गूंगा ज्ञान गहिर है, अज़ब झरोखे झकना।  
 कहे 'दरिया' हुआ दिवाना, दुरि करो सभ पेखना॥

(२२)

काफर सो करे कुफरान, राह कुराह चले गै बान।  
 पीवे शराब खून करी खावे, सो सिताब दोजख के जावे॥

राज हो चलते जीव जहाँना, हुकुम साँई का नाहिं माना ।  
 नाहिं माने रब का फरमान, क्या हुआ जो पढ़ा कुरान ।  
 जेहि किताब पर साहब राजी, तापर अमल करे नहिं काजी ।  
 रुखी रोटी उस पर घीव, टुकड़ा देते निकला जीव ।  
 द्वार खड़ा फकीर पुकारे, आप खाय वोहि ईटन्हीं मारे ।  
 जो कोई दरद पराया बूझे, होय मोम दिल मौला सूझे ।  
 छोड़े कहर मेहर में आवे, खून खराब सभे विसरावे ।  
 ताते जार पावे नहिं कोय, दिल 'दरिया' बुजुरुग है सोय ।  
 (२३)

आवाज एक मक्का से आई, सो आवाज जग में फैलाई ।  
 ऐ मुसलमान इमाने राखो, तुम नाम अल्लाह का गाई ।  
 रोजा राखो नमाज़ गुजारो, बंदगी भेख बनाई ।  
 नेकी राह चलो सभ मिलि के, बदी देहु बोलाई ॥  
 खून खराबी दावा गीरी, छोड़ो सभ चतुराई ।  
 छोड़ो शराब जीव का मारना, वहिश्ति मिलेगा भाई ॥  
 भूले काजी भूले मोलना, भूले राह बतलाई ।  
 कागज पढ़ि-पढ़ि दुनियाँ बुझावें, दीन्ह नाव भठिआई ॥  
 मच्छ कच्छ कहु किन्ह फरमाया, किन्ह ने गाय कुहाई ।  
 सत पद साँई कहाँ समाना, सो मोहिं देहु देखाई ॥  
 चारि वार है रब का हुकुंम, दुनियाँ ना गति पाई ।  
 कहे 'दरिया' नहिं पिया प्रेम रस, बैठे ताला लगाई ॥  
 (२४)

मक्का मदीन मकनपुर डेरा, सब घट में रहा समाई ।  
 कलमा से नहिं तरिये भाई, अपरम्पार इलाही ॥  
 कलमा कहे गहे जो हियरा, दिल बिच दर्द बुझाई ।  
 मनि मोहम्मद मन करु दीयरा, हीया में देत बराई ॥  
 येही दीयरा दुनियाँ के देखा, तब सूझि परे खुदाई ।  
 बन्दा गन्दा परदा नाहिं, साँई सुरति लगाई ॥  
 मकर करे सभ फकर कोई है, दीन दियानत आई ।  
 कहे 'दरिया' यह हिन्दू तुरुक है, दोनों रहे भुलाई ॥



(२५)

हजरत मगन महबूब हैं साहब ।

पीर पैगम्बर केते गनिये, सो भी भये जग नायब ॥  
 बेचूँ चौगुन सीपित का करना, है भी नूर निनारा ।  
 पाक साफ है साहब मेरा, आसिक दिल को यारा ॥  
 चरब चखे तुझे गरज कहाँ है, यह लव जलत बुराई ।  
 असल अल्लाह दीन को साहब, खून नहीं फुरमाई ॥  
 मुसलमान है इमान मुकर्र, कलिमा कल है सारा ।  
 सब आफ्रीन एक करि बूझो, जो फरजन्द तुम्हारा ॥  
 जीकिर करो जाहिर बातन में, दिल चिराक रोसनाई ।  
 दर्दवन्त दुर्वेश जो कहिए, तब होय सीन सफाई ॥  
 मरना हक हदीस में देखो, हफ्त में हफ्त बनाई ।  
 कहे 'दरिया' दस्त पंज है पीरा, तब होय फजिल खुदाई ॥

(२६)

वे तो रोय रोय दिया, आसिक है किसका ।  
 गगन में मगन सघन झरि लागी, वोय साहब है तिसका ॥  
 पीरे मुरीद खसर फसर, जिन्ह देखा ना नूर सफाई ।  
 चश्मा ऊपर अहे करश्मा, कफा कतल होय जाई ॥  
 जिन्ह जरबुन्द जतन करि राखा, जो जर साथ न जावे ।  
 गया सोई जीन्हि हक पहिचाना, ऐसी लजत बतावे ॥  
 हक भी मरना नाहक मरना, फेरि मरना है भाई ।  
 कहे 'दरिया' दिल दगा दूरि करि, तबे दरस निजु पाई ॥

(२७)

वाह-वाह मैं तो खाकी बंदे ।  
 “बेबाहा” वोय पाक गनी है, यह खील्कत सभ गंदे ॥  
 खाक वाक औ आब आतस, यह गुलशीन बनाया ।  
 वोय माली के खूब बागीचा, बेइली चमेली लाया ॥  
 अत्र की ऐसी है खुसबोई और गुलाब गरीबी ।  
 यह दरगाह कबूल परेगा, तब तो मिया बीबी ॥



खाय ले कछु खर्च करु, दर्वेस वलि संत ।  
सरकार में होय दाखिला, तुम तौल तौला तंत ॥  
दर्द राखो फरज देखो, हरफ है फरमान ।  
बदी के यह कतल कीजै, आप है अमान ॥  
दुरि नाहिं निकट देखो, खास है खुशवोय ॥  
कहे 'दरिया' नूर झलके, वाह-वाही होय ॥

(३१)

बंदे सुमिरु साहब धनी ।  
कौल से बे कौल हुआ, जुबा दीन्हों गनी ॥  
आप खालिफ खलक किन्हाँ, पलक में सब अनी ।  
सीकम में जिन्हि रकम दीन्हों, लाल हीरा कनी ॥  
मगरुर मति तुम होहुबे, यह तेजु ममिता मनी ।  
आप कादिर कलम लीवो, वर्क दीये बनी ॥  
कुरान पढ़ि तुम शैल बूझो, साबुत करु यह तनी ।  
लजत लाल न अधर चाखे, वहिश्ति खासा बनी ॥  
दरियाव में गरकाब हो तुम, ऐन ऐना मुनी ।  
दीदार 'दरिया' दरस करि ले, फेरि जायेगा यह दुनी ॥

(३२)

दरद दिवाना वलि फकीरा, ज्ञान रतन लिये डोले ।  
अपने मस्त हुआ खुशिहाला, साधुन्ह से टुक बोले ॥  
ज्ञान की गुदरी प्रेम का धागा, सुरत की सुई चलावे ।  
निशबासर वाही के सीवे, झिन-झिन टोप बनावे ॥  
अमि पियाला प्रेम से पीवे, भरि-भरि शोक में आवे ।  
ज्यों गसन्द पगु हलुके-हलुके, झूमत द्वारहिं जावे ॥  
फक्का फकर फकीरा पीरा, ऐसा अदल चलावे ।  
पीर के पंजा राखे सिर ऊपर, हाजिर वहिश्ति बतावै ॥  
दिल का महरम देखु दिवाना, यों गरकाब कहावै ।  
गूंगा के गुर खटो न मीठो, काहु से कछु न बतावै ॥



(२)

ऐसी बनी आदम की बातें।

दो गोसइयाँ दोनों ने थापे, उमग करे जीव घाते॥

कहे मुहम्मद बहिश्त हमारा, कलमा पाक सुनाया॥

राम कहे बैकुंठ हमारा, जप तप संयम लाया॥

भले पैगम्बर गाय फरमाया, गाय गरीबी ऐसी।

यह जंगल घेरि हिरनी के मारे, त्रेन अहारी वैसी॥

ये तीसो रोज जो हृद बहु करते, मुर्गा खोज मँगाया।

ये भी व्रत करे बहुतरो, मांस मछरिया खाया॥

वोय करि नमाज तसबी के फेरे अन्दर मैलि न धोया।

यह पाहन पूजि जपे कर माला, मुक्ति महातम खोया॥

यहाँ राज किया राजपूत कहाया, राम जनेऊ नाया।

उहाँ फरजंदे दीन मुहम्मद, उन्ह भी सुन्त कराया॥

वहाँ मक्का हरिद्वार हमारा, नीर संगीन समेता।

चलते-चलते पाँव पिराना, भागर परि गौ रेता॥

उहाँ हजरत इहाँ हरि कहाया, उहाँ कुरान इहाँ गीता।

बेहर-बेहर राह चलाया, यम जालिम ने जीता॥

छोड़ो बहिश्त बैकुंठ तुम्हारा, भर्म ढाहु मैदाना।

हिन्दू तुर्क का साहब एके, अविगति आप अमाना॥

मरि-मरि जाहिं वादि नहिं छोड़े, कफन कबूर बनाया।

हिन्दू के पति अग्नि जो कहिये, जारि के भस्म उड़ाया॥

हजरत भले और हरि भले हैं, दर के खोजु दर्वेसा।

कहे 'दरिया' हम दोनों गवाह हैं, सुनि ले हक संदेसा॥

(३)

पंडित वेद कतेबहिं देखो।

आपुस में झगड़ा नहिं करिये, अगम अगोचर पेखो॥

ये नमाज वोय पूजा करते, हिन्दू तुर्क का मेला।

दोय पर्वत यह बुड़त देखा, बिरला जन कोई खेला॥

ये दाबहिं नाँक झकोरहिं पानी, तरपन बहुविधि लाया।

कान मुंदि बांग सुनाते, उन्ह भी शोर लगाया॥



सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	ये मलेछ वोय कहते काफिर, आपन घर नहिं सूझा। हिन्दू तुर्क यह दोनों खमीरा, एक केहु नहिं बूझा॥ वोय कोरान यह गीता पढ़ते, जबह झटक करि खाना। असल अल्लाह दीन के साहब खून नहिं फरमाना॥ एक वाट दोय झगरा लाया, आपस में अरुझाना। कहे 'दरिया' नहिं हिन्दू तुर्क है, जिन्हिं साहब पहिचाना॥ (७)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	यह सभ नीर पवन ते भयऊ, पाँच तत्व से अयऊ। माता के रुधिर पिता के नीरा, यह गुलसीन बनैऊ॥ एके कदम सिर है एके, एके हड्डी चामा। एके मुख रसना है एके, हिन्दू तुर्क का जामा॥ कान छेदावहिं पहिरि जनेऊ, हम ब्राह्मण के जाया। सुन्नत करि के पाक भये सब, मुसलमीन होय आया॥ जपहिं गायत्री ज्ञान हमारा, त्रिय संध्या धरि बाँधा। कलमा कहे कुफुर नहिं है, जपी नमाज़ ही साधा॥ ये पावन कहि आपु कर हनहीं, हिरन खाले खैंचा। ये गाय जबह करि भई हलाले, पकड़ि फरिश्ते ऐंचा॥ वेद कितेब ले किन्हों ढगरा, ये पंडित वोय काज़ी। कहे 'दरिया' जेहिं दया दर्द नहिं, ऐसा अमहक पाजी॥ (८)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तेरी कुदरति अजब बनी। दोनों दीन में खुसी खूब हैं, अपनी बात भनी॥ पढ़े किताब खता नहिं माने, जीव जबह करि खावे। गीता ज्ञान में ध्यान बिचारे, बहुरि सगौती पावे॥ अठई दसई पाव पूजावहिं, अजया सूत हरि लीजे। बारहवफाते फजिल खुदाई, मुर्ग जबह करि दीजे॥ एति जारि जो हद करत हैं, दगा करे जीवों को हानी॥ छोड़ि बहिश्ति दोज़क के धावे, बदी करे सिरहानी। तेजि बैकुंठ परे यह औघत, गुरु की बाट भुलानी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



पैठि हुजरे हाजिर हज है, यह हजरत की बातें ।  
 भये गलतान गुफा में गलि के, चिन्हे शीतल नहिं ताते ॥  
 बिना दरद दर्वेस कहावहिं, छुरी बगल तर राखा ।  
 पाठ पुरान करहिं वोय पंडित, दया कबहिं नहिं भाषा ॥  
 दोय पर्वत के बीच बात यह, चीन्हों कहर खुदाई ।  
 कहे 'दरिया' वोय हिन्दू तुर्क नहिं, जिन्हिं सब सिक्किल बनाई ॥  
 (६)

रे कोई यार महरम जान ।  
 ज्ञान सतगुरु विमल झलकत, करत अमृत पान ॥  
 पंडिता पढ़ि वेद विमल, कथा कवि पुरान ।  
 किमति मोलना बहुत फाज़िल, सिफ़्त साफ कुरान ॥  
 श्लोक करि प्रबंद छन्द यह, जानि जग बुद्धिमान ।  
 वैत बहुते बयान किन्हों, मोम मुसलमान ॥  
 संस्कृत साधेव भर्म में यह, धरत बग को ध्यान ।  
 फारसी में फहम दवरे, चर्ब चिकना खान ॥  
 हुजरे में हज खोजत, जो हद करि गलतान ।  
 साधि आसन पैठि गुफा, पवन किन्ह परधान ॥  
 मकर बहुते, फकर एक है, जिकिर करदा दान ।  
 कहे 'दरिया' दया जाके, भक्ति बसी भगवान ॥

### शब्द अरील चौतीसा

(क)

कका ज्यों आनि कुफुतगर लेई कनक लोहे दिन्हा ।  
 यह झाई झलकत बहुत सुरेख माति सभे किन्हा ॥  
 यह काया कर्म है काल भेद चिन्हे बिना ।  
 हरे हाँ रे अवधू कर्म ठीन सिर लेई काम तवने किन्हा ॥

(ख)

खा खरा करो यह भेद, खटो मिठो है भाई ।  
 ज्यों खराद पर आनि हीरा, जौहरी बिलगाई ॥  
 खरा सोई है ज्ञान, शब्द सांचो चिन्हा ।  
 हरे हाँ रे अवधू ज्ञान खर्ग लिये हाथ सुर सनमुख किन्हा ॥

(ग)

ग गा गहिर ज्ञान निजु सार, भेद बाँको बड़ो।

यह ज्ञान रतन लिये जान, गगन गर्जत खड़ो॥

गर्व छोड़ मति हीन खोज आगे करो।

हरे हाँ रे अवधू गर्व करो जनि जानि बाँध बेरी भरो॥

(घ)

घ घा घर में क्या दबका है चोर घर भेद जाना करो।

यह छोड़ घर की बारि आनि मैदान परो॥

घर की सुधि बिसराव शब्द निश्चय धरो।

हरे हाँ रे अवधू वा घर के तुम खोज प्रेम सागर भरो॥

(च)

च चा छोड़ चित चंचल चतुराई।

यह चितवन करो चेतन में जहाँ कमल दल भाई॥

चकमक झारु गगन में, ज्योति जगमग बरो।

हरे हारै अवधू छोड़ चंचल की चाल ज्ञान निश्चय धरो॥

(छ)

छ छा ये जब मिले छवनी का भेद तबे छल छूटे परे।

यह छोड़ डगर की डार डाइन आपुहिं मरे॥

डार पात सब छोड़ पेड़ गहि के धरो।

हरे हारै अवधू गर्व करो जनि जानि बांध बेरी भरो॥

(ज)

ज जा ये जरा मरन जीव जाय चौरासी परे।

जर के सेई सभनी मिली सापिनी डँसि डँसि धरे॥

डसा हुआ सभ जीव जानि जहड़ाई।

हरे हाँ रे अवधू झूठा झगरा छोड़ झरे अमी लवलाई॥

(झ)

झ झा झलकत अगम निशान झरोखे जलद है भाई।

झरि झरत काया के अग्र घाट इहई ठहराई॥

झारि झपट ले ज्ञान तबे बनि आई।

हरे हाँ रे अवधू जबर परा सिर ऊपर जार धक्का है भाई॥

(ट)

ट टा एक टेक भली है टाँकी, टरत टरे नहीं टारे।

यह टकर टकर खाहि, गर्व से आनि टका जो भरे॥

टक-टक मौन भला है, जो बैन बिचारे बोला।

हरे हाँ रे अवधू काटि कठोरे पैन, अंधा धुंध धोखे जला॥

(ठ)

ठ ठा ठग से क्या ठगि लेई ठगौरी जनि करे।

यह ठगा हुआ संसार, ठगन से क्या लरे॥

ठग ठाकुर जेहिं गाँव कुशल कैसे परे।

हरे हाँ रे अवधू ठोंकि ठाँकि काम काम गजर मारा करे॥

(ड)

ड डा डगमग डगमग कहु कौन करे।

यह छोड़ डगर की डार डाइन आपुहिं मरे॥

डार पात सब छोड़ पेड़ गहि के धरो।

हरे हाँ रे अवधू डर को दीजै डार डेरा निश्चय करो॥

(ढ)

ढ ढा ढोल मारु मैदान डगर में।

ढोल धमक्का सुनहीं, जो सूर होहिं नगर में॥

ढाल लेई कर हाथ, तेग दहिने भला।

हरे हाँ रे अवधू ढोल मारि रहु ठौर, शूर सनमुख हला॥

(त)

त ता तिनका तोर यम से, तिलक सतनाम है।

यम तन की तप्त मेटाव, सोई निजु काम है॥

तरुवर छाँह शीतल सदा, शब्द निजु सार है।

हरे हाँ रे अवधू तर्क करो, यह त्याग सोई निजु प्यार है॥

(थ)

थ था थका हुआ सभ थीर शहर में थाना।

थर-थर कांपहिं लोग गनीम में डेराना॥

थै-थै किन्ह पयान जगत युक्ति जाहिर किन्हा ।

हरे हाँ रे अवधू तख्त दीन्ह थै जानि सुकृत साँचो चिन्हा ॥

(द)

द दा दया बड़ी है चीज जाय दर्शन करो ।

यह दर्पन दाग ना लागु जाय सहजे तरो ॥

दर्द दाग सब जाय दया दिल आई ।

हरे हाँ रे अवधू वादर के तुम खोजु कहे, 'दरिया' समुझाई ॥

(ध)

ध धा धीरज धरो हिये माँह धर्म का मूला ।

यह धंधा करे संसार धर्म नहिं फूला ॥

धरि परी है माल अवरि का लीन्हा ।

हरे हाँ रे अवधू धर्म छूटा तेहि दिन काम ऐसो कीन्हा ॥

(न)

ना ना निरखि नाम निजु सार निःअक्षर सोई ।

नाम बिना नहिं काम जो कोटिन जतन करे कोई ॥

नीर क्षीर विवरन करे संत सुबुद्धि है सोई ।

हरे हाँ रे अवधू नाम कहो सतनाम भजन सभ ऊपर होई ॥

(प)

प पा पार-पार सब कोई कहे वार भटका रहे ।

यह पलक नाम नहिं लेई पलंग पवड़ा रहे ॥

पलक तौलि ले नाम काम तबे सही ।

हरे हाँ रे अवधू भुजा फरके जिनका शूर सदा सही ॥

(ब)

ब बा ब्रह्म सकल सभ माँह जानि विवरन करे ।

यह ब्रह्म परे जब चिन्ह काम तेहिं ते सरे ॥



क्या दूढ़े मति हीन सोग सागर भरा ।  
हरे हाँ रे अवधू संशय सकल बिसारि नाम निरखेतरा ॥  
(ह)

हा हा हरिहर करते गया हरिद्वार जहाँ है पथल पानी ।  
हरि हरेव सभन्हि कर ज्ञान मोह दीन्ह हरि जानी ॥  
है जीवन जग थोर बूझे कोई ज्ञानी ।  
हरे हाँ रे अवधू हाँ-हाँ तमाशा जोर भूले भटके सभ प्रानी ॥  
(ज्ञ)

ज्ञान कहों सभ जानि मोनि कोई संत धरे ।  
होखे सुबुद्धि सुजान काम तेहिं ते सरे ॥  
योगी जंगम सेवड़ा इन्हते पंथ निनारा ।  
हरे हाँ रे अवधू कहे, 'दरिया' दर सेऊ सोई हैं संत पियारा ॥

### शब्द कबित रस खंडन

(१)  
है रस खंड सो त्रिया डंडन, त्रिविधि ताप सो पाप नसायो ।  
सो भव भाग्य सुहाग के सागर, आगर नाम तबे पति पायो ॥  
कागज काँच में साँच रचो यह, बाँचत सो निसि बासर आयो ।  
'दरिया' जो कहे चित चुभि रहा, यह चित के बीच महाचित्र पायो ॥  
(२)

अरु काहे के आसन बासन बाँधत, काहे के पवन पीवे दिन राती ।  
अरु काहे के मानसरोवर संगम, काहे के ज्योति में मोती की पाँती ॥  
काहे के योग विहंगम खोजत, का द्रुम फूल भँवर रस माँति ।  
'दरिया' जो कहे जब ज्ञान हुआ, तब काहे के खोजत जाति अजाति ॥  
(३)

अरु काहे के योग है काहे के भोग है, के ध्यान धरे नर लोई ।  
अरु काहे के तिलक काहे के माला है, काहे के सेली गुथे सब कोई ॥  
अरु काहे के ताल मृदंग बजावत, काहे के नाद करे बहु रोई ।  
'दरिया' जो कहे जब ज्ञान हुआ, तब पाप न पुन्य न जंत्र समोई ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(४)				
सतनाम	अरु का छव चक्र में चित चलावत, काहे के चंद चकोर की राति ।	सतनाम	अरु का दल कमल कला वृगसे भौ, काहे के घ्राणि लगे चहु पाँति ॥	सतनाम	अरु काहे के जावन जानि जमावत, का घृत काढ़ि के लेसल बाती ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब हुआ, तब काहे के खोजत जाति औ पाँती ॥	सतनाम	(५)	सतनाम	अरु काहे के भँवर गोफा मंह पैठत, का कसि काम के लावत तारी ।	सतनाम
सतनाम	अरु का ब्रह्मंड अखण्ड विराजित, का गृहि त्यागी सुता सुत नारी ॥	सतनाम	अरु का पढ़ि वेद पुरान परायन, काहे के निर्गुन सगुन विचारी ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, अपने पगु हाथ कुल्हारिन मारी ॥	सतनाम
सतनाम	(६)	सतनाम	अरु त्यागत लोन अलोन जो खात है, कै तप तेजत सो गृहि नारी ।	सतनाम	अरु काहे के डंड कमंडल लेत है, काहे के योग भये ब्रह्मचारी ॥	सतनाम
सतनाम	अरु का गले कंथ जो पंथ के जोहत, का मनि मुन्द्रा कान के फारी ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, अपने पै आप सो आप बिसारी ॥	सतनाम	(७)	सतनाम
सतनाम	अरु त्यागत चारिऊ वेद विचारी सो, त्यागत डंड कमंडल सोई ।	सतनाम	नाहिं न राग विराग विवेकित, नाहिं न तीर्थ मंजन धोई ॥	सतनाम	नाहिं न हेला न मेला न खेलतू नाहिं न पंथ में प्रीति समोई ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान हुआ, अपने मँह आपु चीन्हे सत सोई ॥	सतनाम	(८)	सतनाम	अरु काहे के तत्व निःतत्व के खोजत, काहे के सुरति निरति न्यारी ।	सतनाम
सतनाम	काहे के इंगला पिंगला फेरत, काहे के पाँच पचीस बिचारी ॥	सतनाम	का हठ निग्रह निगम नेति है, क्या षट कर्म करे अधिकारी ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, तबही यम फंद पसारी के मारी ॥	सतनाम
सतनाम	(९)	सतनाम	अरु काहे के चौका चंदन चर्चित, काहे के दीप लेसे बहु भाँति ।	सतनाम	अरु काहे के आरती शंख सुधारत, मुनि मत भेद सुने सब माँति ॥	सतनाम
सतनाम	सोई है गाफिल गमी न जानत, कहत फिरे हम संत की जाति ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, यह लिखि देवे सब पान की पाति ॥	सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(१०)				
सतनाम	सतनाम	कहीं योग जगा कहीं भोग लगा, कहीं रोग रोया मद माँति रहा। कहीं दान करे कहीं पुन्य तपे, कहीं पाप के पंथ में ग्रंथ कहा॥ कहीं झूलत है झूलना फूलना, कहीं लाय भभुति न काम दहा। 'दरिया' जो कहे सतनाम गहो, नहिं नाम लहा दिन जात बहा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	(११)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कहीं शेख जो भेष अलेख बने, कहीं ध्यान धरे मछरी पकरी। कहीं ज्ञान औ ग्रंथ अकथ कथे, कहीं चुण्डित मुंडित वादी अरि॥ कहीं नाचत है नटवा नटनागरी, सागर सोग में विषि भरी। 'दरिया' जो कहे दरगाह सेवो, जहँ कंज के पुंज में ज्योति बरी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	(१२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कहीं थेई थेई तत्काल करे, कहीं नाचत है नट नागर नीके। कहीं बाजत ताल मृदंग महाध्वनि, ध्यान धरे गणिका गुण फीके॥ कहीं तेजत साधु असाधु के संगत, बाँधि लिया यम सो जन जीव के। 'दरिया' जो कहे जड़ भूलि परा, मुंढ माँति रहा ममिता मद पीके॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	(१३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कहीं राम कहे कहीं कृष्ण कहे, कहीं शिव कहे शिव व्रत जो ठाना। कहीं योग जगा कहीं भोग में व्याकुल, सोक के सागर सो दिल माना॥ कहीं राज के काज में बाज उड़ावत, साज भला पर दरद न जाना। 'दरिया' जो कहे दर छेंकि रहे, जो साहब के दर ना पहिचाना॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	(१४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कोई राम रहीम, करिम कहे, कोई विष्णु कहे कोई शंकर ध्यावे। कोई तीर्थ करे कोई व्रत करे, कोई नेम अचार जोई जेहिं भावे॥ कोई माला पेन्हे कोई शैली गूथे, कोई बूत पूजे कोई शंख बजावे। वोय सतवर्ग मरे न जरे, 'दरिया' दिल ताहिं को ध्यान लगावे॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	(१५)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कहीं चुंडित मुंडित पंडित है, कहीं योग मता मंह जोग साधे। कहीं चन्द जो सूर सुधासम खोजतू कहीं नेऊली नट उलटि के बाँधे॥ कहीं ब्रह्म निरुपन निर्गुन निगम, सगुन में कहीं आरति राधे। 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहीं, बहु पेखन नैना सो नाचन नाधे॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	64	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम		सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



(१६)

कहीं गुरु ज्ञान जो ध्यान धरे, कहीं व्रत नेम पूजा बहु ठाने।

कहीं तीर्थ तीर जो नीर में मंजन, देवल में कहीं देवी बखाने॥

कहीं काँवरी काँध करे शिव शिव, कहीं जीव अमृत में विषि साने।

‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, बीच काँच के महल में श्वान भुकाने॥

(१७)

कहीं कंद जो मूल खाचे बसि कंदला मंह, कंद्रप काम निकंद न होई।

कहीं जीवन आस जीवे बहुते, तेहि बीचहि काल अचानक खोई॥

कहीं पत्थर पानी मूरति पूजत, शीश पटकि सदा पुनि रोई।

‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहीं, पढ़ि पंडित वेद बिचारत कोई॥

(१८)

वोय जानत जान अजान न जानत, ना सतनाम न राम न राजा।

नाहिं न मुक्ति न युक्ति न योग है, नाहिं न खोजत छत्र न छाजा॥

नाहिं न मूल न फूल प्रकाशित, नाहिं न सुनत किन्नर बाजा।

‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान हुआ, तब जाती न पाँति न लाज न काजा॥

(२०)

आदि जो ब्रह्म सो अंत बिराजित, आदि हुआ सो तो अंत में आवे।

ढूंढत भेष अलेख अनेक ही, पद परिचय में भेद बतावे॥

कहीं कर माल जपे निसि वासर, कहीं अजपा धुनि ध्यान लगावे।

‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान नहिं, केतनो पढ़ि पोथीन सो गुण गावे॥

(२१)

स्वर्ग पताल खोजे महिमंडल, खोजि रहा तब ब्रह्म दृढ़ाना।

जाप ना ताप ना मंत्र न मीत है, नाहिं ना काहू के हाथ बिकाना॥

दूत ना भूत ना जम ना जादू है, राव औ रंक के संक ना आना।

‘दरिया’ जो कहे जब ज्ञान हुआ, तब काहे के कंचन मैलि समाना॥

## शब्द हरिजन शरह

(१)

हरिजन हरि के कहत एगाना ।

है करि निकट विकट यह माया, सो हित नाहिं बेगाना ॥  
 ब्रह्मादिक सनकादिक कहिए, मख पुराण कहिं दीन्हा ।  
 जप तप संयम जाल बड़ी झीनी, बाँझे बहु प्रवीना ॥  
 एक पुरुष एक माया कहिए, निरंजन भगवाना ।  
 ढूँढ़त फिरे मर्म नहिं जाने, सभ घट रहा समाना ॥  
 जंगम योगी भेष विविध है, आपस में अरुझाना ।  
 सोई विमल मल वाके नाहिं, मल स्वरूप में साना ॥  
 पावरी एक भावरी बहु तेरी, वा फूल रहित अमाना ।  
 मधुकर मालती घ्राणि ना छोड़े, अमृत तेजि विषि पाना ॥  
 वादर छोड़ि दूसर दर देखहिं, दम्पति प्रेम बखाना ।  
 कहे 'दरिया' जग कनक कामिनि, कर मीज सभ पछताना ॥

(२)

हरिजन हरि पद राता ।

हरि की बात सुनो है संतो, तीनों गुन मद माता ॥  
 मन की प्रतिमा जगत ईश है, सो मन अगम अनंता ।  
 राम माते रावण भी माते, ममिता वेद भनंता ॥  
 मने सुर नर मुनि कैद कियो हैं, यह मन अतीत अनंगा ।  
 जल की लहर जल ही में मिलिया, मन भौ विविध तरंगा ॥  
 सो मन पैठा शक्ति सीया में, दसकंधर धरि लाया ।  
 मन की डोरी बाँधा मन मूरख, लंका तुरन्त ढहाया ॥  
 मन पैठि रावण कहँ मारा, राम भये जग कर्ता ।  
 इन्ह के मारा उन्ह के मारा, यहि विधि जग में बर्ता ॥  
 यह मन अनल अनिल समीरा, झुलूहा झीन बनाया ।  
 कहे 'दरिया' मन भौ 'परमेश्वर' सभ मिलि सीस नवाया ॥

(३)

हरिजन हरि बाजी पहचानो ।

एक भुलवना आगे आया शब्द हमारा मानो ॥

बावन रूप होय बलि किहें गयऊ, यज्ञ विध्वंस सभ कियऊ ।  
 तीन लोक तीन पगु किन्हा, आधा पीठ नपयऊ ॥  
 बावन का वोय बावन रहि गौ, नहिं बढि लागु अकाशा ।  
 वाकी कटक घूमन सभ लागी, देखा अजब तमाशा ॥  
 बलि के पकड़ि ज्यों चाक घुमाया, ले सुरसरि में डारा ।  
 इन्द्र लोक इन्द्र कहँ दिन्हा, बाँधि पताले मारा ॥  
 लक्ष गाय नृग नृप ने दीन्हा, सो फल मिला तुरंता ।  
 अंध कूप में झूलन लागे, भली भक्ति भगवंता ॥  
 हरिश्चन्द्र मंद जो पल में भयऊ, बहुत सासना कीन्हा ।  
 राजा रानी सूत समेता, परबस ले के दिन्हा ॥  
 आपे नाग आप कहँ नाथा, ज्यों नट करै तमाशा ।  
 इन्द्रजाली को जीते ना कोई, नर देखे चहुँ पासा ॥  
 यह मन आवे यह मन जावे, मन के दस अवतारा ।  
 सुर नर मुनि के मने नचाइसि, डारिसि फंद बिकारा ॥  
 अजर अमान “पुरुष” जो आये, प्रगट कथा सुनाई ।  
 है छपलोक छपा यह जानों, गुण गहि ज्ञान देखाई ॥  
 मन के चिन्हि सभनि के चिन्हे, यह मन अगम अनंता ।  
 कहे ‘दरिया’ कोई शब्द विवेकी उधरे बिरला संता ॥  
 (४)  
 हरि के नचायो ग्वालीन ।  
 जे माया सुर नर मुनि नाचेव, अविगति गति नहिं जानी ॥  
 राधे मग्न मनोरथ भरी के, भौहें बान संधानी ।  
 उरपर कनक कलस मानों शोभा, दुखिया धन ज्यों आनी ॥  
 कटि केहरी चलत गज गामिनि, ज्ञान आंकुश नहिं आनी ।  
 बिरही जन विषय रस चाहत, कमल सुखा बिनु पानी ॥  
 बृंदावन में रास रचो है, विष अमृत रस सानी ।  
 मना करे छन छोड़ देतु है, बोलत मधुरी बानी ॥  
 शिव सनकादि आदि ले कहिए, शुम्भ के संग भवानी ।  
 वेद विहिति करि मुनिवर थाके, औ कवि बहुत बखानी ॥

जिन्हि यह बुझा परम पद पाया, भव जल होत न हानी।  
कहे 'दरिया' दिल दया दर्द में, प्रेम सुधा रस सानी॥

(५)

हरि तुम बृन्दावन बसि राधे।  
माया धुंध मची जग माहीं, वाहि ते सुर नर बाँधे॥  
चंचल चपल विशाल नैन दुई, बिनु पंखे उड़ि धावे।  
वाका बान अचुक चक्र है, आड़ कोई जन पावे॥  
चिखुर मोती मनि मानिक टीका, मानों दीपक धरि बारे।  
परे पतंग देखी यह जगमग, प्राण पिण्ड सभ हारे॥  
कनक बेइली तमाल ते अरुझै, लपट लपटि के आवे।  
ऊपर साँगि सोधि के बैठी, छेदत वार न लावे॥  
कटि केहरी पर किन-किन बाजै, कंद्रप सोर लगावे।  
लाल गोपाल मदन के आसिक, यह रस गोपीन्ह भावे॥  
जंघ केदली पगु में पावट, झमकि-झमकि ललचावे।  
कहे 'दरिया' कोई संत बिबेकी, वाके निकट न आवे॥

(६)

हरि तुम बृन्दावन बसि राधे।  
माया धुंध मचि जग माहीं, वाहि ते सुर नर बाँधे॥  
भोगीयन पकरी पाँव तर दाबेव, योगिन योग बिरागा।  
महादेव जिन्हिं भस्म कियो हैं, तेहि तन किमि करि जागा॥  
पारासर ऋषि पारा जिन्हिं भखेव, काम पतन करि जारेव।  
मने मछोदरि सो मृग नयनी, देखत दृग तप हारेव॥  
नीमी ऋषि नीम जिन्हिं भखेव, बाँधे बजर कछोटा।  
गणिका ज्ञान ध्यान हरि लिन्हेव, अति मर्याद जिमि लूटा॥  
श्रृंगी ऋषि संशय कछु नाहिं, शक्ति स्वाद नहिं जाना।  
छल बल मोहनी सकल तन मोहेव, पकड़ि अयोध्या आना॥  
महा महाशय योग जीत सब, अवरि कहों मुनि केता।  
कहे 'दरिया' बिरला दर ठाढ़े, बिचलि चले छोड़ि खेता॥

## (७) (उल्टा मलार)

हरि तुम ऐसो रंग मचिन्दा ।

देखि नेऊरिया नाचन लागी, सिंह बजावे सरिन्दा ॥

झिगुर झाल मृदंग बजावे, मेंढक ताल भरिन्दा ।

बिल्ली कूदि सिंहासन बैठी, सुगना चँवर ढरिन्दा ॥

हिरनी पदुमनि पाँव परतु है, पदुम झलके बिन्दा ।

ज्ञान गीता पढ़ि ऊँट कविश्वर, गदहा वेद भनिन्दा ॥

यह मति जानहु अहे बनौरी, यह पद झूठ न किन्दा ।

कहे 'दरिया' दर्पण बीच दागा, बिनु पर काग परिन्दा ॥

(८)

मथुरा कृष्ण जो भेष बनाया ।

सोई भेष भक्तन रचि लिन्हा, सतगुरु मत नहिं पाया ॥

मोर पंख चन्दा यह माथे, गृव बैजन्ती माला ।

केशरी को यह तिलक बिराजै, पीताम्बर दोशाला ॥

मुरली बेणु किन्नर यह बाजे, गोपिन रंग मताया ।

रति औ काम मगन मन नाँचे, राधे के मन भाया ॥

वृन्दावन में रंग रचो है, ग्वाल बाल संग शोभा ।

अनन्त रूप होय सभ घट बोले, एहि विधि सब जग लोभा ॥

नारद शारद करहिं विचारा, आदि सनन्दन ओई ।

है कमला पति कमला के बसि, कवि सभ कथा समोई ॥

लागी ठगौरी ठग ठाकुर यह, ठगा जगत नर लोई ।

कह 'दरिया' जब वा दर देखे, यह दर सब कहँ होई ॥

## (६) (उल्टा मलार)

हरि तुम या बृज बीज बोवायो ।

वर्षत फनपति गनपति तापर, बुन्द अनेग समायो ॥

सिंह शार्दुल भये हरवाहा, पल नहिं फुरसत पायो ।

भयो बीग खेत रखवारी, मृगा चरन कहँ धायो ॥

जन्मे दादुर मोर पंख धरि, चात्रिक मिलि गुण गायो ।

झिगुर झाल लिए कर बोले, नेऊरी नट नचायो ॥





(१४)

हरिजन जनम जुआ जनि हारो।

जैसे सुआ समेर सेवत है, शीश पटकि मुँह करो॥

माया अथाह थाह किमि कहिए, चारिउ वेद पुकारो।

शिव विरंचि सनकादिक आदि ले करम काल फंद डारो॥

आतम पूजे सो आतम दर्शी, पाहन पूजे बेकारो।

ज्ञान बुझे तेहि ज्ञानी कहिए, विमल प्रेम सुधारो॥

जोग बुझै तेहि योगी कहिए, भक्ति बुझै भव तारो।

पंडित सो जो वेद विहित करी, नव गुण निरखि विचारो॥

तपसी सो जो तप तवै, राज काज करि नरकहिं डारो।

अजर नाम वोये जरे ना कबहिं, भव नाहि बुड़े चढ़ो जौ भारो॥

सतयुग त्रेता द्वापर कलउ, सतगुरु सत पुकारो।

कहे 'दरिया' जग जाए जीति के, ज्ञान दीपक जब बारो॥

(१५)

हरिजन समुझ चलो पगु ढारी।

सुर नर मुपि सब थकित भयो हैं, कोई ना सके निरुआरी॥

मृतक अंध रहे बिनु देखै, बन्द करे नव नारी।

आन क रसना दसन विराजित, राजीत बन फुलवारी॥

आन क श्रवण नासा है आन क, आन क चक्षु उजियारी।

आन क लेवा देई है आन क, आन का माल गुजारी॥

आन क पेट पीठि है आन क, आन क पगु पथ झारी।

आन का कलम कागज है आन क, आन जो लिखे विचारी॥

आन क रूपन रेख सब देखे, चौगुण वेद विचारी।

कर्ता आन क कर्म है आन क, एहि विधि भव बिच हारी॥

आन क झाल मृदंग है आन क, आन बजावत तारी।

कहे 'दरिया' दर देखो आन क, यह रचना बनवारी॥

(१६)

हरिजन करहु विवेक विचारी।

मरना सांच जीवन है झूठा, मरकट मुट्ठि बेकारी॥



अमर कोस के दोष न लागा, मृगा आपु तन त्यागी।

एक मुवा एक मरने चाहत, एक लपटि के लागी॥

माया दोष देइ जनि कोई, सक्ति के संग सुख लागा।

अपने घैचि करम में बंधा, काह कथै अनुरागा॥

पाहन गहा कि तुम गहि राखा, इमि षट कर्महिं बांधा।

तीरथ तीर में नीर बखानत, अपनहिं दवरत अंधा॥

झूठा जाय बरत है झूठा, झूठा से जो धावै।

जहाँ जाय तहाँ बोले ना बानी, रोवत घर के आवै॥

है यह अमृत विष जनि जानहु, विमल ज्ञान गुन सोई।

कहे 'दरिया' पद पंकज गहिए, आनन्द मंगल होई॥

(१७)

हरिजन जो कोई ज्ञान विचारे।

सर्व तीर्थ प्रयाग पद पंकज, मंजन मैलि सुधारे॥

वित्रेणी जहाँ निर्मल जल है, मधुकर मदहिं बिसारे।

सरस्वती सर्व अमी भरि भाजन, प्रेम पत्र महुँ ढारे॥

कुंज गली ताहाँ उन्मुनि पेखै, ज्ञान दीपक धरि वारे।

अक्षय अक्षयवट सतनाम है, सखा सघन बिस्तारे॥

भूमि भर्म प्रकृति पचीसों, दुर्मति सभ दुरि डारे।

कहे 'दरिया' जेहिं मति मराल गति, संसृत जल पै वारे॥

(१८)

हरिजन समुझि चले मुनि ज्ञाता।

बिना बिचार बुड़े नर लोई, सोई भरम भव राता॥

गावहिं बनौरी बहुत बनाई, फारि देखो नाहिं अंता।

हाड़ चाम मासु कछु नाहिं, उल्टा गीध धरि खाता॥

ब्रह्म कहो तो ब्रह्म नाहिं है, नाहिं हंस नाहिं कागा।

जीव न शिव शक्ति ना माया, जाहि सकल जग लागा॥

मूल ना फूल पत्र नाहिं साखा, कथनी बहु विस्तारा।

पाखण्ड कर्म ऊँच करि राखा, भर्मि सकल संसारा॥

उल्टा माया पंडित धरि खाती, खंडित कीन्ह उजारी।

सांच कहे लोग नाचन लागे, अमृत में विष डारी॥

जहाँ देखो तहाँ अवर ना केई, घर-घर रंझा डोले।  
कहे 'दरिया' जन मिले जौहरी, ज्ञान रतन ताहाँ खोले॥  
(१६)

हरिजन करहु विवेक बिचारी।  
नाहिं कछु आया न साथ चलन के, धन बित सुत औ नारी॥  
साज बाज अव रथ बहल सभ, कंचन कलश सँवारी।  
परा कष्ट जब अष्ट काया में, नष्ट भया तन सारी॥  
लाल फूल इह सूल को सागर, सुगना की मति मारी।  
उड़ि गौ भुआ भरम की ढेरी, मुर्छित भया दुःखारी॥  
मरकट मूठि गाँठी जब लागी, यम ने फंद पसारी।  
जाल माल औ भूमि भवन सभ, अब किमि कहो हमारी॥  
मृग दवनि दागा नाहिं चिन्है, जल बिनु लागी कारी।  
भक्ति बिना यह भर्मित भवन में, यम जीव बाँधि पछारी॥  
सर्बस हारि जीव जहँड़ायेवो, हाथ जुआरी झारी।  
कहे 'दरिया' इह नीपट नागा है, सतगुरु शब्द सियारी॥

### शब्द कबित

(१)

राम कहे फेरि कृष्ण कहे, फेरि विष्णु विश्वम्भर है दल दापे।  
आगर कहत उजागर कहत सो, भव कर भागर के नहिं तापे॥  
त्रिगुण कहत सो निर्गुण निगम, व्यापक ब्रह्म सभो घट आपे।  
'दरिया' जो कहे वह एक रहा, भव नाहिं बहा जेहिं पुन्य न पापे॥

(२)

नन्द धरा धरनी बड़ि सुन्दर, बालक लाल गोपाल जो पायो।  
साँवरि सोभा लोभी बनिता बनी, भौहें सो त्रिच्छन बाण बनायो॥  
खोल खेलावत सो यमुना जल, जाहिर रंग सबे गुण गायो।  
'दरिया' जो कहे दर सेऊ धनी का, वा मणि टूटि मनोहर आयो॥

(३)

सागर सेतु जो खेत रचा, महि प्रेत केते दसकंधर हनेव।  
नन्द के लाल गोपाल गोबरधन, कंस पछारि महाबल जानेव॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	सो प्रीतम प्रीति कहे जग हित सो, प्रीतम प्रहति सीता पति मानेव । 'दरिया' पति मेरो सभे जग तेरो, सो हरि हिए सतनाम बखानेव ॥ (४)	सतनाम	चन्द बदनि मृग नैनी छबि सुन्दरि, शिव तुलत नाहिं सो दीप जरी । सोने के साठी सो माटी के मंदिर, कहि न जाय तन झूठ जरी ॥ केहरि पटतर देत चटाक सो, जाय गयंद पछारि अरि । 'दरिया' दिल देखि बिचार कहा, मणि आगे दीपक काह करी ॥ (५)	सतनाम	चारिऊ तत्व तीनों गुण तामें सो नाम, निरंजन अंग में आएव । रचो जग साँच सो दोजक आँच सो, कागज काँच में चि बनाएव ॥ ब्रह्म कहावत भर्म सो व्यापिक, तीनिऊ ताप सोइ तन तापेव । 'दरिया' जो कहे सतनाम उपासी, सो नासी नहिं अविनासी कहाएव ॥ (६)	सतनाम	जासे कहों दुःख सो कहै चौगुन, चारिउ वेद पढ़े गुन ज्ञाता । राम के बाम हरे जब रावन, सोग संताप हिए दुःख राता ॥ भस्मासुर बर दियो शिव शंकर, खेदे फिरे मुंख आऊ न बाता । 'दरिया' जो कहे जग पाप औ पुनय है, सोक के सागर काहि ना राता ॥ (७)
सतनाम	मोह पदारथ है जग माहिं, सो मोह न त्यागि सके अनुरागी । शिव समाधि महायोग किन्हों, सो मोह के कारण काम जो जागी ॥ राम जो व्याकुल सिया के कारण, योग न आवत लखान लागी । 'दरिया' दिल देखि बिचारि कहा, जग को जन्में जन माया से बागी ॥ (८)	सतनाम	साँच के झूठ सो झूठ के साँच, सो फेटि गया हिय लोचन माहीं । खारि के खाड़ सो खाड़ के खारि, कंचन काँच न एक बिकाहीं ॥ पाहन में परमेश्वर कहे कवि, पाहन में परमेश्वर नाहीं । 'दरिया- दिल देखि बिचारि कहा, जड़ पूजत अंध सो फंद में जाहीं ॥ (९)	सतनाम	है हरि निकट बिकट नाहिं सो, दीपक ज्योति बरे घट माहीं । अगम अगाधि अगोचर सोचत, चारिऊ वेद बिचारत आहीं ॥	सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

75

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ज्यों मृग दृग भया अति सुन्दर, घास में घ्राणि के ढूँढ़त जाहीं । 'दरिया' जो कहे गुण पंडित को, कर डंड कमंडल भर्मित आहीं ॥ (१०)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	है बग चातुर चंचल चोर सो, ठोर चलावत बृद्धि बिकारी । शास्त्र वेद पढ़ा गुण गीता सो, प्रीति रता मीन मांस अहारी ॥ खात है आपु खियावत आनहिं, ज्ञान न गमि बड़े ब्रह्मचारी । 'दरिया' दिल देखि बिचारि कहा, दर छेंकि रहा सब काँट की बारी ॥ (११)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पढ़े कवि पिंगल इंगल की गति, छंद प्रवंद रखो बहु भाँती । राज के काज में स्वार्थ सम्पति, सो गज बाज भने दिन राती ॥ साके के सागर सो भर्म भागर, भर्मित भवन विषय रस माँमी । 'दरिया' जो कहे दृग ताहि नहिं, मृग ढूँढ़त घ्राणि सो घास की पाती ॥ (१२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मल सो मूत्र रहे तन भीतर, सो कवि वर्नत है पुनि कैसे । कंचन के कलशा कहि लावत, पावक में जरि खाक भौ जैसे ॥ जंध सो केदली भेद ना जानत, सानि दियो विषि अमृत ऐसे । 'दरिया' जो कहे धिक्कार कवि, बक ध्यान धरे जल घात में जैसे ॥ (१३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पढ़े कवि कोक से काकन की मति, वाम के काम में वाँण विशाला । कोकिल बैनी कहे मृग नयनी, भुजा मृग नाल पेन्हे फूल माला ॥ कंचन कुच मानो कलसा दोऊ, केहरि को कटि सो घट शाला । 'दरिया' जो कहे धिक्कार कवि, धरकार भला भजे नाम गोपाला ॥ (१४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मन की ममिता कवि ज्ञान कहे, कछु धर्म नहिं तबही हट के । भव सिन्धु के पार जो जाना चाहे, तरनी न करे तबहीं भटके ॥ विषय रस रास जो बास साजै, दास नहिं तबहीं लटके । 'दरिया' जो कहे दिल साफ नहिं, यम देत धक्का तबहीं पटके ॥ (१५)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	वोय जानत है सब ही हित के, सो तो हित न प्रीति न प्रेम समानेव । बाम सो काम माया बीच मंदिर, दिवस रैनि सो येही बखानेव ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	दिन्हो सुख साज समाज सो राजस तामस तेज में नाम भुलानेव । 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहीं जड़ता खर शूकर श्वान भुकानेव ॥ (१६)	सतनाम	संत समाज सदा सुखा साज, सो काज से कारण जाय मेटाएव । प्रेम सो मंदिर प्रीति पिऊषण, सो पद पंकज लोचन लाएव ॥ धन्य सो जीवन जन्म फल, कीर्ति सदा गुण साधुन गाएव । 'दरिया' जो कहे दिल एक हुआ तब टंडस टेक ही दूरि बोहाएव ॥ (१७)	सतनाम	दिवाकर दिन मलिन भयो, जब र्हिं छेकेच स्वेत घटा । उमगेव ब्रह्म विलोकि विहंगम, सागर संगम आनि छटा ॥ एसो गुरु ज्ञान जो ध्यान जगावत, राजित हंस सो मानि तटा । 'दरिया' जो कहे दह कमल फूला, अलि सावक संग जो आनि लटा ॥ (१८)	सतनाम	दूरि से ध्यान धरै कहु काकर, निकट नेह न लाल से लागी । खोलि के कुंज जो पुंज झले, जहं झाँकत नयन में ज्योति जो जागी ॥ स्वार्थ स्वाद सभे दूरि डारि सो, लालच लोभ गयो सभ भागी । 'दरिया' जो कहे दिल सोच मेटा, पट बुझि गया सभ पाप की आगी ॥ (१९)
सतनाम	निकट लाल नसन मंह दीसत, बिकट दूरि हिये मह बासा । चंचल मृग माया मद माते सो, आप न चिन्हत ढूंढ़त घासा ॥ चित चकोर जो चन्द में दिन्हेव, मंद भयो सब औरि तमासा । 'दरिया' जो कहे सभ दास भलै, फल चाखत है सब अमृत खासा ॥ (२०)	सतनाम	भूलि परा गुरु ज्ञान तबे, मान माया मँह आनि रते । प्रेम गली अति साछकरि सुन्दरि, ता मँह बात न दूई गते ॥ चाखन चाहत चुभुकि न लागत, माँगत भाजन छूछ गते । 'दरिया' जो कहे फल दूरि बसे, खल चाहत है बिनु साणु मते ॥ (२१)	सतनाम	आत्म तेजि पूजे जड़ पाहन, प्रेम सो मूरति है घट माहीं । वेद विचार अचार चतुर दल, खोजत है इहई सभ आहीं ॥	सतनाम	
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ब्रह्म कहावत ब्रह्म न चिन्हत, नव गुण तीन तिलक दे जाहीं। 'दरिया- जो कहे पर दीक्षत हो, कान फूँके कहीं काल पराहीं॥ (२२)	सतनाम	सतनाम	चतुर बिचच्छन वेद विहिति करि, ज्ञान गीता पढ़ि कर्म न नासी। को हमको तुम कवन कहाँते, करि षट कर्म भरम की फाँसी॥ मुरलीधर मुरति हम में तुममे, भोर करे सो तो यमपुर जासी। 'दरिया' जो कहे सतनाम निरन्तर, नेम कहाँ जब प्रेम उपासी॥ (२३)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	आदि नहिं तब अंत कहाँ ते, कंत नहिं कहु काकरि नारी। ब्रह्म नहिं तब धर्म कहाँ ते, ज्ञान भया तब वेद बिचारी॥ योग भया तब भोग बिनासित, त्रास गया जब नाम पुकारी। 'दरिया' जो कहे सतनाम निरंतर, प्रेम भया तब नेम बिसारी॥ (२४)	सतनाम	सतनाम	योग बिना तन रोग जो व्यापेव, ज्ञान बिना भव सागर भारी। संत बिना कहिं कष्ट न मेटत, ब्रह्म चिन्हे बिनु क्या ब्रह्मचारी॥ शूर बिना संग्राम न सोभित, लोभी के हाथ में दान भिखारी। 'दरिया' दिल देखि बिचारि कहा, विवेक बिना बहु भेष पसारी॥ (२५)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साँचन के दुःख देत हो जानि के, झूठ के कोठी में दाम भरायो। संत के कठिन कठोर कराल सो, कामी के सुन्दर भोग बनायो॥ गणिका के सुहाग सो भाग भला, पतिव्रत करे तेहि दुःख देखायो। 'दरिया' दिल देखि बिचारि कहा, मानो मेहरि कैद सियार बढ़ायो॥ (२६)	सतनाम	सतनाम	केहरि कैद किजै नहिं साहब, रोर के शोर कुत्ते धरि खाई। सिंह ठनके तबे मन कँपे सो, कुंजल भागि पैठा बन जाई॥ शूर के हाथ भलि तलवार सो, रतक किया सनमुखा लड़ाई। 'दरिया' दिल देखि बिचारी कहा, रण पैठि गया कोई संत सिपाही॥ (२७)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	केहरि कैद कियो बीच मंदिर, ऐन में मंद जो चन्द छपाएव। शूर सपूत कपूतन के संग, भंग भयो गुण ते नहिं आएव॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मति मराल गौ कागन के संग, रंग जमि मोती नहिं पाएव । 'दरिया' दिल देखि बिचारि कहा, जग पाप के संग में पुन्य बहाएव ॥ (२८)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऐसे जो प्रीतम प्रीति कियो, निजु नयन देखे बिनु निन्द न आयो । चिहुँक उठे तन भवन भयावन, द्वार खाड़े फेरि अन्दर आयो ॥ घोरे कुल लाज भये मन व्याकुल, सोच परे हिय में पछतायो । 'दरिया' जो कहे किछु कारण है, दह कमल खिला अलि काहे न आयो ॥ (२९)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ज्यों जल मेघ उड़ावत है, धन घोरि रहा वर्षे तबहीं । ओहि संगत में एक सीप गई, मध्य सिन्धु के बीच रही जबहीं ॥ तेहि पारस मीन जो आय मिला, जलबून्द सेवाती परा कबहीं । 'दरिया' जो कहे इमि कारण ते, मनि जाय बरा मुक्ता संगहीं ॥ (३०)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सीप सेवातिहि प्रीति लयो है, खोलत सुपट बुन्द लई । पिया-पिया पुकारत प्रेम बसी, मानो मोतिन आनि दई ॥ संत सुबुद्धि सुबास सभनि में, सागर शुन्य न बात नई । 'दरिया' जो कहे दिल दरस सदा, वोय साहब सो सर्वज्ञ मई ॥ (३१)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भक्त महावत भक्ति न जानत, ताल मृदंग बजावत तूरा । बाम सो काम चाहे निसि बासर, सुत वित्त नारि रहा भरि पूरा ॥ कहिं मुख टेरि सुनावत है सब, पाखांड कर्म लिए यम सूरा । 'दरिया' जो कहे जग रहट लगा है, आवत जात बिगुरचन कूरा ॥ (३२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ज्ञान धोड़ा पर जीन पलाने, सो लव लगाम रहो ठहराई । चाबुक चारी चटाक दियो हैं, कूदि परा जहवाद् रन आई ॥ शूर संग्राम कियो पुनि ऐसो, टूटि परा सिर झीलम जाई । 'दरिया' दिल देखि विचारि कहा, रन पैठि गया कोई संत सिपाही ॥ (३३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	प्रीतम प्रीति बसे दिल मेरो, सो चुन्दर सोभा सुगंध विराजै । गये सब लाज समाज संकोच सो, चात्रिक होय चित बुन्द में गाजै ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	79	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	हौं पतनि, पति हो तुम लायक, लोचन लाल चित्तो दृग राजै । 'दरिया' जो कहे पिया प्रीति भली, ललनी बीच चंद है चारु जो छाजै ॥ (३४)	सतनाम	सतनाम	पतिव्रत करे सत धर्म सोई, पतिन पति नेह निबाहि दई । मगु जोहत है मुख लालन को, लघु बात नहिं निजु प्रेम लई ॥ सेवत चरन चकोर ज्यों चंदहिं, कंज के पुंज में प्रीति नई । 'दरिया' जो कहे चित चातृक है, एक बुन्द के आस में आस में त्रास गई ॥ (३५)	सतनाम	सतनाम	कंज के पुंज में बास लियो अलि कंज बिना कहु कैसे जीवेगा । विविध फूल पावे रस नाहिं, सो कैसे के घ्राणि में बास लेवेगा ॥ सिन्धु समान सो यावत या जल, चातृक स्वाती बून्द पिवेगा । 'दरिया' जो कहे मानो मीन मता, जल भिन्न भये फेरि प्राण देवेगा ॥ (३६)
सतनाम	नासिका श्रवण चक्षु बनायो सो, मुख में जीभ रचा बहु भाँती । हाथ औ पाँव है पटे औ पीठ है, नेकि औ बदी चिन्हे सब जाती ॥ सो नर गर्व में भूलि परा यह, नाम बिसारि दिया दिन राती । 'दरिया' दिल देखि बिचारी कहा, दिया बुझि गया जब तेल ने बाती ॥ (३७)	सतनाम	सतनाम	दीया सो दीया जिन्ही लेसि लिया, हिया में हिया नहिं दर्द धरे । जहाँ प्रेम लगा निजु नाम जगा, सोई नाम पगो जन फर्क परे ॥ जब चन्द चकोर से प्रीति लगी, यह रीति भली नहिं राई टरे । 'दरिया' जो कहे दर लागि रहो, यह भाग्य भला जीव जाय तरे ॥ (३८)	सतनाम	सतनाम	कोई इक्षत है बैकुंठ बसे, कोई दिक्षत पुन्यहिं जाय बरे । कोई योग करे तप राज्य के काजहिं, माजत पवनहिं प्रेम झरे ॥ कोई देव देवी बैताल पूजै, झरि झारत है परमार्थ धरे । 'दरिया' जो कहे रहु कुंज के पुंज में, साधु के दरसन पाप हरे ॥ (३९)
सतनाम	जपे करमाल गोपाल कहे, यह तामस तेज धरे मन बवरा । घर में चोर बाहर नहिं देखो, समुझि परे यह यम नहिं जबरा ॥	सतनाम	सतनाम		सतनाम	सतनाम	

80

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सो ठग ठाकुर या नगरी में, खोजत ताहिं पुकारत दवरा । 'दरिया' जो कहे चढ़ि चर्ख घूमा, दोय चार संग लिए फेरि अवरा ॥ (४०)	सतनाम	सतनाम	आदि भवानी बड़ी मद मस्त, सो कैद किया मुनि ज्ञानन्ह छेंका । शिव समाधि महायोग धारी सो, पुहुप के सर सो धरि फेका ॥ राम रमे रमिता यह आइके, सीया के संगत सो धरि टेका । 'दरिया' जो कहे यह नंद के नन्दन, चन्दन की कुबरी हरि लेका ॥ (४१)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	शहर बनारस मोहनी मोहत, जोहत है सभ लाल रंगीने । तपसी तपत न योग टिके, छूटि जात है ध्यान जो काम के चिन्हे ॥ जटा फटके लटके पगिया, घट ना परिचय रस रहत जो भिन्हे । 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहिं, तब भेष भिखारी भये सत हीने ॥ (४२)	सतनाम	सतनाम	जोर जोराफा जोरि रहा, मुखा मोरत नाहिं सो कंद्रप कारी । अवघट में पट लागि रहा, घट ज्ञान बुझे पट केहरि नारी ॥ सो सर्वज्ञ बखानत कवि पुनि, है कठि किन्ह जो प्राण दुखारी । 'दरिया' जो कहे मोहनी चित चुभेव, मचि रहा सभ भेष भिखारी ॥ (४३)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गये सभ राज केते जग माँह, जो बाह बली बल तौलत है । गज बाज समाज तुरंग ताजि, यह पवन गवन सम दौरत है ॥ झरि झारि झरोखो झाँकि रहा, ललनी ललना मुखा जोहत है । 'दरिया' जो कहे परे द्वंद के फंद में, नाम बिना जग भर्मत है ॥ (४४)	सतनाम	सतनाम	एक ही ते उत्पन्न भये, सकलो जग जानि के भर्मत है । कथनी मथनी सभ ज्ञान कथे, बिना प्रेम के पंथ में धुरमत है ॥ कहीं लाय भभूत भये अवधूत, सो हरि हरिद्वारन्ह हरकत है । 'दरिया' जो कहे दरियाव के बुन्द में, खोजि देखो कोई फरकत है ॥ (४५)	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सुलतान भीरे गलतान करे, मुलतान मना नहिं मानत है । जब आनि के संकट कष्ट परे, पति राखि लियो जग जानत है ॥	सतनाम	सतनाम		सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जब आनि कबीर भरायो जंजीर, भिरायो मतंग जो हानत है । 'दरिया' जो कहे दरियाव दरेरे में, तोरि जंजीर के तानत है ॥ (४६)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तुमते जब प्रीति लगी निजु नाम से, काम सभे दुःख दूरि भजै । भये निकलंक चढ़े गढ़ बंक, सो काटक पापहिं ताप तजै ॥ पर पीर हरो परब्रह्म तुहीं, धरि धर्म दया सभ काम छजै । 'दरिया' जो कहे जग जिन्द भले, मेटु काम कला प्रताप गजै ॥ (४७)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साहब से जब नेह लगी, पगिये निज सोई जो प्रेम हिये । कुमुदनि सहस कमल दल फूलेव, मधुकर ध्रानि तबे रसिये ॥ बिलगि बिहरि फेरि हिलि मिलि जावत, झीलमिली ज्योति तबे कसिये । 'दरिया' जो कहे पद पंकज पावन, भाव ना भर्म सभे नसिये ॥ (४८)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भाव ते भक्ति है योग ते ज्ञान है, ज्ञान हुआ, तब पूरण ब्रह्मा । जीव ते शिव है संशय न सागर, देवा ने देवी न भूत न भर्मा ॥ वर्ण अवर्ण न वर्ण में भेद है, स्वार्थ स्वाद न काम न कर्मा ॥ 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान हुआ, रस एक रहा तहाँ पाप न धर्मा ॥ (४९)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	प्रेम पीवे युग-युग जीवे, जब नहिं पशु पक्षी है सोई । जल पूजि पखान जो मान किये, इमि ध्यान धरे बक चातुर वोई ॥ देवल में एक देवी विराजित, राजित नयन में धृक है सोई । 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान हुआ, तब दुर्मति दाग विकार के खोई ॥ (५०)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साकठ सूकठ औ गृहि नारी, से ज्ञान कथे बहुते अनुरागी । श्वान औ श्वानीनि मानत नाहिं सो, काक औ काकिनी सो संग जागी ॥ जन्म पदारथ स्वार्थ के संग, मीन औ मांस जो खात अभागी । 'दरिया' जो कहे जब भक्ति नहीं, जड़ त्याग दीजै किछु पाप न लागी ॥ (५१)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	वाम सो काम चाहे सुख आपन, साधु न चिन्हत है मद माती । यौवन गर्व फिरे तन साजत, माजत है पुनि सुन्दर कान्ती ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम							
सतनाम	प्राण गयो तन काम न आवत, जावत या जग सुनु सुमती। 'दरिया' जो कहे भजिये भव भंजन, दुःख घना सुख एक रती॥ (५२)	सतनाम	सब कोय रहा दूल्हा दुलही, सब फूलन में भँवरा रंग राता। सुख एक रति दुःख होत घना, मति दोसर भौ मद मोह मता॥ कागज की पुतरी तन जानो, मानत नाहिं सो होत पता। 'दरिया' जो कहे सझुरे कोई सज्जन, अरुझि रहा सब द्रुम लता॥ (५३)	सतनाम	कहीं वेद कितेब कोरान कहे, जो पुराण पढ़े सभ पंडित नीके। कहीं तीर्थ करै कहीं व्रत करे, कहीं राजत गातहिं उर्धहिं बीके॥ कहीं आतम मारि पाहन पूजत, सूझत नाहिं दर्द न जीव के। 'दरिया' जरे कहे सतनाम बिना, कछु काम नाहिं जग जात है फीके॥ (५४)	सतनाम	कोटिन दान जो पुन्य करे, औ कोटिन तीर्थ में रटना। कोटिन वेद पुराण सुने, औ कोटिन जाप जपे रसना॥ कोटिन तप जो झप करे, औ फिरे उधार तेजे बसना॥ संत से नेहना नाम निःअक्षर, कहु मूल बिना कैसे तरना॥ (५५)	सतनाम	मन के जार करे तन क्षार, रहे पंच अग्निनी से हठना। तेजि अन्न आहार करे पौहार, तबो नहिं काम रहे जतना॥ काज नहिं सतगुरु बिना, जाके पारस से मोति होत घना। 'दरिया' से कहे सतनाम भजो, भव सागर चाहत जो तरना॥ (५६)	सतनाम	नाम के अमल जो जन माते, सोई जन संत सुबुद्धि बखाना। पीवत भंग जो रंग उड़ावत, सो बहु बाँचक नाचु दिवाना॥ स्वर्ग पताल खोजे महि मंडल, खोजि रहा तब ब्रह्म दृढ़ाना॥ 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहीं, तबहीं जीव जम के हाथ बिकाना॥ (५७)	सतनाम	एक अलम्ब जो नाम सदा फल, पीवत प्रेम गूँगे गुर खायो। तीत न मीठ खाटा खटतूरस, कासों कहे मानों अमृत पायो॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम							

83

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सूरति मूरति निरति निरखि, सूई में जाय सुमेर समायो । 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहीं, कथनी कथि मूरख मूल गँवायो ॥ (५८)	सतनाम	सूरति मूरति निरति निरखि, सूई में जाय सुमेर समायो । 'दरिया' जो कहे जब ज्ञान नहीं, कथनी कथि मूरख मूल गँवायो ॥ (५८)	सतनाम	कथनी मथनी रहनी निजु ज्ञान है, संत सोई सुख सागर बासा । वेद औ भेद समुद्र समान है, लाल जवाहिर है इमि पासा ॥ कहि कवि आखर बहुत बनावत, राग अलापिन जाय यम त्रासा । 'दरिया' दिल देखि बिचारी कहा, जाके नाम निःअक्षर है इमि पासा ॥ (५९)	सतनाम	कथनी मथनी रहनी निजु ज्ञान है, संत सोई सुख सागर बासा । वेद औ भेद समुद्र समान है, लाल जवाहिर है इमि पासा ॥ कहि कवि आखर बहुत बनावत, राग अलापिन जाय यम त्रासा । 'दरिया' दिल देखि बिचारी कहा, जाके नाम निःअक्षर है इमि पासा ॥ (५९)
भर्म से तीर्थ भर्म से व्रत है, भर्म सो मंडि रहा जग राता । भर्म से तिलक भर्म से माला है, भर्म से गावत है मद माता ॥ भर्म से जाति है भर्म से पांति है, भर्म जनेऊ खोजे सभ नाता । 'दरिया' जो कहे जिन्हिं भर्म तेजा, से ब्रह्म पुनीत सदा सुख दाता ॥ (६०)	सतनाम	भर्म से तीर्थ भर्म से व्रत है, भर्म सो मंडि रहा जग राता । भर्म से तिलक भर्म से माला है, भर्म से गावत है मद माता ॥ भर्म से जाति है भर्म से पांति है, भर्म जनेऊ खोजे सभ नाता । 'दरिया' जो कहे जिन्हिं भर्म तेजा, से ब्रह्म पुनीत सदा सुख दाता ॥ (६०)	सतनाम	भूमि बुल्ला तन चिकन चारु, चित्र बनाय से रंग रचा । से तन चाहत चंदन चर्चित, रुचिर चीर सुहाग मचा ॥ सो धुरि धाम भये पल भीतर, काल बलि अति कौन बचा । 'दरिया' जो कहे दर सेऊ सखी, पति जानि रहो निजु नाम सचा ॥ (६१)	सतनाम	भूमि बुल्ला तन चिकन चारु, चित्र बनाय से रंग रचा । से तन चाहत चंदन चर्चित, रुचिर चीर सुहाग मचा ॥ सो धुरि धाम भये पल भीतर, काल बलि अति कौन बचा । 'दरिया' जो कहे दर सेऊ सखी, पति जानि रहो निजु नाम सचा ॥ (६१)
पीयत पय पयोधर प्रेम से, संत मता निजु नाम हदीका । जीवन सोई सजीवन मीलत, प्राण पति नहिं काम रदीका ॥ निर्भय निर्मोलिक प्रेम न डोलित, खोलत कुंज जो पुंज सदीका । 'दरिया' जो कहे महि बुन्द घना, बनि जात सोइ ज्यों सीप नदी का ॥ (६२)	सतनाम	पीयत पय पयोधर प्रेम से, संत मता निजु नाम हदीका । जीवन सोई सजीवन मीलत, प्राण पति नहिं काम रदीका ॥ निर्भय निर्मोलिक प्रेम न डोलित, खोलत कुंज जो पुंज सदीका । 'दरिया' जो कहे महि बुन्द घना, बनि जात सोइ ज्यों सीप नदी का ॥ (६२)	सतनाम	जब ज्ञान के दीपक बुझि गया, तब काम के दीपक ध्यान कियो हैं । जब काम के दीपक दृढ़ हुआ, तब गमि दीपक बुझि गयो हैं ॥ अंकुर भच्छ महा फल दास है, मीन के भक्ष से पक्ष दहो हैं । 'दरिया' जो कहे रहु कंज के फूल में, मूल बिना यम शूल सहो हैं ॥ (६३)	सतनाम	जब ज्ञान के दीपक बुझि गया, तब काम के दीपक ध्यान कियो हैं । जब काम के दीपक दृढ़ हुआ, तब गमि दीपक बुझि गयो हैं ॥ अंकुर भच्छ महा फल दास है, मीन के भक्ष से पक्ष दहो हैं । 'दरिया' जो कहे रहु कंज के फूल में, मूल बिना यम शूल सहो हैं ॥ (६३)
जो गरकाब गम्भीर सो तीर है, नीर सो एक अनेक बनाओ । कहीं मलिता सरिता कहीं सागर, औ भागर के गुण बिलगायो ॥	सतनाम	जो गरकाब गम्भीर सो तीर है, नीर सो एक अनेक बनाओ । कहीं मलिता सरिता कहीं सागर, औ भागर के गुण बिलगायो ॥	सतनाम	जो गरकाब गम्भीर सो तीर है, नीर सो एक अनेक बनाओ । कहीं मलिता सरिता कहीं सागर, औ भागर के गुण बिलगायो ॥	सतनाम	जो गरकाब गम्भीर सो तीर है, नीर सो एक अनेक बनाओ । कहीं मलिता सरिता कहीं सागर, औ भागर के गुण बिलगायो ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	जाति अजाति सुजाति तेजो, जग जौहरी के सब हाथ बिकाओ । 'दरिया' जो कहे मणि एक मनोहर, आय भग ते भगवान कहायो ॥ (६४)	सतनाम	सतनाम	पेड़ पुरातन पुरी सो पावरि, अरुझि रहा जग को निरुवारे । इन्दु जो एक है बिम्ब अनंत, सभे घट माहि जहाँ जल वारे ॥ आतम दरस दया करु दर्पन, टूक करोड़ में एक सँवारे । 'दरिया' जो कहे कहीं दाग नहीं है, धोखा से पर्वत कहो किमि टारे ॥ (६५)	सतनाम	सतनाम	जग में जीवन काह सराहत, जाहि न भावत नाम धनी का । तरुवर हिन भयो बिनु पल्लव, मणि बिनु कौन जो कहत फनी का ॥ सरवर बिना कमल कहाँ फूले, जल बिनु मीन न जीवे तनी का । 'दरिया' जो कहे चुनि सेज बिछायो, सो पिया बिनु कौन श्रृंगार बनी का ॥ (६६)
सतनाम	तुहँई तुहँई इहँई उहँई, रही रमि रहा पर पीर है रे । जहँई तहँई जल में थल में, सब व्यापी रहा भरिपूर है रे ॥ नव निधि औ सिद्धि है विविध दया, धरणी धर धरम धरे है रे । 'दरिया' जो कहे घट है नट नाचत, चित्र चहुँ युग चारु है रे ॥ (६७)	सतनाम	सतनाम	प्रेम के पंथ में रंथ लगा, धन त्याग दिया गति सूझि परी । साधु के संग दया के सागर, आगर अमृत आनि झरी ॥ बक होते मराल मलोधरि कर्महीं, धर्म दया जीव जानि तरी । 'दरिया' जो कहे दर लागी रहो, यह सागर सात जो पार करी ॥ (६८)	सतनाम	सतनाम	अरब में अब्दुला के घर, फविते नूर नवी मुँखा पायो । चारो चीज चीराक है रोसन, जीव जबह किमि नहिं फुरमायो ॥ सिफित कोरान बयान कियो, यह बनि परे कलमा ठहरायो । 'दरिया' जो कहे दुर्वेस वोलि, दिल दर्द रखो नहिं दोज़क आयो ॥ (६९)
सतनाम	रुखी रोटी जो खात पैगम्बर, टूक में टूक सो बाँटि दियो हैं । दिल सफेद सफा दुनो दीदम, दर्द भला नहिं खून कियो हैं ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

85

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	चर्ब न चाखात ना दिल, चातृक को चित प्रेम पियो हैं । 'दरिया' जो कहे दुर्वेस वोलि, दरपेस भला दरवेस कियो हैं ॥ (७०)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	खोजत खूब महबूब मिया मेरो, खाक से बंदा जो पाक बनायो । अलिफ इल्म ए भी अमान है, जानि परा जिन्हि सिपित सुनायो ॥ आशिक यार मासूक मिया मेरा, ऐन में यार जो साफ देखायो । 'दरिया' जो कहे दिल है खुसबोइ, सो बास चमेली कलि छबि छायो ॥ (७१)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	आय छपलोक से जम्बु दीप जन्म लिन्हो । हुकुम साहब बेबाहा का सीस राखि लियो हैं ॥ पारखा जिन्हि किन्हा, तिन्हि सतगुरु सत चिन्हा । जो कोई प्रेम रस भिना, ताहिं बीरा वहि दियो हैं ॥ केते भये दास केते करत उपहास । केते अमर लोक बास, केते भव में नास भयो हैं ॥ सुनो संत मेरे जैसी भाव भक्ति जिन्हिं करे । यह 'दरिया' के दरेरे में घनेरे धर गयो हैं ॥ (७२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जाना तिन्हिं जाना जो भुलाना सो भुलाना । देह देखि भर्माना कोई सयान ज्ञान लायो हैं ॥ केते हिन्दू करि माना, केते तुरक ही भयो है । केते बाउर मत जाना, केते दाना दास भयो हैं ॥ केते माया के बड़ेरे, केते कर्म के करेरे । केते भाव भक्ति चेरे, जाहि सार शब्द दयो हैं ॥ सुनों संत मेरे जो कोई सत शरण हे रे । यह दरिया के दरेरे में घनेरो धर गयो हैं ॥ (७३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दुखिया सुदामा रंक जबसे, कृष्ण शरणागत लिया । कंचन महल सुखधाम, सब कोई जानता उनको दिया ॥ टूटी मढ़ी फाटि लँगोटि, सो क्या महाराज है । 'दरिया' जिसे जिसका शरण, उसका उसी को लाज है ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मलगज मदन सदन रस क्षर भर, ब्रह्म अचल मन उजल करब भल।	सतनाम	जरब न मरब गरभ न परब अब, नर तन अजब तजब जब भव जल॥	सतनाम	(८०)	सतनाम
सतनाम	लगन लगल बर बरल अमर सत, अनहद गगन बजल मन हरखल।	सतनाम	तन मन धन अघ हर पद परसल, तब कल परल पलक पर परखल॥	सतनाम	चढ़ल पवन रथ चलल अगम पथ, अष्ट दल कमल सघन घन बरखल।	सतनाम
सतनाम	कहत सजन धन दरपन दरसन, नर तन अजब तजब जम कर खल॥	सतनाम	(८१)	सतनाम	परसब कमल पद दरसब अगम दर, क्रसब न यम जन त्रसब न परबस।	सतनाम
सतनाम	बरषव गगन घन हरखब अपन मन, परखब सघन बन क्रसब न अरबस॥	सतनाम	करम न लबह फल धरम न चहब बल, सरम न रहब गरसब न सरबस।	सतनाम	जरब न मरब गरभ न परब अब अस, बर बरल तरब भव बरबस॥	सतनाम
सतनाम	साखी	सतनाम	कष्ट हरण अशरण सरण, मदन कहर दल दर्प।	सतनाम	धन-धन सत धन भक्त जन, तन मन धन सभ अर्प॥	सतनाम
सतनाम	शब्द कबित अर्जी	सतनाम	(१)	सतनाम	“बेबाहा” बेबाक गनि हो, जिन्दा जन के दुःख हरता।	सतनाम
सतनाम	तुम हो सतवर्ग सदा सिर ऊपर, दुल्लह जग को नहिं मरता॥	सतनाम	तुम लोग बली को भुजा विशाला, काल बली को दलि मलता।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारि कहा एक नाम अवलम्ब सही करता॥	सतनाम
सतनाम	(२)	सतनाम	जल में तुमहीं थल में तुमहीं, जीव जहान सभै बरता।	सतनाम	साधु असाधु सभे गुण ज्ञाता, जीवन मुक्त मरता॥	सतनाम
सतनाम	तुम देहु दियाहवु दया स्वरूपी, बूड़त नाव कियो तरता।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारि कहा, एक नाम अवलम्ब सही करता॥	सतनाम	(३)	सतनाम
सतनाम	निसि बासर ध्यान धरों कर जोरे, जासो मेरी पत रहता।	सतनाम	तुम्हते हाजिर रुजू सदा हौं, जो तुम लाज हिये धरता॥	सतनाम	तुम पलक ‘दरिया’ हो खलक तमाशा, सूखी नदी नीर बहता।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारि कहा, एक नाम अवलम्ब सही करता॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(४)				
सतनाम	तुम जरबक्स जराव मोती हो, लाल जवाहिर नहिं गनिता ।	सतनाम	दीन्हों गज बाज तुरे बहु तिक्षन, कनक भवन में बहु बनिता ॥	सतनाम	दुखी सुखी जन जो दर सेवहीं, भोजन भाव सभे पलिता ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारी कहा, एक नाम अवलम्ब सही करता ॥	सतनाम	(५)	सतनाम	स्वर्ग पताल जहाँन जहाँ ले, हुकुम तुम्हार सभै बरता ।	सतनाम
सतनाम	अक्षय वृक्ष छवि छाय जगत में, सखा सघन किमि को कहता ॥	सतनाम	संत सुखद मुनि नारद शारद वेद विमल गुण सब कहि रहता ।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारि कहा, एक नाम अवलम्ब सही करता ॥	सतनाम
सतनाम	(६)	सतनाम	साहब हो सभ साधुन के संग, सागर सात मही बरता ।	सतनाम	लोक, आलोक सभे लोक हाँथ में, गोप गम्भीर सही करता ॥	सतनाम
सतनाम	भय भंजन हो दुःख मंजन पापहिं, कंपित काल भयो मलता ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहें जग जागृत जिन्द हो, पीर तुही सभ ही पलता ॥	सतनाम	(७)	सतनाम
सतनाम	जब सिंह सरन धरि दौरि लगे, तब जम्बुक युथनि काह करे ।	सतनाम	सिर छत्र फिरे मणि माथे बरे, धन बुन्द के धावनि काह डरे ॥	सतनाम	मणि मंत्र दिन्हो सतनाम जपो, झपटे नहिं काल को दूरि करे ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे सत साहब हौ, सर्वज्ञ सफा कबहिं ना मरे ॥	सतनाम	(८)	सतनाम	जहाँ साधु मंडे सर्वज्ञ खाड़े, दल जोरि चढ़े जम जीत हले ।	सतनाम
सतनाम	खाम्भ को फारि उदर बिदारि, डारि दियो यम जीति भले ॥	सतनाम	प्रभुता बल जानि परा तबहीं, जब राखि लियो प्रह्लाद कले ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जग जागृत जिन्द हो, वृन्द नहिं हरि संत पले ॥	सतनाम
सतनाम	(९)	सतनाम	जहाँ भीर पड़े तहाँ वीर खाड़े, जहाँ संकट परे धरि दैत्य पटकेव ।	सतनाम	जहाँ संत मंडे मैदान खाड़े, दल जोरि चढ़े पीठि चाबुक चटकेव ॥	सतनाम
सतनाम	जहाँ गयंद हुले तहाँ तहाँ सिंह तुले, जहाँ जिन्द खाड़े तहाँ जाय हटकेव ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे सतनाम सही, कवि को वरणे महिमा घटकेव ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(१०)				
सतनाम	आदि अनादि अगाधि अगोचर, मोचत हो पर पीर भले ।	सतनाम	सूर के साथ भुजा बल हाथ, मलो धरि काल कपोल कले ॥	सतनाम	संत को संपति सिद्धन को पति, निद्धि नवो बिर्नान अले ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे सब दासन रच्छित गच्छित लोक में काल दले ॥	सतनाम	(११)	सतनाम	दया के दयानिधि सागर हो, यह भागर विधि के दूरि करी ।	सतनाम
सतनाम	मनसा फल रच्छित वांछित हो, पय वाये पयोधर प्रेम भरी ॥	सतनाम	निर्धन धाम दामोदर हो, धर्म तत्व तुही दुःख दूरि करी ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जग पालक हो, पलिहौ तुमहीं मम लाज धरी ॥	सतनाम
सतनाम	(१२)	सतनाम	सामर्थ सर्व सही तुम हाथ में, सो मम जानि आयो तुम पासा ।	सतनाम	जो जन भजै तुम नाम के, सोक के सागर सो तुम नासा ॥	सतनाम
सतनाम	आनि मिले जेहिं पारस में, तेहि दाग दीन्हों अपने कर दासा ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे वोय अमर है, जन मेटि गया यम के तन त्रासा ॥	सतनाम	(१३)	सतनाम
सतनाम	तुमते हित को कहिए जग में, जरि जाय सो जीवन आन रते ।	सतनाम	जीन्हि पानी से पिण्ड जो प्राण दिन्हो, यह मान मनोरथ बुद्धि जते ॥	सतनाम	भूत बैताल सो जात रसातल, नाम लिये सभ पाप गते ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे घट दीपक है, पट खोलि देखो यह साधु मते ॥	सतनाम	(१४)	सतनाम	सोच किये किछु काम नहिं, निःसोच रहो करु रोच पिया ते ।	सतनाम
सतनाम	भव सिन्धु जो पार उतारि दिहें, जल वोहित बारि अवलम्ब लियाते ॥	सतनाम	तंत्र न मंत्र न योग न जाप है, पाप हरे मल जात हिया ते ।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचारि कहा, एक नाम तुरी लेसि लेत दियाते ॥	सतनाम
सतनाम	(१५)	सतनाम	जिंद जो पीर सभो सिर ऊपर स्वर्ग पताल सखा सभ फूलेव ।	सतनाम	मर्दन मान दया करु दीपक, पाप निपात कियो जरि मूलेव ॥	सतनाम
सतनाम	सरन गये तुम नाम के सारथी, पारथ बान अवरि नहिं तूलेव ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे दल कमल छजै, यह राजित हंस मेटे जम सूलेव ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	90	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(१६)				
सतनाम	“बेबाहा” बेबाक सो पाक गनी, मणि माथे गथै तेही दास कियो है।	सतनाम	छत्र के छाँह सो पत्र बिराजित, राजित सुन्दर अंग दियो है॥	सतनाम	कियो प्रतिपाल काटो जम जाल, सो लाल लोभै मुख प्रेम पियो है।	सतनाम
सतनाम	“दरिया” जो कहे सिर ऊपर साहब, आब से ऐब सो साफ कियो है॥	सतनाम	(१७)	सतनाम	“बेबाहा के मत में संत बिराजित, आदि औ अन्त सदा सुख वोई।	सतनाम
सतनाम	जीवन मुक्त जो जिन्द कहावत, वृन्द नहिं अपने सत सोई॥	सतनाम	अमृत अमर साथ सो सामर्थ, हाँथ पसारि ना माँगत रोई।	सतनाम	“दरिया” जो कहे जब ज्ञान हुआ, तबहिं दिल की दोबिधा सब खोई॥	सतनाम
सतनाम	(१८)	सतनाम	“पुरुष” निरोगी सो योगी न भोगी है, सो भग नाहिं भये भगवान।	सतनाम	वेद कितेब कथा बहु बानी सो, जानि परा नहिं पुरुष अमाना॥	सतनाम
सतनाम	चली जग चाकी सो बाकी न राखा है, साखी है साँच देखो दिल माना।	सतनाम	“दरिया” जो कहे दर दाल भई, दर देखि परा खूटवा कीहाँ जाना॥	सतनाम	(१९)	सतनाम
सतनाम	तेग बलि हजरत अली, दल मलित कियो सो कूफरान केते।	सतनाम	पेन्हि सनाह सहतेज है घोड़ा सो, जोड़ा अच्छो सिर पाग है श्वेते॥	सतनाम	फौज बिराजित राजित सुन्दर, छाजित नूर देखो मुखा हेते।	सतनाम
सतनाम	“दरिया” जो कहे दुर्वेश दफा यह, तेग औ देग दोनों गुन एते॥	सतनाम	(२०)	सतनाम	“बेबाहा बेकीमत सीपित सो साफ है, कैद कियो महि प्रेत है जेते।	सतनाम
सतनाम	प्रताप बली सब दैत्य हली, दल मलित कियो दुर्जन दल केते॥	सतनाम	कर तेग नहिं सब देग वाही को, अनेक कथा जग में कहि देते।	सतनाम	“दरिया” जो कहे सिर ऊपर साहब, नायब जाहिर जो जग एते॥	सतनाम
सतनाम	(२१)	सतनाम	“बेबाहा” बेबाक सो खाक न बाब है, आतिस आब उन्हें नहिं लाएव।	सतनाम	मादर पेदर बिरादर या जग, माता के सिकम में आपु न आएव॥	सतनाम
सतनाम	पीर पैगम्बर खोजत खूब, महबूब मियां रहमान कहाएव॥	सतनाम	दरिया जो कहे दर इलिम पार है, वार खोजे सब सुनी सुनाएव॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		91				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(२२)				
साहब के जारे का भरोसा है हमारो दिल।						
		हमसे बर्कस करि कौन पेस पाई हैं॥				
स्वर्ग पताल व्यापे जिमि आसमान काँपे।						
		साहब के डर सो और काज कंप खाई हैं॥				
ताही से सरकार को दास आनि अवतारि हैं।						
		जो नहिं बूझै तेहिं साहब बुझाई हैं॥				
कहे 'दरिया' तीन लोक हुआ कैद बीच।						
		छूटेगा तो सोई जाके साहब छोड़ाई हैं॥				
		(२३)				
काल के दबाये दबि संक होत तीनों लोक।						
		रोग शोक मोह दुःख कालहु के बाण हैं॥				
ताहि बीच परत पिसाये जात क्षत्रपति।						
		बाँचत न कोई एक साहब अमान हैं॥				
जहाँ लगि जीवा जंतु भूलहु न भोर होत।						
		राखत उमेद जाके हिये बीच ज्ञान है॥				
कहे 'दरिया' तीन लोक हुआ कैद बीच।						
		छूटेगा तो सोई जाको साहब को ध्यान है॥				
		(२४)				
अन्तर्यामी तुम जाननिहार हो, जानि छपावत सो चतुराई।						
		जाहि ते कर्म छपावत हो, सो तो देखात है घट ही घट छाई॥				
आनि मिलो कर जोरि भले, ना तो आवत काल विशाल चढ़ाई।						
		'दरिया' दिल देखि विचार कहा, एक मज्जन नाम से कर्म कटाई॥				
		(२५)				
साहब हो सभ संतन को, पत राखि लियो अपने बल ते।						
		दीन दयाल कृपाल दया निधि, कम्पित काल तुम्हें डरते॥				
जागृत जीन्द जो नीन्द नहिं, जनि चित टरे तुम्हीं बरते।						
		'दरिया' जो कहे तेहिं डर कहाँ, अपने करिदान दीन्हों करते॥				
		92				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(२६)				
सतनाम	काहे के दीन दयाल कहावत, काहे के सामर्थ नाम तुम्हारे ।	सतनाम	काहे के जीवन जिन्द कहावत, जो नहिं संत के कष्ट निवारो ॥	सतनाम	काहे के चित चिन्तामणि चेतनि, ज्यों नहिं चिन्ता के दूरि बिडारो ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे तेरो नाम कृपा निधि, पाप के पुंज काहे नहिं जारो ॥	सतनाम	(२७)	सतनाम	है कछु बिच मेरो चित चातुर, जाते न प्रीतम प्रीति लगाये ।	सतनाम
सतनाम	धोवो दिन दाग विराग विरह रस, कंज के पुंज में मज्जन पायो ॥	सतनाम	ज्यों जल रंग मिली होय एक सो, आखर दोय न जाय बिलगायो ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे पिया प्रीत भली, जिन्हिं प्रेम सुधा सम मंगल गायो ॥	सतनाम
सतनाम	(२८)	सतनाम	अब किछु लाज धरो हिय माही, सो जम्बू के जंगल काहे न काटी ।	सतनाम	तेजि दीजै भव सागर को, यह शब्द के ऊपर पाटन पाटी ॥	सतनाम
सतनाम	आनि बसो हमरे घरवाँ, जहवाँ होय के हम देखात बाटी ।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचार कहा, हमहूँ सरकार के चाकर बाटी ॥	सतनाम	(२९)	सतनाम
सतनाम	दीन दयाल कृपाल दया निधि, संतन को प्रन राखि लियो हैं ।	सतनाम	आपु निरंतर ध्यान धरो, नर बुझि विचार विवेक कियो हैं ॥	सतनाम	नाम प्रतीत सुधा सम सागर, प्रेम के मंदिर प्रीति पियो हैं ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ जो कहे जग जागृत जिन्द, सभे घट की सुधि दृष्टि दियो हैं ॥	सतनाम	(३०)	सतनाम	दीन दयान दयानिधि सागर, मोह के मंदिर सो धरि फारेव ।	सतनाम
सतनाम	जीवन मुक्त जो जिन्द कहावत, कंषित काल तुम्हें डर हारेव ॥	सतनाम	जो तुम चित चिन्तामणि चेतनि, संकट कष्ट कबे नहिं आएव ।	सतनाम	‘दरिया’ जो कहे तेरो नाम कृपाल सो, दास के लाज सदा तुम धाएव ॥	सतनाम
सतनाम	(३१)	सतनाम	हो सुखा सागर सब गुन आगर, निगम नेति सबे बरनी ।	सतनाम	जल में थल में स्वर्ग पताल में, ज्यों दिनेश दिन हो धरनी ॥	सतनाम
सतनाम	काल ही भंजन मैल ही मंजन, सज्जन जन को तुम तरनी ।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि बिचार कहा, जिमि शालि सुखे जल हो भरनी ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	93	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(३२)				
सतनाम	तुम कादिर गनी करीमा केसो, तुमहीं विसंभर बीसु बरता।	सतनाम	तुम राम रहीम रमापति रब हौ, कलि मलि पाप सभो हरता॥	सतनाम	तुम करम करीमा अल्लाह पुरुष हौ, सन्तन्ह लाज सदा धरता।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि विचारि कहा, एक नाम अवलम्ब सही करता॥	सतनाम	(३३)	सतनाम	नर जानि रहो एक साहब को, जिन्हि पानी से पिण्ड जहान बनाई।	सतनाम
सतनाम	मानुष जन्म कहाँ फेरि पड़हो, जौ न भजो सतनाम सहाई॥	सतनाम	अर्ज कियो कर जोरि सो, भूलि रहा भव में चतुराई।	सतनाम	‘दरिया’ दिल देखि विचारि कहा, जब बान लगे तब कौन बचाई॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	(३४)	सतनाम	गुरु परम पुनीता सब जग हीता, षट् दर्शन से गति न्यारी।	सतनाम
सतनाम	लोहा महँ पारस भृंग कीट कहँ, तरुन्हि मलै गिरि जिमि तारी॥	सतनाम	अहि सीप केदली गज गयंद कत, अपरन्हिं स्वाती उपकारी।	सतनाम	ऐसो कृपाल जनके दयाल, ‘दरिया’ सतगुरु साहब की बलिहारी॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	(३५)	सतनाम	जाको पद परसै अनभौ दरसै, काल न करसै नर नारी।	सतनाम
सतनाम	जन के सुखादाई सदा सहाई, जिमि शिशु पालेव महतारी॥	सतनाम	सबसे अधिकारी पर उपकारी, बहु अपराधिन कहँ तारी।	सतनाम	ऐसो कृपाल जन के दयाल, ‘दरिया’ साहब सामर्थ की बलिहारी॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	दरिया नाम अर्थ	सतनाम	द-दया निधि सतपुरुष हैं, र-रमिता है राम।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	या-या जग जीव तारिया, ताते दरिया नाम॥	सतनाम	द-दया दिल में बसे, र-रंग महल विश्राम।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	या-आपहीं आप बिचारिया, याते दरिया नाम॥	सतनाम	द-दूर दुरंतर देश है, र-रहनि गहनि है सार।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	या-या भव हंस उबारिया, दरिया नाम पुकार॥	सतनाम	द-दीन दयाल कृपाल हैं, र-रंग असल करार।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	या-अमरापुर तख्त है, दरिया नाम हमार॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	94	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

द-दाग दरोगा न जानिये, र-रखना राखे दस्त।

या-अजपा सोई जाप है, या ते दरिया मस्त॥

द-दरिया भरपूर है, र-रहनी है निनार।

या-अजर अमर गुण सत है, दरिया नाम है सार॥

द-दुर्जन दल दलिमलो, र-राखो सतगुरु संत।

या-अलख लखायो पलक में, दरिया नाम बेअंत॥

द-दुल्लह साहेब मेरा, र-रमिता से प्रीति।

या-अन्दर सीना साफ है, दरिया नाम प्रतीति॥

द-दा दीदम दी में, र-रब आठो जाम।

या-याद पाक दिल पाक है, याते दरिया नाम॥

द-दा दरद दारुद है, र-रोजा रहम तमाम।

या-यारी अपने यार से, याते दरिया नाम॥

द-दा दुरि मकान है, र-रब का कहो कलाम।

या-याद मेरा अल्लाह को, याते दरिया नाम॥

द-दा दर्शन पाइया, र-रंग असल करार।

या-आगर मेरा साँइया, र-दरिया नाम हमार॥

द-दा दवरि न माँगिये, र-रुखा सूखा अहार।

या-अन माँगे पाइया, दरिया दर गुन सार॥

द-दया दीप मम देश है, र-रबि शशि उदय न होय।

या-अविगति अजरा ज्योति है, दरिया दर गुण सोय॥

द-दयानिधि गृहि आइके, र-रखा हमरा नाम।

या-आपने मुख कहा, याते दरिया नाम॥

**सतनाम, साहब, बेबाहा नाम अर्थ**

सत सत बिनसे नहीं, न ना नाम निनार।

म-मन माया जाहि ते, सतनाम गुन सार॥

**साहब**

सा-सा सब सिर ऊपरे, हाजिर हाल हजूर।

बा-बादशाह दोउ दीन के, साहब का सब नूर॥

## बेबाहा

बे-बेकिमति जानिये, बा-बादशाह दोऊ दीन ।  
हा-हाजिर हाल हजूर हैं, बेबाहा नाम गुण भीन ॥

**सतपुरुष साहब बन्दी छोर शब्द चौकड़िया**

(सतगुरु मेरो सतपुरुष साहन शाह बेबाहा)

केते कोई इस गजत में भुलाना कहें दरिया ।

केते कोई किछु रंग में भुलाना कहें दरिया ।

केते कोई किसी से ठगाना कहें दरिया ।

दिलवर का अपने आप दिवाना कहें दरिया ।

केते कोई इस जगत में सेयाना कहें दरिया ।

केते कोई सत्संग न जाना कहें दरिया ।

केते कोई अंधों में जो काना कहें दरिया ।

महबूब के मिलने का दीवाना कहें दरिया ।

पगु धूरि साधु का लपटाना कहें दरिया ।

सतगुरु के हाथ बिकाना कहें दरिया ।

किछु स्वर्ग नरक से ना डेराना कहें दरिया ।

सतगुरु पंथ जग से निनारा कहें दरिया ।

जिसको मिला उसी को प्यारा कहें दरिया ।

सतनाम से इस जीव का उबारा कहें दरिया ।

नौ खण्ड कर्म काल पसारा कहें दरिया ।

गाफिल पड़ा काहें तुझे मरना कहें दरिया ।

अब दिन बीता जाता है संभारो कहें दरिया ।

नाचन लगे तब लाज न करना कहें दरिया ।

सारे में जाव सती को न डरना कहें दरिया ।

हुशियार होय यह देश बिराना कहें दरिया ।

तेरा यहा कोई न अपाना कहें दरिया ।

इस मृत्यु लोक में न ठेकाना कहें दरिया ।

तुझको सजन के देश में जाना कहें दरिया ।

साहब तेरा तुझ पास में हरदम कहें दरिया ।

परिचय करो सतगुरु से सिताबी कहें दरिया ।



जीवन तेरा दिन चार का समझो कहें दरिया।  
 अवसर चूके पछताहुगे बूझो कहें दरिया।  
 तीन लोक से छपलोक निनारा कहें दरिया।  
 भव सिन्धु कर्म काल पसारा कहें दरिया।  
 सतगुरु बिना न जीव का उबारा कहें दरिया।  
 निर्गुण सगुण से नाम निनारा कहें दरिया।  
 यह जगत भेष बनाया कहें दरिया।  
 सतनाम का महिमा न पाया कहें दरिया।  
 हम टेरी के सभ दिन यहीं गवाया कहें दरिया।  
 बिरला कोई बूझा उसे भाया कहें दरिया।  
 मर जाओगे अवघट में यारों कहें दरिया।  
 इन्साफ का जामा है सम्भारो कहें दरिया।  
 सत्संग में सतनाम पुकारो कहें दरिया।  
 होय साधु अपने जीव को उबारो कहें दरिया।  
 सभी जीव जगत् में एक जानो कहें दरिया।  
 गीता में कहा कृष्ण सो मानी कहें दरिया।  
 सब ब्रह्म को एक रंग सो मानो कहें दरिया।  
 घट-घट में रमा उसको अकानो कहें दरिया।  
 जैसा करे तैसा फल पावे कहें दरिया।  
 नेकी को नेक वहिश्ति बतावें कहें दरिया।  
 बदफेल करने को सतावे कहें दरिया।  
 जबरिल सो दोज़क में ले जावे कहें दरिया।  
 दिल दर्द सो दुर्वेश कहावे कहें दरिया।  
 नालत का मलामत सोई पावे कहें दरिया।  
 बेदर्द से नामर्द कहावे भावे कहें दरिया।  
 आयत यही अल्लाह का जानो कहें दरिया।  
 जो किछु कहा रसूल सो मानो कहें दरिया।  
 मुरसिद जा महरमी सो पछानो कहें दरिया।  
 करि दर्द अरज हक से गुजरानों कहें दरिया।

मगरूर तू दौलत से मत हो कहें दरिया ।  
 सतगुरु को तलासो तभी गति पायो कहें दरिया ।  
 पावे जिसे सत्संग में रत हो कहें कहें दरिया ।  
 तब पीव की सुहागिनी सत्य हो कहें दरिया ।  
 मुरसिद जो महरमी कोउ पावे कहें कहें दरिया ।  
 हाजिर हजुर विहिशित बतावे कहें दरिया ।  
 दिल साफ के होने से लखावे कहें दरिया ।  
 महबूब से लेकर के मिलावे कहें दरिया ।  
 वहदत के प्याला का साकी कहें दरिया ।  
 नूरी उसे तुम जानना नर खाकी कहें दरिया ।  
 एग बुन्द चाखा मनसूर बेबाहा का कहें दरिया ।  
 कहता है अनल हक सो पाया कहें दरिया ।  
 सर सारा है साकी का प्याला कहें दरिया ।  
 फरजंद मुआशाह का जिलाया कहें दरिया ।  
 कुंम बिजनी कहा दम उसे आया कहें दरिया ।

### शब्द मंगल

(9)

सतगुरु साहब सामर्थ दीन दयाल हो ।  
 जन सुखदायक संकट हरन कृपाल हो ॥  
 नाम गरीब नेवाजिये ।  
 अधम उधारन बालम आपु बिराजिये ॥  
 आगर अजर अमान उजागर सामिया ।  
 भंजन काल कराल अमर सुख धामिया ॥  
 जन जेहि करहिं पुकार सो जीव बचावहीं ।  
 ठग ठाकुर यहि गाँव धूम मंचावहीं ॥  
 अविगति अंतरयामी अंतर गति जानियाँ ।  
 दरदवंत करतार दर्द पँचनानियाँ ॥  
 जन ऐगुन की खानि गुनन की थोर है ।  
 परपंचिन के साथ निपट जीव भोर है ॥

साधु संत की रहनि सो अगम अपार है।

सरन गहे की लाज जो जीव गँवार है॥

तन मन धन से प्रेम भक्ति लवलावहीं।

‘दरिया’ सो जन अचल मुक्ति फल पावहीं॥

(२)

सत सतगुरु के चरनन सीस नवाइये।

सूछम वेद को भेद तबहिं कुछ पाइये॥

सुर दुर्लभ तन पाय चेत अब कीजिये।

चार अष्ट दस छौ नौ छाछि न पीजिये॥

गुरु से सतगुरु भेद निनारा जानिये।

भेष भरम से भिन्न सदा पँहचानिये॥

तन मन धन सभ तुरंतहिं तापर वारिये।

रहहु एक टक लाय पलक नहिं टारिये॥

पद पखारि के चरनामृत लीजिये।

धुँधट खोले नाँच भरम नहिं कीजिये॥

चतुरानन जेहिं ध्यान करत नहिं पावहिं।

सतगुरु दीन दयाल सो निकट लखावहिं॥

प्रेम मगन होय झीन झरोखे झाँकिये।

पल पल आठो जाम सुरति तहाँ राखिये॥

बहुरि न ऐसो दाव विवेक विचारहु।

कहे ‘दरिया’ निज जीवन जन्म सुधारहु॥

(३)

आनन्द-आनन्द-आनन्द मंगल गाईला हे।

संतो प्रेम में प्रेम लगाय, मुक्ति फल पाइला हे॥

भाव भक्ति जेहिं मंदिर, मद बिसराइला हे।

संतों उदित कला प्रकाश, गगन झरि लाइला हे॥

यहीं भव में दुःख दारुन, दर बिसराइला हे।

संतो वा दर देखि निहाल, नयन सुख पाइला हे॥

सतगुरु चरन सुधा सम, लोचन लाइला हे।

संतो जरा न मरन तीन ताप, से दूरि बोहाइला हे॥

बिनु गुरु होहीं न ज्ञान सो ध्यान समोइला हे।  
 संतो सतगुरु से सुख सागर, भागर खेइला हे॥  
 वा गुन अजर अमान सो, ध्यान लगाइला हे।  
 संतो कहे 'दरिया' दर देखि, अमरपुर जाइला हे॥

(४)

आज मोरा घरे आनन्द-आनन्द, मंगल गाइले हे।  
 संतो दुल्लह दुलहीनी ब्याह सो, माड़ो छवाइले हे॥  
 कलशा चित्र लिखाई, चिराग जराइले हे।  
 संतों पाँच सखी मीलि मंगल, हर्दी चढ़ाई ले हे॥  
 होहीं नहछू नहावन नउनियाँ, बोलाइलें हे।  
 संतो पाँव पखार के मज्जन, सज्जन लाइले हे।  
 बैठे सजन सभ लोग, बरात बनाइले हे।  
 संतों अजर अमर पिया मोर, अमरपुर जाइले हे।  
 'दरिया' साहब गुन गावल, गाइ के सुनावल हे।  
 संतो मोरा तोरा बनेला बनाव, बहुर नहिं आइब हे॥

(५)

नाम सुमिरु चित हित गही कै, निसिदिन आनन्द मंगल मूल हे।  
 बाम न धाम दरब संग नाहिं, गुरु के बचन समतूल हे॥  
 भर्म कर्म बिसारहु संतो, तेजहु कपट के वोट हे।  
 भव सागर दुःख दारुन दहिं हे, पल-पल लगिहें चोट हे॥  
 ऐगुन गुन दोनों जग में ऐसो, जाहिर गन्ध बिकार हे।  
 स्वर्ग नरक दोनों नाहिं देखहु, उतरहु भवजल पार हे॥  
 गुरु बिनु बाट भुलाइल संतो, नहिं सूझे अवघट घाट हे।  
 कर्म कागज जब बुझिहें साहब, सहबहु यम के साट हे॥  
 यहीं जग केहुना भैल राजधानी, बीस भुजा दस शीश हे।  
 तीनहुं के काल नचावल मही पर, चिन्ह न परल जगदीश हे॥  
 सतगुरु चरण सुधा सम जानहु, मानहु पदुम परगास हे।  
 कहे 'दरिया' जब अमर दरसहीं, छूटि जइहें यम त्रास हे॥

(६)

अब्दुल्लह दुल्लह सभ बाम को।  
 जहाँ लगी कामिनि करहिं कलोल, सो तो हर धाम को॥

ऐसो रंग गाढ़ तुम डारेव, जैसे शक्ति संग राम को ।  
तीनों लोक में धूम मचो हैं, कहो कहाँ विसराम को ॥  
ऐसो जाल झीनी जग ऊपर, जैसे किरनी है घाम को ।  
सो छवि देखि मगन भयो साधो, दास भये बिनु दाम को ॥  
सतगुरु दया दरस जब देवहीं, सब विधि पूरन काम को ।  
कहे 'दरिया' वाये अक्षय अमोलिक, सदा भरोसा नाम को ॥

## शब्द सोहर

(9)

बेगि गहो सतगुरु चरन पीछे पछतैबहु हे ।  
 संतो नाहक फेरि मरि जैबहु कहाँ घर छैबहु हे ॥  
 उलटि-पलटि भव सागर रहट बधैबहु हे ।  
 संतों चार चरन दोय सिंघ भूसा खर खैबहु हे ॥  
 नाहिं रही कुल कर्म सो आपु बधैबहु हे ।  
 संतों बाजीगर के हाथ पलक नहिं पैबहु हे ॥  
 जंगल माँह के रोर से सोर लगैबहु हे ।  
 संतों श्वान सुकर कर देह बहुत दुःख पैबहु हे ॥  
 सतगुरु चरन सुधा सम प्रेम लगैबहु हे ।  
 संतों कहे 'दरिया' सुनु दास मुक्ति फल पैबहु हे ॥

(२)

पिया-पिया करहु सोहागिनि, तुहुँ बड़ी भागिनी हे।  
 संतो तेजहु मान गुमान सो, नाम नरेखहु हे॥  
 नैहर नेह ना कीजै, सभे प्रेम छीजहिं हे।  
 संतों तन मन अर्पन कीजे, तबहिं प्रभु रीझहिं हे॥  
 पाँच सखी संग नागरि झगरा से झागरि हे।  
 संतों आगर खसम तोहार सोई जग जागृत हे॥  
 अजर अमर बर बरिये, मरहिं नहिं कबहीं हे।  
 संतों जरहिं अगिनि नहिं दाह से नाह तिहारो हे॥  
 सतगुरु घाट सुघाट करम धरि काटहिं हे।  
 संतों चट पट पियहिं मिलाए सोई सुखसागर हे॥  
 एक दसा एक मन धरि गहबर भीतर हे।  
 संतों कहे 'दरिया' सतभाव भूषण सब त्यागहु हे॥

(३)

सत सुकृत करु सुमिरन सभ विधि पूरन हे।

संतों मुक्ति महातम नाम सो आतम चेतहु हे॥

विषय बेइली भव सागर सभ दुःख दारुन हे।

संतों जगमग मनि बरे ज्योति, तहाँ चित रातल हे॥

यह कर्ता जग बर्ता वोह कर्ता निःकर्मउ हे।

संतों सोई रे मुक्ति के मूल सो ताहि न तूलहिं हे॥

कमल सुमंडित साहब नाम निखंडित हे।

संतों डंडित काल बिहंडित सोई चित चेतहु हे॥

सोई अमृत फल चाखन दहि महि माखन हे।

संतों गहि लेहु निर्गुन नाम सोई निजु पावन हे॥

सोई पुहुँप सुगन्ध सो परिमल चन्दन हे।

संतों कहे 'दरिया' दरसेउ सो खेई उतारहिं हे॥

(४)

सोई रे बेदन बेद गनिये सुर नर मुनि भइलें हे।

संतों सोई रे वेदन भइले संत सोई सुख सोहर हे॥

सुकदेव सभ गुन आगर गर्भहिं त्यागल हे।

संतों भइलें अमरपुर बास सभे सुख सागर हे॥

जयदेव पांचो प्राणी भक्ति उन्हि ठानिउ हे।

संतों विप्र सुदामा सो दास सोई गुरु ज्ञानीउ हे॥

नामा कामा सो निर्गुण सत सहिदानिउ हे।

संतों तुलसीदास मलूका सभे सुख खानिउ हे॥

यही जग आइले कबीर दोनों गुरु पूरन हे।

संतो नान्हक नाम जगाय दरस फल पावल हे॥

धन्य वोय माता सो पिता धन्य वह दासीउ हे।

संतो कहे 'दरिया' धन्य युग-युग जेहि गृहि अइलहु हे॥

शब्द माया पक्ष लारी

(९)

सुनु समधिनी सुघरी पियारी जी।

तुहँ त मोहलु सुर, नर, मुनि झारी जी॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अतलस लहँग जरद रंग सारी, चोलियन बंद सँवारी जी।						
नयनन काजर सिर सिंदुरा बिराजति, टिकुली मनि उजियारी जी॥	सतनाम					सतनाम
कानन्ह तरिवन तरकी बिराजित, बेसर मोती गुहि डारी जी।						
गले तीलमनियां पहुँची बिराजित, बाजुबंद फुलना सँवारी जी॥	सतनाम					सतनाम
पगु में पायट बिछुवा बिराजित, झमकी चले दे तारी जी।						
पीर औलिया सभ रंग राते, महादेव प्रान पियारी जी॥	सतनाम					सतनाम
श्रृंगी ऋषि संग बन कौतुक किन्हों, नीमि ऋषि बात बिगारी जी।						
सहस गोपीन संग एक मनमोहन, यह रंग रचु बनवारी जी॥	सतनाम					सतनाम
काजी के घर बीबी होती, ब्राह्मण के घरवारी जी।						
कहे 'दरिया' तू त सभ रस भोगी, बिनु बर किमि बर नारी जी॥	सतनाम					सतनाम
(२)						
खासम बिसरि कहाँ तुम जइहो, सुनु कुलवंती नारी जी।	सतनाम					सतनाम
अपना पिया के तू होहु सोहागिन, युग-युग काज सँवारी जी॥						
सुन्दर देह देखि भूलहु, सुनु ब्राह्मण की बारी जी।	सतनाम					सतनाम
यह माया कहु केहि की चेरी कहुं किन्ह सैंती सम्हारी जी॥						
यह तन देह अगिनि में जरि हें, डंडा लिहें तोरी जी।	सतनाम					सतनाम
कहे 'दरिया' भव सागर बचिहों यम की साँट सम्हारी जी॥						
(३)	सतनाम					सतनाम
ढरकल धीव पहित में परिगइलें, सुधरल काज हमारो जी।						
तैं धरुवारिन खासम पियारी हो, काम जनि करसि बिकारो जी॥	सतनाम					सतनाम
आय गये पिया चट दे मारेवो, पट दे धुँधुँट उधारो जी।						
पलंग बिछाय सेज बंद लायो हो, फूलनहार सँवारो जी॥	सतनाम					सतनाम
भई सुहागिन सगरो घर में हो, प्रेम पलक जनि टारो जी।						
युग-युग सिन्दुरा मइलि नहिं होइहें हो, जब सत मिललें भतारो जी॥	सतनाम					सतनाम
भरि घोट गुर पिया हम कहँ दीन्ह हो, चुभुकि चुभुकि रस चाखो जी।						
चाखात ब्रह्म भया उजियारा हो, प्रेम युक्ति से साधो जी॥	सतनाम					सतनाम
यही भवसागर पार उतरिहो हे, अमर लोक ले डारो जी।						
कहे 'दरिया' भये पूरन काज मोर, पिया पर तन मन वारो जी॥	सतनाम					सतनाम
(४)						
भरि घोट गुर पिया हमके दीन्हों, चुभुकि-चुभुकि रस चाखो जी।	सतनाम					सतनाम
चाखात ब्रह्म भयो उजियारा, भवन दीपक धरि राखो जी॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मश	एक	बसत	है	गहिरे	हो,	काल जाल धरि बाधों जी।
अवरी	के	बार	छूटे	नहिं	पड़हों,	योग-युक्ति से साधो जी॥
नव	नारी	बहत्तार	कोठा,	नदिया	अगम	बहे धारो जी।
सरिता	सभे	मिलि	सागर	में,	कनहरि	खोई उबारो जी॥
बड़ी	भाग्य	से	सतगुरु	मिलिया	हो,	विषय कर्म कलि काटो जी।
कहे	‘दरिया’	तब	अटल	राज	पद,	गगन गढ़ी चढ़ि आवो जी॥
<b>शब्द गारी</b>						
(१)						
दारी	देखलों	मों	तोर	व्यवहार,	समधिनि	भले रे भले॥
लाल	पियर	सभ	त्यागहु,	समाधिनि	भले रे भले।	
दारी	निरगुन	करहु	भतार,	समधिनि	भले रे भले॥	
सोई	बर	बियहहु	जाय,	समधिनि	भले रे भले।	
दारी	पुजिहें	मनोरथ	तोहार,	समधिनि	भले रे भले॥	
अमर	बर	बरहु	मरहि	न	कबहिं,	समधिनि भले रे भले।
दारी	बसहीं	जगतवा	के	वोर,	समधिनि	भले रे भले॥
अविनाशी	सब	घट-घट	बासी,	समधिनि	भले रे भले।	
दारी	प्रेम	गिरह	दे	जारे,	समधिनि	भले रे भले॥
‘दरिया’	साहब	गुण	गावल,	समधिनि	भले रे भले।	
दारी	मेटि	जहहें	नरक	अघोर,	समधिनि	भले रे भले॥
(१)						
तुहुँ	चलहु	सजन	के	देश,	समधिनि	भले रे भले॥
छोड़हु	चित	चतुराई,	समधिनि	भले रे भले।		
अब	गहहु	शब्द	उपदेश,	समधिनि	भले रे भले॥	
अमर	चीर	पहिरहु,	समधिनि	भले रे भले।		
तोर	मोतियन	झलके	केश,	समधिनि	भले रे भले॥	
फूलन	सेज	बिछावल,	समधिनि	भले रे भले।		
जहाँ	हंसन्हि	केर	नरेश,	समधिनि	भले रे भले॥	
‘दरिया’	साहब	गुन	गावल,	समधिनि	भले रे भले।	
तुम	करहु	योगिनियाँ	के	भेष,	समधिनि	भले रे भले॥
104						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



## शब्द जँतसारी

(१)

अरध-उरध दुनों जँतवा ए सजनी।

अरी सुकृत किलवा करावहु रे की॥

युक्ति के जुअवा हो मन की मकरिया।

अरी सुरति निरति झिंकवा नावहु रे की॥

मेहीं पिसु मेहीं पिसु मेंही पिसु सजनी।

अरी मेहीं का पिसले सुखवा पावहु रे की॥

चित्त की दउरिया उठाऊ भरि सजनी।

अरी पिया पंथ प्रेम सोहागिन रे की॥

कहे 'दरिया' जिन्हिं दरि पिसि सानल।

अरी फिरि ना आइब एहि जँतसारिउ रे की॥

(२)

पांच सोहागिन तूहँ बड़ी भागिन।

अरी पिसु लेहु कर्म केराइउ रे की॥

परिअहिं परिअहिं बइठु जँतसरिया।

अरी जुअवा घैंचि झिकवा नावहु रे की॥

पिया के पियारी धनि कुल उजियारी।

भवन भीतर पंथ जोहल रे की॥

कहे 'दरिया' यह जीवन सुफल भइलें।

अरी फिरि ना आइब एहि भवसागर रे की॥

(३)

सत मोरे सेनुरा सुकृत मोरे साहब।

अरी सहज स्वरूपे पिया पावल रे की॥

सत की अटरिया लागलि फुलवरिया।

अरी चुनि-चुनि सेजिया बिछावल रे की॥

सभ सुख सागर गुरुमुख आगर।

अरी छुटि गइले यह भवसागर रे की॥

भइले बिलास मोरा परम हुलास भइलें।

अरी मेटि गइले सब दुःख दारुन रे की॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जरबा ना मरब रहब नाहिं कबहिं। अरी जबहीं अमरपुर जाइब रे की॥ कहे 'दरिया' दया सतगुरु की। अरी नीति नई प्रेम लगाइब रे की॥ (४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	हमहु चलब रहब नाहिं युग-युग। अरी या जग जीति घर जाइब रे की॥ तन करु मटुकी प्रेम करु पानी। अरी सुरति निरति नेता लाइब रे की॥ दधी बिलोइब छांछि अलोइब। अरी तब घृत घानि सोहाइब रे की॥ साहब साँचा आपन दिल काँचा। अरि साँच कहले पतियाइब रे की॥ जाकर हम हउई ताकर या जग। अरी निरखि परखि गुन गाइब रे की॥ कहे 'दरिया' जग हित नाहिं मित कोई। अरी साहब से चित्त लगाइब रे की॥ (५)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गंग यमुन बीच अवघट घटिया, अरि तहँवा योगिया मठ छावल रे की। अवन भवन करे निसु अधियरिया, अरि कारी नागिनिया उठि आवल रे की॥ मोहिं देहु साहब पान के बीरवा, अरि योगिया के रूप देखि आइब रे की। कहे 'दरिया' धन्य भाग सोहागिनि, अरि बहुरि मंदिर न आइब रे की॥ शब्द विदापद राग तिरहुतिया (९)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अरी सुनु सखी री हे, भँवरा बिमती गइलें मोर। जो मैं जनिती भँवरा चोरियहिं जैबहु हे, चितवों नयनवाँ के कोर॥ मालती के फूलवा पर भँवरा लोभइलहु हे, चरन कमल किन्हों भोर। लीखि लीखि पतिया मों बिनती बिनय करूँ हे, प्रेम धागा जनि तोर॥ ढूँढ़त-ढूँढ़त सकल बन ढूँढ़लो हे, मधुपति मधुवा की ओर। कहे 'दरिया' कामिनि योग युक्ति करु हे, चितवत चंद चकोर॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	106	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अरी सुनु सखी रे हे, पिया मोर सुन्दर सुपाता ।						
नैहर से जब सासुर चली भइली हे, तेजि देहलों सब नाता ॥	सतनाम					सतनाम
चरन कमल पर मैं लपटइलो हे, ज्यों दुम लागु लाता ।						
मैं गुनवन्ती सभ गुण आगरी हे, सो गुण हृदय में राता ॥	सतनाम					सतनाम
पुहुँप पलंग पर पिया संग सुतलीउँ हे, मोहिं छोड़ कतहीं न जाता ।						
जैसे भँवरा पुहुँप पर आसिक हे, तेजि दीन्हों बहु बाता ॥	सतनाम					सतनाम
कहे 'दरिया' पिया पलकहिं देखो हे, वा छोड़ी दूजा न राता ।						
<b>शब्द बारह मासा</b>						
(९)						
प्रथमहिं सतगुरु सत लखावल, बुझि परेला पछताव ।						
मास अषाढ़ सखी पिया नहिं अइले से, कैसे जाइब ओही ठाव हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
बाट चलत सखी बाट रोकल, सावन मन दुःखा साथ ।						
होहु सहाय मोर पियवा हे, निर्मल ज्ञान देहु हाथ हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
काम क्रोध मद लोभ जो आवत, जैसे करत अँधियारा ।						
भादों रइनि सखी मोहिं डेरावल, ज्ञान छपित होय जात हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
आसिन मास सखी आस लावल, पपीहा सुरति लगाय ।						
बुन्द परत सखी मोती होइ गइले, सतगुरु पारस पाय हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
कार्तिक मास सखी स्वाती वरिष गइलें, निर्मल भइले उजियारा ।						
निसि अँधिअरिया सखी भागि गइले से, दरिया दरसन सार हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
जड़ता जाड़ विषम उर लागत, सुधि बुधि गइले हेराय ।						
अगहन मास सखी पिया संग रहिती से, जाड़ जो जात बिहाय हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
पूस मास सखी पाला पड़ि गइले, वृक्ष सब भइले उजार ।						
ऐसही भेष अलेख सभ अरुझेला, मन के पाला बिकार हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
माघ मास सखी ऋतु बसंत अइले, फूल फूलेला चहुं ओर ।						
साधु सभ मिलि फूल लोढ़हिं, नित नई प्रेम चुभि जात हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
फागुन मास सखी फागु खोलतु भर्म अबीर उड़ाय ।						
साधु सब मिलि रंग धोरहिं, प्रेम के पिचुका चलाय हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
चैत मास सखी चित्त चेतहु, चंचल मन करु थीर ।						
साधु नरेखाहिं गगन डोरी से, हरहु कठिन तन पीर हे सखी ॥	सतनाम					सतनाम
<b>107</b>						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	वृषभ मास सखी घाम बड़ो भइले, पिया बिरह उर संग। कंत उपदेया सखी कोई न बतावल, लहरि उठेला आठो अंग हे सखी॥ जेठ मास सखी भइलों मों व्याकुल, सतगुरु अलखा लखाय। 'दरिया' दरसन मिलि गइलें से, प्रेम बिरह उर लाय हे सखी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	शब्द झूमर (9)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	धृक धृक जीवन जीवे जग माहीं, जेहि नहिं भाव भक्ति पिया पाहीं। जो अति सुन्दरि कनक उरेह, भूषण बसन फेरि तन होय खेह॥ तरुणी के तेज फेरि होय गात, सूखि जइहें तरुवर छीन होय पात। बुन्द बुला तन उपज बिलाय, देह धरि-धरि मरि-मरि जाय॥ सासुर सभ सुख गुन के रास, बिनु पिया पंथ यह फिरत उदास। तेजि देहु मान अमरपुर जाय, कहे 'दरिया' फल अमृत खाय॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	(२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तुहुँ पिया प्रेम समुझि चलु हो। टेक (धुवा) पद पंकज गहु गहिर गम्भीर, रटत पपीहरा जल के तीर॥ जल में कुमुदिनि इन्दु आधार, विकसित भवन में भई उजियारा। सुरति सुहागिन कुल उजियारा, रहत पिया मुख बदन निहार॥ अजर अमर बर बरिले नारी, पुरन परगट पिया के पियारी। कहे 'दरिया' मेटली जग गारी, चललों में सासुर सबहिं बिसारी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	(३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मोहिं नहिं भावे लगन लागी हो। लगन के पैड़ा सन्तो सभते न्यार, पिया-पिया प्रीतम प्रान आधार॥ लोक लाज कुल कर्म बिकार, सनमुखा चलि भौ निर्गुण भतार। पाँच सखी संग माया महतारी, इन्ह सभ सम दल दे अँकवारी॥ पिया से सनेह जोरब सम्भारी, पुहुँप पलंग पर सेज सँवारी। कहे 'दरिया' सोई कुलवन्ती नारी, बैठु मंदिर में दीपक बारी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	(४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मोहीं नहिं भावे नैहरवाँ ससुरवाँ जइबों हो। नैहर के लोगवा बड़ अरियार, पिया के सुनि बचन लागे ला बिकार॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अइले मोरा डोलिया भइलो हुलास, सनमुख चललों पिया के पास। पिया एक डंडिया दिहले भेजाय, पांच पचीस कहरिया लगाय॥ चललों में सासुर खुलले किवार, सइयाँ मुख देखि नैन बदन निहार। कहे 'दरिया' धन्य भाग्य हमार, सत के सिंदुरा अमर भरतार॥ (५)	सतनाम	समुझहु हे सखी पिया पंथ प्रेम, अलि मन मगन कमल व्रत नेम। चंद चकोर जैसे चुभुकली दीठी, सब सुख सागर फेरत ना पीठी॥ चातृक के चित बसही आकाश, बरिशु देवस बुंद नाहिं निरास। भाग सुभाग पिया पूरा नेह, कहे 'दरिया' दर्शन फल एह॥	सतनाम	शब्द राग मलार (१)	सतनाम
सतनाम	सखी रे पिया पथिक पंथ जोहै। लागी रहो यह नयन झरोखे, झाँकत सुन्दर सोहै॥ मास अषाढ़ हरखेव नर नारि, मंदिर सुन्दर छायो। चिकन चीर चारु सभ पेन्हे, चन्दन चरचि चढ़ायो॥ सावन सघन सोहावन जहां-तहां, गरजि गरजि घहरायो। बर्षत बुन्द बान हिये मेरो, पिया बिनु कछु न सोहायो॥ भादों अगम अथाह नदी सब, सागर यम जल छायो। अति परचंड दारुन दुख मोपे, रैनि भयावन आयो॥ आयो शरद दिन चौक चांदनी, ललनी बिहरि वृगसायो। मधुकर घानि पिएव प्रेम से, छकित भयोनिधि पायो॥ धृक-धृक मो पै धृक पिया तुमको, सो धृक नहिं गृहि आयो। कहे 'दरिया' योगिन के मत करु, काम लहरि बिसरायो॥ (२)	सतनाम	सखी रे कन्त दुरंतर छायो। है मेरो दिल चातृक के चित, बुन्द बिते पछतायो॥ बाँधेवो गाँठि प्रेम गहि नीके, मदन मुधि पहिरायो। भुलि परी है कुंज गली में, पुंज पदुम अरुझायो॥ अस्सी नीर पचासी पवना, दल साजे सभ आयो। नदियाँ नव बहत्तर भरि गौ, थाह अथाह न पायो॥	सतनाम	109	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



हरि कनहरिया करम करता है, को हरिजन गति पायेवो।  
कहे 'दरिया' नहिं वादर देखहिं, या दर रंग मचायो॥

### शब्द लचारी

(१)

सखी रे पिया गुन पहिरो मैं सारी।  
अभरन आठो तन करि सुन्दर, कोटि मदन छवि वारी॥  
शील संतोष धर्म धरु धीरज, प्रेम प्रवाह सुधारी।  
नयनन लाज अवर नहिं देखों, एक पुरुष की नारी॥  
चलन चलावे जो पिया भावे, निसिदिन मन रहु हारी।  
चंदन चर्चित निर्मल चित नीके, दुर्मति सब दुरि डारी॥  
वर्षहिं सुमन सुगंध सुहासित जब मुख बैन उचारी।  
कहे 'दरिया' सोई सदै सुहाबिन कोटिन में एक बिचारी॥

(२)

सखी रे शोभा सुन्दर ज्ञान।  
भाल को छवि ज्योति जगमग, झलकत स्वेत निशान॥  
नयन बिकसित विमल रस जहाँ, लपट लागेव घ्रान।  
भानु अम्बुज जल के ऊपर, भँवर भर्मित ध्यान॥  
दशन रसना दुति दमकत, छटा को परमान।  
चिबुक चारु कंठ मनिगन, किरन को अनुमान॥  
भुजा सुबुक कमल कर दोउ, नख रतन की खान।  
नाभि कमल ते ब्रह्म उपजेव, वेद विमल बखाना॥  
कटि के ऊपर स्वेत वस्त्र, उलटि कछनी तान।  
जंघ सुन्दर चरन रेखा, सिन्धु सरस ठिकाना॥  
रूप अद्भुत बरानो किमि करि, शेष सहस्त्र ध्यान।  
कहे 'दरिया' दरस को फल, चुभुक चाहत प्रान॥

(३)

अब कहु कैसे पर्दा फाटी।  
दर के ऊपर चौकी बैठी, अच्छा बिछौना खाटी॥  
नख सिख ले सभ भूषण बनायो, पेन्हे जरकसि खासा।  
पान फूल औ मीन मांस है, यम सब देखे तमासा॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सत	





## शब्द राग दीपक

(१)

केतक दिन यह जग जीवन, करि लेहु नाम से प्रीति॥  
 सुन्दर देह देख जनि भुलहु हो, जन आगे बाँधहु मीति।  
 बिनसत बिलम्ब न लागहिं हो, जैसे बालू के भीति॥  
 कलह करते हंसा जइहों हे, जइहें सभ विपरीत।  
 दसो द्वार यम रोकहिं हो, लिहें काया गढ़ जीत॥  
 मातु पिता सुत बंधु होख कोई नहिं जइहें साथ।  
 विषम बान यम मारिहें हो, चलिहो मरोरत हाथ॥  
 राजा रंक सकल सभ गावहिं, हो सगुन गीति।  
 सार शब्द बिनु संशय हो, फेरि-फेरि होहिं अनीति॥  
 छाड़हु चित चतुराई हो, परखहु शब्द निजु सार।  
 'सतगुरु साहब' सरन गहु हो, 'दरिया' करहीं पुकार॥

(२)

पुरुष पुरान जहाँ बैठहिं हो, शोभा बरनि न जाय।  
 कोटिन कामिन मंगल गावहिं हो, रंग बहुत सोहाय॥  
 वाहि देश चलहु हो संतो, जहाँ धूप न छाय।  
 तहवाँ सतगुरु शीतल हो, शीतल शब्द सोहाय॥  
 हंया करहिं कोलाहल हो, अमृत पीवहिं अघाय।  
 अगम ध्वनि तहाँ बाजहिं हो, अभय निशान फहराय॥  
 छूटहिं या जग संशय हो, कहे 'दरिया' समुझाय।  
 अजर अमरपुर बैठहु हो, बहुरि न या जग आय॥

## शब्द हिंडोलवा

(9)

जगत हिंडोलवा झूलता है चौयुग॥

मेरु मंडल खम्भवा गाड़ेव हो दसो दिसा तान॥

चाँद सूरज दोनो भे मचवा हो, झूलहिं साँझ बिहान॥

गगन उड़िगन घटा छायो, पवन को प्रकाश॥

निगम चारु बुन्द वर्षे, पाप पुन्य निवास॥

प्रथमाम झूले शिव सारद, नारद औ सुकदेव॥

सनकादि आदि जो ब्रह्म झूले, गौरी गन पतिदेव॥

मारकण्डे कल्प झूलें, अकथ किन्हों जान॥

झूले अहिपति सहस्त्रबानी, ब्यास वेद बखान॥

राम झूले नौ बार नीके, शक्ति सीया के पास॥

झूले रावन गर्व गामी, जगत किन्ह उपहांस॥

गोपिय के संग कान्ह झूले, मुख मुरली रंग॥

काया धरि कबीर झूले, ज्ञान को प्रसंग॥

बाल्मिक वशिष्ठ झूलें, वेद को मत आय॥

औरि ऋषि सभ सकल झूले, अपनी मति ठान॥

कहें 'दरिया' दया सतगुरु, ज्ञान लिजै मान॥

(२)

मुक्ति हिंडोलवा झूलहू विवेक बिचार॥

सत सुकृत खम्भ गाड़े, सुरति डोरि लाय॥

प्रेम पटरी बैठ के यह, झूलहु संत समाय॥

इंगला पिंगला सुषमना, जहाँ बहत पवन सुधार॥

अर्ध अर्ध द्वादस आवे, चरन चित सम्भार॥

तहाँ जलज झलकत पुहुँप, विकसित भँवर बास समाय॥

तहाँ मोह माया निकट नाहिं, अग्रघ्रानि रहु छाय॥

तहाँ फुंही झंम झंम झरत निर्गुन, रहेव गंग समाय॥

तहाँ मनि मुक्ता निरखि निर्मल, प्रेम पंथ सुहाय ॥  
 तहाँ रहत कह-कह अकथ कथ है, कहे को पतिआय ।  
 तहाँ झूलहिं जन प्रेम बसि होय, आवागमन नसाय ॥  
 छोड़ो सभ भर्म कर्महिं, नाम निश्चय पाय ।  
 अटल पद के लागिहु सब, सकल भर्म बिहाय ॥  
 सुमिरत वेद पुरान पंडित, पूजा कर्म बखानि ।  
 भर्म कर्म ले झूलन लगे, अन्त बिगुरन हानि ॥  
 आदि अन्त ओ मध्य मंडल, झूलहिं मुनि महेश ।  
 कहे 'दरिया' सत महिमा, ज्ञान गुरु उपदेश ॥

(३)

कथिके दोनों खम्भवा हो, कथिके लागल डोरी ।  
 कथिके दोनों मंचवा सन्तों, कवन झकझोरी ॥ हिंडोलवा हो ० ॥  
 सत सुकृत दोनों खम्भवा हो, सुषमनि लागलि डोरी ।  
 अर्धउर्ध दोनों मँचवा सन्तों, इंगला पिंगला झक झोरी ॥  
 कवन सखी सुख बिलसे हो, कवन कर्म दुःख साथ ।  
 कवन सखिया सुहागिन सन्तों, कवन कलम गहे हाथ ॥  
 संत सनेही सुख बिलसे हो, कपट कर्म दुःख साथ ।  
 पिया मुख सखिया सुहागिन संतों, राधे कलम गहे हाथ ॥  
 जिन्हिं गहल तिन्ह पावल हो, निर्गुन नाह अधार ।  
 कहे 'दरिया' सुनु कामिनि संतों, उतरहु भवजल पार ॥

(४)

कवन रे झूलावे कवन झूलहिं हो, कवने बैठे पाट ।  
 कवन पुरुष नहिं झूलहिं संतों, कवन रोकत है बाट ॥  
 मन रे झूलावे जीव झूलहिं हौ, शक्ति बैठ लि पाट ।  
 सत पुरुष नहिं झूलहिं संतों, कुमति रोकत बाट ॥  
 सुर नर मुनि सभ झूलहिं हो, झूलहीं तीनो देव ।  
 गनपति फनपति झूलहिं संतों, योगी यती सुकदेव ॥  
 जीव जन्तु सभ झूलहिं हो, झूलहिं आदि गनेश ।

कल्प कोटि ले झूलहिं संतो, कोई न कहत संदेश॥

सत शब्द जिन्ह पावल हो, भयो सो निर्मल दास।

कहे 'दरिया' दर देखहु संतो, जाहु पुरुष के पास॥

(५)

मन लावल हिंडोलवा हो, पवनहिं हलफ हीलोर।

तनिक थीर जो पावों हो सखी, पिया के बचन किमि भोर॥

पाँच सखी संग दारुन हो, आपन सुकृत साथ।

आपनहिं मद सभ मातलि हो सखी, किमिकरि होहु सनाथ॥

चतुर मासा व्यतिति भइलें हो, चारिउ पन तन गात।

देखि सरद की चाँदनी हो सखी, शीतल गुन भयो तात॥

जोहत पंथ निति कामिनि हो, काम कला भो छीन।

अजहुँ पिया जो आवहिं हो सखी, जीयत जल देखि मीन॥

कमल भँवर नहिं त्यागहिं हो, येहि बड़ो की रीति।

कहे 'दरिया' सुनु दुलहिनि सुखी, दुल्लह साहब नित॥

(६)

अवन पवन दोनों मचिया हो, कुमाति के लागल डोरी।

माया मदन सँग झूलहिं हो सखी, अमृत तेजि विष घोरी॥

पाँच पचीस केरि झालरि हो, गहे चंगुल दोनों हाथ।

पल-पल छन-छन डोलहिं हो सखी, मन मकरंद जेहि साथ॥

ऐगुन आठो उर बसहिं हो, कलम गहे कर पास।

आपन चरित्र बिचारहिं हो सखी, पिया के लिखहिं त्रासु॥

पिया से पीठी दे बैठी हो, मनहिं करावल रोस।

आपन गुन सभ गावहिं हो सखी, पिया के लावहिं दोष॥

आपन पति हित जानहु हो, पर पति कवन काम।

कहे 'दरिया' सुनु कामिनि हो सखी, सुमिरहु आठो जाम॥

शब्द राग सोरठा

(९)

संतो कैसे के होहू सूहागिन, मन बड़ दारुन दागा॥

पल-पल क्षण-क्षण मोहिं सतावत, पाँच तलविया साथ ।  
 जाके मुख रसना नहिं श्रवन, नाहिं चरन नहिं माथा ॥  
 जहाँ चलो वहाँ संग चलतु है, राखत आपन बात ।  
 प्रेम गली अति साँकरि सुन्दर, तामहँ दोय समात ॥  
 एक पलंग पर पिया संग सुतलों, नाहिं चिन्हल कर्तार ।  
 एक महल में दस झरोखा, के बुद्धि हरल हमार ॥  
 छोड़ सुबास कुबास के धावत, निस दिन रहत उदास ।  
 कस्तूरी नाभि में बासा, मृग ढूँढ़त घास ॥  
 रगरहु-रगरहु नीके रगरहु, चरचहु चन्दन अंग ।  
 कहे 'दरिया' जाते पिया पंथ पैहों, सदा रहो एक संग ॥

(२)

संतो नीके गहो सतनाम, हंस अमरपुर जाय ॥  
 फेरि-फेरि आवे फेरि-फेरि जावें, फेरि फेरि धरिया देह ।  
 मारि जारि तन कोयला करिहें, डे गगन में खेह ॥  
 यम दारुन दावा राखे हो, डारहिं फाँस अनन्त ।  
 चेतहु चित चेतावनि नीके, टूटि काल के दंत ॥  
 भवजल अगम अथाह प्रबल है, सतगुरु करु कनहार ।  
 सत सुकृत के नाव चढ़ि लेहु, उत्तरहु भवजल पार ॥  
 पुहुँप पलंग पर पुहुँप बिछवना, पुहुँप की लागलि घानि ।  
 उज्जवल दशा मन मैल न कबहीं यहीं बिमल की खानि ॥  
 पल-पल प्रेम गहो पद पंकज, देखजु अरध अमान ।  
 कहे 'दरिया' जाके आड़ अटक नहिं, जो रमहिं संत सुजान ॥

शब्द राग जजावती

(९)

संतो भजन बिनु अभागा ॥  
 बिनु जल कमल सुख यह मूल से, भँवर भरमित भव लागा ।  
 मीन जल बिछुरि बिकल होय कलपेव, कठिन कर्म के दागा ॥  
 बास घरी अग्नि तेहि भीतर, विषम विकल होय जागा ।

मृग मद माँति आपन पै खोवे, गीरि परा पगु डागा ॥  
 काल बधिक बँधन तेहि लागा, ऐसो तन कहँ त्यागा ।  
 जरत बुतावनिहार ना कोई, काम लहरि तन लागा ॥  
 बिनु सतगुरु मुक्ति फल नाहिं, ज्यों सगुन बतावत कागा ।  
 कहे 'दरिया' सोई जन बचिहें, जो गहे नाम सुभागा ॥  
 (२)

अभागा तैं नाम न जाना रे ।  
 पानी के बुद बुल्ला पल मांह बिलाना रे ॥  
 कोठा महल अटारिया, बहु सुख बखाना रे ।  
 ज्यों आया त्यों जायेगा, विषय लपटाना रे ॥  
 हाथी घोड़ा माल खजाना, सब गर्व भुलाना रे ।  
 पल में प्रलय होत है, पीछे पछताना रे ॥  
 मातु पिता सुत बांधवा, सभ कहत एगाना रे ।  
 कहे 'दरिया' सतगुरु बिना, यम के हाथ बिकाना रे ॥

### शब्द राग पंजाबी

(१)

नैहर नेहदाई आज गयो वदी कानी ॥  
 उड़ि गई पंक्षी मर्म न जाने, वाकी अकथ कहानी ।  
 अक्षय वृक्ष पर किन्ह बसेरा, बोलत अमृत बानी ॥  
 चौ डंडी चित हित पर हिय दे, चढ़िहो काँध बिरानी ।  
 माता पिता सबही मिलि देखहिं, चादर ओढ़ि छपानी ॥  
 मिट्टी के घर में घ कियो है, यह तेरी मेहमानी ।  
 साहब खुश दिल खुश में रहना, ऐसी नेक निसानी ॥  
 मीर उमराव मलिक जो कहन्दा, अहन्दा या जग फानी ।  
 चलन्दा सब कोई थी न रहन, साहब सिफित बखानी ॥  
 यह भव सागर भर्म जो अहन्दा, बहन्दा चहुँ दिस पानी ।  
 कहे 'दरिया' दरगाह सेवन्दा, सुनदा वो गुरु ज्ञानी ॥

(२)

जग में जीवन थारेरा-थोरा वो यार जी ॥

यह संसार हम जाते देखा, जीता तो भयो जग सोरा-सोरा-सोरा।  
वोययार जी॥

सतगुरु ध्यान धरहु नर लोई, करहु बचन जति भोरा-भोरा-भोरा।  
बोय यार जी॥

सुन नर मुनि गन गंधर्प लोटे, काल कठिर बड़ रोरा-रोरा-रोरा।  
वोय यार जी॥

आवत जात रहट की घरिया, भव सागर झक झोरा-झोरा-झोरा।  
वाये यार जी॥

कहे 'दरिया' सोई जन बचिहें, जिन्हिं चरन कमल रस बोरा-बोरा-बारो।  
वोय यार जी॥

### शब्द राग गजल

(१)

कहाँ है दिल खुसी जब लग नहिं दीदार दिलवर का,  
बड़ी मुश्किल अरे यारों, जहाँ दीदार दिलवर का॥  
लगें ठग चोर बाँधे सिंह औ जल कंदला भारी,  
पिसाचै देव योगिनी भूत सापिन नागिन कारी॥  
चला तन मन को वारे सूरमा, उस राह परचारी,  
हने को हनता पहुँचा, देखा दीदार दिलवर का॥  
नहीं कोई कूर कादर, कर सके दिल कस्त जो आवे,  
है मरना हक अरे यारों, बहुरि पीछे न पछतावे॥  
सजन के रास्ता कोई, महरमी यार बतलावे,  
कहे 'दरिया' सुख दिल से करो दीदार दिलवर का॥

(२)

महल दौलत पेदर मादर बिरादर खास बेटे हैं,  
बहू बेगम फूफू खाला, माया के बंधन लपेटे हैं॥  
कोई इसमें नहीं तेरा, सभे जर मसे समेटे हैं,  
कहे 'दरिया' खुश दिल से करी दीदार दिलवर का॥

(३)

करो मुरसिद उसे महरम जो यार से होवे,



सजन से जा मिला दे दाग दिल सभ तेरे धोवे ॥  
 बिता हुआ जाता है आखिर दिन तूँ क्या गाफिल पड़ा सोवे,  
 कहे 'दरिया' खुश दिल से करो दीदार दिलवर का ॥  
 कहर दरिया बहा जाता हुआ है रात अँधियारी,  
 लहर पर लहर चिआवे, माया मन की है फैलारी ॥  
 लगाप दे पार खे करके, उसी केवट की बलिहारी,  
 कहे 'दरिया' खुश दिल से करो दीदार दिलवर का ॥

### शब्द रुबाई

(१)

दिल मेरा कहता है जो महबूब प्यारे का कदम ।  
 पावों अगर चशमों अपाने में राखो मै दम बदम ॥  
 आँख कहती है गली मेरो जो आवे आस नाय ।  
 ने आंसू से कदम धोकर राखों दिल में छिपाय ॥  
 दिल चश्म में रखता, चश्म दिल में रखे अपना लल्ला ।  
 'दरिया कहे उस लाल का, लव में रखे तबहीं भला ॥

(२)

केते जगत जीव सभे कहे मैं हों सुहागिन पीव की ।  
 प्रचार के सबसे कहों मै भी अपाने जीव की ॥  
 दिलवर न मिलता जब तलक पूजे सुहागिन समशिला ।  
 सतगुरु सुहागिन जब कहे 'दरिया' सजन सहजे मिला ॥

(३)

सभ जग कहे मैं हों सयाना, धाम धन धरनी किया ।  
 उसका कदर जाना नहीं, साहब जे सुन्दर तन दिया ॥  
 'दरिया' कहे तुम जिकिरि कर सभ, फिकिर छोड़ो दिन टला ।  
 इन सभ सयानों से तफाउत रह दीवाना हो भला ॥

(४)

जग नाचते को उठ खड़ा तो, लाज करना क्या भला ।  
 नहिं लोभ करना जीव का, जब सूरमा रन में चला ॥

सारे में जा पहुँची सती, जरने से खुश दिल वाह-वाह।  
‘दरिया’ जिसे सतगुरु मिला, मरने से क्या डरना रखा॥

(५)

जिसको मिल सतगुरु से प्याला प्रेम का जाने सोई।  
पीकर हुआ है मस्त मतवाला, मजा जाने सोई॥  
मरने से क्या डरना उसे, हालत में जो मनसूर है।  
‘दरिया’ वोही जाने, मिला जिसको प्याला भरि पूर है॥

(६)

जीव पंक्षी काल ब्याधा, कर्म सर जोरा बन।  
भर्म टाटी काम कंपा, माया का लासा लग गया॥  
बटई सारस मोर तीतिर सुआ सारे बझि रहा।  
‘दरिया’ कोई सहबाज सतगुरु का, उड़ा सो निज घर रहा॥

### शब्द मनोरा झूमर

(९)

प्रेम फूल एक आनहु रे मनोरा।  
मालिनी सेहरा बनावहिं रे मनोरा॥  
सेहरा सोभेला सिर छत्र रे मनोरा।  
नाम सुगन्ध सभ छिकरहिं रे मनोरा॥  
झूमि-झूमि देहिं सभ ताल रे मनोरा।  
निजु घर आनन्द बधाव रे मनोरा॥  
‘दरिया’ साहब मंगल गावल रे मनोरा।  
साहब सुरति लगावहु रे मनोरा॥

### शब्द राग बसंत

(९)

संतो सुमिरहु निर्गुन अजर नाम, सब विधि पूजहिं सुफल काम॥  
निर्गुन नाँह से कर ले प्रीत, लेहु काया गढ़ कामहिं जीत।

ऐनक मूल शब्द है सार, चहुँ ओर दिसे रंग करार।  
 झरति झरि तहाँ झमकत नूर, चित चकमक गहि बाजत तूर।  
 झलकत पदुम गगन उजियार, दिव्य दृष्टि गहु मकर तार।  
 द्वादस इंगला पिंगला जाय, परिमल अग्र बास तहाँ आय।  
 बंक कमल मध्य हीरा अमान, श्वेत बरन भौरा तहां जान।  
 खोजिये सतगुरु सत निशान, युक्ति जानि जिन्हि कथे ज्ञान।  
 कहे 'दरिया' यह अकह मूल, आवागमन के मेटे शूल॥

(२)

संतो मन चिन्हि खेलो ऋतु बसंत, बिन परिचय नहिं मिलहिं कंत॥  
 गिरिवर चढ़िगौ मीन बिनु जल, सिंह सियार के देखिये बल।  
 कौन लड़े कौल छोड़े खे, सिंह ठनकु भाजु कुन्जर खेत।  
 सुखि गया सागर अगम नीर, सिधरी सब सुखि मोटि गो पीर।  
 बगुला रोवहिं सीस उतानी, किमि करि जीवहिं भैगौ हाँनि।  
 वेद बाट कथि कहनी जान, ताकी जग में बहुते मान।  
 गुरु शिष्य संग बाजी भाव, अवसर परिगौ यम के दाव।  
 योगी यति सब भेष अलेख, सब मिलि सुमिरहिं रुप ना रेख।  
 या तन तेजि जीव चलिहें भाग, तीनि लोक में लागि आग।  
 कर्म काट खोजु शब्द हिं सार, समुझ परे तब वारे पार।  
 मनि दीयरा नहिं होत छिन्न, कहे 'दरिया' छपलोक है भिन्न॥

(३)

संतो खेलहु बसंत सुख सरब ज्ञान, ज्यों जल कमल भँवर भान॥  
 जैसे परिमल प्रेमहिं घ्रानि, जैसे पारस कंचन खानि।  
 जैसे भृंग कीट कह कीन्ह, जैसे चुम्बक लोहा लीन्ह।  
 जैसे केदली कपूर अंग, जैसे मोती सीपहिं संग।  
 जैसे हीरा पंक्षी पास, ऐसे जग में भयो दास।  
 जैसे तिल महँ फूल बास, जैसे मृग मद नाभी पास।  
 जैसे जल मह मिलेव रंग, नाम बिमल गुन जीव के संग।  
 जैसे दधी मह घृत घ्रान, ऐसे लीजे वेदहिं छान।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जैसे अमृत पीवहिं शूर, विषि भाजन सब भयो दूर। इमि कहेव सतगुरु शब्दहिं भेद, पंडित ज्ञाता करहु निषेद। 'दरिया' दरसन करहु बिचार, मुद्रा मूल गहु शब्दहिं सार॥ (४)	सतनाम	जहाँ जइहो तहाँ तीरथ तीर, यहाँ गंगा यमुना निकट नीर॥ यहाँ निर्मल जल है अमि संग, झरत सुरसती होत न भंग। मंजन करहिं सज्जन जो होय, अघ पातक सभ बैठक खोय। यहाँ लहरि उत्तंग हो सिंधु समाय, उलटि आवे फेरि पलटि जाय। यहाँ चंद सूर्य सब गन है साथ, ज्ञान दीपक जब आवे हाथ। यहाँ पांच पचीस संग मन है भूप, देवल देबी अजब है रुप। यहाँ भूख प्यास है दया समेत, बोइये बीज जो हो सुखेत। सुरसरि माँह जो बसहीं जीव, दरद बिना कहु काको पीव। ताके शरण कहु कैसे जाय, धीमर सो जीव धर के खाय। सतगुरु कहा शब्द उपदेश, अगम निगम सब सुनो संदेश। सत रतनी भव सिन्धु पार 'दरिया' दरसन गुन है सार॥ (५)	सतनाम	जहाँ जइहो तहाँ मनकी ठाट, बाट चलत पगु गड़िगौ काँट॥ गृहि तेजि बन खण्डे बास, ओढ़े बाघम्बर तन के त्रास। काम क्रोध दुई बाँके बीर, कर में कमठा कसे हैं तीर। मन मृगा से किया है प्रीत, वाके कोई न सके जीत। लुटेव पखरिया नेजा हाथ, तिनहुँ के धरि ठोके माँथ। झुलुवा झूलहीं धुम्र पान, इधर-उधर पाँव उतान। झूलहिं गादुर द्रुम के संग, कै कल्प जीव करहीं भंग। माघ मास यह तीरथ तीर, सुरसरि धारा अगम नीर। जल सयन करे वोय जल के पास, तीनहु के यम डारस फांस। गुफा में बैठी के दबाका है चोर, पवनहीं साधु ज्ञान भोर। साधत साधत भै गौ छीन, जैसे जल बिनु अवटे मीन। भीतर भोग ऊपर है योग, जटा मुकुट सिर देखहीं लोग।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



(८)

समझहु ज्ञानी शब्द सार, अगम भेद निजु करो निरुवार ॥  
 बेद कितेब कहीं पढ़े पुरान, कहीं योगी निसि धरे ध्यान ।  
 बहु बक्ता कहीं कथेही ज्ञान, उर्ध मुख कहीं धुम्र पान ।  
 पंच अग्नि कहीं तन के त्रास, कहीं जल सयन लेहीं निवास ।  
 कंद मूल कहीं दूधा धार, बिनु सतगुरु होहिं न पार ।  
 होम यज्ञ कहीं देहीं दान, भर्मे तीरथ पूजे पषान ।  
 माया बसी कोई धरे हंकार, ताते यम तेहीं करे संघार ।  
 केतनो युक्ति करे संसार, बिनु सतगुरु नहिं होखे पार ।  
 कहे 'दरिया' यह जग अंधेर, पढ़ि पण्डित भजै यम के चेर ॥

(९)

खेलहिं बसंत सब संत समाज, बिनु किन्नर धुनि बाजन बाज ॥  
 बिनु तुरे जहँ जोतहि रथ, बिनु पग चले सो अगम पथ ।  
 बिनु दीपक जहँ बरे ज्योति, बिनु सीपन कीमि मोती होति ।  
 बिनु फूलन जहँ गूथहिं हार, बिनु मुख होहिं सुमंगल चार ।  
 बिनु सखियन जहँ गवहिं गीत, निर्गुन नाह से करि लेहु प्रीत ।  
 बिनु आज्ञा जहँ अरध बास, बिनु परिमल जहँ आवे सुबास ।  
 बिनु झालर जहँ स्वेत निशान बेद, बिना घटा घन झरे अमान ।  
 बिनु विद्या जहँ भनहिं बेद, है कोई पंडित करे निखेद ।  
 कहे 'दरिया' यह अगम ज्ञान, समुझ बिचारे कोई संत सुजान ॥

(१०)

बेलरि के फूल सुन्दर पात, मृा चरे सो दिन औ रात ॥  
 जतन करे बुद्धि लेत छीन, चिन्ह न परे वाकी चाले भीन ।  
 निगम कहे तेहिं अनन्त रूप, तामे बाझे सुर नर भूप ।  
 निर्गुन सुर्गन सब कथहीं ज्ञान, उत्पति परलय साँझ बिहान ।  
 डोरी टूटी चंग के साथ, किमि करि घैंचे गुन नहिं हाथ ।  
 योगी योग करे तन के साधि, लखि न परे वाके लेत बाँधि ।  
 हरिजन कथहीं बहुत बैराग, यम की साटि देत है दाग ।



जहां जइहो वहाँ झूठी बात, साच कहत मन टूटी जात ॥

झूठा हाकिम हुकूम जोर, झूठा कायथ आपहीं चोर।  
लेखनि लिखि-लिखि करे घात, अपने आप से बाँधे जात।  
माया बादल झूठा लोग, झूठा पंडित गनहीं योग।  
कहते-कहते भै गौ अंत, झूठा कामिनि झूठा कंत।  
झूठा मित मितार्ई किन्ह, रुवा लपेट के अगिनी दीन्ह।  
झूठा धीमर जाल झीन, तामें बाझे मांगुर मीन।  
झूठा लेना देना झूठ, मूर नहीं मिले ब्याजे खूट।  
झूठा तीरथ पाहन पास, मन परिचय बिनु भया उदास।  
आपे साँच साहब साँच, थित चिन्हे बिनु बोलत कांच।  
कहे 'दरिया' कोई साधु होय, पाप पुन्य कहँ बैठे खोय ॥

(१४)

धन मद माँति सो करत जोर, छाड़ि भक्ति मद ममिता मोर ॥  
हरिनाकुस मातेव परचार, किन्ह बैर सुत से रार।  
छाड़ भक्ति नहिं हतो प्रान, नर सिंह रुप धरि कियो निदान।  
रावन मातेव कंचन कोट, मन की ममिता हृदय खोट।  
सीता ले आई करन चाहे राज, मारे राम तेहिं सैन साज।  
छव चकवे माते चक्रवर्ती, मातेव कंस ना जानु गती।  
भगिनि बांधे करि हंकार, देवकी सुत होय किन्ह घोर।  
क्षण में क्षौहणी गयी बिलाय, मोरे कृष्ण तेहिं रन चढ़ाय।  
राव रंक सब मातेव जानि, मन बाजी जीव होत हाँनि।  
कहे 'दरिया' मन माया है वीर सत शरन कहु लागु ना तीर ॥

(१५)

जड़ जन करहीं साधु से रारी, हरिनाकुस गया नख से फारी ॥  
साधु महिमा गुन कीर्ति अपार, दीप दीप सब वार पार।  
दो-दो भुजा नर करत जोर, गर्व प्रहारे वाण न तोर।



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम		
सतनाम	जब दुर्योधन चढ़िया खेत, लिन्ह लपेट सब रखा समेत। उग्रसेन सुत कांस काल, धरि के पटके जबर माल। और नृप केते भया निखेत, बहु बिधि मरिगौ गनिये केत। है यह साँच झूठ नहीं हो, साखी पुरातन शब्द विलोय। साधु द्रोह जो करहीं को, महा नरक जीव पातकि होय। मीठा फल किमि लागत तीत, कहे 'दरिया' गुरु ज्ञान हीत॥ (१६)	सतनाम	सुख सागर जियरा करु अनंद, प्रेम मगन खेलो तेजो द्वन्द॥ छुटिगौ तिमिर उदित भान, स्वेत मंडल बीच शोभे निशान। गगन गरजि घन होत तरंग, सिंचत गुलाब शीतल भौ अंग। विकसित कुमदुनि उदितज चंद, भूले भँवर तहाँ खिलेव रंग। गगन मंडल बीच भया बास, चित चकोर तहाँ चुंग सुबास। अकह कमल के ऊपर मूल, सहस कमल तहवां रहु फूल। झरि झरि परत सुरंग रंग फूल, प्रेम अगम होय समतूल। भौ निर्मल पायो शब्द सार, सत सरन गहि होहू पार। अजर अमरपुर भया बास, कहे 'दरिया' मेटा यम के त्रास॥ (१७)	सतनाम	संतो मानु शब्द जो करे बिबेक, अगम पुरुष जहाँ रुप रेख॥ अष्टदल कमल सुरति लवलाव, अजपा जपि के मन ठहराव। भँवर गोफा में उलटि जाय, जगमग ज्योति रहे छवि छाय। बंक नाल गहि घैंचु सुत, चमके बिजली मोती बहुत। स्वेत घटा चहुँ ओर घनघोर, अजरा ज्योति तहाँ होत अँजोर। अमिय कमल निजु करु बिचार, चुवत बुन्द तहाँ अमृत धार। छव चक्र खोजि करहु निवास, मूल चक्र जहाँ जीव के बास। काया खोजि-खोजि योगी भुलान, काया बाहर पद निर्बान। सतगुरु शब्द जो खोजे लोग, कहे 'दरिया' तब पूरन योग॥ (१८)	सतनाम	सोई बसंत खेलहू हंस राज, जहाँ नभ कौतुक सुर समाज॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम		

129

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

अक्षय वृक्ष तहाँ डार पात, सखा सघन घन लपटि जात ।  
 मधुर मनौहर राग रंग, अनहद ध्वनि, ताल ना भंग ।  
 बेइली चमेली विविध फूल, सुधा अग्र गुलाब मूल ।  
 भँवर कमल में भाव भोग, पदुम पदारथ करिये योग ।  
 बुन्द अखण्डित वर्षे नूर, गगन गरजि घन बाजे तूर ।  
 चमकि छटा चहुँ ओर अँजोर, झींगुर के झनकार है सोर ।  
 नहिं दिन दिवाकर रैनि चंद, कला सम्पूरन होत ना भंग ।  
 उड़िगन मणि-मीन तहाँ दृष्टि पेख, आदि अन्त मध्य मूल देख ।  
 उदित उजागर हंस सार, नहीं दुःख दारुन यम के जार ।  
 मुक्ति महातम सतगुरु मंत, 'दरिया' दरसन मिलेव कंत ॥

### शब्द होरी

(१)

होली रंग रचो है, ज्ञान निर्गुन नाम की ॥  
 अंगला पिंगला सुषमनि सुन्दर, जूथे बनी हैं बाम की ।  
 गंधीरा गंध छिरकन लागे, फोज टरी है काम की ॥  
 महल-महल रंग बैटु झरोखे, मुख जोहत सब श्याम की ।  
 लागी झरि झाकरि सारेधन्ह की, सुधि बिसरी है धाम की ॥  
 ऐन अजीर अबीर सो छायो, घेरि आयो सब ग्राम की ।  
 कहे 'दरिया' ऐसो फागु खेलो, बजत किन्नर तान की ॥

(२)

होली खेलत नाम सुगंध अवसर आइया ॥  
 त्रिकुटी के तट पर रास रचो, स्वर सुनि सखी सब धाइया ।  
 अग्र गुलाब कुँमकुँमा केशरि, सुधा चरचि चढ़ाइया ॥  
 उन्मुनि पीचुका केशरि भरि लिए, छिरिकत प्रेम सोहाइया ।  
 बर्षत सुमन सुगंध सुहासित, गगन मगन झरि आइया ॥  
 मंदिर मगन मनोरथ मन के, बाजत मुरली छाइया ।  
 कहे 'दरिया' कमल दल फूले, भँवर बास लोभाइया ॥

(३)

कोई हंसा चतुर सुजान होली खेलहीं ॥  
 अग्र कुँमकुँमा नाम सुबासित, प्रेम भक्ति निजु सार ।  
 स्वेत बरन सिर छत्र बिराजित, बाजत अनहद तार ॥  
 परिमल बास प्रेम रंग छिरिकत, कामिनि कर लिए साज ।  
 कोटिन कामिनि जाके चँवर डोलावे, बैठक हंस सब राज ॥  
 एक रुप सब हंस बिराजित, बरनों कवन अब साज ।  
 धन्य-धन्य फागु खेलहिं, 'दरिया' तेजि सकल भर्म लाज ॥

(४)

सब हंसा सजन समाज होली खेलहीं ॥  
 जाके नाम प्रेम रंग उपजे, लागत हिरदयें बान ।  
 शिव शक्ति मन मगन भयो हैं, सहजहिं सुरति समान ॥  
 चंदन चर्चित चित चुभुकायो, प्रेम अग्र लिए ज्ञान ।  
 बुकुवा भर्म भस्म करि डाले, माँगत है मोक्ष दान ॥  
 अनहद ताल पखाउज बाजत, सुन्य सहज में ध्यान ।  
 कहे 'दरिया' कोई संत बिबेकी, फगुआ आगम जान ॥

(५)

होली सदैव संत समाज, संतन गाइया ॥  
 बाजत उपंग झालन झनकारत, अनहद धुनि घहराइया ।  
 झरि-झरि परत सुरंग रंग तहाँ, कौतुक नभ में छाइया ॥  
 राग रबाब अघोर तान तहाँ, झीं-झीं जंतर लाइया ।  
 छवो राग छतीसो रागिनी, गंधप सुर-सुनि धाइया ॥  
 पाँच पचीस भवन में नाचे, भर्म अबीर उड़ाइया ।  
 कहे 'दरिया' चित चंदन चर्चित, सुन्दर सुभग सुहाइया ॥

(६)

होली खेलिए संतो, निर्मल ज्ञान बिचारी ॥  
 कमल उपारी अनल बीच रोपेव, प्रेम सुधा रस डारी ।  
 कंचन डाहे अगम जल भीतर, सकल भर्म सब जारी ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कोकिल ध्यान धरी सरिता में, जल में दीपक बारी। मीन सिखर अस्थिर घर पायो, संशय सकल बिसारी॥ बासर चंदा रैनि भान छवि, देखहु दृष्टि उधारी। धरती वर्षे गगन बढियानेव, पर्वत फूटि पवनारी॥ अर्थ सीप सुपट खोलि बैठे, लागु मोतीन की लारी। कहे 'दरिया' यह अगम भेद है, बुझो संत सम्भारी॥ (७)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	एही होली को दाव ज्ञान सुख रंग है॥ मन मथुरा तन वृन्दावन, पाँच सखी सब संग है। अनहद ताल पखाउज बाजे, ताल कबहिं नहिं भंग है॥ राधे राग रबाब उधो लिए, कान्ह न्निर मुख चंग है। गोपी ग्वाल थार लिए थिरके, छिरिकि सुगंध भरि अंग है॥ जल यमुना है त्रिकुटी के तट, उठत लहरि तरंग है। कहे 'दरिया' सतगुन सो रजित, कोकिल बैन सुगंध है॥ (८)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	खेलो-खेलो-फगुआ संतन संग, निजु गहिले रंग करार॥ अग्र गुलाब कुँमकुँमा केशरि, सुमति लेहु भरि थार। उन्मुनि द्वार गगन झरि लागी, बाजत अनहद तार॥ जाके नाम छत्र सिर धार, चन्दन चरचि बिचार। काया कर्म नाम निजु केशरि, तरत न लागे बार॥ पाँच सुहागिन पायन परतु हैं, निर्गुन नाँह अधार। घुँघट खोलि लाज बिसरावे, कहे 'दरिया' होय पार॥ (९)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	होली खेलिये संतो निरखहु प्रेम गली॥ रंग महल निकलि एक बनिता, बोलत बैन भली। सुर नर मुनि कोई अंत न पाया, चंचल चपल चली॥ कर पल्लव पर आनि स्थित है, दूरि से निकट झली। जाकी ज्योति जग छवि छायो, सो नयनन में हली॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

अग्र कुँमकुँमा केशरि, मन मधुकर जौ खेली।  
कहे 'दरिया' दर देखि परा है, दरसन कंज कली॥

(१०)

होली खेलिये संतो चलहु अमर पुर धाम॥  
पंडित जप तप ध्यान लगावे, त्रिय संध्या एक जाम।  
योगी योग करत सब थाके, चिन्हि परे नहिं ग्राम॥  
योग करे फेरि भोग में आवे, बीर बड़ौ है काम।  
पाँच तलबिया संग बसंत है, देहिं चौगुना दाम॥  
काया महल में ज्योति बिराजे, सोई सुन्दर सुख बाम।  
कहे 'दरिया' झरि लगु गुलाब की, काया अग्र निजु नाम॥

(११)

होली मैं कैसे खेलों मोहीं आवत नयन में लाज॥  
पिया परदेश हमें का होली, नाहिं भावे रंग आज।  
आयेंगे पिया खेलोंगी मैं होली, पेन्होंगी सारी साज॥  
पाँच सखी मिली वाँह गही हैं, चलहु जहाँ ब्रजराज।  
कुल की कानि मोहिं नाहिं भावे, एक पिया से काज॥  
पतिनि को पत राखनि हारा, सोई बड़ा सिरताज।  
कहे 'दरिया' पियार आयें मंदिर में, सब विधि सुफल सकाज॥

(१२)

होली खेलिए यह मन लाज बिसारी॥  
जूथ-जूथ बनिता बनि आये, नख-सिख भूषन सँवारी।  
लाल जरद पेन्हे सब सारी, घुँघट को पट फारी॥  
एक से एक बनी ब्रज बनिता, घेरि रही बनवारी।  
धाय धरे झक झोरत झारत, देति हैं आनन्द गारी॥  
वृन्दावन में रास रचो है, गोपी ग्वाल मुरारी।  
कहे 'दरिया' ऐसो रंग परस्पर दम्पति रचहीं धमारी॥

(१३)

होली खेलहीं सब वृन्दावन में झारी॥

सब सखियन मिलि मंत्र रचो हैं, कपड़ेव मोहन मुरारी।

लिये सुगंध रंग ग्रारि भरि, पिचुकारिन की मारी॥

ग्वाल बाल सब कृष्ण बोलायो, को जीते को हारी।

बाजत ताल मृदंग झाल डंफ, किन्नर बाजु सुधारी॥

वृन्दावन की कुँज गली में, घेरि आयो बृज नारी।

उड़त अबीर नीर केशरि सब, घेरि घटा घन झारी॥

होत परस्पर आनंद मंगल, प्रेम प्रीति देहिं गारी।

मारु गुलाब लाल मुख उपर, हारेव कृष्ण मुरारी॥

हमसे जीति कवन जग जइहें, कह वृष भान दुलारी।

कहें 'दरिया' यह झीनि जाल है, बिरला सके सम्भारी॥

(१४)

कोई संत बिबेकी रन मंडे मैदान॥

ज्ञान के घोड़ा चित के चाबुक, लव लगारम दे जान।

शब्द सांगि शमसेर जो लीजै, तब चढ़िये मैदान॥

प्रेम प्रीति के बख्तर पेन्हो, सुरति कियो है कमान।

एक तीर मारेव तरकस से, बिचले हैं पाँचो जवान॥

सतगुरु को जहाँ अमल फिरो है, जीति लियो हैं निशान।

कहे 'दरिया' कोइ संत जहूरी, जाको खेत जो रहा अमान॥

(१५)

होरी करहु बिबेक बिचार पंडित ज्ञानियाँ॥

कमल उपारी अनल बीच रोपेव, अमृत रस सो सानियाँ।

पदुम प्रकास बिना रबि उगेव, लेत सो मधुकर घानियाँ॥

बिना मूल मालती तहँ सोभे, बिनु सींचे सुख जानियाँ।

मूँस मंजारहिं प्रीति भयो हैं, एक पलंग पर आनियाँ॥

सीप स्वर्ग स्वाती जल नीचे, उलटि के बुन्द समानियाँ।

मीन सिखर सरिता महँ तितिर, यह गुन किन्ह बखानियाँ॥

फिरत भुजंग मेंढक के उपर, बैरी भेद जानियाँ।

गाय बाघ एक घर में राखेव, दोनों भौ एक ध्यानियाँ॥

इमि करि बूझे शब्द सूझे, सोई जगत गुरु ज्ञानियाँ ।  
कहे 'दरिया' धन्य संत जगत में, जिन्हि यह पद पहचानियाँ ॥

(१६)

मोहीं न परे पहिचान कैसे के छूटिहैं ॥  
काया कर्म नाम निजु केशरि, छिरिक प्रेम सो लूटि हैं ।  
बिलगि बिहरि फेरि उलटि कंज पर, मन मधुकर रस लूटि हैं ॥  
सुन्दर सुभग सलोन सर्वज्ञ हैं सोई चरन निज लूटि हैं ।  
ज्यों हीरा घन सहे लोहन की, सो नग लाल न फूटि हैं ॥  
जो रंग उपजे अम्बुज नयन में, प्रेम धागा नहिं टूटि हैं ।  
'दरिया' दरसन सो फल पायो, काम, क्रोध मद छूटि हैं ॥

(१७)

लागी झरी गुलाब की, मानो घन होय वर्षहिं मेह हो ।  
लागी लगन ललचि लालन सो, तन मन धन करे खेह हो ॥  
लागी कठिन निपन आँखिन में सर्वस सब सुख नेह हो ।  
कहे 'दरिया' दरसन को भूखी, निर्गुन गमि करु नेह हो ॥

(१८)

घर कैसे के मैं आऊँ, अरि दइया कान्ह करे बल जोरी ।  
हाट काट मोहिं टोकत रोकत, कर अँगिया पर डारी ॥  
एक मारि बैरन सास ननदिया, दूसरे सवत पारे गारी ।  
कहे 'दरिया' ऐसो रास मंडल है, मोहन मदन मुरारी ॥

(१९)

खेलत मोहन रंग होरी ।  
भाँति भाँति बनिता बनि आयो, लाल जरद पेन्हो डोरी ॥  
बन माली बन बीच रोकत, पिचुकारिन धरि- धरि बोरी ।  
धरि झक झोरत बाहँ मरोरत, चोलियन बंद घइचि तोरी ॥  
होत परस्पर आनंद गारी, धरे वृष भान किशोरी ।  
कहे 'दरिया' यह शहर बहर है, त्रिगुन लीला है जोरी ॥

(२०)

खेलत राधे रंग होरी।

बृन्दावन में रास रचो हैं, संग लिए काँधा जोरी॥

पितम्बर को फेटा बिराजितख सारी रंग केशरि बोरी।

पिचकारिन के मार परि है, अबीर लिए भरि-भरि खोरी॥

मोहन की मोहनी हरि लायो, ऐसी है वृष भान किशोरी।

कहे 'दरिया' कोमल बुद्धि वाकी, नयन बात हृदय डोरी॥

(२१)

खेलत माया मन होरी॥

शक्ति रूप सोभा छबि छायो, रेशम फूदना है डोरी।

भाँति, भाँति का चित्र रचो हैं, ता बीच सुन्दर है गोरी॥

घेरि पकड़ि पलंग पर पौढ़ायो, शिव शक्ति संग है जोरी।

कहे 'दरिया' सुन नर मुनि नाचे, बिरला बाचे रंग बोरी॥

(२२)

खेलत राम अवध होरी।

सिया सुन्दर चंपा की कलियाँ तापर चंदन है खोरी॥

रंग महल में फागु रचो है, सीता सखियन संग है जोरी।

लछुमन हाथ कनक पिचुकारी, जनकसुता अरगजा घोरी॥

राम रंग सारी पर डारेव, सीता हँसि के मुख मोरी।

कहे 'दरिया' जग ज्योति बिराजे, राम श्याम सीता गोरी॥

(२३)

खेलत फागु महल रानी॥

पाँच पचीस सखी संग दारुन, राजा घेरि पकड़ि आनी।

अग्र कुँमकुँमा प्रेम की पिचुका, केशरि रंग जरद सानी॥

ऐन अजीर गुलाब के सीती, मानो झरि वर्षे पानी।

कहे 'दरिया' दर छेकि खड़ी है, बुकवा मारि नयन तानी॥

(२४)

खेलत फगुआ रंग बानी।



भर्म अबीर भँवन बीच छायो, लाल बबुटी है ललनी ॥  
 मैन मजिठ महल बीच शोभे, पाँचो रनियाँ एक धनी ।  
 कहे 'दरिया' यह विषय बेइल है, ता बीच गनिका राम जनी ॥

(२५)

गोरी ताके मँगा देबो लाल फुदना ॥  
 सोने की कलियाँ गले बीच शोभे, सारी जरकसी है झूलना ।  
 अच्छ पलँग पर अच्छ बिछवना, हमके बातें है सूनना ॥  
 भक्ति बिना कहु कैसे सुहागिनि, यम के हाथे है कूदना ।  
 कहे 'दरिया' चित चेतहु रानी, बाट भुलानी सो भुलना ॥

(२६)

होरी मैं कासे खेलों, अलि है अलबेली नारी ॥  
 यहाँ नैह रंग मोही न भावे, अगम पंथ ससुरारी ।  
 यह नव यौवन अपना पिया के, अल्प दिनन के बारी ॥  
 आर्येंगे पिया खेलोंगी होरी, पेन्हों जरकसि सारी ।  
 लालच, लोभ अबीर अरगजा, काम क्रोध रंग डारी ॥  
 यह बुज मंडल धूम मचो है, सखी सब रचहीं धमारी ।  
 भूषन भोजन मनहिं नहिं भावे, पिया पंथ रही निहारी ॥  
 आवन-आवन हो रहा है, फागुन है दिन चारी ।  
 कहे 'दरिया' अमर बर दुल्लह, तन मन लाज बिसारी ॥

(२७)

होली खेलहीं सब हरिजन हरि के संग ॥  
 फागुन पवन पक्ष धरि आयो, द्रुम पल्लव किन्ह भंग ।  
 माधो मुरली मधुकर मद मातेव, यह ज्ञान बिबिध तरंग ॥  
 को पाले को प्रलय करई, चिन्हो पवन फिरंग ।  
 वह रंग रहित सबन ते न्यारा, इमि करि पवन तरंग ॥  
 चैत चारु चुहुलेव चित में, करो विवेक विचार विहांग ।  
 कहे 'दरिया' वन सोभे सघन में, इमि सतगुरु को अंग ॥

सतसंग में खेलत होरी॥

मन बृजनायक तन वृन्दावन में धूम मचोरी।

पाँच पचीस सखी सब ग्वालिन तेहि संग रास रचोरी।

करे परपंचन थोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

त्रिकुटी यमुना के तट केलि करतु है, बल से धरि झकझोरी।

करत बरजों बरजे नहिं माने, बरबस बहियाँ मरोरी।

करे सबसे बल जोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

चंचल चपल चतुर बृज नागर, नट इव नाँच करोरी।

निकट रहे फेरि दूर देखावे, मैन माट रंग बोरी।

करे घर भीतर चोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

ज्ञान के राग रबाब धन करु, सुरति निरति एक ठौरी।

भँवर गुफा की कुंज गली में, प्रेम धागा नहिं तोरी।

भलि है सुहागिनि गोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

छिरिकत अग्र गुलाब कुँमकुँमा, नाम केशरि रंग घोरी।

उन्मुनि के पिचुकारी बनी है, सजगुरु दिन्ह चभोरी।

सखी धन्य जीवन तोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

बर चर्चा सतसंग में, मन मान से ब्याह करोरी।

‘दरिया’ दास अमर पति दुल्लह, गौनन की दिन थोरी।

चलो किन सासुर गोरी, सतसंग में खेलत होरी॥

(२६)

अरि ये दोउ खेलत होरी॥

सत सतगुरु ब्रज राज सँवारो, जन वृष भान किशोरी।

सत सतसंग में रास रचो है, प्रेम प्रीति एक ठौरी।

चलो कीन देखन गोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

अनहद ताल पखाउज धुनि सुनि, कोई साँवर कोइ गोरी।

ब्याकुल बदन सदन से निकाली, सास ननद की चोरी।

चलो सखी रात अँजोरी, अरि ये दाउ खेलत होरी॥

कुल की काँनी बिसारी, पाँचो सखी मिलि धाय धरोरी।

बरजि रहे बरेजे नहिं माने, लपकि झंपकि झकझोरी।

चलो सखी लाजहिं तोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

मैं अपने पीव की पतिनी, कोउ काहे करे बलजोरी।

लगन लागि भई मगन सुहागिन, अब न सको मुख मोरी।

चलो सखी रचोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

घुँघट के पट खोलि चटापट, चोलियन के बंद तोरी।

भरि पिचुकारी अजर रंग डारो, प्रीतम प्रीति चभोरी।

चलो सुखी धूम मचोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

काया सीप नाम मनि मुक्ता, भर्म अबीर उड़ोरी।

सतगुरु स्वामी दरस परसपर, अविगति बुन्द परोपरी।

चलो सखी लाभ लहोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

दान मुक्ति फल पाय सखी सब, सतनाम से जाय तरो री।

कहे 'दरिया' अमर बर दुल्लह, आय रहा दिन थोरी।

चलो अमर पुर गोरी, अरि ये दोउ खेलत होरी॥

(३०)

साहब जी हौं मैं बंदा ते हारा॥

खाड़ी की धार पर पाव दियो हैं, होय न जाय बलुवारा।

गासी के मुन पर उर दीवो हैं, होय न जाय बलुवारा॥

तनिक प्राण रहे घट भीतर, जब चाहौ तब वारा।

कहे 'दरिया' दरसन फल दीजै, मैं अधीन बेवहारा॥

शब्द कान्हर राग

(१)

धन्य तुम कुदरति लखि परे॥

तुम प्रताप सदा सिर उपर, अब मोहिं बाह गहे की लाज करे॥

रहौ असोच सोच नहिं मेरो, तब चरनन चित आस तरे।

दीन दयाल दया करु साहब, 'दरिया' दरसन ध्यान धरे॥

ऐसे सेवा करनम औ व्रत नेम चरन कमल ढरनम्।

ठाकुर श्रोता मन बच कर्मनम्, सेवक की अरज सुननम्।  
'दरिया' कहे ऐसो शब्द रंग देखि, अंत दानी औढर ढरनम्।

(३)

योगी रावला महबूब।

सुरति तेरो ना कहत बनि आवे मूरति तेरो खूब॥  
ब्रह्मा विष्णु, शिव अंत न पायो, ध्यान धरे कोई रहत मजूब।  
कहे 'दरिया' तेरो अविगति लीला, हो तुम अजब अजूब॥

शब्द राग टप्पा (चैता)

जाके अपने शहर बसाऊंगा।

अमर पुर के बासी करिहों, अजर पट्टा लिखाऊंगा॥  
भव सागर के दाग मिटावों, हंस पुहुँप पलँग पझैड़ाऊंगा।  
कहे 'दरिया' दर्शन फल मिलि हैं, युग-युग क्षुधा बुताऊंगा॥

(२)

अरि कोई जोने दरद परघट की।

जोई दरद सोई दारु मिलिया, खींच लियो पीर चटकी॥  
अंतर यामी अंतर गति जाने, सोई सुरति दिल अटकी।  
कहे 'दरिया' मन भँवरा भर्मित, चरण कमल पर लटकी॥

(३)

वाह वाह वाही सुरति है मन में॥,

पदुम प्रकास भँवर तहाँ भूलेव, रिमि झिमि बरिसे घन में।  
कहे 'दरिया' पिया पिया पपीहरा, बोले विहंगम बन में॥

(४)

वाह वाह मेरो महारम यार दिल जिन्दा॥

आसिक परदा नहिं बीच रखंदा, काह करंदा कोई निन्दा।  
कहे 'दरिया' दरस दर सेवंदा परसहु दास सब किन्दा॥

(५)

अरि मेरी अँखिया लाल लगी।

दूर से निकट निपट जल देखो, सोवत दिल में लगी॥

मेरी सुरत पर तन मन वारों, प्रेम पलक में पगी।

कहे 'दरिया' धन्य भाग्य भला है, दुर्गति दुरि सब भगी॥

(६)

नाम भजन की चाकरी वो यारा।

घोड़ा भी लीजे ज्ञान कों अच्छे, चित चाबुक कटकाय लेव प्यारा॥

शब्द की सांगि सत शिलाह पेन्हिए, ऐन मैदान घोड़ा डारिए वो प्यारा।

मोजरा भी कीजिए दादनी भी लिजिए, कहे 'दरिया' सिरो पाव हूँ तेरा॥

(७)

क्या बे फूला घोड़ा कूद ना पाई॥

कहर की नजर तूँ दूरि कर बन्दे, मोहर की नजर में लजति पाई।

औरत के रंग में आशिक दीवाना, जो हृद जिन्दगानी दर गाफिल गवाई॥

मादर पेदर रिबर में मोहे, कहे 'दरिया' दीदम बंदगी लगाई।

(८)

वो सुनो साचा प्यारे परिहों तेरी पइयाँ।

प्रेम के पात्र प्रीति समानी, अच्छा शीतल जुड़ छइयाँ॥

कहे 'दरिया' ऐसो दुल्लह दुल्लहिन, फूलन्ह सेज बिछइयाँ॥

(९)

वो साईदा प्यारे लगीहों मै तेरी नाल॥

बारि बारि जइहों पईया परिहों, काँह करन्दा यम जाल।

कहे 'दरिया' दिल फिकिर मेटावन्दा, फकर हो बन्दा मेरो हाल॥

(१०)

लगी मुझे अँखिया प्रेम की डोरी॥

उमड़ि घटा घनघोर चहुँ ओरा, रिमि झिमि रंग चभोरी।

कहे 'दरिया' दर्शन फल पावों, नाम पीवो रस घोरी॥

(११)

यह रक्त बुन्दम् जानंदा ॥

सीने साफ जमाल जहूरा, दीदस दर्शन मानंदा ।

कहे 'दरिया' दिल कादिर प्यारा, आखिर यार दिल फानंदा ॥

(१२)

महबूब मिया है रब जाने दिल दरदा मेरा ॥

वोय कादिर हाजिर नाजिर है, आसिक यार मैं तेरा ।

कहे 'दरिया' दिल तूझ पर वारों, नैनन में तुझे हेरा ॥

(१३)

मेरी अँखिया प्रेम सो सानंदा ॥

खालिक-खालिक मूलिक वोई, महरम यार सो जानंदा ।

कहे 'दरिया' दिल तूझ पर वारों, और दूजा नहीं मानंदा ॥

(१४)

दिल दरदा दारु जानियाँ ॥

हरदम दम जेहिं दर्शन मालिक वोई, परन सब सुख खानियाँ ।

कहे 'दरिया' दस्त पंज है पीरा, अलिफ अल्लाह निसानियाँ ॥

(१५)

दर्द वंदा साहब मेरा ॥

भूखे अन्न पयासे पासनी, वाह-वाह कुदरत तेरा ।

कहे 'दरिया' दर्शन फल पायो, दुःख यमजाल निमेरा ॥

(१६)

तुम दिल दर्दा साहब मेरा ।

दूजा और कोई नहीं मेरा, निरखत नैनहिं प्रेम भरा ॥

ज्यों चकोर प्रीति हित जाने, चुंगत अग्नि चोंच जरा ।

तबहुँ ना छुटे प्रीति पियारी, तन मन वारि जो टेक धरा ॥

मृगा प्रीति कियो है धुनि नाद से, श्रवन सुनत चित हित के धरा ।

लागा बान निफरि तन वारे, प्राण गया नहीं धन टरा ॥

जाकी लगन सोई पर जाने, मूख मूल न सूझि परा ।

कहे 'दरिया' तन मन जीव आगे, विरह विवेक विचारि तरा ॥

(१७)

आसिक के नयनों में यारा।

आसिक हुआ जो पाक सनेही, साफ करो दिल वारा॥

झूकि झूकि परंदा दिल में दरदा, पल में आय गयो प्यारा।

मरे न जीवे जिन्दा साँई, कहे 'दरिया' वोय हक है न्यारा॥

(१८)

वाह-वाह गुन कासो कहन्दा।

पार ब्रह्म परमेश्वर खासा, खुसी सभन में रहन्दा॥

खुदी खुदारम चार चहारम, हादी हद पर अहंदा।

ब्याघ्र ब्याल काल जिन्हिं पोसो, भालु भर्म में गहंदा॥

खाकी आबी मनहिं मनोहर, आनन्द ब्रह्म कहन्दा।

वाये कर्ता यह क्तिम कहिए, प्रीतम प्रेम लहन्दा॥

पवन फिरंग तरंग अनंग है, नाना रूप धरन्दा।

कहे 'दरिया' दर-दर फिरे, बहु नर जात बहंदा॥

(१९)

दीदम दीद नजर में आवंदा, सो महबूब हमारा है।

पलक उठाय देखे दिल भवंदा, नूर जहूर पसारा है॥

हरदम जिकिरि फिकिर सब जावंदा, जहूर रोशन दिल उजियारा है।

कहे 'दरिया' दर्शन फल पावंदा, तन मन धन सभ वारा है॥

(२०)

अरि मेरो साहब सुन्दर नीको।

वारों छवि औरौ जग नाहिं, लागत सकल सब फीको॥

जगमग ज्योति छत्र सिर छाजै, वाहीं बदन पर वीको।

जाके चरण कमल रज शीतल, सोई मस्तक को टीको॥

जाके दर्शन पाप पराने, मेटत जन्म को लीको।

सुनो श्रवन चित नैना मेरो, कहे 'दरिया' यह सीको॥

(२१)

अलि साहब सुरति मुझे लागी अँखिया।

फिरि-फिरि जात रहत मन उहई, उड़ि चले बिनु पर पँखिया।  
कहे 'दरिया' दर्शन फल पायो, चुभुकि-चुभुकि रस सो चखिया॥

(२२)

साहब बिनु कवन मेटे दुःख द्वंदा।  
जीवन मुक्त सतपुरुष सोई है, जागृत जग में जिन्दा।  
कहे 'दरिया' दर्शन फल पायो, बाँचि गयो यम फन्दा॥

(२३)

महरम मेरो यार मेरो, दिल लागा जिन्दा सो।  
तन मन वारों पलक नहिं टारों, नहिं डरो जग जिन्दा सो।  
कहे 'दरिया' दर्शन फल पायो, बाँचो गयो यम फन्दा सो॥

(२४)

वाहि-वाहि लगी है, डोरी गगन में।  
झलकत नूर झलाझलि देखों, वाहि दीदारि है दंम में।  
कहे 'दरिया' एक फूल सजीवनी, मूल सुहावन घन में॥

**शब्द सहना**

(१)

सो देखो अलि आज नौसा बना।  
घु घुमेला छत्र फिरेला, सिर मोती झघलर घना॥  
सिर जरकस चीर बिरजित, फूल फूदना बना।  
मेहीं मलमल जामा पेन्हेव, ऊपर अरगजा सना॥  
कमर पटुका एलिम वाला, जूता बनाति बना।  
अच्छा घोड़ा जिन बनाता, पटा सनहुला हना॥  
अवध पुरी के वाये सहिजादा, ऊपर तम्बुआ तना।  
कहे 'दरिया' ऐसो दुलहा दुलहीनि अच्छों कन्हइया बना॥

(२)

मेरी गली आउरे बनी लाल॥  
केशरि रंग में चोला रंगायो, ऊपर ओढ़े दुशाल।  
मेहीं मलमल जामा पेन्हेव, ऊपर शोभे मोती माल॥



रंग महल में लहा दुलहिनि, थेई-थेई ततकाल।

कहे 'दरियार' वृष भान दुलारी, अच्छे कन्हइया बाल॥

(३)

सत साहब वंदरा सो तै प्रेम लगावो रे॥

सुन्दर शोभा निरखि बनि आयो, मनि माथे छवि छायो रे।

चन्द्र ललाट श्रवन मनि गन, उड़िगन घन गगन से आयो रे॥

अम्बुज नयन दल षोड़स विकसित, भृंग भानु संग धायो रे।

नासा सुन्दर सुभग सलोन है, दसन दमक दुति पायो रे॥

बोलत बैन मधुर मुसकानेव, अमृत की झरि छायो रे।

चीबुक चारु कंठ मनि माला, लहरि तरंग डोलायो रे॥

कर जनु कंज कमल ते कोमल, नख दुति रतन बनायो रे।

कटि पर सेत काछनि काछेव, सिंह ठवनि चलि आयो रे॥

जंघ युल मनि रेख निकलेव, रुप की रासि सुहायो रे।

अद्भुत लीला बरनो कवन बिधि, 'दरिया' दरस फल पायो रे॥

शटद घांटो

(९)

हमहीं यौगिनियाँ पिया मोर रावल, सावरों भुलि रे गइले।

योगिया प्रान पियरवा, साँवरो भुलि रे गइले॥

बारहो बसिरवा नैहर नेहवाँ, साँवरो खेलि रे खेली।

चेते न चित ससुररिया, साँवरो खेलि रे खेली॥

पाँच सोहागिनि पचीस सहेलियाँ, साँवरो तिन्हि रे मोर।

प्रीतम सुधि विसरावल, साँवरो तिन्हि रे मोर॥

अब तरुण पन विरह सतावल, साँवरो पिया रे पिया।

चातृक चित ध्वनि लागल, साँवरो पिया रे पिया॥

काहु न पूछत केहु न बतावल, साँवरो जागी रे जागी।

सोचत रैन बिहावल, साँवरी जागी रे जागी॥

झीन हो झरोखवा ऊँच अटरिया, साँवरो ताहि रे चढ़ी।

बालमु बटिया निरेखल, साँवरो ताहि रे चढ़ी॥

ऊपर झरोखवा से आठ योजना, साँवरो दाहिनि ओरियाँ।

पिया के रतन अटरिया, साँवरो दाहिनि ओरियाँ॥

जबहीं देखाइल हिये हुलसाइल, साँवरो मिलि रे गइले।

‘दरिया’ रावल योगिया, साँवरो मिली रे गइल॥

(२)

नीच मुकुटिया उपर गगरिया, साँवरो ताहीं रे पर।

पाँच रंग चुनरी चोलिया, साँवरो ताही रे पर॥

बेइली चमेली फूलवा के हरवा, साँवरो गुँथी रे गुँथी।

मालिन सेहरा बनावल, साँवरो गुँथी रे गुँथी॥

तर बहे नदिया उपर बहे अँगिया, साँवरो तहाँ रे पिया।

सूरी पर पलंग डसावल, साँवरो तहाँ रे पिया॥

वर्षे धरती गगन बढ़ियानेव, साँवरो कौन रे विधि।

जाइब बालम गोहनवा, साँवरो कौन रे विधि॥

तेजि देलो यह भव नैहर नेहवा, साँवरो पहिरल।

अभरन अमर सेन्दुरवा, साँवरो पहिरल॥

तन मन वारल लाज बिसारल, साँवरो लागि रे गैले।

अनभौ तार मकरिया, साँवरो लागि रे गैले॥

ताहिं चढ़ि गइलों मैं पिया के पलँयि, साँवरो सइयाँ रे मोर।

गहि कर हँसी गरे लावल, साँवरो सइयाँ रे मोर॥

जिन्हि यह बुझल मन चित लावल, साँवरो तिन्हि रे तिन्हि।

‘दरिया’ घरहीं पिया पावल, साँवरो तिन्हि रे तिन्हि॥

(३)

कुबुद्धि कलवारिनि बसे ली नगरिया होरे।

उन्हि मोर मनुवा मतावल होरे॥

भुलि गइले पिया पंथ बाट होरे।

अवघट परलीं भुलाइल होरे॥

भवल नदिया भसयावन होरे।

कवने विधि उतरब पार होरे॥

‘दरिया’ साहब गुन गावल होरे,

सतनाम सजीवन पावल होरे ॥

$$(8)$$

कुमति बेइली बन फूलल होरे ।

फूल फूले रे भँवरा रंग रातल होरे ॥

जिन्हि-जिन्हि यह फूल लोढ़ल होरे ।

तिन्हि रे तिन्हि अपने मद मातल होरे ॥

द्रूम द्रूम लता छबि छावल होरे ।

जैसन गुन तैसन शितल तातल होरे ॥

एक पँवरी जग पसरल होरे ।

पँवरी रे पँवरी भँवरी मेहीं सूत कातल होरे ॥

जिन्हि रे जिन्हि माया पगु परसल होरे ।

तिन्हि रे तिन्हि आपन आपन घर घातल होरे ॥

‘दरिया’ दरस दिल जागल होरे ।

तिन्हिं रे तिन्हिं सतगुरु पद अनुरागल होरे ॥

(4)

काया वन फूलेला सुन्दर फूल होरे ।

ताहीं रे फूले भँवरा लोभाइल होरे ॥

नैहर नेह जिन्ह लावल होरे ।

यम के हाथ जीव जहड़ावल होरे ॥

सुमिरहु निर्गुन नाम होरे ।

जीवन सुफल सदा जग माँह होरे ॥

बेइली चमेली सभ जग छावल होरे ।

जेते फूल तेते बास धावल होरे ॥

सभ फूल लोढ़े ली मनमति रानी होरे ।

एक नहिं पावे ले प्रेम फूल होरे ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पाँच पचीस अपने मद मातल होरे ।	सतनाम	‘दरिया’ दरस चित रातल होरे ॥	सतनाम	(६)	सतनाम
सतनाम	काया पुर पाटन हाट सोहावन होरे ।	सतनाम	ताहिं रे हाटे बाटे सखी सभ चली भैली होरे ॥	सतनाम	पाँच पचीस महाजन लोग होरे ।	सतनाम
सतनाम	अनवन भाँति सभे सुख भोगल होरे ॥	सतनाम	चित चिन्तामनि रचु चित्रसारी होरे ।	सतनाम	रंग बिरंगे सब नाचहीं नारी होरे ॥	सतनाम
सतनाम	फूल फूलेला फूलवारी होरे ।	सतनाम	लोढ़ी रे लोढ़ी मालिनि हार सुधारल होरे ॥	सतनाम	परिमल अग्र सुबास सुहावन होरे ।	सतनाम
सतनाम	‘दरिया’ साहब गुन गावल होरे ॥	सतनाम	(७)	सतनाम	फूल लोढ़े जइगों मैं ओही फूलवरिया होरे ।	सतनाम
सतनाम	की जाहीं फूल भँवरा रंग रातल होरे ॥	सतनाम	माली यह मिली लेहु मन मति बिटिया होरे ।	सतनाम	की रोकी न सके तोहीं दीवस न रतिया होरे ॥	सतनाम
सतनाम	सुनि लेहु मालिया हो मन के मनोरथ होरे ।	सतनाम	की हम जाइब जहाँ फूल बहु भाँतिन होरे ॥	सतनाम	खुलली केवड़िया सखी सभ फैसली होरे ।	सतनाम
सतनाम	लोढ़ी लोढ़ी लिहलि सी भरी डाल होरे ॥	सतनाम	हँसत खेलत झक झाकर झूमरी होरे ।	सतनाम	की मिलि गइल सुख सुन्दर बर होरे ॥	सतनाम
सतनाम	यह सभ घाटों टूटि फूटि जइहें होरे ।	सतनाम	की कहे ‘दरिया’ निर्मल गुन गावल होरे ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

(८)

परखुह नयन अमर बर होरे ।  
 घोरवा ना जोड़वा सुन्दर सर होरे ॥  
 छत्र फिरे सिर माथे मनि बरे होरे ।  
 नयन कमल भँवर मानो बसि परे होरे ॥  
 नासिका श्रवन सुन्दर सोभित होरे ।  
 दसन दमकि दुति दामिनि होरे ॥  
 रसना बिमल बोले बानी होरे ।  
 भुजा सुबुक कमल कली जानी ले होरे ॥  
 नख सिख सत बिराजित होरे ।  
 जंघ जुगल पद राजित होरे ॥  
 येही जग फूल सभ फूलल होरे ।  
 सूखि गैले सब, सतपुरुष नहिं तूलल होरे ॥  
 'दरिया' अमर गुन गावल होरे ।  
 जिन्हि रे जिन्हि चिंहल मुक्ति फल पावल होरे ॥

शब्द ऊधवा

(९)

ढोल ढील भइलें बालमु हो, कसनी पुरान ।  
 बाजन बाजु कुबाजन हो, दिन नियरान ॥  
 चाम रंगीन जनि भुलहु हो, कुरिया काँच ।  
 आगत सोच बिचारहू हो, यम से बाँच ॥  
 एहि जग कोई नहिं आपन हो, जासे जोरों मैं नेह ।  
 जो आया सो बिनसे हो, धरि के देह ॥  
 जिन्हि यह नख सिख सिर्जल हो, दसो द्वार ।  
 सतनाम गुन गावहु हो, उतरहु पार ॥  
 पार बसे मोर प्रितम हो, मिलना दूर ।  
 गवन संयोग जब होइहें हो, जैबहु हजूर ॥  
 जल बिनु तृषा ना मेअे हो, बिनु भोजन भूख ।

पिया बिनु तप्त ना मेटे हो, बिनु परिमल जस रूप ॥

देह खेह भइले बालमु हो, धुववाँ अकाश ।

हंस अमर पुर पहुँचे हो, जहवाँ कबिलास ॥

‘दरिया’ पार हींडोलवा हो, अविगति भाँति ।

चाँद सूरज नहिं तहवाँ हो, दिवस ना रात ॥

(२)

मीठ नींद भिनसहरा हो, त्रिया परारि ।

अब सुख सोवहु नरहरि हो, गोड़वा पसारि ॥

गुरु बिनु बाट भुलाइल हो, कनहरि बिनु नाव ।

अब मैं काहि पुकारो हो, भवजल गाँव ॥

यौवन मद जनि मातहु हो, करहु पिया से नेह ।

फेरि पीछे पछतैबहु हो, या तन होइहें खेह ॥

खेलि लेहु अमरइया हो, सखियन के साथ ।

फेरि पीछे पछतैबहु हो, मलि-मलि के हाथ ॥

थकलीं हो पिया थकली हो, चढ़त पहार ।

नाहिं देखों डोलिया ना डंडिया हो, बत्तिसो कहाँर ॥

काया नगर सोहावन हो, हाट बजार ।

सौदा चोख बेसाहहु हो, रंग करार ॥

चन्द्र बदन मृग लोचन हो, अति सुकुमार ।

पियहिं पलंग झूलावै हो, विधवा नार ॥

राम मृगा संग गवने हो, सिया रावनण साथ ।

भलि मति हमरी भुलाइल हो, हम बान धनुष लिए हाथ ॥

सीता सर्व संहरली हो, हम तपसी दोनों भाय ।

हरलस पापी चोरिएं हो, ले गये रथ चढ़ाय ॥

सुतलि रहली मदोदरी हो, उठली चिहाय ।

टूटल आवे गढ़ लंका हो, राम सहाय ॥

हाथहिं दुई दुई तीखा हो, सबुज कमान ।

पत्र कुटी से निकले हों, लक्षुमन राम ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	<p>वाजन वाजे गहागह हो, सारंग तीर।  उजरल आवे गढ़ लंका हो, जन चढ़ रघुवीर॥  अस कहि भाखु मदोदरि हो, सुनहु बचन पति मोर।  सीता लेई मिलु रामहिं हो, जनि होहु चोर॥  जाकर हरल तिरिया हो, काटि करिहें सम खण्ड।  कहे 'दरिया' नहिं बाचहुँ हो, बिनु दिये कर्म दण्ड॥  (३)  ऊँचे भइले नीचे हेरो हो, अँवरा वेहर।  एको रुखवा नहिं देखों हो, नैहर केर॥  हरियर-हरियर सुगवा हो, रातुल ठोर।  कवन वृक्ष तर होइहें हो, बालम मोर॥  फूल एक फूलेला बेइलिया हो, हामरा देश।  केकरा के बोलों गवहवा हो, पिया परदेश॥  सतनाम लिखूँ छतिया हो, लखन लीलार।  ज्ञाता लिखूँ तर हथिया हो, प्रान अधार॥  साहब मोहिं विसरावल हो, सेजिया सून।  कल्पि-कल्पि जीव अवटे हो, जल बिनु मीन॥  'दरिया' पार विहँसि बोलहिं हो योजन संख पार।  गूँजत रहु दिल भँवरा हो, निसदिन दह बार॥  <b>शब्द खुद बानी</b>  (९)  मम हौं त्रिगुन ते ऊँचा।  तुमको क्या डर बल मेरा है, चुंबक गाँसी खींचा॥  ले उड़ोंगा डगर हमारा, सत वचन नहिं फीका।  तुमको दरस परस पद पावन, मनि मस्तक का टीका॥  ऐसा बैन दिन्ह बर तुमको, सहिजादा हो मेरा।  निगम बोध सब कैद हुआ है, जगत करोंगा तेरा॥  मैं जिन्दा हों जागृत जग में, 'बेवाहा' कहि दिन्हा।</p>	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतवर्ग है नाम हमारा, रहों जगत से भीन्हा ॥  
 ऐगुन होय तो गुन करि डारों, बहुत सुगन्ध बहुभाँति ॥  
 तुमके छोड़ि छपलोक ना जइहों, जतन करो दिन राती ॥  
 मम साहब तुम नायब मेरा, तुमको कोई न जीता ॥  
 कहे 'दरिया' दर देख परा है, सार शब्द गुन हीता ॥  
 (२)

जोजन करिहें मम बिस्वासा ॥  
 उठत बैठत सोवत जागत, सदा रहों तेहिं पासा ॥  
 संत के निकट बिकट कुछ नाहिं, संकठ परे तहाँ धावों ॥  
 संत दुखैहें ताहिं दुखावों, दुर्जन दूरि बोहावों ॥  
 पल-पल छन-छन पालत रहिहों, गहे शब्द ततु सारा ॥  
 सत की तरनी तरक करे तो, गुन गहि घैचों पारा ॥  
 मम हों साधु-साधु मोहिं माहीं, नेह निकट नित जोरों ॥  
 जो कोई चितवे कड़ी दृष्टि से, चाबुक चौहट तोरों ॥  
 भूखे अन्न पियासे पानी, कपड़ा से तन छावों ॥  
 संत समाज करे सभ आरती, नित नय मंगल गावों ॥  
 अति अधीन लीन चरनन में, सतगुरु प्रेम परगासा ॥  
 कहे 'दरिया' तेहिं सिर पर साहब, मेटि जाय यम त्रासा ॥  
 (३)

जाके चरन कमल परतीता ॥  
 तैं मेरा हो मैं तेरा हों, यम जालिम के जीता ॥  
 रंक होय भा राव कहावे, का काहू अन हीता ॥  
 प्रेम पियासा प्रेम में पैठा, करे भक्ति नयय नीता ॥  
 देवा देई तीर्थ ब्रत सब, तेजो भर्म अनीता ॥  
 ओस से प्यास जात नहिं कबहीं, का भाजन भरि लीता ॥  
 उछलित अमृत सुख के सागर, काह घनेरों सरिता ॥  
 सो जल जाय मिला सुरसरि में, विवरन कौन करिता ॥  
 दया समेत जो दर्सित सभ में, आतम एक गनीता ॥



पाठ पुरान पढ़े बहु बानी, का बहु बात भनीता ॥  
 संत सदा है सभते आगर, जैसे भानु पुनीता ।  
 कहे 'दरिया' महि मण्डल दीसे, सर्व पढ़ा वाये गीता ॥

(४)

तुमसे सब बिधि बोलों बानी ।  
 अति दया करि प्रेम युक्ति है, अमृत रसना सानी ।  
 दरस परस यह सार शब्द ले, तेजहु गर्व अभिमानी ॥  
 तख्त-वख्त यह तुमको दीळा, और कौन बड़ ज्ञानी ।  
 रुजु रहे ताहीं के राखिहों, गर्व गरुरी हानी ॥  
 तनता गिरि जग फौज चलावों, देव अदब तेहिं जानी ।  
 अन्न कपड़ा का चिन्त न करिये, रहों अचिन्त अमानी ॥  
 भेजों तुरंत तलब नहिं राखों, तेरा गहो तुम ज्ञानी ।  
 छापा सनदी जो गहे हमार, सोई लोक निसानी ॥  
 काटों कष्ट कर्म सभ नासों, हंस विमल की खानी ।  
 अदब हमारा काल सिर काँपे, औ जग जीत भवानी ॥  
 कहे 'बेबाहा' सुनो 'दरिया' लाघों भवजल पानी ।

(५)

तुम कह अन्नवाँ वकशीश कीन्हां ।  
 कपड़ा दीन्हों काया छपन को, होत कबहीं नहिं भीना ॥  
 सफा रहो कफा जनि राखो, ध्यान धरो दिन राती ।  
 भरि पेट भेजों खली नहिं राखों, जतन करो बहुभाँती ॥  
 तुम फरजंद साँच हो मेरा, तख्त दीन्ह थये जानी ।  
 बचन हमार अमर यह जानो, होत कबहिं नहिं हानी ॥  
 हंस बंस जो होय हमारा, अमृत रसना चाखो ।  
 जो कोई आवे संत मंत में, ताहिं शरन ले राखों ॥  
 तुमके चिन्हि हमें पहिचाने, लाघें भवजल पानी ।  
 तरनी तेज तिक्षण यह चलिहें, सनद करे पहचानी ॥  
 केता सिफ्त कहाँ तक कीजै, बेकीमति की बातें ।  
 कहे 'दरिया' मेरो सिर पर साहब, हृदय कमल बीच राते ॥

## शब्द बैतनामा

रवाके रसीने ने आवे वरुद है, बे नमूने निहायत न चश्मे वजूद ।  
 ओ काफी है वाहिद दो चश्में सफा, करीमा करम नहिं कुप्ते कफा ॥  
 मारर पेदर न सीने स्याह, फना न हुआ नहिं बीबी मिया ।  
 मुश्किल अवसाने 'बेबाहा' किया, दे फीरा सिर तोजे दिया ॥  
 'बेबाहा' है वाहिद सो बेकीमती, दीगर को कतल करु येही नसीहती ।  
 'बेबाहा' बेकीमत महेब्बत किया, मैं फरजन्द हों उनका सो दस्त लिया ॥  
 तख्त औ वक्त सिरताजे दिया, अदल बादशाही मेहर जो किया ।  
 हरिमाने हमारे को बख्शीस किया, हमको प्याला अरस का दिया ॥  
 केते पैगम्बर सो दर पर सही, दो चश्में सफा हैं किताबे कही ।  
 मनी है मुहम्मद कोराने सही, सरीयत तरीकत औ कल्मा कहीं ॥  
 खोरद कारवाने न्यामत एही, चरबे चखा न किताबे कही ।  
 कदम सिर खाली दीवाना हुआ, सवाले न वाशद तरीकत कहा ॥  
 दरद कफनी पेन्हुं नेफे सफा, खासा सुखबोय वहिशित नफा ।  
 पीरे मुरीदे को पंजा दिया, सिजरा सफाई कुर्बानी किया ॥  
 करद है कमर में जबह जीव किया, लजत बुराई सो लब तें लिया ।  
 जबर करि सो जबराइल मुस्के दिया, जो खूने खराबे शराबे पिया ॥  
 फरिश्ते किताबें सितावें दिया, जाना जरुरत में तलबी किया ।  
 अन्दरुने स्याही शराबे पिया, सफेदा न दरदे बदि को लिया ॥  
 रक्त बुन्दम में फेरि हरफे दिया, जिंदगी जहूरा गर्द सो किया ।  
 हाजिर हजूरे निसाफे हुआ, फरिश्ते पकड़ि के दोजक में दिया ॥  
 शैल करु जमी में जहूरा सफा, संदल सनिले खुशवोई वफा ।  
 मुसलमीने न हिन्दू जहूरा सफा, 'बेबाहा' बेकीमत कतल करु कफा ।  
 गोसल करु बहर में जो उजु सफा, चिरागें रोशन करु दीदारे नफा ॥  
 दिल चश्मा जाना सो हाजिर हजूर, बुराई न करदन एके आदि नूर ।  
 खाली न वासद की ना खैचपेस, हिर्गिस न्यामत खुदाही दुर्वेस ॥  
 फकीरो यकीनी अदल बादशाह, फका ते फकरहै अवेहा अच्छा ।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तख्त बादशाह सो गर्दन बुलंद, फकीरा सलामत-सलामत दो चंद॥	सतनाम	फकरमन खुदावन खुदावंद फकर, कदम दुर्वेसा वला दरगदर।	सतनाम	‘दरिया’ दरद बीच दिल जो रहा, वदी को कतल कर लहा सो लहा॥	सतनाम
सतनाम	चरब दिल खस्ती, सियाही शराब, खून करद न बख्शिस जिन्दगानी खराब।	सतनाम	‘दरिया’ इश्क नामे किताबें बना, बखशीस ‘बेबाहा’ जो हरफे बना॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतपूरष बेबाहा साहब तष्ट अमर पुर अजर रेखा जापनाह।	सतनाम	टकसार करदे सतनाम यहः हुकुम साहब अंश सुकृत ‘दरिया’ साह॥	सतनाम	शब्द गर्भ चेतावन	सतनाम
सतनाम	धन्य है धनी जो जीवन को बनाया।	सतनाम	जहाना हजूरे बगीचा लगाया॥	सतनाम	करो जिकिर दिल में अर्ज सुनो मेरा।	सतनाम
सतनाम	हमें को बनाया मैं बन्दा हूँ तेरा॥	सतनाम	करो दर्द ऐसा न काहु दुखावों।	सतनाम	एहि निशबाशर चरन चित लावों॥	सतनाम
सतनाम	कहों आजु केता तबे सुन लीजै।	सतनाम	एके नूर जानो तुम्हे दिल दीजै॥	सतनाम	किया कौल ऐसा गनी ने सुनाया।	सतनाम
सतनाम	लिखा फर्ज सोई जो हर्फे बनाया॥	सतनाम	दोजक से निकाला शिकम में दिया।	सतनाम	हकिमें मशाला तुरन्ते लिया॥	सतनाम
सतनाम	चारों चहारम मशाला लगाया।	सतनाम	अजब गुल पैदा शिकम में बनाया॥	सतनाम	कदम दस्त नैना जिह्वा जीभि दीन्हा।	सतनाम
सतनाम	शिकम पेट पीठि श्रवन सन्दि कीन्हों॥	सतनाम	शरीर को सँवारा अच्छा सिकिल नीके।	सतनाम	रखा कछु नाहिं दिया दृष्टि जीके॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	करे ध्यान तहवां अँधारी कोठारी ।	गया गोड़ ग्रीवा बड़ा पर्द भारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	इहाँ ते निकालो बड़ा कष्टकारी ।	बहुरि कौल कीन्हें जो नीके बिचारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पूजा दिन जबहीं जो पीरा बुझाया ।	वहाँ ते निकाला जो दुनियाँ दिखाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	लागे तब रोवन कहन्ता पुकारी ।	लागी बाव दुनियाँ मुग्ध होनिहारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गावें सब झनझन जो नौबत बजावें ।	नाचे भाँड़ भाँटे कबिते सुनावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	लुटावें खजाना जोई नगे माँगे ।	ब्राह्मण भिखारी सोवत उठि जागे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भया फर्जन्दे फजिल है खोदाई ।	काजी किताबें जो मोलना बोलाई ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पढ़े बेद ब्राह्मण जो ताके बोलाया ।	घरी में घरी जो लगन को सोचाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	धरा नाम नीके बहुत दान दीन्हा ।	शादी बनाये कुटुम्ब भोज कीन्हा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पीवे दूध नीके एगाना बेगाना ।	खेलावे सबन्हि मिलि बहुत सुख जाना ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बांदी ले आवे पलँग पवड़ावे ।	बोले कछु बातें हुलासे झुलावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	खावे अन्न पानी वचन बोलु जानी ।	कौतुक कला देखि बालक बखानी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चीन्हें माय मम्मा चची को पुकारे ।	बोले तोतर बैना सबन्हिं कहँ प्यारे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	मादर औ पेदर बिरादर को चिन्हा ।	सबे संग खेलि खेलावनि जो लीन्हा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	खिजमतिया खेलावे जहाँ दिल चलावे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे जा बजारे तमाशा दिखावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे बाग बागे बगीचा लखावे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे फूल खुश के जो हाथे ले आवे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे घोड़सारे घोड़न के देखावे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे हाथी सारी अमारी छुवावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कबे नग्र खाना नगारा बजावे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	नौबत घनी जो मशाला जलावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	एता कौतुक देखा बालापन बीता ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भर्द देह जवानी अवर किछु कीता ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भया तन मस्ति मशाला जो लागा ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	औरत को बखाना तबे काम जागा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चर्चा जो चली बियाहन की बातें ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आनन्दे सबहिं मिलि सुनो बात तातें ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पंडित को बुलाया लगन को धराया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गावैं गीत नादे जो चौका पुराया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	नौवत नगारा बजावन जो लागे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सोवे जीव शहर में सभे उठि जागे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	छाया जो माड़ो झलाझलि मोती ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चिरागे जलाया चहुँ चार ज्योती ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कलशा धराया अजग चित्र लिखा ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सखी मिलि मंगल नई गीत सीखा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हरदी जो हल को तुरन्ते मँगाया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पाँचो सखी मिलि अंगे लगाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बाँधा कंगन हाथे गोशल जो कराया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कपड़ा पोशाके अजब साज लाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	परिछन कराया बराते बना ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	नफिरे नगारा निशाने हना ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	केते फौज गिरि मुलुक पर चलावे ।	केते गढ़ घेरि के तोपों से ढहावे ॥	सतनाम	केते खाल खैंचि कोड़ो से मरावें ।	केते जंगली जीव कुत्तों से तुरावें ॥	सतनाम
सतनाम	केते बाज बहरी से पंछी धरावें ।	हँसे जो तमाशा सबन्हि को दिखावें ॥	सतनाम	केते जीव जबह करि हवेज लगावें ।	बिरंजे पोलावे जो खुश के बनावें ॥	सतनाम
सतनाम	किया कौल आगे भुलाना भुलाना ।	बदी में बदी कर ऊमर जो ओरान ॥	सतनाम	गया पन तीनों जीवन के जो आशा ।	त्रिसुना चौगुना देखा बदी के जो धाया ॥	सतनाम
सतनाम	हुकुम करि फिरिश्ते चली फौज भारी ।	पैठि महल में दिया कष्ट कारी ॥	सतनाम	जोर से फिरिश्ते पकड़ि के पछारी ।	लोटे पलंग पर अकेला पुकारी ॥	सतनाम
सतनाम	चलि सुनि बेगम सहेलियाँ सम्हारी ।	खोजे खोजादे सबे आँसु ढारी ॥	सतनाम	खोजे हकीमें जो हिक्मत बतावें ।	ऐसा दारु दीजै जो दर्द को मिटावे ॥	सतनाम
सतनाम	तालबेली तलब करि जो बेगम बोलाया ।	दुआ तबीजे जो पढ़िके लिखाया ।	सतनाम	हाफिज को बुलाया घनेरो खलीफा ।	बाजू में बँधाया जो पढ़ेक वोजीफा ॥	सतनाम
सतनाम	करते इलाजे बड़े बैद्य हारे ।	फिरिश्ते कटारी हिये बीच मारे ॥	सतनाम			सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	है कोई ऐसा जो आनि जिलावे ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हीरा जवाहिर सोना धन पावे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बोलता जो बोलते निकलि के भागा ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	फिरिश्ते पकड़ि के मुसुक चढ़ि लागा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बेगम सहेलियाँ रोवे जो अभागी ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	छाती ठठोवे महल आग लागी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	रोवे शिर धुनि के जमीन में जो डारी ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हाय हाय करके घनेरो पुकारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भया भवन भारी चिराग के बुझाया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जहाँ को तहाँ धन करोड़ों बिलाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आया दस्त खाली जो खाली गया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बदी में बदी करि उमरि जो लिया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कफन खोदि खौदी जो मिट्टी दिलाया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बहुत दिन साहब समालत कहाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हिन्दू को जलाया जो गर्दे मिलाया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	उड़ि गई खाके निशानी ना पाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गये राव रावण बड़ी फौज भारी ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गये कोटि कौरव भक्ति बिनु हारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गहो साधु चरना भला हे रे भाई ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आगे औ पीछे सदा है भलाई ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	‘दरिया’ चित चेतनि चेतावनि बनाया ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सकल सन्त सुनों चरण चित लाया ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	धरो ध्यान ध्यानि सतनाम टीका ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चलो पंथ नीके तेजो बात फीका ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	रहेगा न कोई न कोई निशान ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जैसे बुंद बुला जो पल में बिलाना ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जिमि कर जुआरी चला हाथ झारी ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	करे यम शासन बड़ा कष्टकारी ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	160	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	करे बाम पूजा लिये हाथ लाटी।	जै जै पुकारे अजया सुत काटी॥	सतनाम	काटे कटावे खावे मांस भाता।	बिचे अचानक परा जम घाता॥	सतनाम
सतनाम	चोरी चण्डाली जो धन लूटा।	परी मार मोहकम तबे सिर टूटा॥	सतनाम	पूजे पूजावे करे बुत सेवा।	लगावे बबुरे चाहे फल मेवा॥	सतनाम
सतनाम	चित्रगुप्त आपे जो कागज पसारा।	नहिं भक्ति रेखा परा नर्क धारा॥	सतनाम	पीरे मुरीदे तदबीरे बतावे।	जनावर जबह करि तबे खुश खावे॥	सतनाम
सतनाम	करे जो हद बन्दगी पढ़े जो किताबें।	कबाबे चखे खुश पिये जो शराबे॥	सतनाम	बड़े खान खाना खवानि कहावे।	बदी सिर बोझा नेकी को भुलावे॥	सतनाम
सतनाम	आपे हैं काजी किताबें पढ़ेगा।	करे जोर जुलुमें जंजीरे भरेगा॥	सतनाम	बुझेगा बुझेगा बैठा तख्त आपे।	काफी है काफी ना माई न बापे॥	सतनाम
सतनाम	करेगा निसाफे तु अग्र गरीबी।	तहाँ न गुजांइश बड़े मिया बीबी॥	सतनाम	कहन्ता गहन्ता सुनो सन्त प्यारा।	दया राखु दिल में जो 'दरिया' बिचारा॥	सतनाम
सतनाम	शब्द जाकरी		सतनाम	(9)		सतनाम
सतनाम	चौपाई		सतनाम	थोर जीवन जग काहें जहड़ाय।		सतनाम
सतनाम	अवसर बीते काहें पछताय॥		सतनाम			सतनाम
सतनाम	161		सतनाम			सतनाम

आगत सोच चरन लवलीन ।

ज्यों जल अंजुरी के पल-पल छीन ॥

छन्द

दीन छीन सो लीन माया, भीन भाव न जानितं ।

दीपक जैसे भवन भीतर, गमन प्राणहिं कीन्ह पतंग ॥

ऐसो चुभेवो कनक कामिनि, चुभकि चाहेवो मन अनं ।

थाकि तन यह थेक चलु चक्षु, चारोपन ऐसौ जनं ॥

चौपाई

चारो पन बीति गयो जढ़ को भाव ।

अवसर परि गयो यम को दाव ॥

भर्मित भवन चरण भझै चारी ।

बिसरि गयो संग सुत बित नारी ॥

छन्द

सब नारि झरि समाज बिसरेयो, बाज गज हीरा घनं ।

आयो गथ नहिं साथ चलि, हाथ मीजत जढ़ जनं ॥

लाय लव यह दहेव दस से, भस्म भाजन सर्बिअं ।

दे तील आंजुर भोर कीन्हों, सोर संग सब अर्पिअं ॥

चौपाई

अँजुरी के जल दीन्हों दोनों कर जोर ।

दिन दिन सुरति बिसरि भझै भारे ॥

धन्धा दवरि बहुरि लपटाय ।

निश्चय मरन काहे पछताय ॥

छन्द

जीवन सोचहिं नारि नर संग, कंचित जीवन बिहायतं ।

काल दण्ड सो खण्ड करि, ब्रह्मांड फिरत ज्यों पतंग ॥

पलक बीतेव खलक रूपि सब, चारि वेद चतुराननं ॥

नर जानु जग में जीवन ऐसे, भक्ति ज्ञानहिं जो भनं ॥

चौपाई

प्रेम भक्ति निजु हृदय बिराग ।  
पल पल सोच करहु अनुराग ॥  
जीवन मुक्ति जग सुख की खानी ।  
भवन भर्मित नहिं अमृत सानी ॥

छन्द

सानु आमृत जानु नीके, ज्ञान गढ़ सुख दायकं ।  
नहिं जरा मरन भव भर्म व्यापेव, भाग भला जन लायकं ॥  
सुबुद्धि सुन्दर सकल महिमा, युक्ति ज्ञानहिं जो भनं ।  
दरश 'दरिया' दया सतगुरु, तेल तुरी दीपक घनं ॥

(२)

चौपाई

सुमिरहु सतगुरु प्रेम आनन्द ।  
कलि मलि भंज गंजन द्वंद ॥  
तासु चरन चित हित करि जानि ।  
मन बच कर्म दूजा नहिं आनि ॥

छन्द

अन बानी तेजु तैं जढ़, सुमिरु सो सतनाम अं ।  
निरोग यौग बिरोग बिमल, पलक झलकत तासुअं ॥  
कंज पुंज समाज सुन्दर, सजल जल सुख दायकं ।  
मन मगन मधुकर पाइके, यह घ्रांनि घन लपटायकं ॥

चौपाई

घन घन गर्जत बर्षत नूर ।  
बुंद अखण्डित पीवे कोई शूर ॥  
निशि दिन क्षण-क्षण पल पल प्रीति ।  
उदित भवन भव भर्म अनीति ॥

छन्द

तेजि भर्म अनीति नीके, निरखु निर्गुन नाम अं ।

जन युक्ति युक्ता मुक्ति जानहिं, दया सतगुरु जेहि दयं॥  
 पुहुँप सेज सुगंध सुन्दर, गहिर गुन तहां राजितं।  
 ज्योति जगमग छत्र फिरे, चँवर चारि सोहायतं॥

चौपाई

सोहं चँवर शोभे सिर नेत।  
 हंस वंश कौतुक गनि गुन केत॥  
 अमृत पोषण पियहिं सनीप।  
 सब सुख सागर नहिं अनीप॥

छन्द

अनीप निकट बिकट नाहिं, तट त्रृकुटी मूल अं।  
 तरंग रंग सर्वज्ञ गंग युमना, सरस्वती शुभ अमी अं॥  
 सुमन सरस सुगंध बर्षत, अध्र उर्ध झरि परं।  
 देखि दर्शन परसि अजपा, छटा चमकत मनि बरं॥

चौपाई

फणि मणि धन्य सोई निर्मल ज्ञान।  
 दुःख सब दुरि भजु सन्त सुजान॥  
 निरखहु नयनहिं निजु करि भेद।  
 मूल निगम निजु करहु निषेद॥

छन्द

मूल निगम निरलेप निर्मल, कहत मुनि सुर शेष कथं।  
 ब्रह्माण्ड खंड सब ब्रह्म जेते, शिव बिरंची शारद कथं॥  
 जे जानि अगम जनाइदे, यह मान सतगुरु बुद्ध जनं।  
 अकह कहि कहि थाकि कवि सब, दास 'दरिया' सो भनं॥

(३)

चौपाई

सुमिरहु प्रानपति प्रीति करि नीति।  
 यम दारुन दर भव जल जीति॥  
 दिन मनि दिन कमल प्रकाश।  
 अलि मन मगन भवन में बास॥

राम बास सुबास जहवाँ, दास चरनन अमीअं ।

भर्म भागेवो कर्म नाहिं, धर्म दाया सर्बिअं ॥

कै कल्प काल न जाल जाके, लाल हीरा मनि बरं ।

योग भो न शोक सागर, त्यागि संग्रह झरि परं ॥

चौपाई

त्यागहु संग्रह सर्व सनीप ।

अवनि पताल ना कतहीं अनीप ॥

दूरि नहिं निकट बिकट नहिं बास ।

इमि गमि ज्ञान करहिं कोई दास ॥

छन्द

कोई दास पास उदास ब्रह्म सो, त्रास यम की किमि कथं ।

निरालेप अतित अमान निर्गुन, वेद ब्रह्मा कवि कथं ॥

वोय अकह कहि यह कथा मुनि, कथि पारब्रह्म अपारअं ।

नहिं योग युक्त जीवन मुक्ता, दया सिन्धु अमानअं ॥

चौपाई

अमान सो निर्गुन बिमल बिरोग ।

करि करि थाके तप सब योग ॥

दान और पुण्य तीर्थ जल संग ।

काल प्रचन्द करे सब भंग ॥

छन्द

करि भंग रंग तरंग तीक्ष्ण, अनंग सब में इमि रहं ।

दुई चक्र चलते चतुर बुद्धि सो, कनक कामिनि मन गहं ॥

तिहुँपुर शूर संग्राम करि यह, बाम कामहिं को जितं ।

दया सतगुरु दरा माते, प्रेम पंथहिं जोरितं ॥

चौपाई

प्रेम पंथ पगु धरहु सम्हार ।

धार कृपाण समुझ तन वार ॥

एहि विधि बिमल बैठु घर माँझ।  
जहँवा न दुःख सुख दिवस न साँझ॥

छन्द

साँझ प्रात ना मध्य दिन मनि, चन्द तारा न उदितं।  
नहिं भर्म कर्म कमोद काला, बाल तरुण न बृद्धयं॥  
अपार अद्भुत रूप अविगति, मातु पिता नहिं भ्रातंत।  
अचिंत ब्रह्म अचेत चेतहु दास 'दरिया' सो भनं॥

### शब्द रेखता रागी

अजब माशूक रे यारों, जिसे सतगुरु बताया है।  
देखा जिन्हि प्रेम के अन्दर, पलक ऊपर सो पाया॥  
भक्ति है प्रेमसे साँचा, रहा बिनु प्रेम का काँचा।  
तजा जग लाज सो नाँचा, सजन अपना रिझाया है॥  
बड़ी है भक्ति जीव दाया, यही माशुक फरमाया।  
इसी से संत कहलाया, कनक कारमिनि न भाया है॥  
जिन्हि यह टेक धरि टेका, उसे सतगुरु किया एका।  
लोहा में जाय पारस ठेका, कनक कुन्दन कहाया है॥  
मिटाय जाति का रेखा, चिन्हा सतगुरु नजर देखा।  
भया भृंग कीट का लेखा, अपानो रंग मिलाया है॥  
जगत पाषाण जल सेवा, पुजे देवल देबी देवा।  
न जाने साधु का भेवा, सभे पाखंड मचाया है॥  
काया देवल दरस भारी, है यमुना गंग अधिकारी।  
सुरसती सुषमना नाड़ी, गोफा त्रिकुटी बनाया है॥  
महल में एक ठग भारी, माया का फन्द उन्हि डारी।  
बाँझे सुर नर मुनि पकड़ि मारी, सभे ठग से ठगाया है॥  
कायापुर हाट का फेरा, करे सभ जीव से मट मेरा।  
रहै कोई साधु से जेरा, सभी को डगमगाया है॥  
बिना पद पर उड़े धावे, बिना कर सब पकरि लावे।  
बिना मुख पेट सब खावे, न रसना नयन काया है॥

पिया जिन्हि प्रेम का प्याला, हुआ सो मस्त मतवाला ।

नहिं कंठी तिलक माला, उसे महबूब भाया है ॥

कहा यह रेखता बानी, मधुर मृदु मोद सम सानी ।

सोई जन धन्य कहे 'दरिया', साहब से लव लगाया है ॥

(२)

अजब माशूक रे यारो, जिसे सतगुरु लखाया है ।

रहे चौदह तबक ऊपर, पलक में झलक आया है ॥

नहीं सर धनुष है हाथे, मकुट नहिं मोर पर कथे ।

नहिं सीता शक्ति तेहिं साथे, मधुर मुरति सोहाया है ॥

नहिं कटि काछनी न पिताम्बर, न मृगछाला ना बाधम्बर ।

नहिं देवता न दीगंबर, अमर गुन अजर काया है ॥

निपट है निकट नहिं दूरा, सकल सर्वज्ञ सब पूरा ।

बलि बावन का है सूरा, अलख पुरुष कहाया है ॥

निर्गुन सर्गुन दुवो भारी, पिता है एक महतारी ।

दुनों से अलख गति न्यारी, सम्पूरन दृष्टि दाया है ॥

अगुण है रुप बिनु काया, सगुण होय जगत जन्माया ।

यहाँ तीन लोक फैलाया, माया का जाल लाया है ॥

कनक कामिनि कठिन दोई, लिया कर गहि सभे कोई ।

रहा इमि जगत जीव रोई, जरा भव मरन पाया है ॥

बिना सतगुरु रे भाई, नहिं सुर नर मुनि सके पाई ।

अलख कहि-कहि सभे गाई, अलख बिरले ने पाया है ॥

सकल साधन करे धावे, नहिं सतसंग में आवे ।

कहाँ महबूब को पावे, जन्म दुर्लभ गवाँया है ॥

माला कंठी तिलक छापा, मेरी मैं सब तजे आपा ।

छापा है सत यम काँपा, उसे माशुक भाया है ॥

करे जब यार को अपना, हुआ जग रैनि का सपना ।

एही अजपा को है जपना, अजब सुरति लगाया है ॥

कहा यह रेखता थोड़ा, गथाया प्रेम का डोरा ।

कोई 'दरिया' के दिलवर को, बिना सतगुरु न पाया है ॥

## शब्द अलिफनामा

अलिफ अल्लाह सबको सिरताज, औवल आखिर वाहि काज ।

औवल बहिश्त है दोजक जार, बार बार तैं गुनहगार ।

दस्त वे देवे साहब महबूब, औवल वहिश्त बना है खूब ॥

बेदरद जनि होवे यार, बे दिमाग वाहि ते प्यार ।

बे किमति सिफित करु साफ, बे बेबाक बहर जनि काफ ।

बे अकल कह नियरे दूर, बेबाहा दिलसदा हजूर ॥

ते तरफ नहिं तालिबदार, ना त्रास दे गुनहगार ।

ते मैं खुदी होवे खाक, ते दिल देवे होवे पाक ।

ते है तरफ हरफ के पास, आशिक दिल है अन्दर खास ॥

से है सीने साफ रहु गंदे, से है सिफित साँच रहु बन्दे ।

से है सिर पर सदा हजूर, सफन सफा है दिदम नूर ।

से सारी मजलिस तेरा खो, हर्फ लिखा है जाहिर रोज ॥

जे दरद न जोने से बे पीर, जान जबह करि बे तकसीर ।

जे जबर मौत सिर सदा हजूर, जे जबरिल किताबे खोला जरुर ।

जे जेता जान जबह तुम किया, जे जानि बुराई सिर पर लिया ॥

हे हाजिर जनि गाफिल होवे, है हजूर दिल अन्दर जोवे ।

हे हैरान जनि फिरे ऐसे, हे हैफ जात यह माने कैसे ।

हे हरदम दम में साहब मेरा, है हजूर दिल तसवीह फेरा ॥

खे खबर करो खाने आफरिन, खे खालिक जाने सो मसकिन ।

खे अरब खरब ले पैसा पाय, खे खिलवति खाने बैठा जाय ।

खे खर्चे खाय करो खरीआत, खे खाक मिलेगा झूठी बात ॥

दाल दस्त में देवे यार देवे खेवे होखे पार ।

दे मे दबरे नाफा तेरा, दे दौलत पाय दाम के चेरा ।

दे दीदार दरस जब आई, दे दारु जिन्हिं हिकमत पाई ॥

जे जाल जाहिर है सबका परी, जे जामा का कहिए मीर ।

जे होय जुल्मी रहे न थीर, जे जाल परा मछली ज्यों नीर ।

जे जारि दे-दे करे खमीर, जे जानो काफिर तैं बे पीर ॥



रे रेज रेज है मरकब तेरा, रे यार हफ्त में फेरा।  
 रे राजी अर्जी लिखि भेजे, रे राह खान साफ करि लिजे।  
 रे रोज दिवाल टूटे भारई, रे रोज जोरे फेरि बनाई॥  
 जे जालिम होय करे बुराई, जे जर पाय जबर होय जाई।  
 जे जाना जरुर बहुरि नहिं फेरा, जे जाहिर है कागज तेरा।  
 जे बदी करे बदी में जाई, नेकि बहिश्त तुरन्तहिं पाई॥  
 सीने सीफ्त साफ रहु भाई, अजब सीन गुलजार बनाई।  
 सीना जोरे जनि करे बेकूफ, दोजक जार है बिना अकूफ।  
 सीन सांगिन नहिं मर्कब तेरा, हाड़ चाम गोस्त का घेरा॥  
 सीन बड़ा सो शाह कहावे, सीन मजूब सब निके भाव।  
 सिर के भार उतारु फकीर, सो दुर्वेस सबन का मीर।  
 चर्ब न चाखे पीवे न भंग, हर दम दारु साहब संग॥  
 साद सदा सफा है सो महबूब, संग में प्याला महरम खूब।  
 सदा अराधे वै इश्क अल्लाह, कदम दुर्वेसा रद वल्लाह।  
 इह हराम पहचान के खावे, सो दुर्वेस वहिश्त के जावे॥  
 जा बे जा तुझे दुर है जाना, जाकि मजलिस महरम दाना।  
 जा जाय बयान करु फर्जे रोज, जा बे करु वहिश्त का खोज।  
 मोरसिद महरम औ दुर्वेस, खासे बंदे गहो संदेस॥  
 ते तो तालिब रुह करे हजूर, तै मैं त्यागे सो भरि पूर।  
 ते तो तमा तलखा जो पीवे, इश्क निसानी युग-युग जीवे।  
 ते तो जाहिर है पंजा पीर, मोरसीद महरम दूर के तीर॥  
 ऐन-ऐन मह झलके नूर, ऐन अंक मह बाजे तूर।  
 ऐन महल में दीदम देवे, ऐन बैन सज़फ करि लेवे।  
 दिल सफाई चश्मा तेरा, आकिस यार वहिश्त में डेरा॥  
 गैन गरुर कबहिं न कीजै, गना दिन दोजक में भीजै।  
 करे बुराई तसबीह फेरे, घर में माल अबरि के हेरे।  
 पीवे शराब करे सैतानी, दोजक के यह मिले निशानी॥  
 फिकिर करो दिल जीकिर हनोज, फेरिये तसबीह करिये खोज।



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अलिफ इश्क है नबि रसूल, अलिफ वोजीफा दीदम मूल। अलिफ अल्लाह दुजा नहिं कोय, अलिफ झलके साहेब वोय॥ हमजा तालिब कादिम तेरा, हमजा खलिफा खालिक मेरा। हमजा जाहिर दिल बातून, हमजा हमने देखा नमून। हमजा योगी औ दुर्वेस, हमजा रावल देव उपदेश॥ याद अल्लाह रहे कोई प्यारा, या दर त्यागि होय रहु न्यारा। या दर वा दर एके जानो, बेबाहा निश्चय दिल आनो। या जग 'दरिया' कहा संदेश, बूझ बिचार के ले जाये पेस॥ (२) अलिफ याद करु गाफिलत दूर, बेबाहा कहिए औ मनसूर। ते तालिब है सदा हजूर, सो मत जानो नियरे दूर। जमि जहान सफरा है भाई, है खालिक सब खलक बनाई। खबरदार दर पहुँचे सो, दिल दरद बिनु धक्का होय। जालिम जुलुमी जो कोई होय, राह बारिक पावे नहिं सोय। जान जबह रुह करे बुराई, सीने सीन सीक लगाई। सीन साफ करु रक्त बुन्दम, सदा सबूरी साफा दीदम। जाद जहूद करे कुफुरान, तलबी तलब दार कुर्बान। जाहिर बात न मुरसिद मोने, ऐन अमान बहिश्त जो जाने। गै गाफिल पीरा न माना, फीका हुआ बहिश्त न जाना। काफ कलाम बहर है जैसा, काफ लाफ है ऐलिम ऐसा। लाम मोकाम दवर है भाई, मीम मेहर घर बैठे पाई। निरखि नाम निजु झलकें सोय, वाह-वाह प्रगट सो होय। है हाजिर कहिए बेचून, लामे नियरे नाहिं नमून। अलिफ अल्लाह सिर है भाई, हमजा जाहिर बैठे पाई। बेबाहा है साहेब मेरा, हों आसिक दिल बंदा तेरा। 'दरिया' दिल जो करे सफाई, ऐन दीद प्रगट सो पाई।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

## शब्द चौबंद

वाये भला मरद मरदान शहीदा सूरा सनमुख टक्कर है।  
 वह एक से एक टरे नहिं टारे, ज्यों खाड़ों का शक्कर है।  
 दौलत दुनियाँ माल खजाना, खर्चे खाय सो फक्कर है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, औरि माया मद जक्कर है॥  
 अच्छा घोड़ा जीन बनाता, कमर कटारी बाँके है।  
 पहिरि सनाह सजोर सबुते, पाव रीकाबे डाके हैं।  
 जब आन परा मैदान मर्द से, थर थर आपे कापे हैं।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, घर के पैड़ा तारके हैं॥  
 जोरे फौज जुलुम के साजे, घेरि जंगल के जारी है।  
 हय हाथी औ महल खजाना, महले चित्रकारी है।  
 तकियश तूले फूल बिछवना, संग सहेली नारी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, जन्म जुआ जग हारी है॥  
 ऊँचे महले चारु झरोखे, तीति पर पलंगे ढारी हैं।  
 सेने रूपे की वाह-वाह गुरिया, बहु भाँतिन की नारी है।  
 दरस परस साधुन से नाहीं, बोझ लिया सिर भारी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, आखिर मौवत कारी है॥  
 ऊँचे महल कलश कंचन को फूलन सेज बिछवना है।  
 भाँति-भाँति के चीजने वाला, जब चाहे तब खाना है।  
 हाथी घोड़ा ऊँट नगारा, मुल्क-मुल्क पर थाना है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, पलक घर में जाना है॥  
 ऊँचे महल कलश कंचन को, झबु सेज झटकना है।  
 भाँति-भाँति के बनिता बनि-बनि, मोती लाल लटकना है।  
 बीस भुजा दस मस्तक जाके, सो भी गर्द गलाना है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, एत पर फेरि जाना है॥  
 नर दुई भुजा के क्या डर मेरा, बीस भुजा दस मस्तक है।

लंकपुरी में बसे लंकेश्वर, जहाँ देखो तहाँ कह-कह है।  
कोटिन बीर बसे धनुधारी, दर पर नौबत बाजे है।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, क्या अपने मन गाँजे है॥  
राम लखन के मर्म न जाने, अपने गर्वी सबका भीर।  
सुर नर मुनि कियो बसि अपने, लंका बसिया सायर तीर।  
सीता सती गई गढ़ भीतर, चुनि-चुनि माथे बाजी तीर।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, गर्द में मिलि गये कोटिन वीर॥  
सागर बाँधा सैन उतरा, संग-संग बाढ़े बड़-बड़ मीर।  
लंका मीज धूर पंकज करिहें, रावण आगे बोला बीर।  
सीता ले के पायन परिहों, तब लंकापुर रहिहों थीर।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, ऊपर परहिं बड़-बड़ मीर॥  
बड़ा महाजन महा मोकदम, दौलत खराना खजाना है।  
करे खरीद फरीखत जग में, जहिर माल बेगाना है।  
दौरे दूत पछारे पलंगे, आप अकेल एगाना है।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, परा-परा छपटाना है॥  
कौल किया पै कर्म ना छूटा, ज्यों मर्कट की मुट्ठी है।  
टेढ़ी चाल ऐंठि के बातें, साधु वचन का झूठी है।  
संत निन्दा वेश्या से प्रीति, आँख हिये की फूटी है।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, प्रण पकड़ यम लूटी है॥  
सोई कूटन-कूटन है पाजी साहब राजी नहिं करता है।  
हिदवस ओराई रैनिराणी, सतगुरु पद को नहिं गहता।  
गर्व गरुरी खाय ना खर्चे, माले ले ले सो धरता।  
कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, यम की बंदगी क्यों भरता॥  
संत नकीब साहब को चाकर, फौजे बीच पुकोरेगा।  
नेकी बदी दोय कागज लिये, जाय चौतरे डारेगा।  
निकली बाकी चले प्यादा, कोड़न-कोड़न मारेगा।

कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, तत्प शिला पर जारेगा ॥  
 सिर पर मौवत बड़ा जुलबाना, जुलुमी पकड़ ले जायेगा ।  
 हो हुसियार सिताबी भाई, जम जालिम फेरि धावेगा ।  
 मुसुक चढ़ाय कोड़न से मारे, हाय-हाय मुख बोवगा ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, सतनाम नहिं भावेगा ॥  
 उड़ के मक्खी गुड़ पर बैठी, समुझ परे जब चखोगे ।  
 आमिष से अति प्रेम बढ़ायो, प्राण छूटे कहाँ रखोगे ।  
 चारि चरन दोय सीधे होई हैं, घास भूसा के भखोगे ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, श्वान सुकर मन मखोगे ॥  
 भीतर मैल चहल के लागी, ऊपर तन क्या धोया है ।  
 अविगति मूरत महल के भीतर, वाको पंथ न जोया है ।  
 युक्ति बिना कोई मुक्ति न पावे, साधु संगति क्यों गोया है ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, शीश पटकि क्यों रोया है ॥  
 क्या ऊपर तन धोवे पानी, चिकने बहुत चुहिले है ।  
 भीतर भरी भंगार भर्म की, नाम भजन बिनु भूले है ।  
 अजया मार काया के पोषे, और बहुत मसगूले है ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, गर्व भारती फूले है ॥  
 क्या ऊपर तन धोवे पानी, भीतर भरी भंगारी है ।  
 पाहन पूजि मुवा जड़ अंधा, येहू अगूढ़े भारी ।  
 दिल में दया दर्द नहिं आवे, जीव पकड़ि के मारी है ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, यम ने फंद पसारी है ॥  
 दर्दवन्त वाये मस्त फकीरा, दर्दवन्त की बातें हैं ।  
 बेदर्दी को ठवर कहाँ हैं, अपने मद से माते है ।  
 दूर दवर है पहुँचे क्यों कर, बहुत दिनन के माते है ।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, यम जालिम को रँदे है ॥  
 फकर हुआ फारिक दुनियाँ से, वाह-वाह लजते चाखी है ।

अधर गलैचा गैव तमाशा, वाको वहिश्तेँ राखी है।  
 रहम किया रहिमान नजर में, दोय फिरिश्तेँ साखी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, और माया मद माखी है॥  
 मति जा शहर बजारे खासा, अनवन चीज का बरना है।  
 पाँच पहरुआ ऐसो जालिम, उनसे निसदिन लड़ना।  
 खोलु दूम ज्ञान की चौकी, वो भी घाट उतरना है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, आखिर मरदों मरना है॥  
 वेद पढ़ा पर भेद न जाना, बकि मुआ फेरि जारी है।  
 बिना चिराग रोसन नहिं मंदिर, आखिर वाको अधियारी है।  
 बूड़ि मुवे फेरि थाह न पावे, बोझ लिया सिर भारी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, वाकी कुदरत न्यारी॥  
 भाँति-भाँति के गुदरी सीये, मानो भेष भिखारी है।  
 मुट्ठी एक भाँग मगन मन नाँचे, ताल मृदंगे झारी है।  
 कर पर थाप करे गुरुवाई, आरति शंख सुधारी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, सत्य वचन का गारी है॥  
 शेली माला तिलक बनावे, टोपी छैल छबीला है।  
 तापर फेट लपेटा बाँधे, सिर कलंगी मन मीला है।  
 खावे बीरा बीरी दसन में, रुपन खरिकार खाली है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, डगमग पंथ सोहीला है॥  
 चौका चारि चारु दीपक दे वाँकुरे, बैठि सिंहासन फूला है।  
 नारियर पान सोपारी आगे, यह दुनियाँ मति भूला है।  
 लीखि-लीखि पान देहिं शिष्यन के, माँगहिं मुक्ति माकूला है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, जाल फाँस यम खीला है॥  
 फाका फक्कर फकीरी दिल नहिं, सत्य भाव से ढीला है।  
 व्यसनी बहुते गुण्डा है गड़बड़, कसनी कसे रंगीला है।  
 धीमर पासी वेश्या की गति, भेष भर्म ठगीला है।

की 'दरिया' कूटन बेगिदी, यह पाखंडी मन मुला है॥  
 राम रहिम करीमा केशो, दर्द बिना कहु किन्ह पायी।  
 गीता कोरान पंडित औ काजी, ठगि-ठगि माले सभ खाई।  
 जाके दर्द बसे दिल अन्दर, तासो गाफिल गमि खाई।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, अवसर बीते क्यों गाई॥  
 कहर किताबे खोजता फीरे, मेहर किताबे नहिं पाई।  
 चखे कबाब शराब प्याला, इन्ह बातों से न बनि आई।  
 जो यह दर्द बसे दिल अन्दर, तासो गाफिल गमि खाई।  
 कह 'दरिया' कूटन बेगिदी, फर्जे रोज कहाँ जाई॥  
 यह दुनियाँ नदी है गंदी, टूक में भूला भर्म मे भरमना है।  
 करो बन्दगी दस्त जोरि के, चाहो जन्म सुधरना है।  
 नाम अलम् एक दिल में राखो, बुरी बात से डरना है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, आखिर मरदों मरना है॥  
 परम पुरुष अविनासी, सो रतनागर जानी है।  
 अगम शब्द यह जो निरुवारे, सोई जौहर की खानी है।  
 लाल जवाहिर मुक्ता तामें, सो सतगुरु सत ज्ञानी है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, कागा कर्म बखानी है॥  
 रमिता राम रमे सब माहीं, रमि रहा सो कच्चा है।  
 वासे आगर बूझो ज्ञानी, सोई शब्द निजु साँचा है।  
 क्षर अक्षर से न्यारे देखो, काल कर्म से बाँचा है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, वेदे या जग माँचा है॥  
 वेद भेद में नाहिं कहिए, बीवी अक्षर से न्यारा है।  
 निगम निति यह छाँछ बखाने, बक बाऊर को प्यासा है।  
 ज्ञान बिना पर अँधियारे, नीच कर्म संसारा है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, निःअक्षर मूल बिचारा है॥  
 आज्ञा अजर अमर वह जतानों, डार निरंजन भारी है।





कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, तब की राह बिगारी है॥  
 अब जनि राह बिगारो भाई, समुझ-समुझ पग धरना है।  
 नेकी बदी चिन्हों यह निके, नीच कर्म नहिं करना है।  
 ऐसी दाव बहुर नहिं पैहों, अबहीं काम सुधरना है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, सतगुरु शरन उबरना है॥  
 सतगुरु निन्दहिं बन्दहिं यम के, सो ठौर कतहिं नहिं पाई।  
 दुजा शरण कहाँ के जइहो, काल पकड़ि के खायी है।  
 सत शब्द गहो नर बौरे, स्थिर घर के जाई है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, काल कर्म नहिं काई है॥  
 राज काज में भर्मि भुलाना, ममिता मद सो माता है।  
 औघट घाट चिन्हो नहिं मूरख, पाप कर्म कमाता है।  
 पर जीव घात चिन्हे नहिं दरसे, औ वेश्या रंग राता है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, काल घसेट ले जाता है॥  
 रंग राग में बहुत भुलाना, भक्ति भाव से चूका है।  
 चौरासी में डार दियो है, खान चिकारा भूँका।  
 जंगली शेर सोर बहु करते, और पवनों का धका है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, कर्म काल का तू चूका है॥  
 आदि अन्त का मर्म न जाने, सत शब्द नहिं पंथे है।  
 धोख दौरि मुआ जढ़ अन्धा, ज्यों कुरंग रफ गंधे।  
 जौहरि बिना मू किमि पावे, कामिनियों के गंधे है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, अगम निगम नहिं मंथे है॥  
 पहिले क्षीर अवटी जब आवे, जोरन दे तब दही।  
 मथनी मथी लैनु जब लिन्हा, वाके पीछे मही है।  
 अग्नि प्रकाश ताव जब दिन्हा, सार बात तब सही है।  
 कहे 'दरिया' कूटन बेगिदी, ऐसा सतगुरु लही है॥  
 सतगुरु सार परम गुरु हिता, ताके वेद न तूला है।



## शब्द रेखता चौपदी

‘बेबाहा’ वाये वहर है शहर जाके बसे, दीन के तख्त पर मम प्यारा।

अजर अडोल अमोल निर्बान है, स्वेत निशान तुम निरख न्यारा।

कुफुर सब दलि मलो दया दुर्वेश में, काट यमजाल धरि तिमिर फारा।

कहे ‘दरिया’ दस्त पंज है पीर का, सिर पर क्षत्र मणि मगन तारा॥

‘बेबाहा’ बेबाक अमान है, कुफुर के सिर पर तेग झारा।

अदल अमान निशान झलकत रहे, गर्व गढ़ ढाह के ज्योति बारा।

जुमुस खावे नहिं खलक देखा करे, पलक ‘दरिया’ धरि चोर मारा।

कहे ‘दरिया’ फौज भारी बड़ी, हार के जायेगा कूफुर सारा॥

सतवर्ग निर्बान निपेच सिंक है, संत को कष्ट जिन्ह काट काढ़ा।

सत के दाबते दबे यम जालिमा, पकड़ के कैद किन्हा चोर गाढ़ा।

गर्व के जबर हो संत के साहब, स्वर्ग पताल निशान बाढ़ा।

कहे ‘दरिया’ जब सिंह के शरन में, मन मस्त गयंद नहिं रहत ठाढ़ा॥

हुकुम ‘जिन्दा’ करे ज्योति जगमग बरे, गर्व के दुर करु शब्द साँचा।

दुष्ट दानव डरे उलटि पायन परे, भूत बैताल नहिं दूत बाँचा।

जुमुस खावे नहिं जोर केता करे, परा लपेट में घैचि ऐँचा।

कहे ‘दरिया’ सोई संत बाँके बड़, मडे मैदान में जाय मंचा॥

जिन्द जागृत रहे निन्द सोवे नहिं, नगर में चोर धरि कतल किजै।

अदल अमान यह बान बंका बड़ा, घैकिमान कसि तीर दीजै।

ज्ञान गरजत रहे तबल न डगा डगे, लगे नहिं लपट सभ भर्म छीजै।

कहे ‘दरिया’ सत शब्द प्रचार के, सुमिर सतनाम धरि दैत मिजै॥

कहे जिन्दा बड़ जोर है चोर जग हारिया, शब्द सरबान सुनि परा दंका।

कष्ट सब काट के दैत्य दानव दवन, लगे नहिं लपट सत शब्द बंका।

भक्त औ भेष भगवंत भजन करे, सुमिरु सतनाम के राव रंका।

कहे ‘दरिया’ तुम संत का मंत करु, सिंह की ठनवि इनकार ठंका॥

जायेगा जायेगा रहेगा नहिं बे, हुकुम ‘बेबाहा’ के छरी आई।

जोर की फौज यह जुल्मी पर जबर है, जेर होय कुफुर तहाँ सभ धक्का खाई।

तख्त कायम किया रहम की नजर में, छत्र सिर ऊपरे ज्योति छाई।





























सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	<p>श्वान की सुरति यह मूरति में पैठ के, वाक्ये फिरे सोवत जागा । गस्ति का ज्ञान यह तेग बिनु म्यान है, रटू के रटन में टूट धागा । कहे 'दरिया' दर खड़ा यहीं देखिए, खर्ग के खैंचते पर्द लागा । (८)</p> <p>प्राण पूजा नहीं ध्यान दूजा धरे, आत्मा देव आदि पाती । जाय-जाय पषान पर जीव मारा करे, भया मत बंद बिनु तेल बाती । तहाँ ठाढ़ कर जोर के अरज अंधा करे, परा यम फंद तब ढहे कांती । छूटी युग-युग सब नेह नाता टूटा, झूठ जग धुंध मद मोह माती । कायापुर कष्ट में नष्ट नर जात है, पकड़ के प्राण यम चढ़त छाती । महल औ बहल सभ सहल नहीं साथ है, हाँथ पसार सब यहि भाँति । भेष अलेष सभ टेक टंडस करें, भर्म की मिति में प्रीति राती । कहे 'दरिया' बिनु दया दीदार नहीं, छोड़ दे मोट मन मेहिं काती । (९)</p> <p>संत का मत यह दया विवेक है, दया बिनु काया यह झूठ डोला । मीन औ माँस यह सन्त मना करे, ज्ञान जो जान कृष्ण गीता बोला । जीव मारा करे पत्थर पूजा धरे, हिये की आँख के आँज डाला । कृष्ण का कहा यह गीता सर्व धर्म है, बुझ बिचार के खोय डाला । वेद पुरान यह बिबिध बानी बोले, कृष्ण का कहा नहीं और तूला । जीव का हतन यह निगम साखी बोले, पढ़ा जो बिहित करि भर्म भूला । चाल बेचाल चले उलटि निन्दा करे, माया मद माँति के गर्व फूला । कहे 'दरिया' जब काल का डंड ले, पकड़ के प्राण उखार मूला । (१०)</p> <p>आपनी बात तुम आप बूझे नहीं, अपने दर्छ पर दर्द जानी । आपने भूष पर भूख के मानिये, आपने दुःख पर दुःख जानी । आपनी प्यास पर प्यास के जानिए, सूखे दिल कमल तब माँगु पानी । आपने बालका दर्द बहु प्यार है, आन के बाल पर तेग तानी । वेद बक्ता फिरे झूठ कहानी कहे, साँच माने नहीं दया जानी । अपने गाफिली गर्व माता फिरे, दर्द ब्यापे नहीं मूढ़ प्राणी ।</p>	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

192







(१७)

एक वोय एक है टे टंडस करे, धरे मन धीर सो वीर बंका।  
 पेन्हि सनाह सजोर साबुत है, ऐन मैदान में देत डंका।  
 दोनों दल देखिया फौज बड़ी, काम औ क्रोध का परा दंका।  
 शूर औ वीर कहीं लाख में एक है, झपट तेग जहाँ राव रंका।  
 धन्य है धन्य है धन्य मता तेरी, जगत में सोर जहाँ परा हंका।  
 हुआ धन्य-धन्य यह जीवन जीवता रहे, संत मत में तिलक अंका।  
 हद वेहद यह दृष्टि जाकी बनी, कृति युग-युग रहे नाम नंका।  
 कहे 'दरिया' कोई संत सनमुख रहे, ऐन में नयन जहाँ जलज झंका।

(१८)

गहे जब सांगि यह मांग कर आपने, ऐन मैदान में धर घोड़ हंका।  
 अग्नि का लपट है सांगि का झपट है, कटक में पैठ गया बीर बंका।  
 नीर का बुन्द ज्यों तीर मुखन परे, बीर फरकत रहे नाहिं संका।  
 शूर के मुख पर नूर झलकंत रहे, पलक परता नहिं ऐन अंका।  
 ब्रह्म निखंड यह डंड यम काटिया, डीगा नहिं डगर में दिया डंका।  
 भक्ति के हेतु से खेत सभ जितिया, सभे नेत जहाँ राव रंका।  
 हुआ धन्य धन्य यह मन ताबीन करी, विमल विरोग धरि नयन झंका।  
 कहे 'दरिया' यह गगन में मगन भौ, गरजिया बान यम हुआ दंका।

(१९)

करोंगा सोई जो हुकुंम करता किया, शब्द की सांगि समशेर बंका।  
 ज्ञान का घोड़ला प्रेम पाखर दिया, खैंच के तंग चढु छोड़ संका।  
 मगन माशुक यह गगन में कुदि, ढील करि बाग मैदान हंका।  
 कड़ी कमान यह एड़ी ते घैचिया, तीर विवेक टनकार टंका।  
 पाँच पच्चीस मिली यह तीस भागा फिरे, बड़े सरदार है राव रंका।  
 आड़ नहिं अटक है कटक सब फुटिया, पटक के सिस यम हुआ दंका।  
 जूझिया कोई नहिं युक्ति आपन किया, मुक्ति की बात लिख लिया अंका।  
 कहे 'दरिया' सोई संत बाँके बड़े, मंडी मैदान में दिया डंका।

(२०)

मर्द मरदान नहिं मर्द मर्दुद है, मर्द मरदान जिन्हिं कौल राखा ।  
 ना मर्द सभ गर्द है जर्द झाँकी लिए, परे भव भार बोले कपट भाखा ।  
 मर्द मस्तान बे गर्जी नाहिं, धरे दिल दर्द रस अधर चाखा ।  
 मर्द माशुक है मर्द के दर्द में, रहे दिल पाक जिन दरस देखा ।  
 ना मर्द बेदर्द है दर्द वाके नहिं, रहे गर्म गोस बेहोश पेखा ।  
 ना महरम यह मर्द सब कर्म करद लिए, गरजत मुख नूर सभ सुरति सुखा ।  
 मर्द कर गहे समशेर सतनाम का, कियो सभ काम सनदी परी लेखा ।  
 कहे 'दरिया' यह झारी प्रचारी के, मर्द आशिक सुरति चुभि चाखा ।

(२१)

मर्द सो मर्द है मर्द सो दर्द है, मर्द सो नेक है पाक साफा ।  
 मर्द सो गहित है भोग सोग रहित है, मर्द दो चन्द नहिं गर्व काफा ।  
 मर्द सो जगत में योग युक्ति जाहिर, मर्द दिल दर्द सोई अर्स साफा ।  
 मर्द झोक झोक में मस्त प्याला पीवे, मर्द दिल दरस सोई ऐन जाफा ।  
 मर्द टोक टोक में लग्न लोकता रहे, बे सवाल मद जेर जबर राफा ।  
 मर्द नहिं डगमगे चलत मगु मगन में, दर्द मुख नूर शूर गगन वाफा ।  
 मर्द सो एक है लाख के वारी के, पकड़ि समशेर कियो कियो कतल काफा ।  
 मर्द गरकाब गुलजार दरियाव में, कहे 'दरिया' जाके वहिश्ति नाफा ।

(२२)

ज्ञान का घोड़ला शून्य में दौरिया, शून्य में सुरति है शब्द सारा ।  
 यह काया तो कर्म है भर्म लागा रहे, काया के अग्र दिव्य दृष्टि वारा ।  
 नूर जहूर खुसवोय खासा बना, बास सुबास में भँवर हारा ।  
 मुरली मगन महबूब आपे बना, झिगुर झनकार तहाँ बाजु तारा ।  
 गगन गर्जत रहे बुन्द अखंडिता, पंडित बेद नहिं अंक न्यारा ।  
 हद बेहद बेअंत अथाह है, कोई जन युक्ति से जाहि पारा ।  
 जौहर जानिया जौहरि जाके कही, हीरामनि पास है ज्योति सारा ।  
 कहे 'दरिया' कोई वलि मस्तान है, शब्द के साध ले संत प्यारा ।

(२३)

ज्ञान के जागते जगमग बरे, अमि रस प्रेम सुख भर्म भागा ।  
 दया के दृष्टि में प्रेम सागर भरा, झरत है लाल दह कमल लगा ।  
 थाके कहीं वेद चतुरानन चार मुख, शेष सहस्र मुख ज्ञान पागा ।  
 अलख अपार कोई दृष्टि ज्ञानी लखै, मूल प्रकास झरि गगन लागा ।  
 सुरति साँचा बसे ब्रह्म पूरा हुआ, दया के महल नहीं कुबुद्धि कागा ।  
 अर्ध औ उर्ध जहाँ मध्य मानिक बरे, काया के सोधि सब विषय त्यागा ।  
 ब्रह्म निरुप जहाँ सुरति चौरी रचि, शिव औ शक्ति गहि गाँठि लागा ।  
 कहे 'दरिया' कोई संत जन जौहरी, मुक्ति मैदान में देत डागा ।

(२४)

मूल है मूल यह फूल देखा करे, तुले नहीं ताहिं यह वेद सारा ।  
 मुरति है मुरति यह सुरति में देखिए, गगन में मगन दिव्य दृष्टि बारा ।  
 निरति है निरति यह प्रीति पायन परी, गया यम जीत यह विविध धारा ।  
 त्रिगुण है त्रिगुण यह त्रिविध तीन ताप है, तिमिर सभा नासिया निरखि न्यारा ।  
 ज्ञान है ज्ञान तुम गर्व के दूर कर, सर्व व्यापा रहे संत प्यारा ।  
 योग है योग भर्म भागा फिरे, रोग व्यापे नहीं शोक मारा ।  
 अक्षय है अक्षय तुँ प्रेम में छका रहू, देखि छविं ब्रह्म यह उदित तारा ।  
 कहे 'दरिया' दयाव ग्रकाब है, गहिर गुलजार तहाँ जलज झारा ।

(२५)

मूल जाने बिना शूल सागरा परा, हरे बुद्धि ज्ञान बलि छरन चाहे ।  
 वेद के उक्ति से युक्ति दानी हुआ, बाँधि पताल में दुःख दाहे ।  
 हरिश्चन्द यह मंद नहीं भर्म बाजी रचा, जीव को दान तेहिं काह डाहे ।  
 नीच घर बेचिया काम कच्चा किया, सत में बिपति यह तन डोहे ।  
 ठग ठाकुर यह जानि जीव ठगिया, माँगिया मुक्ति नर अजब आहे ।  
 इन्द्र जाल का ब्याल यह पेखना, डारिया जाल नर साँच काहे ।  
 माया मन मंचिया बाँचिया कोई नहीं, त्रिगुण के धार में जान वाहे ।  
 कहे 'दरिया' दिल दगा तै छोड़ दे, गहो सतनाम सर्वज्ञ साहे ।

(२६)

अमर वोय वृक्ष है पँवरि जाकी फूली, मातिया भँवर निजु घ्राणि पाई।  
 अमि सतनाम है प्रीति पीवता रहे, जीति यम धार नहिं निकट आई।  
 उन्मुनि के बीच यह चित चुभा रहे, चौक है चाँदनी देखि पाई।  
 अर्ध अमान निर्बान झलकत रहे, स्वेत सुगंध छवि छत्र पाई।  
 मगन माशुक यह गगन गर्जत रहे, झरत झरि बुन्द घन घटा छाई।  
 आदि अनादि देख वादि मिथ्या तेजो, दरस हर घरी निजु पलक पाई।  
 गहो गुरु ज्ञान तुम ध्यान करो धनीका, तेजि दे मान नहिं दोजक जाई।  
 कहे 'दरिया' दिल दगा तैं दूर कर, डगा दे ज्ञान सुनो संत भाइ।

(२७)

घना मोती झरे ज्योति जगमग बरै, घटा घन घेर चहु ओर फेरा।  
 बुन्द अखण्ड स्वर चले ब्रह्ममंड के, काम के फौज सभ घेरि टेरा।  
 त्रिवेणी मध्य तहाँ सुरति सनमुख कियो, सुषमना घाट कहाँ दृष्टि हेरा।  
 पलक में झलक चहुँ मंदिल छवि छाइया, ब्रह्म पुनित नहिं बहुरि फेरा।  
 भेद बंका बड़ा काल संका नहिं ज्ञान घट खुलीत सभ कर्म जेरा।  
 ध्यान लगा रहे गगन घन गर्जिया, कुमति कुबुद्धि होय रहत चेरा।  
 बैन विचार यह लगन लागा रहे, मगन सभ दिन कियो गगन डेरा।  
 संत सुजान जिन्हि शब्द बिचारिया, कहे 'दरिया' सोई दारस मेरा।

(२८)

अगम गुरु ज्ञान ते ब्रह्म पहचान ले, बिना पहचान क्या कथे ज्ञानी।  
 बिना पहचान अंजान कहाँ जाइहो, बिना ठहराव कहाँ ठौर ठानी।  
 बिना दिव्य दृष्टि यह जीव कहाँ जाइहें, उर्ध मुख ध्यान धरि विकल बानी।  
 अर्ध अधियार तहाँ चोर चारी मुंसे, बिना सत शब्द जीव होत हॉनि।  
 बिना मगु देखि यह भेष भर्मत फिरे, नहिं योग युक्ति रस रोग आँनि।  
 खालि सभ खलक है पलक मुँदे रहे, खोल दिव्य दृष्टि सोई सिद्ध ज्ञानी।  
 सोई साधु भरि पूर है शूर सनमुख सही, आपने आपू जिन्हि उलट आनी।  
 कहे 'दरिया' सत शब्द बिनु पार नहिं, वार भटकत फिरे मुढ़ प्राणी।

(२६)

प्रेम की बेलि फूलेल सुगन्ध है, प्रेम के नयन नहीं और तूला ।  
 कमल का फूल ज्यों प्रेम जल भीतरे, प्रेम के कारणे भँवर भूला ।  
 प्रेमहिं चन्द चकोर दिव्य दृष्टि में, प्रेम के कारणे उलटि झूला ।  
 पिया संग प्रेम बसि नारि साहस करे, प्रेम के अंग अग्नि बेइलि फूला ।  
 प्रेम से सूर यह खेत पर हेत करि, प्रेम से जीव जानि हूला ।  
 प्रेम से मृग यह नांद लव लाइया, प्रेम से संक नहीं लागु झूला ।  
 प्रेम से पपिहरा रटत पिया-पिया, प्रेम स्वाती जल देत मूला ।  
 प्रेम से संत यह मोह को काटिया, प्रेम से त्यागिया कुल मूला ।  
 प्रेम पतंग यह दीपक देखा करे, प्रेम बसि प्राण नहीं लागु शूला ।  
 कहे 'दरिया' जन्म प्रेम आसिक हुआ, ज्यों जल कली प्रेम पत्र फूला ।

(३०)

चौदह यह तबक ताबीन जाके कही, नीर औ पवन घट सभे घेरा ।  
 खण्ड ब्रह्मण्ड सभ डंड एके कही, चाँद औ सूर्य का एहि फेरा ।  
 रहा छबि छाया यह छका मुनि देखि के, रुप छहलात मनि कौन हेरा ।  
 शेष के सीस पर ईश जाको कहि, भये जगदीश सभ जीव चेरा ।  
 बैकुंठ बिराग सभ राग कथनी कथे, मथे दधि जानि तब धृत हेरा ।  
 वेद कितेब दोनों शुन्य शिखर बसे, हरे बुद्धि जानि गुण पंडित तेरा ।  
 आदि अनादि सभ वादि कथनी कथे, हते जीव जानि यह प्रान केरा ।  
 कहे 'दरिया' तुम उलटि के देख ले, प्रगट प्रतक्ष्य यह रक्ष तेरा ।

(३१)

शब्द साँचा कहों भेद बंका बड़ा, कड़ी कमान तै खैंचु भाई ।  
 शिव ते धनुष ले जनक आगे रखा, भूप सभ पीठ दे लाज आई ।  
 निपट लघु छोट बिकट धनुहा बड़ा, कठिन बिरंचि प्रण रचा भाई ।  
 रंग यह भूमि में राम जबहिं गये, भया भव संक नहीं कहं जाई ।  
 लिन्ह कर चाँपि यह देखि दल काँपिया, तोरि दिन्ह धनुष जग जस पाई ।  
 परशुराम का कोप यह तोर नीचे किया, गर्व सो गद्र सभ गमि खाई ।  
 चौकड़ी चार यह युग केते कही, चारी युग धरि सुकृत आई ।









(४१)

घट पर घट प्रमीन प्रमाण, दिव्य दष्टि की बात क्या दुरि जानि ।  
 धुन्ध धोखा धरे भर्मि काहें मरे, निकट निशान नहि फहम आनी ।  
 दीद पर दीद प्रतच्छ निर्बान है, निरख निजु नाम चहु गगन ज्ञानी ।  
 गगन की डोर यह सुरति छुटे नहीं, अजब अचरज सब दरस बानी ।  
 दरस में परस यह ज्ञान गम्भीर है, गहिर गरकाब रस प्रेम सानी ।  
 छव औ आठ का बाट बंका मिला, महल मोकाम का भेद जानी ।  
 भेद ब्रह्म ज्ञान ते भर्म पर्वत ढहा, रहा निजु नाम सोई जान प्राणी ।  
 कह 'दरिया' गढ़ चढ़ो गुरु ज्ञान ते, नाम निशान मैदान ठानी ।

(४२)

योग ते सारे करे भोग व्यापे नहीं, सपने विर्य नहिं झरत कनी ।  
 निद्रा साधिया पवन के बाँधिया, चलत है स्वांस यह युक्ति घनी ।  
 नौ यह नाटिका कुलुफ कुंजी करे, पाँच के जारि के पीवे पानी ।  
 रहे बिदेह यह देह जाने नहिं, जीवे युग-युग तब योग मानी ।  
 रहो तुम सहज में सुरति सनमुख किये, सत का शब्द नहिं होत हानि ।  
 धरती तुरंग चढ़ि देश देखा करे, ज्ञान का ढोल यह जगत जानी ।  
 साधु संग हीलि-मीलि भोजन करु भवन में, तेज अभिमान सभ नर्क खानी ।  
 कहे 'दरिया' सतवर्ग साहब मिले, संत सुबुद्धि सत शब्द मानी ॥

(४३)

खण्ड ब्रह्मड यह कन्द खाया करे, अन्न के त्यागि के दूध धारी ।  
 पवन के खैंचि ब्रह्मड पीवे सोई, जीवे नहिं युग कोई लाय तारी ।  
 मौ मौनी हुआ पवन परिचय किया, अष्टांग करि योग कष्ट काया जारी ।  
 पाँच अग्नि जल सयन साधे कोई, पाँव के टाँगि उर्ध अग्नि बारी ।  
 काम के जार यह बज कछोट कसि, कुबुद्धि सुबुद्धि धरि क्रोध मारी ।  
 चोर चिन्हे नहीं मुक्ति पावे कहाँ, तप से राज्य फेरि नरक डारी ।  
 राज सभ त्याग के काज योगी करे, खाक मुख लाय सब लाज टारी ।  
 कहे 'दरिया' यह भेद के जानि ले, ज्ञान प्रकाश सतनाम तारी ॥

(४४)

योग औ पवन कहु कौन साधा करे, चलत है स्वाँस मुख बोलत बानी ।  
 नासिक श्रवण यह चक्षु देखा चाहे, पाँच भुतात्मा करत कानी ।  
 तृषा जल प्याँस है सुषमना सुता चाहे, उठि के प्रातः मल मूत्र खानी ।  
 डिंभ अव क्रोध का मूल मेटे नहिं, काह तन कष्ट तुम देत प्रानी ।  
 परा बन्दी खान में जान जंजीर भरी, गोफा में पैठ के चूप ठानी ।  
 हुआ बलहीन यह झीन छापा तेरा, काह तुम यो मन मत ठानी ।  
 अंकुर औ बिन्दु तुम मूल में रमि रहो, अक्षय अशोक सत शब्द मानी ।  
 कहे 'दरिया' यह दरस दीसत रहे, प्रगट प्रत्यक्ष दिव्य दृष्टि तानी ॥

(४५)

भेष अलेख सभ सेख सेवड़ा बअने भर्म को भीत नहिं टरत टारी ।  
 कही लाय भभूत अवधूत आपे बना, काम औ क्रोध की फौज भारी ।  
 कहीं तीर्थ रटता फीरे ब्रत बहुते करे, धोख औ धंध में प्राण हारी ।  
 कहीं अर्ध झुलता रहे उर्ध मौनी हुआ, बाँह उठाय सिर जटा भारी ।  
 कहीं मुरली वेणु मुख टेरे सुना करे, आरती शंख ध्वनि दीप वारी ।  
 कहीं गोफा में पैठि के पवन परिचय करे, भवन के त्यागि के डंड धारी ।  
 कहीं नेम अचार षट कर्म पूजा करे, आँख के मूँद कर माला फेरी ।  
 कहीं कंदला पैठ के कन्द मूल खात ठै, अन्न के त्यागि के दुध धारी ।  
 परा अगुढ़ा यह मुढ़ माने नहिं, कुमति कौ बेइलि तन फूल सारी ।  
 कहे 'दरिया' सोई ज्ञान गुरु अटल है, तेजु प्रपंच सुनो भेष धारी ॥

(४६)

निरखु निज नाम सतनाम सुपंथ है, दया के तख्त पर बैठु भाई ।  
 छोड़ि दे कह तुम अकह में गमि करु, सुन्य में सुरति गहि नाम लाई ।  
 देखि के तत्व निःतत्व निर्बान है, रहो ठहराय सत शब्द पाई ।  
 ब्रह्म विवेक विचार चित चेत के, होहु अबोल तेजि झूठ झाँई ।  
 काम की फौज यह बान ते दल मलो, रहो निरपेच नहिं काल खाई ।  
 ब्रह्म का तेज यह भेद बंका बड़ा, गहिर गरकाब झरि अगम आई ।  
 सुरति औ निरति सभ थीर थका हुआ, बास सुबास सभ रहत छाई ।  
 कहे 'दरिया' सर्वज्ञ सभ माह, कोई संत जन जज्ञैहरि भेद पाई ॥

(४७)

सुमिरु सतनाम निजु काम है जाहि ते, तेज रस भोग भवन छोजे ।  
लाव दिल दया तुम दर्द की नजर में, तेजु कुल कर्म सभ लोक लाजे ।  
होहु निःकर्म सब भर्म के ढाह दे, गहो सत चरण सुख अचल राजे ।  
तेज दुख द्वंद फंद निकंद करु, धरो दृढ़ ध्यान सोई काम करजे ।  
तहाँ अमि प्रकाश भौ कमल फूल फुलित, खुले गगन ध्वनि सुनि काल भाजे ।  
तहाँ झलक झनकार सत शब्द उजियार, तहाँ अगम अघ काटि सिर छात्र छाजे ।  
तहाँ भाग्य बड़ भक्त के जगत कह जितिया, जानि यह युक्ति तहाँ योग गाजे ।  
कहे 'दरिया' है गगन में मगन भौ, अगम निशान ध्वनि तार बाजे ।

(४८)

मन का रंग बहु रंग है रे, तुम मन के रंग बिचारु प्यारा ।  
मन ही राम मन ही रावणा, मन ही उगे आसमान तारा ।  
मन ही मारिया मन ही जारिया, मन ते उत्पनि सभे बारा ।  
मन ते माया है मन की मोहनी, मन ने मंडिया जगत सारा ।  
ऋषि औ मुनि सभ मन के जार में, मन ने फाँभ सभ ग्रीव डारा ।  
झलक झाई देता पलक में मारता, भार के भुजबे हाथ कारा ।  
ब्रह्म से छीन है चोर से लीन है, हठी है काल तेहिं काटि डारा ।  
कहे 'दरिया' कोई संत जन जौहरी, सत के चिन्हिं जिन्हिं कदम मारा ।

(४९)

राम का नाम तीन लोक प्रगट है, राम का नाम ते विविध बानी ।  
राम के नाम ते वेद ब्रह्मा कथा, शिव सनकादि ले आदि जानी ।  
राम के नाम ते सार गीता बना, आपनी उपमा आप मानी ।  
राम के नाम ते योग मारग कथे, योगिया युक्ति से योग जानी ।  
राम के नाम की काया तो खप गयी, अजर है काया कहु कवन ज्ञानी ।  
अगम अपार कोई पार पावे नहिं, कथे विस्तार सभ हार मानी ।  
सत को सत यह सत बरता रहे, सत के बदन पर लगन ठानी ।  
कहे 'दरिया' मन अगम अपार है, अपने आप में बुझ ध्यानी ॥

(५०)

राम का नाम तेहि दिन कहाँ रहा, रचा जब सृष्टि यह तिर्गुण फंदा।  
 राम का नाम की स्वर्ग से टुटिया, फूटि भूमि फोरि की प्रगट चन्दा।  
 आदिहिं ब्रह्म अगाधि अगोचरा, सुरति बिचार के चतुर द्वंदा।  
 ब्रह्म ते फूटिया टूटिया तीन भौ, नाम रंग रहित है पाप रंदा।  
 तीन के छोड़ि यह चौथ चाहे कोई, करे विवेक होय निर्मल बन्दा।  
 तेजि मद माया यह मगन माशूक है, सुमिरु सतमनाम होय तिमिर मंदा।  
 जीयते मुक्त हुआ युक्ति जोगी सोई, भवन के भीतरे काट फंदा।  
 कहे 'दरिया' दरियाव के पार यह, तेजि भव भर्म सभ बिघ्न कंदा।

(५१)

राम की बात सभ लखन आपे जाना, लखन की बात कहु किन्ह पाई।  
 भामिनि भवन में आपहिं आय के, कियो मति हिन सब ज्ञान खाई।  
 माया का मृग यह कृति आपे किया, कोप के राम तेहि संग धाई।  
 निकट अब दूर फेरि जात आसमान में, भया आलोप नहीं कहा जाई।  
 सीता के हिये संशय अति व्यापिया, करत विषाद बहु कठिन भाई।  
 बिकल बोले बैन नयन रोदन करे, लखन के बात लघु कहाँ जाई।  
 सत सुकृत का खैंचि रेखा जमि, सिया के सौंपि चलु माँथ नाई।  
 दस बंध अंध तहाँ आय खड़ा हुआ, सिया बुद्धि छलि अकलंक पाई।  
 कोह औ काफ जहाँ शिला घड़ी घना, मृगवन मारि के तहाँ आई।  
 कहे 'दरिया' सत आदि औ अन्त है, संत विवेक करु समुझ भाई।

(५२)

कहो गुरु ज्ञान यह संत जन समुझिया, सदैँ गुरु ज्ञान जेहिं प्रेम राता।  
 पारब्रह्म परमात्मा दया सनीप है, सर्व सुख तहाँ नहीं गर्व पाता।  
 आपने दरद ते दया उत्पन्न है, कहे बीत पल नहीं सत्य बाता।  
 वेद बादि कथे आदि जाने नहीं, गर्व अभिमान ते रहत माता।  
 करे यम सासना नरक में बासना, नृप माने नहीं खून खाता।  
 जोर से जीव जिन्ह मार जबह किया, यम के हाँथ में होत पाता।  
 मुँसुक से बाँधिया अहे बदफैल में, फजीर है कुच सभ टूट बे नाता।  
 कहे 'दरिया' यह जीव जहड़े गया, काल सिर खंडिया कौन बाता॥

(५३)

संत की चाल कोई समझि तारिफ करे, संत की चाल कोई संत जाने ।  
 हिन्दु मुसलमान दोय दीन सरहद बना, वेद कितबे प्रपंच ठोने ।  
 वेद कितेब कोरान गीता पढ़े, जीव का दर्द नाहिं कबहिं जाने ।  
 जीव का दर्द फरमान साई किया, सोई दुर्वेस जो कहा माने ।  
 जौर से जीव जो पकड़ि जबह करे, बाँध जबरिल हजूर आने ।  
 करे इन्साफ सज़ाफ कागज हुआ, दोजक के जार में ताहि साने ।  
 पंडित औ मोलना तहाँ कौन बातें करे, परा जरव कष्ट यम दूत ताने ।  
 खून का खून यह वोयला दिये बने, कहें 'दरिया' दिल समुझ आने ।

(५४)

नरक है नरक यह फरक भागा फिरे, सर्व है सार यह संत सेवा ।  
 दया है दया यह धर्म करता रहे, सर्व सरकार का रैयत रेखा ।  
 कौल है कौल बेकौल काहे हुआ, कर्म अच्छा करौ भक्ति भेवा ।  
 राव है राव यह रंक केते कहीं, गये तन त्याग यह तीनों देवा ।  
 नायाब-नायाब नगर के पाइया, अग्र जाने नहिं भंग सेवा ।  
 जुल्म है जुल्म यह जबर सिर ऊपरे, गर्वी के पकड़ के मुरक रेवा ।  
 वार है वार यह पार किमि जायेगा, गहो गुरु ज्ञान नहिं लागु खेवा ।  
 कहे 'दरिया' दर सेऊ बे गाफिला, गर्व के दूर क+ ज्ञान मेवा ।

(५५)

पाप औ पुन्य के खम्ह दोऊ खड़े, मंडो मैदान समशेर पाई ।  
 पुज्य के खम्ह पर चढ़ि चाखा हुआ, पाप के खम्ह शत खण्ड जाई ।  
 टरत टरे नहिं शब्द साँचा बोले, रचा मैदान बीर भूमि पाई ।  
 भर्म सभ काटिया ब्रह्म बाका हुआ, काल कुबुद्धि सभ दूरि जाई ।  
 पवन परिचय लिये गगन गढ़ भीतरे, बैठि मोकाम गहि नाम लाई ।  
 दिवस औ रैनि यह धुंध धोखा मेटा, हद बेहद सभ नजर आई ।  
 सत प्रतक्ष है सिफित कहाँ करे, रहा अदेख सभ देख पाई ।  
 कहे 'दरिया' सत शब्द लागा रहे, कोई संत जन जौहरि भेद पाई ।

(५६)

जानि ले जानि ले सत पहिचान ले, सुरति साँचा बसे दीद दाना ।  
 खोल कपाट यह बाट सहजे मिला, पलक प्रवीन दिव्य दृष्टि ताना ।  
 ऐन के भवन में बैन बोला करे, चैन चंगा हुआ ज्योति घाना ।  
 मणि माथे बरे क्षत्र फिरा करे, जागता जिन्द के देखु ध्याना ।  
 पीर पंजा दिया दस्त दया किया, मस्त माता रहे आप ज्ञाना ।  
 हुआ वे कैद यह और सभ कैद में, झूमता द्वार निशान बाना ।  
 गगन घहराय वीर जिन्द अमान है, जिन्हि यह जगत सभ रचा खाना ।  
 कहे 'दरिया' सर्वज्ञ साफा मिला, कफा के काटि सभ कुफुर हाना ।

(५७)

भेजो जी भजो जी भजो सतनाम के, राव औ रंक क्या क्षत्र धारी ।  
 सत का सारथी दीपक निर्मल बरे, तिमिर होय मंद सभ द्वंद टारी ।  
 दिया सुख साहबि अमल माता रहे, ताहिं बिसारी के गर्व धारी ।  
 वहाँ से कौल करि भर्म कोई, पकड़ि जबरिल जीव बाँध मारी ।  
 यह तनतागिर जागिरी नहिं मुलुक है, जाय हजूर जब वर्क डारी ।  
 दया धर्म नहिं भक्ति कबही किया, गया जीव जान यह जन्म हारी ।  
 जूआ का खेलना कांति का मेलना, जित लिया यम चलु हाँथ झारी ।  
 कहे 'दरिया' यह जीव जहड़े गया, संत नकीब युग-युग पुकारी ।

(५८)

भूलो जनि भूलो जनि भूलो बावरे, राव औ रंक सुनो सत बानी ।  
 मरहुगे मरहुगे जीवन मिथ्या बूझो, समुझ गुरु ज्ञान निज बचन मानी ।  
 दया करु दया दीदार दिल में चाहो, दरस हर घरि दिव्य दृष्टि तानी ।  
 निकट है निकट यह बिकट काहे परा, घाट सुघाट पर खोल ज्ञानी ।  
 दर्द है दर्द बेदर्द सो काल है, कर्म कागा करे भर्म ठानी ।  
 संत है संत यह सुरति साँचा बसे, हंस के बंस गुरु ज्ञान जानी ।  
 एक रस एक प्रेम पिवता रहे, नेम दूरि करु अटल ज्ञानी ।  
 कहे 'दरिया' दल कमल प्रगास भौ, भँवर रस माँतिया घ्रानि सानी ।



(५६)

सुनबे मुँढ़ अगुढ बातें कर, उठो है काल तेहिं काट डारे।  
 गर्व गुमान अभिमान माता फिरे, रहत कुबुद्धि जीव जान मारे।  
 सिक्किल साँई किया सर्व सुख योग में, भोग के बीच यह जगत हारे।  
 प्रीति करु संत से सुखी हो अंत के, दुःख दागा नहिं कर्म कारे।  
 जन्म तो दुलर्भ है फूल ज्यों कमल का, जल के सूखते अग्नि बारे।  
 भँवर भर्मित फिरे कमल बिनु ठवर नहिं, ठगो जीव जान कहु कौन तारे।  
 कर्म जैसा किया काम पूरा नहिं, धूरिया धाम भयो तन सारे।  
 कहे 'दरिया' दिल दरस नहिं साणु का, सदा बिकार रहु कष्ट कारे।

(६०)

सुनो जी सुनो जी पंडिता, सुन लिजै यह सत बानी।  
 दरस हर घरी है परस करु प्रेम में, भर्म के तेजि तुम डिम्भ ज्ञानी।  
 पत्थर तो पूजता सुझता कम है, जागता देव बिनु होत हानी।  
 जीव का हतन अपराध का मूल है, शूल सागर परा नरक खानी।  
 वेद यह देख के भेद गीता कहे, आत्मा भक्ष है अन्न पानी।  
 ब्रह्म सभ एक है टेक टंडस करे, आपे गाफिली दूरि जानी।  
 दया दीपक बरे बिनु बाती जरे, हरे सभ पाप सुन मुंढ़ प्राणी।  
 कहे 'दरिया' यह दया बिनु मुक्ति नहिं, युक्ति जाने नहिं विषय सानी।

(६१)

कहे कवि जोर यह भोर बातें भई, रोर ज्यों सोर करि जंगल बासी।  
 बीच के बात में चित सभको रता, प्रीति करि विषय यम डारु फाँसी।  
 चिन्हें नहिं गीत रसरि भई, जीव यम जीति यह वेद काशी।  
 पत्थर परमेश्वर ईश्वर जल के कहे, तीसरे तीन गुण ताहि नाँसी।  
 जाहुगे कहाँ तुम कवन सो घाट है, बाट सूझे नहिं झूठ आसी।  
 भर्म सागर जता काल कर्ता रचा, हतो जीव जानि नहिं अरमर बासी।  
 मलहुगे हाथ फेरि कठिन यम साथ में, नाक धरि नाथिया करत हाँसी।  
 कहे 'दरिया' दिल जिन्द अमान, करार कमान कस ज्ञान गाँसी।

(६२)

आदिहिं एक औ अन्त फेरि एक है, मूल ते फूटि तीन डार किन्हा।  
पाँच यह तत्व पच्चीस प्रकृति है, तीन गुण बाँधि कल बुन्द दिन्हा।  
थिति चिन्हें नहिं पत्थर पुजता फिरे, कर्म अनेक करि नरक लिन्हा।  
ब्रह्म सब एक है धर्म विवरन करो, ज्ञान गीता पढ़े समझ भिन्हा।  
आपने दर्द सो अवर का दर्द है, आपने प्यास पर प्यास चिन्हा।  
त्रय विद्या आँख फुट फारिक हुआ, मर्कट की मुट्ठी जीव जानि दिन्हा।  
ज्यों बक का ध्यान मन मैल तन उज्वला, जल में पैठ के मच्छ लिन्हा।  
कहे 'दरिया' पढ़ा वेद जो विहित करि, भर्म की भीत नहिं नाम चिन्हा।

(६३)

जगत है जगत यह जीव जड़ि गया, पत्थर की नाव चढ़ि बुड़े केते।  
भेष है भेष यह भर्म टाटी, किया, लगी टक की जग माया जेते।  
खेत है खेत यह बीज केते बोया, परा सम हाँथ में डंड देते।  
झूठ है झूठ यह साँच तीता लगे, प्रीति करि माया यम जूआ जीते।  
जाहुगे-जाहुगे जहाँ यम खानि है, जन्म केते बीते वायेल देते।  
नरक है नरक यह निरखि आवे नहिं, परखु गुरु ज्ञान निजु मुक्ति हेते।  
पाँच है पाँच पचीस के महल है, टहल कहाँ करे खबर देते।  
कहे 'दरिया' दर धक्का बुते परा, हरे बुद्धि ज्ञान यम साँट लेते।

(६४)

बाना तो काल का फना आपे बना, घना तेहिं पंथ में मीच देते।  
ताल मृदंग यह झाल के झाइयाँ, नट के नाँच सभ दान लेते।  
नूर जहूर यह सूरति दिसे नहीं, नयन का हिन है कृमि केते।  
विविध तरंग यह मन का रंग है, बसे तेहि संग में धोखा देते।  
साधु चिन्हे नहिं स्वाद बहुत करे, काया के साधते जन्म एते।  
बैल कहँ नाथिया खेत के साधिया, बाँधिया पाँव के पाप लेते।  
कीट फतिंग यह जीव सभ दहतु है, वोयल किदये बने जन्म केते।  
कहे 'दरिया' यह उलटि के, कपट सब काट ज्यों बीज खेते।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(६५)				
सतनाम	अजब अचरज यह जगत का खेल है, कर्म कथा कहे भाबिया भावनां	सतनाम	कलम कर गहे कोई भवन के भीतर, गर्भ के बास में कौल करि आवना।	सतनाम	यंह बद फैल में कम्प करता हुआ, माया मद माँति के मुँह का बावना।	सतनाम
सतनाम	दरब दावा छुटा बाज गयंद यह, मंद होय जग से काल का दावना।	सतनाम	संत निन्दा किया हिया में दर्द नाहिं, दया के निपुन नहिं ठवर कहाँ पावना।	सतनाम	विनसि बिछोह यह राये रंदा गया, नरक के निकट है बिकट भयावना।	सतनाम
सतनाम	कल्पत केते फिरे चरण भौ चारिया, काह कुल कर्म है भर्म सो धावना।	सतनाम	कहे 'दरिया' जग जात बिगोय यह, खून खाता हुआ राव ज्यों रावना।	सतनाम	(६६)	सतनाम
सतनाम	बंदा आया बंदगी को गन्दा हुआ जाता है।	सतनाम	धृग तेरी जिन्दगी क्यों रिंदगी में परा है॥	सतनाम	आखिर तो कौल किया दुनिया बीच पैदा लिया।	सतनाम
सतनाम	दिया सुखा साहब तिसे क्यों बिसारा है॥	सतनाम	मरकब महजूद यह जूबाँ तुझे दिया।	सतनाम	किया नहिं बंदगी पीछे क्यों टरा है॥	सतनाम
सतनाम	मगज मद भूला है धोड़े चढ़ि फूला है।	सतनाम	जंगल को जरा दिया केते जीव मारा है॥	सतनाम	हुआ बेदर्द तुम गर्द का काम किया।	सतनाम
सतनाम	फिरते फिराक हुआ औरत से न हारार है॥	सतनाम	तूझे मोम नहिं मेहर नहिं जो हद जिन्दगानी।	सतनाम	तुम दोजक का काम किया हिये तेरो कारा है॥	सतनाम
सतनाम	पकरि जबरिल जब बाँधि बँधुआ करे।	सतनाम	लिया जीव छीन के जान जीव जारा है॥	सतनाम	कहे 'दरिया' परा ऐब के भवन में।	सतनाम
सतनाम	एकब का काम किया संत से न डरा है॥	सतनाम	(६७)	सतनाम	झूमता द्वार गज बाज सभर साज है, राज दरबार दर फौज भारी।	सतनाम
सतनाम		211				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम





दर्द बूझे नाहिं ज्ञान सूझे नहीं, दया दीदार नहिं गर्व धारी।  
करे खून जानि जीव बहिस्ति कैसे मिले, खून का खून सिर जबर भारी।  
ज्ञान गीता पढ़े अर्थ बंका बोले, खैच कर तेग ;वंकद्ध जीव जानि हारी।  
भर्म पर्वत खड़ा कहा माने नहीं, करे बकवाद जीव जानि हारी।  
कहे 'दरिया' दिल जो हद करु बंदगी, अलख निसान नाहिं दृष्टि टारी।

(98)

खाक है खाक यह पाक पैदा किया दिया मुँख साहब किमि बिसारा ।  
 फिकिर है फिकिर यह जिकिर जाहिर करो, सेवा दर जानि सोई दरस यारा ।  
 हुकुम है हुकुम यह हक पहचानिए, सिप्ति साफा करो जो हद सारा ।  
 तागीर-तागीर जागिरि नहीं मुल्क है, वर्क देखा गया हरफ न्यारा ।  
 इन्साफ-इन्साफ यह साफ कागज हुआ, कौल राखा नहिं दोजक जारा ।  
 जबर है जबर जबरिल जब आइया, गर्वि के पकड़ के मुसुक डारा ।  
 बदी है बदी बदफैल बहुते किया, नेकी नकीब सोई वहिश्त प्यारा ।  
 कहे 'दरिया' दुर्वेस दिल दरद है, मर्द सो पाक परवर दिगारा ।

(94)

खाक है वाव यह अब आतिस लिया, कदम औ दस्त सिर जुबाँ दिया ।  
अजब गुलसीन सरपोस साफा किया, गुमर गाफिला है अमल पिया ।  
चलो सिताबी हिसाब किताब है, नेकी औ बदी दोय फर्ज दिया ।  
खून का खून यह वोयल सिर ऊपरे, दरद जाने नहिं जबर लिया ।  
भया गुनहगार यह जेता सिर बार है, सिफ्त करता नहिं जुबा सिया ।  
गनी गरीब यह मीर जो पीर होय, दस्त को कैद करि अरज किया ।  
खुशी खुदाय का हुकुँम सिर ऊपरे, छरी बरदार ने अदब लियां  
कहे 'दरिया' दर सेऊ बे गाफिला, अलिफ अल्लाह ने बहिश्त दिया ।

(၆၆)

जिकिर करु जिकिर करु जिकिर करु जियरा, जिक्र करु धनी का जूबाँ सानी ।  
मनि है मनि मुरदार के दूर करु, सोई दुर्वेस दरगाह जानी ।  
पंज है पंज यह पीर पंजा दिया, पंज निमाज करु जार कानी ।  
दम है दम दीदार में दरस है, अर्स प्याला पीवे मेहर बानी ।

नूर है नूर यह फूल झलकत रहे, गुल गुलाब झरी अमि बानी।  
बहिश्त है बहिश्त खुसबोय खासा मिला, बास सुबास दिल ऐन आनी।  
बेवाहा-बेवाहा यह बहा जाका नहिं, किमति कहाँ करे सिफ्त जानी।  
कहे 'दरिया' दुर्वेस कोई इश्कदा, महल माशूक महबूब जानी।

(७७)

जिक्र करु जिक्र करु जिक्र करु जियरा, जिक्र करु धनि का जुबाँ तेरा।  
ऊजू को साफ करु दिल दरियाव में, पीर पंजा पकड़ आव प्यारा।  
अलिफ निशान यह पलक देखा करे, मूल के ख्याल में काम तेरा।  
मस्जिद मोकाम करु दंम दीदार में, छोड़ दे गाफिला मणि फेरा।  
कोरान के फहम में समुझ दुर्वेसरा, बहुरि नहिं दोजक में करत फेरा।  
बहिश्त तुझको मिले सिफ्त करता रहे, कर्म अल्लाह रहिमान यारा।  
फहम में फहम यह फकर फारिक है, ऐन मैदान बिच किया डेरा।  
कहे 'दरिया' तहाँ बेइली चमेली है, जगमग झलक है ज्योति सारा।

(७८)

धनी है धनी है धनी है सोई, जिन्हि पिन्ड औ प्रान यह दीदम किन्हा।  
पाक वोय पाक है अल्लाह सिर ऊपरे, दूजा है कौन जाहि दिल दिन्हा।  
जिक्र हनोज करु रोज राजी रहे, आप तुम साफ होय राह चिन्हा।  
पढ़ि कोरान दुर्वेस तुम समझु ले, हुकुंम नहिं दीन का खून किन्हा।  
हुकुंम फरमान यह रूह पर मेहर कर, आपने खुद होय जबह किन्हा।  
जीव औ जान सभ मारि वजम किया, दया नहिं दर्द सिर पाप लिन्हा।  
पकड़ि जबरिल जब हुकुंम हाजिर किया, कठिन की जार सिर बोझ दिन्हा।  
कहे 'दरिया' दुर्वेस तुम समुझ ले, दीन का छरी यह अदब दिन्हा॥

(७९)

वोय पाक है पाक आपे बना, खलक सभ पलक में नजर आना।  
नूर जहूर जमाल जाको कही, कोई दुर्वेस दर बहिश्त जाना।  
हरदम दाना फेरे दम दीदार में, दरस हर घरी है प्रेम साना।  
चर्ब दिल सिफ्त है हफ्त में जायेगा, खून खराब करि दिजै माना।  
सारा तो शराब नहिं प्याला है प्रेम का, अलिफ अल्लाह नूर नबी जाना।





सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				
सतनाम	सोई संत है साँ जो काल से बाँचिहैं, काल मन मंद सत शब्द पाई। कहे 'दरिया' वोय को आपुहिं आप है, आप तुम साँच होय साँच पाई॥ (८३)	सतनाम	तीर्थ औ व्रत से पाप जावे नहिं, दूर धोखा करे कर्म बंधा। भक्ति से चुकिया भवन में भुंकिया, ज्ञान ते हुँकिया नयन अंधा। लटक गादूर हुआ पटका यम मारिया, चरण भवो चारिया चरख नँधा। उलटि औ पलटि यह कल्पि कर काटिया, बाँधिया भवन में वोयल संधा। नाहर नंगा हुआ जंगल में भागिया, आग लगाय के जार खंधा। तबहुँ नहिं बाँचिया कर्म ते नाँचिया, खैंच कर बान भरि ताहि रंधा। मरकट मुट्ठी हुआ कर्म काला करे, लोभ में डारिया सोई बंधा। कहे 'दरिया' यह लाख चौरासिया, फाँसिया काल ने प्रान कंधा। (८४)	सतनाम	पलक दरिया एक पलक में सब किया, स्वर्ग पताल मृत्यु लोक सारा। यह जिमि आसमान है पवन पानी, तहाँ रैनि दिन सुर शशि मगन तारा। जिन्हिं एक जल बुँद से पिन्ड में प्राण दे, अजब किछु किया गति किया न्यारा। 'दरिया' कहें धीर धर मेटि हैं, पीर एक पलक में पाक परवर दिगारा। (८५)	सतनाम	यह महा भव सिंधु है घोर तृछन बहे, कौन सो नाव तरनी तराई। कौन पतवार केहि बरन कनिहार है, हंस कहु कवन विधि पार जाई। कहु शब्द का रूप स्वरूप विचार, कहु शब्द का भाव समुझाव भाई। शब्द कमा सीस कहु कौन है शब्द का, पाव है कौन परिचय बताई। कौन सो द्वार जहाँ प्रेम डोरी लगी, कहाँ उजियार का नजर आई। कै जोजन प्रमान कहिं दिशा है धाम, जहाँ हीरा मणि खानि सभ रतन छाई। कहु कहाँ अनहद बाजे पुरुष कहाँ राजहीं, मगन हंसा कहाँ मधुर ताई। कहे 'दरिया' केहि पंथ चलि जाइये, कहाँ निजु पार ब्रह्म दरस पाई॥ (८६)	सतनाम	भव सिन्धु औगाह नहिं थाह कोऊ पाव, सत शब्द की नाव तरनी तराई। जो शब्द है सार समतूल पतवार, स्वेत वरण कनिहरि खेई पार लाई।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				

217

## सतनाम

# सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सप्तनाम

## सप्तनाम

## सतनाम

## सतनाम

## संदर्भ

## संदर्भ

## संदर्भ

## शरीरगाम

## संदर्भ

## संदर्भ

## संदर्भ

## सत्यनाम

## संदर्भ

## सत्यगाथ

यह शब्द का रूप यह स्वेत जाने कोई, शब्द का भाव है ज्ञान भाई।  
निःशब्द है शब्द का सीस सौ जानिए, शब्द का शब्द पगु सौ बताई।  
बार-२ सम द्वार गहि मकर को तार, तहाँ झलक झनकार सभ नजर आई।  
अष्ट योजना प्रमान है अर्ध सौ दाहिने, धाम जगमग मणि रतन छाई।  
अनहद गगन बाजहिं पुरुष तहाँ राजहीं, हंस जन गाज ही मधुर ताई।  
कहे 'दरिया' दर झीन झाकत रहे, तहाँ निजु पारब्रह्म दरस पाई।

$$(\tau_9)$$

मर्दूद-मर्दूद मरदान नहिं मर्द है, ग्रद में जायेगा गर्व तेरा।  
 रिंदगी-रिंदगी बंदगी तेजि के, गिंदगी परेगा प्रान जेरा।  
 सांच में आंच नहिं काँच बोला करै, हरैगा बुद्धि यम करे चेरा।  
 कष्ट है कष्ट इह नष्ट जीव जायेगा, अजहुँ चित सुनु काहा मेरा।  
 मेहर है मेहर इह कहर के दूर करु, जीव औ जान अल्लाह केरा।  
 दर्द है दर्द इह दाया दिल में धरो, मरे फिरि होयेगा खाक ढेरा।  
 दोजक है दोजक इह जार बहुते परे, भिस्ती खुस पास है पहुँच डेरा।  
 कहे 'दरिया' दरियाव गरकाब है, पवन का फेरना ही दृष्टि हेरा।

## झूलनाप चौपदी

(9)

कोई झूलना झूलते झूलि गया, कोई झूलता है अझूल वोई।  
 त्रिबुण नदी त्रिविधि धारा, यह देह धरे नहिं वाँचु कोई।  
 नन्द के लाल यह बाल सखा सब, मोह के फन्द में द्वन्द होई।  
 कहे 'दरिया' दर सेइये जी, परवर दिगार बेवाक सोई॥

(2)

कहीं राम रहीम करीम कहे, कहीं पाक नमाज कुरान पढ़ा।  
कहीं बेदुआ वेद बहु वाय बके, कहीं बाँह उठाय के आपु ठाढ़ा।  
कहीं बाँधिया लोह जबर कछोट, तीर्थ में जाय के राड़ बाढ़ा।  
यह झूलना 'दरिया' शाह कहा, सतगुरु बिना यम बाँध गाढ़ा।

$$(3)$$

कहीं हुजरा पैठ हुजत करे, मरकाब गले प्रीसान हुआ।  
कहीं पवन पीये पताल गोफा, गलतान गले में जाए मुआ।

कहीं गुदरी सुदरी टोप दिये, तिलक माला तन साज हुआ।  
एह झूलना 'दरिया' शाह कहा, सतगुरु बिना यम जीति जुआ॥

(४)

कहीं बाँधजटा सिर जट राखे, कहीं मोट गुदरी के सियता है।  
कहीं खाकिया खाक बधंमरी है, कहीं पाँव उलटि के रोवता है।  
कहीं मुद्रा पेन्हिं श्रवण शोभा, कहीं साध पवन के पीवता है।  
एक झूलना 'दरिया' शाह कहा, सतगुरु बिना धृक जीवता है॥

(५)

कहीं देव देवी कहीं भुत पूजै, कहीं जीवत जान के मारता है।  
कहीं सीव सीव व्रत करे, कहीं मांस बनाये मुख भछता है।  
कहीं रंग महल मासुक रंडी, बिरह बेकार में सनता है।  
एह झूलना 'दरिया' शाह कहा, कहर गोता नहीं मारता है॥

(६)

अवधुत भभूत कर्तून सैतान, एक दिल सबूत नहिं जानता है।  
गले बांधि तिलक माला, एह बेनु बजाये बहु मानता है।  
अजुद खोले फीराक फीरे, सारीक सैतान नहिं जानता है।  
कहे 'दरिया' भव भूलि परा, भव बीच बेकार में सानता है॥

(७)

भभूत भरम के दूरि करो, एह ज्ञान के गति में तेजु दागा।  
दिल जानु कंठी कंठम लिया, तेरे काठ कमंडल हाथ लागा।  
एत ततु तिलक सतनाम छापा, करु ज्ञान के गुदरी प्रेम धागा।  
एह झूलना 'दरिया' शाह कहा, सादा संत सोई नीजु नाम पागा॥

(८)

पाँच तनु पचीस प्रकृति, त्रिगुन में ज्ञान के पागत है।  
अनहद बाजा मुरली मगन, गगन की बात नहिं जानत है।  
निर्गुन सर्गुन दुई पंथ रचा, एहि वेद चतुर चित गावत है।  
कहे 'दरिया' सतगुरु बिना, अटल मुक्ति नहिं पावत है॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आशिक महल माशूक मियाँ, हिये साफ किये नहिं पावत रे। दिल चश्मे दाग मेटाये दीजै, जाहिर बात नादआवदा रे। एह यार सोई महरम हुआ, मिला पाक गनी मन आवदा रे। एह झूलना 'दरिया' शाह का, सतगुरु बिना कहाँ जायेगा रे॥ (१०)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	राम का रस तौ राम का नाम, जहिर बात ना प्रगट है रे। धुप प्रह्लाद मीरा माँती, सभ घट सुघट है रे। नामा कामा सेनी माँते, अरध लागा अलगट है रे। कहे 'दरिया' दिल देखि दीदार, अवर अमल कपट है रे। (११)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	प्रेम पीवे सो मस्त फकीर, रब गनी का यार है रे। मन मोताहल भांग भरत, रगरि झाझा तैयार है रे। दिल सफा एह चीत रे छनिये, प्रेम पलक में ढारिये रे। कहे 'दरिया' ऐसो झूलना सुनी, अवर अमल के वारिये रे॥ (१२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हाका हाका फकर फकर, जाहिर बात ना जीकिरी है रे। धाका धाका गर्व जब्बर, फीटिक कुंटन तुम दूर है रे। कदम दर्वेसा रद वला, काफा कुफुर सभ चुर है रे। कहे 'दरिया' वोलि मस्त मैदान, रिमि झिम का मोतिया नूर है रे॥ (१३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	खु पाक अल्लाह को याद करो, दुनियाँ फना सब जावंदा है। रोशन जमीर है ज्योति का नूर, भरि पूर हुआ सो पावंदा है। लक लक जुबान कतल करे, फकर हुआ सेवंदा है। कहे 'दरिया' दरियाव के बीच, ताहाँ लाल मोती झरी आवंदा है॥ (१४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तोबाफततवीर है दिल का बीच, कुदरत महजिद बनाये दीता है। दोये लाल जो बीच अजब लागे, जहाँ मोती का नूर प्रगट कीता।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	220	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नव गुन बिचारि नव नाटिका है, संझा तरपन दरस कीजै। अजपा जपे जिभ्या बिना, एह मूल परगास परस लीजै। ब्रह्म आप हुआ भरम क्यों भूला, नहिं ज्ञान तुलें जो प्रीति भीजै। कहे 'दरिया' तेजु दूरि धोखा, हरि है हिये नहिं प्रेम छीजै। (२१)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जरबक्स जरकस जरबुंद, दिल जाक दिल जाक रब पावंदा रे। कर्दान कर्दान फरमोस एह कैद करी, गैव काफुल झरि आवंदा रे। कादिर कादिर एह नाजीर नाजीर, हाजिर हजुर इशिक भावंदा रे। कहे 'दरिया' चाहु ग्रीद गरकाव, कोई इशिक दरवेश दर जावंदा रे॥ (२२)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	इस झूलने में दिल झुलदा रे, जाहां गुलरंगी लदा पावंदा रे। इस गुल का फूल तुलंदा रे, जाहां चम्पकली झरी आवंदा रे। आशिक दीदार दरस देखंदा रे, एह प्रेम कली चीत सोहंदा रे। कहे 'दरिया' दल कमल फूले, अलि आए जो बास लोभावंदा रे॥ (२३)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	झक झक लगा झक झक लगा, एह झारि झरोखे झांकिया रे। झरि झरि परा झरि झरि परा, एह लगु गुलाब की आँखिया रे। पिया प्रेम चाखे पिया प्रेम चाखे, लजीत भली दिल राखिया रे। दर सेइये रे दर सेइये री दरगाह भला, 'दरिया' कहे सत साखिया रे। (२४)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मस्तान भला मस्तान भला, महबूब मिया दिल जान्दा रे। झोके झोक लगा झोक झोक लगा, एह लव लगन में सानदा रे। आशिक हुआ आशिक हुआ, देखि दर्स सो सानदा रे। दरिया कहे लहरि घनी, देखि तहकीक आमन्दा रे॥ (२५)	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	लागी लागी लगन ललना, सबुर सफा जहुर है रे। माशुक माशुक माशुक वोये, दरश दीदार जहुर है रे।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	222	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

पिया प्रेम चाखे पिया प्रेम चाखे, लजीतो वोइल कलक जुबा सभ दूरी है रे।  
कहे 'दरिया' दम दम लगा, जाहां दम लगा भरपुर है रे।

(२६)

झक झक लगा झक झक लगा, राम रहीम का नूर बरिसावन्दा है।  
दस्तगीर जो पीर रहम किया, फहम की बात कहन्दा है।  
चिराक रोशन महल हुआ, फूल गुल घनेरे आवन्दा है।  
कहे 'दरिया' दरस दीदम, कर सम दिल में भावन्दा है।

(२७)

एक ज्योति का नूर छवि छाया, चौदह तबक गुलजार हुआ।  
खाक अव बाब एह आब आतस, बीच बोलता एक अजब सुआ।  
जाहिर बातु ना जिकिरि फिकिरि, हिरिस हवाह सभ दूरी मुआ।  
कहे 'दरिया' परवर दिगार, हाका हरदम फकर दुआ।

(२८)

घट घट में बोलता डोलता है, इस बोलते को पहचान्दा रे।  
हिन्दु नहीं मुसलमीन नहीं, काफिर नहीं कोई जान्दा रे।  
आया कहाँ जायेगा कहाँ, सैल सिकिल में सान्दा रे।  
'दरियाव' में दिल तहकीक करो, हम तुम नहीं आमानदा रे॥

(२९)

आया काहां जायेगा काहां, तहकीक तारीक के कीजिये रे।  
नेकी बदी दोये दर खड़े, कदम समुझ के दीजिये रे।  
दलक पेखो खलक देखो, पलक में प्रेम के दीजिये रे।  
कहे 'दरिया' बहर कहर, दोजक बीच का भीजिये रे।

(३०)

दुई सुर चले एक भाव से, नाभी से उलटि के आवता है।  
बीच इंगल पिंगल तीनि नारी सुखमान, मान से भाव बतावता है।  
उगम करौ पूरो भरो, रंज कली ए झरि लावता है।  
एह झूलना 'दरिया' साह कहा, कोई जोग जुगुति से पावन्दा है।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		(३१)				
सतनाम	कोई राखि जटा सिर जट धरो, कोई ओढ़ि बाघम्बर हो लंगा ।					सतनाम
	कोई गुदरी छाप तिलक दिए, गले कंठ कंठी भुज डंड दागा ।					
सतनाम	कोई कान फारे चुहुं ओर फीरे, परेशान बिरहबियोग पागा ।					सतनाम
	एह झूलना 'दरिया' साह काहा, वै डंड फिरे मन भुत लागा ।					
	(३२)					
सतनाम	प्रेम धागा एह टूटता नाहीं, गले टूट कंठी फेरि बांधना का ।					सतनाम
	एह ततु सतनाम छापा करु, अवर विविध है देखना क्या ।					
सतनाम	ज्ञान का डंड नहिं डगमग कर डंड लिये कहु मारना का ।					सतनाम
	एक झूलना 'दरिया' शाह कहा, सतनाम सही बहु पेखना का ॥					
	(३३)					
सतनाम	कहीं बांधि जटा सिर जट रखे, कहीं मोट गुदर को सीवता है ।					सतनाम
	कहीं खाकिया खाक बघम्बरी है, कहीं आपु उलटि के रीवता है ।					
सतनाम	कहीं मुन्द्र पेन्हि श्रवन सोभा, कहीं साधि पवन के पीवता है ।					सतनाम
	इह झूलना 'दरिया' शाह कहा, सतगुरु बिना धृग जीवता है ॥					
	मन शरह					
	(१)					
सतनाम	एहि विधि मन नहिं किन्ह बिचारा ।					सतनाम
	भागवत मथि के बीता किन्हा, गीता मथि के सारा ॥					
सतनाम	मार कहे सो मरम न जाने, सब मिलि मारन लागे ।					सतनाम
	चले शिकारी सावज मारे, गृहि तेजि सब मिलि भागे ॥					
सतनाम	काम क्रोध यह मोह मन्दिर में, लघु दृघ दोनों भाई ।					सतनाम
	क्रोध ज्ञान खरग जब खिंचा, काम कन्दला जाई ॥					
सतनाम	क्रोध कमान दिल करि बैटे, कन्द्रप कामिनि राता ।					सतनाम
	क्षोभ मोह अति प्रेमहिं पागिसि, सोखीसि सागर साता ॥					
सतनाम	चारि अवस्था तीन गुन है, सुषमनि साँपनि पासा ।					सतनाम
	एक साँपनि दुजे पंख लगावे, उड़ि उड़ि सपने ग्रासा ।					
सतनाम	मन गयन्द ज्ञान करि आकुंश, उलटि बाँधु तेहिं जाई ।					सतनाम
	कहे 'दरिया' जब शब्द साँगि गहु, टूक टूक होय जाई ।					
	224					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



(२)

यह मन निपट कठिन कराल ।

देखि सुरति हित लागेव, सुझत नहिं यम जाल ॥

तेजि कंज कुमुन्द दल, यह भर्मित विषय साल ।

सुखद सम्पति दुःख को सागर, बहत यम के जाल ॥

ज्यों कीर ललचेव लाल फूल पर, उड़ेव तूल तमाल ।

आयो तावरि तलफि तन यह, ठहकि ठोकेव भाल ॥

मृग माते दृग न सुझत, सर्वस लिये काल ।

एहु जड़ जन जात जग में, ममिता बैन विशाल ॥

मरकट मुठि गाँठि लायो, हठेव आपनि हाल ।

निकट ब्याधा पकड़ि पटकेव, बाँधि अपने द्वाल ॥

तेजि अमृत विषै चाहत, जतन जानत माल ।

कहे 'दरिया' दयाहीन, निकट पोसेव ब्याल ।

(३)

मन तुम कहाँ कहाँ ले जइहो ।

एक पलक नहिं थीर रहन दे, अमृत तेजि विष खइहों ॥

यह मन कौन-कौन अरुझाने, शिव सनकादिक ब्रह्मा ।

अहे विदेह देह मन खेले, जानि करावे कर्मा ॥

जीव भव मीन धीमर को फन्दा, सरिता सब बढ़ि आयो ।

अगम अथाह थाह नहिं पायो, सीस पटकि पछतायो ॥

ओपे बड़ा छोटा है आपे, गुरु शिष्य मिलि गुन गयो ।

योगी रेख रुप के कर्ता, सो सबके दिल आयो ॥

यौगी ति तपे सन्यासी, अपी बुद्धि की बातें ।

अविगति की कोई मर्म न जाने, या गति में सब राते ॥

सतगुरु को गुन सदा प्रकट है, घट में ज्ञान लखावे ।

कहे 'दरिया' तब राज अमर पद, बहुरि न भव जल आवे ॥

(४)

यह मल देखु शब्द बिचारी ।

ज्ञान सतगुरु मान ले तुम, भर्म भव की डारी॥

निगम बोलत ब्रह्म व्यापंक, दोसरो नहिं लागि॥

पढ़ि वेद विमल ज्ञान गीता, मीन माँस न त्यागी॥

षट्कर्म करि सब भर्म भाजत, आत्मा करिघात॥

बलि देत जीव यह धर्म, कैसा पुन्य को उत्पात॥

एक पगु कर जोरि ठाढ़े, रक्षा करु घर बार॥

निकट फन्दा चिन्हत नाहिं, परत यम के धार॥

बूबर बोवे जमी जानि के, ऐसो कांट के यह शाल॥

कहवाँ पगु देहुगे तुम, यम शासना बड़ी हाल॥

पत्थर नौका चढ़न चाहे, महा भवजल माँह॥

गुरु शिष्य दोऊ बहुत देखेव, कौन पकड़ेवारे वाँह॥

तेजि अमृत विष भाजन, जानि खायो मीच॥

कहे 'दरिया' दर्द बिना, परे भव के बीच॥

(५)

यह मन कर्म कर्ता साथ॥

उड़ी गुड़डी गगन के बीच घैचु डोरी हाथ॥

राहु केतु यह भ्रमित भामिनि, जाई गोसेयो चन्द॥

तीन लोक में उदित आगर, ताहि किन्हों मन्द॥

राम जन्में अवधपुर में, आनन्द मंगल मूल॥

रंग भूमि में धनुष तोरेया, भामिनि समतूल॥

वाशिष्ठ मुनि पढ़ि वेद विमल, सोधि लग्न बिचारी॥

भामिनि गति जानत नाहिं, प्रवल बिपति डारी॥

पंडो के सुत महा योधा, भामिनि बसि परे॥

गले जाय हिमालय के बीच, कल्पि आपुहिं मरे॥

रावना घर घात किन्हो, कंस की भई हानि॥

महा गर्वी गर्द मिले, दृष्टान्त यह जग जानि॥

तीन लोक में रहट लागे, बुड़त आवत जात॥

धूप छह कहू केहू न व्याप्यो, जुड़ शीतल तात॥

धरनी ऊपरी वपु धरि धरि, केहि न दिन्हो दाग।

कहे 'दरिया' चली चक्की, बाचु खुटा लागा।

(६)

आदि अन्त मन अझुरन अझूरा, नव मन सूत कबहिं नहिं संझूरा।

पहिले अरुझे बिरंचि विधाता, जिन्ह यह वेद कथे बड़ ज्ञाता।

अरुझे पुनि ब्रह्मा को जाया, कर्म कान्ड सभ जग फैलाया।

अरुझे कृष्ण विष्णु देखि शोभा, सहस्त्र गोपिन से चित लोभा।

अरुझे शिव सिद्ध बड़ योगी, संग भवानी से रस भोगी।

अरुझे कवि सब कहि कहि गाई, झिनि जाल मन निकल न जाई।

सतगुरु ज्ञान गमि जो बूझे, कहे 'दरिया' गति अविगति सूझे॥

(७)

साधो मन खेले यम जूआ।

सुन नर मुनि के सभे नचाइसि, आप कबहिं नहिं मूआ॥

जल में मन है थल में मन है, उड़िगन गगन अकाशा।

सभ में फिरे मर्म नहिं जाने, एहि विधि करे तमाशा॥

योगी मन है भोगी मन है, मन कहिये नव नाथा।

गोरख दत्त भरथरी योगी, मन कहिये नव नाथा॥

सुकदेव मन है मनहिं मनोरथ, मन वशिष्ठ प्रधाना।

उन्हके तन मन मगन भयो है, ताते जग अरुझाना॥

जयदेव मन मन जनक विराजे, सो मन व्यास बखाना।

परासर ऋषि मन माधो मधुकर, घ्रानि सभे लपटाना॥

देवल मन है देवी मन है, तीर्थ जहां तक पूजा।

करामाति मन करे करिश्मा, मन करता है दूजा॥

सनकादिक ब्रह्मादिक कहिये, मन गणेश गुरु ज्ञाना।

गौरी गणपति फणपति कहिये, इन्ह नहिं मन पहिचाना॥

हरि भक्तन हरि भक्ति विचारा, सो मन पद लवलाना।

कहें 'दरिया' जन मिले, जौहरी, कोटिन में कोई बीना॥

(८)

साधो यह मन रहा पुरुष के पासा ।

इन्ह सभ लीला रचेव जगम में, किया शक्ति संग बासा ॥

अष्ट भुंजी यह सृष्टि आदिहिं, जाके कहे भवानी ।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भयऊ, व गति काहु न जानी ॥

कासो माता-पिता कहू कासो, जिन्हिं जनमायो जाया ।

कहत सुनत नहिं बनि आवे, जब निरखे तब माया ॥

पहिले मूल डारि तब भयऊ, साखा पत्र घन छाया ।

जीव से जीव वृन्द बहु भयऊ, छकित हुआ सब माया ॥

दस अवतार यह मन का लीला, बहु प्रपंच बनाया ।

धोखा देई जीव सब राखा, ममिता अंदल चलाया ॥

वाये कर्ता नहिं बाम काम ते, यह कृतम की बाजी ।

ऐसा द्वंद फंद सब डारेव, बुझत पंडित काजी ॥

नरसिंह आपु हिरणाकुश आपे, आपन ओद्र बिदारा ।

कहे 'दरिया' यह चरित्र अगम है, बूझे निा विकारा ॥

(९)

साधो यह मन के निरुवारी ।

सनकादिक ब्रह्मादिक नारद, कहम भया युग चारी ॥

दस अवतार लीला यह कहिए, चरित्र रचा चित्रकारी ।

बाल वृद्ध औ तरुण स्वरूपी, देह विदेह मुरारी ॥

बावन रूप होय बलि हिं नचायो, यह माया विस्तारी ।

बाजी साँच बाजीगर झूठा, नट होय नाँच पसारी ॥

फिरे फिरंग फहम नहिं आवे, एक अनन्त होय डारी ।

ज्यों पेखना पुतरी कल घैचं, मची रहे नर नारी ॥

सुर नर मुनी गन पीर औलिया, योगी यती सब झारी ।

ऋग युग साम अथखन थाके, शेष सहस्त्र फड़ि धारी ॥

पंडित पढ़ि-पढ़ि अर्थ विचार हिं, खग मीन पंथ दुओ भारी ।

अगम अथाह थाह किमि पावे, 'दरिया' कहा पुकारी ॥

(१०)

साधो राम मुवा की जीआ।

राम मुवा ता निश्चय बाँचे, नहिं तो खेले यम जूआ॥

एक घरिया में अमृत भर के, एक में विष भरि हुआ।

सो विष सर्पे सोंख लिया है, बिल्ली भागि देखि चूआ॥

भक्त कहावहिं भक्ति न जानहिं, खाहिं पान औ गुआ।

झाल मजरिया नेउरी नाचे, आरगि लपेटे रुआ॥

घर में कागा कौतुक करते, गिद्ध पइटे कुँआ।

चारि पाँव के खटिया सिर पर, लोटत फिरे भूआ॥

राम राम कहि जनम गवाया ज्यों सेमर का सूवा।

फरे फूले झरे फेरि फूले, उड़ा भर्म का भूवा॥

आगि लगे तब अंकुर जामे, पदुम प्रगासे हुवा।

कहे 'दरिया' जन मुइ के जिया, दिया सतगुरु दुवा॥

(११)

साधो राम कसल घट बरता।

कर्ता धरता सब कोई जाने, मुस बिल्ली होय लड़ता॥

कहिं गाय कहिं बाघ हुआ है, कहिं घीमर कहिं मीना।

कहिं अजया कहिं चीक हुआ ठै, बूझै सज्जन कोई बीना॥

कहिं भुजंग कहिं मेंढक बना है, सिंह सियारे खेती।

कहिं गोह कहिं भरालू बना है, यह गुण देखो सेती॥

कहिं दाता कहिं भिछुक हुआ है, कहिं पंडित कहिं जढ़ता।

कहिं माया का फूल बागइचा, मारली होय के हेरता॥

कहिं ऊँच कहिं नीच हुआ है, कहिं राव कहिं रंका।

कहिं योग कहिं भोग बना है, तेग गहे कासेई बंका॥

एहि विधि राम सकल घट व्यापक साधुन को मति ऐसा।

कहे 'दरिया' जो जैसा बूझै, ताकि मति भौ तैसा।

(१२)

साधो राम रमें जग ऐसा।

हरि भक्तन मिलि भक्ति विचारा, ऐगुन कहिए कैसा ॥  
 एकेसे अनन्त सकल घट व्यापे, दिव्य दृष्टि में चिन्हा ॥  
 कहे विदेह विवेक बिना यह, जहां तहां जग में बीना ॥

जाकि प्रतिमा सप्त पताले, अव कमलापति पासा ।  
 उड़िगन गगन कहीं सह केता, अव मधुकर मधु आशा ॥  
 राम वेद कितेब कथिया, राम ब्रह्म भव ज्ञाता ।  
 रामे इन्द्री रन्धन जहाँ तक, रामे शितल ताता ॥  
 रामे सोवे राम यह जागे, राम करे घर चोरी ।  
 रामें काम बाम के पासा, राम नरक धरि बोरी ॥  
 रामें चाहे चरख फिरावे, तापर चढ़ि जग नाचा ।  
 कहे 'दरिया' सब नारी राम के, मानु बचन यह साँचा ॥

(१३)

साधो संगहि लँगड़ा लखेन कोई ।  
 ढकचत फिरे डगर के भीतर, एहि विधि सब कह खोई ॥  
 कारो गोरो साँवर सफेदो, नान रंग बनावे ।  
 क्षण में निकट विकट के धावे, सिपट काग बनि आवे ॥  
 कहिं ज्ञानी होय ज्ञान कथत है, कहिं दानी बड़ दाता ।  
 कहिं पंडित होय वेद विचारे, करे जीवन के घाता ॥  
 कहिं सिंह सार्दुल होई पैटे, कहिं चींटी होय बोले ।  
 कहिं गर्व ते गर्जत फिरे, बहु वक्ता होय बोले ॥  
 सब मिलि कहा जो मैं निरुवारा, झीना सूत पुराना ।  
 जोलहा कहे पाई किम करिये, विथरी नहिं सझुराना ॥  
 कहिं काया कापड़ के बीने बिनत भया युग चारी ।  
 करि गह छाड़ि तमाशे धावे, एहि विधि पड़ा बेगारी ॥  
 जो कोई ज्ञानी जौहरी मिले, तो यह पंच उधेरे ।  
 नव मन सूत नगर मह डारे, एक जोरे एक पेरे ॥  
 जहाँ देखो तहाँ रुप राम के, पवन कहीं की पानी ।  
 कहे 'दरिया' दर्पन की सुन्दरि, प्रतिमा सबे बखानी ॥

(१४)

अबरहीं मारे साह मदार।

जबरदस्त के मारे न कोई, तासो डरत है बारम्बार॥

भूखे को अनाज न देवहिं, अन भूखे को भरि भरि थार।

पतिबरता के गजी ना जूरे, वेश्या पेन्हे मलमल सार॥

ऐगुन जानि करे जगमाहीं, जात सो मरि-मरि यम के द्वार।

कहे 'दरिया' तेरो अजब तमासा, भक्ति करे होय गुनहगार॥

(१५)

निरंजन धुन्ध तेरो दरबार।

दुखिया दुःख में सुखिया सुख में, नाहिं विवेक विचार॥

झूठ की कोठी में दाम भरायो, नाम न लेत तोंहार।

संत रमें निसि वासर नाम ले, ताको यह व्यवहार॥

रंग महल में संग सहेली, द्वार खड़े चोपदार।

धुरि धूप में संत बिराजे, काहे को करतार॥

वेश्या पहिने मलमल खासा मोती मणि गृव हार।

पतिव्रता के दुःख देत हो, रूखा सूखा आहार॥

पाखंडी के आदर जग में, साँच न मानु गँवार।

साँच कहे कोई संत सिपाही, जाको जाना पार॥

इतना कष्ट सहे जग माँही, सो तो भक्त तुम्हार।

धन्य साहब सेवक बिराजे, 'दरिया' दिल तत्व सार॥

(१६)

निरंजन अरुझन जाल बनैऊ।

बड़-बड़ मच्छ माँगुर सब बाझे, झिंगा निकलि ना गैऊ॥

मन विदेह देह में खेले, पारख बिरले पयऊ।

ज्यों प्रतिबिम्ब सभनि में, भासे, प्रतिमा को गुण गयऊ॥

शिव समान योगी मुनि ज्ञाता, ज्ञान बिराग सुनैऊ।

मोहनी मगन गगन में आई, उलटत बार न लयेऊ॥

बीस भुजा दस सीस रावणा, ऐसी सीपित लगैऊ।

भै गौ मंद बंध दसकंधर, जग जननी किहाँ गएऊ ॥  
 भेष अलेख सेख सब सेवड़ा, इन्हते किमि बिलगैऊ ॥  
 कुंज गली में पुंज अग्नि का, जरि मरि भस्म उड़ैऊ ॥  
 जो यह शब्द साधुजन बूझै, परिमल की गति अयेऊ ॥  
 कहे 'दरिया' जिन्हिं पीया प्रेम रस, अमि घने घने छयेऊ ॥

(१७)

साधो मन की अझुरन लगी ।

सुर नर मुनि गन गंधप ज्ञाता, ब्रह्मा के घर जागी ॥  
 तपसी तप के साधन लागे, पकड़ि लिहिसि एक तंगी ॥  
 गोफा सोफा में पवन साधे, अंधकूप धरि मँगी ॥  
 पंडित के घर वेद चतुरगुन, चित चंचल तेहिं दगी ॥  
 निसि वासर वोय दर्शन चाहे, भली सुहागिनि संगी ॥  
 करि बैराग माला भल सोभे, मुख रसना में पगी ॥  
 ताल मृदंग मगन मन गावे, लाल रंगीने रंगी ॥  
 राजा के घर बहुत दुलारी, दल साजे डगमगी ॥  
 आसिक वोय माँशुक महल में, लाल हीरा जगमगी ॥  
 झील जाल में लाल मनोहर, सुन्दर गोपिन संगी ॥  
 कहे 'दरिया' नरनी के सुगना, चिन्हे नहीं दया दगी ॥

(१८)

प्रति करि तुमसे को निगहेयो ।

हम तो बुझि बिचारि देखा है, सुख किन्हुन ना कहेयो ॥  
 चकोर प्रीति कियो दधि सुत से, दृष्टि में प्रेम लहेयो ॥  
 वह बिसवे यह ध्यान न छोड़े, दारुन दुःख दहेयो ॥  
 मधुकर प्रीति कियो जल सुत से, पैठत सुपट लियो ॥  
 भँवरी भरमिं आपन पिया खोजत, सोचत रैनि गयो ॥  
 पतंग जो प्रीति कियो दीपक से, जरि मरि खाक भयो ॥  
 ऐसी प्रीति बहि जाय बिधाता, काहे न शीतल भयो ॥  
 मृगा प्रीति कियो धुनि नाँद से, सम्मुख ध्यान कियो ॥



लागे बान खरसे पुहुमी पर, कल्पत प्राण गयो ॥  
राधे प्रीति कियो यदुपति से, कुंज बन काँट सहेयो ॥  
कहे 'दरिया' जब चले त्यागि के, उलटि के कुछ न कहयो ॥

(१६)

तेरो प्रण कहु कैसे निबहेयो ॥  
तेरी गति मति तुमहिं जानेयो, की साधुन भेद कहेयो ॥  
हिरश्चन्द जो प्रण राखेयो, तुमहिं से, सर्वस अग्नि दहेयो ॥  
तिन्हें घेंची नीच घर बेचेयारे, ऐगुन कौन कियो ॥  
करत यज्ञ बैलोचन के सुत, निगम नीति गहेयो ॥  
तिन्हे बाँधि पताल दियो है, कोटिन पुन्य बहेयो ॥  
पंडो के सुत भक्त तिहारो, भारत आपु कियो ॥  
कुल संघारि पाप तेहिं लायो, तेरो कठिन हियो ॥  
लक्ष गाय नृग नित्य दानकरी, तेरो विश्वास रहेयो ॥  
विप्र के श्राप परे अंधकूप में, उर्ध मुख शूल सहेयो ॥  
यह दृष्टान्त जानु जग माँही, नर बैकुंठ चहेयो ॥  
कहे 'दरिया' एक मूल नाम बिनु, भर्मित भवन रहेयो ॥

(२०)

यम तोर यहवाँ कवन काम ॥  
जाहु जहवाँ खून खाता, बड़ो ऊँचो धाम ॥  
रोग रोगी वैद्य बैठे, धीव शक्कर खात ॥  
मीन माँस जहाँ विजन करते, तहाँ तेरो बात ॥  
यहाँ श्वेत दसा बिमल बिहरत, नाहिं मैलो मंठ ॥  
तेल फूलेल सुगंध जहवाँ, मोती माला कंठ ॥  
द्रव्य धरते गर्व करते, हरहिं पर त्रिया माल ॥  
यहाँ फाका फकर फर्क दिल है, सुन्दर दिसत लाल ॥  
कोटि-कोटि यह यम जालिम, संत सतगुरु प्रीति ॥  
हंस बंस के निकट नाहिं, जात भवजल जीति ॥  
हुकुम है सरकार का, वोय जिन्द जागृत जोर ॥  
कहे 'दरिया' कैदि करके बाँधि जइहो चोर ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			शब्द माया शरह			
			( १ )			
सतनाम	ऐसो	सुनो	बचन	यह	साँचा ।	सतनाम
सतनाम	महि	माया	काया	माया, माया	में सब	नाँचा ॥
सतनाम	राम	माया	है कृष्ण	माया है,	माया जग	जनमाया ।
सतनाम	शक्ति	माया	है विष्णु	माया है,	माया जग	उपजाया ॥
सतनाम	काया	में	तुम पुरुष	बताया,	सो माया	से बंधा ।
सतनाम	माया	से	यह विलग	कौन है,	कुँआ	परहुगे अंधा ॥
सतनाम	जाके	कहे	कबीर	गोसाई,	सो माया	में आया ।
सतनाम	माया	सब	जग चुनि-चुनि	खाया,	माया हाट	लगाया ॥
सतनाम	माया	ते	दया दया	ते माया,	माया बाँधि	मंगाया ।
सतनाम	जल	थल	जीव	सबहीं में	माया,	माया कौतुक लाया ॥
सतनाम	“बेवाहा”	बेकिमती	सो	कहिए,	सो माया	ते भिना ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	यह	काल	तमाचा,	ऐसा मन है झीना ॥
			( २ )			
सतनाम	माया	ठगे	सभन्हि	के	खुशी ।	सतनाम
सतनाम	सुर	नर	मुनि औ	तपे सन्यासी,	सबके घर	में धूसी ॥
सतनाम	सबके	ठगी	पुरुष	के ठगिहो,	तब तेरी	प्रभुतायी ।
सतनाम	सिजदा	करते	नाक	खियानी,	हमके दिन्ह	दुरायी ॥
सतनाम	एक	पग	ठाढ़	दोनों कर	जोरे,	मैं साहब के दासी ।
सतनाम	नखा	सिर	ले ओय	पेन्हें जराऊ,	जाते रूप	की रासी ॥
सतनाम	चलते	फिरते	देखा	शहर में,	माया अग्र	है काशी ।
सतनाम	मेरे	पगु	पर	नाक दरतु	है,	एही विधि सबके नाशी ॥
सतनाम	भीतर	भाग	योग	है बाहर,	हम हैं	शिव उपासी ॥
सतनाम	भौहें	बान	कमाने	कसि के,	दोनों नैन	सरगासी ॥
सतनाम	धान्य	है	पुरुष	कहाँ तक	कहिये,	आपुहिं अजर अमाना ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	बिरला	जन बाँचे,	जिन्ह जीता	मैदाना ॥
			( ३ )			
सतनाम	दुर्मति	दुरी	खाड़ी	रहु	ऐसी ।	सतनाम
सतनाम	यहाँ	आवो	तो दासी	होय के,	प्रेम मगन	रहु बैसी ॥
सतनाम	जाहु	जहाँ	है पाट	पटम्बर,	चन्दन बहु,	विधि करना ।
सतनाम	जरी	वक्त	औ पेन्हें	जराऊ,	ताहि समुझि	के धरना ॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जाहु	जहाँ	है	पहुँप	बिछौना,	भोगे	पान बिरंजे ।
जहवाँ	दौलत	द्रव्य	खजाना,	बहुत	परा	है गंजे ॥
जहवाँ	गणिका	नटे	नचावे,	चट	ताल	मृदंगे ।
ताको	पाँव	पकड़ि	के बाँधो,	झूठे	बहुत	तरंगे ॥
मीन	माँस	रसना	पर देवे,	और	भी	बहुत मशगुले ।
सो	हैं	चेर	गुलाम तुम्हारा,	ओ	भी	बहुत बखिले ॥
तेरी	गति	मति	हम सब जानहिं,	तैं	है	छैल छबिली ।
कहे	‘दरिया’	दर	कसे महाने,	तै	कबहिं	नहिं हिली ॥
( ४ )						
माया	कौन	कौन	रंग	खोले ।		
सुर्खा	स्याह	औ	जरद	रंगीना,	सबुज	सफेदा मेले ॥
एक	हुआ	तब	दुई	के धावे,	तीजे	त्रिविध लागा ।
तीन	पाँच	पन्द्रह	जब	भयऊ,	मगन	महल में जागा ॥
पन्द्रह	दुना	तीस	जब	भयऊ,	तीस	दुना भव साठी ।
साठ	हुआ	तब	सौ	के धावे,	मोहकम	बाँधो गाँठी ॥
सौ	से	बढ़त	लागु	नहिं बारा,	अब	घर भया हजारी ।
हाटे	बाटे	टेढ़ी	पगिया,	संग	संग	चले बजारी ॥
निसि	दिन	बढ़े	घाटे	नहिं कबहीं,	सौदा	सकल पसारा ।
लाखा	हुआ	लखापति	कहाया,	यह	बड़	भाग्य हमारा ॥
बड़े	साहु	साहुनि	रंग	माते,	मीन	माँस रस भोगा ।
नाना	रंग	करे	गृह	माहीं,	भक्ति	भाव नहिं योगा ॥
सो	धन	चोर	हाकिम	ने लूटा,	अब	प्रभु किन्ह अनाथा ।
आगि	लगे	धन	जात	बिगोयी,	धुनि-धुनि	ठोके माथा ॥
प्राण	निकालने	काल	जो पैठा,	गला	पकड़ि	के दाबा ।
राम	नाम	नहिं	मुँह	से निकले,	हाय-हाय	करते बाबा ॥
रोदन	करे	सब	बदन	निहारहिं,	अब	घर कहवाँ छूटा ।
चार	जना	मिलि	खाट	उठाया,	ले	न गया भर मूठा ॥
आवत	जात	परे	भवचक	में,	रहट	लगा जग केता ।
कहे	‘दरिया’	भौ	गिद्ध ज्ञान	बिनु,	मरि-मरि	भयो जग प्रेता ॥
235						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		( ५ )				
सब	मिलि	सीता	रूप	बखाना ।		
जनकपुरी	और	नगर	अयोध्या,	वाहि में	अरुझाना ॥	
आगे	राम	पिछे	लक्ष्मण,	बीच	माया	परधाना ।
बाकी	छवि	छितरानी	जग में,	भौहें	कमाने	ताना ॥
सिया	लहरि	है	सिन्धु	बरोबरी,	रावण	परि पछताना ।
यह	सुलक्षनि,	जेहिं	गृह पैठी,	दशकन्धर	पीसि	माना ॥
आदि	भवानी	शोक	के सागर,	एक हैं	“पुरुष”	अमाना ।
कहे	‘दरिया’	यह	लपट	ग्रीद है,	बिरले	पद पहचाना ॥
		( ६ )				
दिल	बीच	माया	गाँसी	लागा ।		
चोखा	तीर	पाहन	भर मूरा,	मन मूरख	नहिं	जागा ॥
कामिन	कनक	शोभा	बड़ि	सुन्दर,	वाकी	नैन विशाला ।
चंचल	चपल	चतुर	अति	नागरि,	बान	बिरह उर शाला ॥
गिरह	गाँठी	माया	ते	अटकी,	घट में	जालिम पैठा ।
जैसे	श्वान	जिमि	लपटाने,	उलटि	परा	तब ऐंठा ॥
ऐंचा	ऐंची	घौंचा	घौंची,	जब	निकले	दुःखा पावे ।
ऊपर	उज्जवल	भीतर	है	करिया,	लगिया	लपकन लावे ।
छूटा	महल	भाजन	जब	फूटा,	टूटा	नेह सगायी ।
चार	जना	मिलि	कान्ध	उठाया,	घाट	तुरंत जायी ।
दाह	किन्ह	तिल	अंजूरी	दिन्हो,	अब	करुणा करि रूठा ।
कहे	‘दरिया’	दर	यम ने	छेंका,	ले न गया	भरि मूठा ॥
		( ७ )				
माया	केहि	की	बसि	यह	कहिये ।	
सुर	नर	मुनि	औ	तपे	सन्यासी,	गन गंधर्प संग रहिये ॥
शंकर	के	संग	सदा	सोहागिनी,	विष्णु के	संग शोभा ।
ब्रह्मा	के	संग	बहुत	दुलारी,	एहि	विधि जग सब लोभा ॥
धनुष	तोरि	जिन्हिं	सीया	विवाहा,	तिन्हे	किन्ह बनवासी ।
दोनों	पुर	इन्हिं	गर्द	मिलाया,	लंकापति	कहँ नासी ॥
		236				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गोपिनी	के	संग	कांध	बिराजै	राधा रूप की रासी ।
सतनाम	कुबरी	कर	में	माला	जपतु है,	बनि रेशम की फाँसी ॥
सतनाम	ऐसा	मोह	मंदिल	एह	छाया,	राजा के घर रानी ।
सतनाम	धुँधट	पट	में	कसे	कमाने,	भौहें बान सँधानी ॥
सतनाम	एक	“पुरुष”	हहिं	अजर	अमाना,	माया कैद करि राखा ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	कोई	ज्ञान	बिचारे,	साँच बचन यह भाषा ॥
सतनाम	( ८ )					
सतनाम	साधो	बाँधी	कर	कसहीं	मारी ।	
सतनाम	जीव	जनिमारहु	मुसुक	चढ़ावहु,	ए सब	बात बिगारी ॥
सतनाम	ज्ञान	न भावे	रस	के धावे,	यम की	सांट संधारी ।
सतनाम	नयनन	काजर	नखा	सिखा	अभरन,	झमकि झमकि पगु ढारी ॥
सतनाम	नित्य	उठि	झगरा	करे	खासम से,	रगरा साँझ सकारी ।
सतनाम	पिया	से पीठ	दे रूठ	के बैठी,	दुजा कौन	धरुवारी ॥
सतनाम	पाँचो	और	पचिसो	मिलि	के,	यह तो महल हमारी ।
सतनाम	तुहीं	पिया	हारि	वारि	के बैठो,	चरित्र कौन निरुवारी ॥
सतनाम	स्वादिक	स्वारथ	यह	सब	हमरे,	पान फूल रस डारी ।
सतनाम	भोग	करहिं	हम	सोग	न जानहिं,	तेल फुलेल सँवारी ॥
सतनाम	भली	ठगिन	है	ठगी	सभनि को,	ठगे शकल संसारी ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	फिर	नाक	दरहुगे,	दासी भली हमारी ॥
सतनाम	( ९ ) (निद्रा शरह)					
सतनाम	निद्र	तुमके	हम	पहचानी ।		
सतनाम	योगी	यति	कहा	नहिं	माने,	उल्टा पवनहिं तानी ॥
सतनाम	ब्रह्मा	सोवै	विष्णु	भी	सोवै,	शंकर ऐसा योगी ।
सतनाम	राम	सोवै	कृष्ण	भी	सोवै,	जगता भगता भोगी ॥
सतनाम	व्यास	सोवै	सुकदेव	भी	सोवै,	वशिष्ट सोवे दिन राती ।
सतनाम	नवो नाथ	चौ रासी	सिध्या,	सबके	डँसि-डँसि	जाती ॥
सतनाम	ऐसा	जाल	है	जुल्म	जगत में,	कौन गुन ते गाँथा ।
सतनाम	बाझो	मीन	जहाँ	तक	पानी,	परे धीमर के हाँथा ॥
सतनाम	237					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
राव	रंक	औ	पंडित	ज्ञाता,	भाग	भाग सब माँगा ।
मीन	माँसु	पोखन	के	काया,	सोवै	अचेत अभागा ॥
एक	“पुरुष”	हहिं	अजर	अमाना,	उनके	कबहुँ ना ग्रासा ।
कहे	‘दरिया’	हम	आखों	देखा,	अविगति	अजब तमासा ॥
( १० )						
साधो		निंद्रा		जग	में	जननी ।
दया	करे	औ	पासे	पाले,	बाकी	गति हम बरनी ॥
अन्न	खियावे	पानी	पियावे,	ले	पलंगे	पवड़ावै ।
तरे	बिछौना	ऊपर	ओढ़ौना,	बिना	बोलावे	आवै ।
आसान	बाँधे	निंद	के	साधे,	बहुत	बिगुरचे योगी ।
बहुत	गोफा	में	पचि	के	मुवे,	केते परे हैं रोगी ॥
सुर	नर	मुनि	औ	पीर	औलिया,	काहू के राखा ना साधा ।
कहे	‘दरिया’	यह	माया	प्रचंड है,	इन्ह के	काहु ना बाँधा ॥
( ११ )						
साधो		निन्द		दिन्हो	जग	दागा ।
डारि	भरि	पेट	सोवन	चाहत,	उठि	प्रातहिं लागा ॥
अन्न	पानी	भस्म	करते,	मल	मूत्र	जो होवे ।
साढ़े	तीन	में	कहत	कर्ता,	निगम	खोजत रोवे ॥
दसो	इन्द्री	सुखा	चाहत,	बीर	बाँके	साथ ।
इन्ह	ते	लड़ते	जन्म	बीता,	कभी	न आवे हाथ ॥
शिव	योगी	युक्ति	जानहिं	संग	शक्ति	भोग ।
तिनहुँ	के	पतन	कीन्हों,	मुनिन	को	मति सोग ॥
राम	के	तन	चाम	कहिये,	शक्ति	के सुखा लागी ।
सहस्र	गोपिन	संग	मुखा	मुरली,	कहाँ	जाते भागि ॥
एक	“पुरुष”	हहिं	अजर	अमर,	युगल	शक्ति नहिं संग ।
कहे	‘दरिया’	ज्ञान	देखो,	त्रिगुण	माया	रंग ॥
( १२ )						
साधो		बाकी		बात		कही ।
माया	बड़ी	जगत	में	जालिम,	इनसे	को निबही ॥

238

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ब्रह्मा	विष्णु	महेश्वर	कहिए,	इन्द्रहूँ	जाई छरी ।
सतनाम	तपसी	औ	सन्यासी	योगी,	इन्ह	सहजे पकरी ॥
सतनाम	राम	जन्म	दशरथ	गह	भयऊ,	त्रिगुण रूप धरी ।
सतनाम	भयो	मोह	बस	सिया	विवाहे,	प्रबल नाहिं टरी ॥
सतनाम	कृष्ण	काँध	मुरली	मुखा	बोले,	गोपिन रंग भरी ।
सतनाम	भोग	बिलास	कियो	सखियन	से,	तिन्ह भी ब्याह करी ॥
सतनाम	लागि	आगि	ऊँचे	घर	देखा,	यह सब सूझ परी ।
सतनाम	बाँझे	मीन	जाल	माल	संग जरिगौ,	बाँधे विपत परी ॥
सतनाम	बिरला	जन	कोई	सन्मुख	ठाढ़े रहिगौ,	पल क्षण बत्तीस धरी ।
सतनाम	सोई	ब्रह्म	भयो	मुक्ता	मणि,	जिन्हिं समुझि के बाँह धरी ॥
सतनाम	“अविनाशी”	सबके	सिर	ऊपर	जारे	नाहिं जरी ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	समझो	मन	मूरखा	ऐसो ज्ञान खारी ॥
( १३ )						
सतनाम	साधो	तीन	लोक	भग	जाल	पसारा ।
सतनाम	स्वर्ग	पताल	औ	मृतुलोक	ले,	दुर्गा पाठ हमारा ॥
सतनाम	ब्रह्मा	व्यापी	विष्णु	कह	व्यापी,	शिव के शक्ति पियारी ।
सतनाम	सुर	नर	मुनि	के	कैद	कियो है, औ बन में बनवारी ॥
सतनाम	दाम	काम	औ	पलंग	बिछौना,	ऊँचे महल अटारी ।
सतनाम	ताहि	पलंग	पर	मोहिं	बिराजे,	लोढ़ि लिया फुलवारी ॥
सतनाम	वेद	पढ़ि-पढ़ि	पंडित	भूले,	चंदन	चरचि सँवारी ।
सतनाम	दोनों	पगु	में	बेरी	भर के,	गयो यम के द्वारी ॥
सतनाम	शिष्य	के	सिखावे	राजस	तामस,	बन में खोले शिकारा ।
सतनाम	जीव	मारे	के	महा	पाप है,	बाँधि नरक मह डारा ॥
सतनाम	एक	‘पुरुष’	हहिं	अजर	अमाना,	मन का शकल पसारा ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	मम	बहुत	पुकारा,	भूले मूँढ़ गँवारा ॥
( १४ )						
सतनाम	साधो	बनक	बेरी	ते		बाँधा ।
सतनाम	शक्ति	भक्ति	कुछ	कारन	नहिं,	कोई जन ज्ञानहिं साधा ॥
सतनाम	माया	के	बाँधुवा	आँधर	अँधुआ,	साधु जाने यह बाते ।
सतनाम	ज्यों	तेली	का	बैल	बेचारा,	ग़ार पेट भूसा खाते ॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
डेढ़ा	सवाई	ब्याज	बढ़ा	यह,	घटता	बढ़ता आवे ।
ब्याज	बढ़ावे	मल	के	खावे,	झूठी	बातनि धावे ॥
माया	भली	पर	दर्द	न	ब्यापे,	काया पोषन करते ।
जो	कोई	आवे	साधु	संगति	में,	निन्दा करि-करि मरते ॥
बुद्धि	छत्तीसा	ज्यों	गुण	कीसा,	विश्वम्भर	नहिं जाना ।
कर्म	कमाते	करता	बिसरे,	अमृत	तेजि	विधि पाना ॥
मैं	मैं	करे	सो	मेरी	तेरी,	मेरी तेरी झूठा ।
कहे	‘दरिया’	दर	यम	ने	छेंका,	अक करुणा करि रूठा ॥
( १५ )						
साधो		नारि		नयन		सर बंका ।
भौहे	बान	कमान	चढ़ाये,	देत	नगर	में डंका ॥
कन्द्रप	कसि-कसि	सब	कोई	थाके,	ऐन	झरोखे झंका ।
बिरला	भाग	गये	शरणागति,	बाँचे	राव	न रंका ॥
लिन्ह	लपेट	योग	नहिं	जागा,	भोग	भया बड़ बंका ।
सुर	सुरापति	इन्द्र	बापुरे,	उनके	परि	गौ दंका ॥
गोरखा	के	गुरु	महा	मछिन्द्रा,	तिन्हें	पकड़ि सिर टंका ।
सिंघल	द्वीप	में	रहे	पद्युमनी,	ताको	बदन मयंका ॥
ब्रह्मा	विष्णु	के	उर	में	बेधेयो,	नारद के धरि हंका ।
महादेव	संग	कमला	रानी,	इनके	परि	गयो संका ॥
मैन	मनोरथ	सबके	दिल	में,	काके	कहि निरंका ।
कहे	‘दरिया’	यह	मुरली	मनोहर,	दम्पति	प्रेम भयंका ॥
( १६ )						
साधो		बड़ा		बंधन		है भारी ।
मया	लता	यह	दुम	ग्रिद	में,	विविध रचा फुलवारी ॥
ऊपर	मूल	यह	डार	पात	है,	छाया सघन धन शोभा ।
चले	जात	फेरि	बिलयमान	हो,	रचि	के फेरि बनाई ॥
मैं	मैं	करे	माया	है	मेरी,	कौतुक कला यह लायी ।
छल	बल	ते	यह	छीन	लेतु	है, कर मिज फिर पछतायी ॥
आया	कहाँ	ते	गया	कहाँ	फिर,	भरमि-भरमि भौ भटका ।
बाजीगर	के	हाँथ	डोरी	है,	यम	साटिन्ह से सटका ॥
गया	अचेत	चेत	कछु	नाहिं	“साहब”	सुरति बिसारी ।
कहे	‘दरिया’	यह	दया	जेहि	पर,	भव से लेत निकारी ॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			( १७ )			
सतनाम	अब	तुम	कहो	कौन	पुर	बासी ।
सतनाम	सीया	और	राम	चरण	चित	राते, इमि करि फिरहु उदासी ॥
सतनाम	सुरपुर	नरपुर	नर	जो	कहते,	नाग कवंडल खेला ।
सतनाम	बेलरी	के	फूल	मृगा	चुंगे,	करे सभनि संग मेला ॥
सतनाम	चींटी	धरि	हस्ती	के	थम्भा,	पकड़ि जंजीरे बाँधी ।
सतनाम	बड़े	मस्त	मगरूर	कहावे,	एहि	विधि कलते साधी ॥
सतनाम	अजब	बाग	यह	रचा	बनौरी,	फल कबहिं नहिं खावे ।
सतनाम	गइया	एक	जो	रहे	स्वर्ग	पर, वाका दूध जमावे ॥
सतनाम	सावज	एक	बिनु	पिण्ड	प्राण	के, पारथ बीर कहावे ।
सतनाम	थाके	वेद	चारि	चतुरानन,	खोजत	अन्त न पावे ॥
सतनाम	ब्रह्म	कहीं	तो	सो	ब्रह्म	नहीं है, नहीं हंस नहिं कागा ।
सतनाम	फारि	देखो	तो	कतहिं	कुछ	नाहिं, तबे भर्म सब कागा ॥
सतनाम	बलि	के	कहीं	की	बावन	कहिए, कहों कवन पद गावन ।
सतनाम	कहो	पावन	पति	काके	कहिये,	एहि विधि राम सोरावन ॥
सतनाम	देखो	बिचारि	चित	चातुरे,	चित्र	बाँध किन्ह मारा ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	नरसिंह	संग	है,	जिन्ह हरिणाकुश धरि फारा ॥
			( १८ )			
सतनाम	सखी	री	अचरज	देखाहु	आई ।	
सतनाम	जो	रे	देखो	मुँह	मोरि	के बैठे, बिनु देखो हँसि आई ॥
सतनाम	दुलह	बहुत	दुलार	हमारो,	दुलहिनि	सभ जग प्यारी ।
सतनाम	सुर	नर	मुनि	सभ	करते	सिरदा, जोहव पंथ हमारी ॥
सतनाम	यहाँ	नहिं	ससुर	भसुर	नहिं	स्वामी, सासु न संग महतारी ।
सतनाम	सइयाँजी	हमरो	अमरपुर	बसहीं,	हमके	दिन्ह बिसारी ॥
सतनाम	बिनु	रे	पावहीं	पलंग	सुन्दर,	बिनु डंडी लगले कहार ।
सतनाम	लेई	उतारो	बृजबन	भीतर,	नदिया	बहे नवधार ॥
सतनाम	ससुर	भसुर	मिलि	एक	मत	किन्हो, हमके उन्हि निर्माई ।
सतनाम	अमर	पुरुष	अगम	है	साहब,	हमके उन्हिं निर्माई ॥
सतनाम	बेद	पढ़ि-पढ़ि	पंडित	ज्ञाता,	जगत	भगत बनवारी ।
सतनाम	कहे	‘दरिया’	नहिं	दर	पर	पहुंचे बैठि रहे सब गुण हारी ॥
			241			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		( १६ )				
सतनाम	जाके	महल	करकसा	नारी ।		सतनाम
	नवो	नाड़ी का	कोठा बहत्तारि	पल-पल सुरति	बिसारी ॥	
सतनाम	पाचों	और पचीसो	मिलि के,	आपु भई	धरुवारी ।	सतनाम
	राजहिं	बाँधि पलंग	पौढ़ायो,	फाँस दिन्हों	ग्रीव डारी ॥	
सतनाम	जेतनां	भोग है	तेतना रोग है,	भोगे योग	बिंसारी ।	सतनाम
	मीन माँस	रसना के	स्वादिक,	काम कला	अधिकारी ॥	
सतनाम	रोगी	चाहे सो	वैद्य बतावे,	बैठे माँझ	मँझारी ।	सतनाम
	मूल घटा	तन वृद्ध	ब्याधि भौ,	सूल परा	तन भारी ॥	
सतनाम	आंधर	बहिरे	दोनों यह	मिलि के,	गुरु शिष्य	सतनाम
	जड़ी	सजीवनी	सो नहिं	खोजहिं	ब्याधि सकल	सभ जारी ॥
सतनाम	गज औ	बाज साज	कछु नाहिं,	चलि भौ	हाँथ पसारी ।	सतनाम
	कहे	‘दरिया’	दर भूलि	परा है,	अबका	करहु पुकारी ॥
		( २० )				
सतनाम	ऐसी	नारि	हराफ	हेवानी ।		सतनाम
	आपनी	बात श्रेष्ट	करि राखो,	है गैबी	गै बानी ॥	
सतनाम	पहिले	राधे कृष्ण	तब कहिए,	साधुन यह	मति ठानी ।	सतनाम
	उलटि	चाल जो	चली जगत में,	औ कवि	बहुत बखानी ॥	
सतनाम	पहिले	सियाराम	तब कहिए,	उलटि नाव	गुनन ते	तानी ।
	जहाँ	के धार	तहाँ ले	मिलिहें,	ऐसा त्रिक्षण	पानी ॥
सतनाम	गर्व	गुमानी	मद की	माँत्ती,	भौहें	कमाने तानी ।
	आपन	वाहन सिंह	बनाया,	खासमहिं	बैल पलानी ॥	
सतनाम	है नट	नागरि बुद्धि	की आगर,	सागर के जल	थाह न आनी ।	सतनाम
	जैसे	कुमुदनि	जल के	भीतर,	चन्दा से	बृगसानी ॥
सतनाम	तीता	लागे चाहे	मिठा लागे,	साधुन कहा	कहानी ।	सतनाम
	कहे	‘दरिया’	कोई वली	फकीरा,	वाकी बात	अमानी ॥
		( २१ )				
सतनाम	राधे	तुम	चंचल	अति	बीना ।	सतनाम
	खांज	मीन देखन	कह छोटी,	अनंत कला	रस भीना ॥	
सतनाम	तन	समुंद्र मन	लहरि बना	है,	नयन कहर	बहे पानी ।
	हरि	कनहरिया	भगतन के	यह,	तिनहुँ	पकड़ धरि तानी ॥
		242				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

## सतनाम

# सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सतनाम

## सप्तनाम

# सत्यनाम

# सत्यनाम

## भूतनाम

## श्रवणात्

## श्रवणम्

## श्रवणम्

## भक्तानाम्

## भक्तानाम्

## भारतनाम

## शतगाम

## भक्तानाम्

## भारत

फिरे फिरंग फहम नहिं आवे, लहर लहरि पर दीन्हा ।  
ज्ञान दीपक मन्द करि डारेव, माया दीपक लेसि लीन्हा ।।  
यों कल घौंचे लखो ना कोई, इन्द्र जाल रचि लिन्हा ।  
नय नट बाजी नट ज्यों नाचे, किमि करि या गति चिन्हा ।।  
यही मता जगत सब माँते, कहि कवि बहुत बखानी ।  
ब्रह्मा के घर वेद भनत है, लता लपटी बहु बानी ।  
कहे 'दरिया' बिरला जन बाँचे, सतगुरु पद पहचानी ।।

## शब्द नर शरह

( १ )

जो नर सतगुरु शब्द न माना ।  
 सो जड़ श्वान सुकर जग माहीं, कर्म अनेक लपटाना ॥  
 दया सो हीन मलीन सदा नर, विषय सरोवर जाना ।  
 यम जालिम धरि मरिहैं जरिहैं, उर्थ मुख सदा झुलाना ॥  
 जैसे सूआ सेमर सेवत है, मुर्छि परा पछताना ।  
 जैसे मद्यपि गाँठी गठ दे, घरहु के अकिलि भुलाना ॥  
 अति गरूर मगरूर माया मद, चढ़ि तुरंग अभिमाना ।  
 अपने भवन करे अलबेली, फेरि पीछे पछताना ॥  
 जीव बँध ते यह अधर्म महिए, करे विषय रस पाना ।  
 कुमति काँटि सुमति के घेरे, विषय बेइलि तन साना ॥  
 आये उलटि फेरि जाये पलटि के, कतहीं ना मिलै ठेकाना ।  
 कहें 'दरिया' यह नाम भजन बिनु, यम के हाँथ बिकाना ॥

( २ )

नर तुम दुनिया में दीन गवायो ।  
 मन मूरख समुझत कछु नाहीं, गर्त बिच गोता खायो ॥  
 झूठ कहन के चौगुन जिभ्या, साँच कहे दुरि जायो ।  
 साधु दरस के महा आलसी, गणिका देखि उठि धायो ॥  
 मीन मांस पोषण की काया, पापे पुण्य दुरायो ।  
 पाहन परसि दया नहिं दरसित, करसित काल दुखायो ॥  
 ज्यों बग ध्यान धरे जल भीतर, एहि विधि दृष्टि लगायो ।  
 मीन मांस बिनु चंचल चित है, मद्यपी मदहिं मतायो ॥  
 कागज की पुतरी तन जानो, बुन्द परे भिहिलायो ।  
 हाड़ चाम रूधिर की मोटरी, यह कल बुन्द बनायो ॥  
 संत नकीब साहब को चाकर, बहु विधि बचन सुनायो ।  
 कहें 'दरिया' दर चलो सीताब, बेगि दूत पठायो ॥

( ३ )

नर तुम जन्म जग में हारी ।  
 गर्भ में दस मास बितेव, लीन्ह पिन्ड सँवारी ॥  
 ऊपर मुकुट लाल लागेवो, तामें वारिज वारी ।  
 दसन सुन्दर रसना दिन्हों, बोलत बैन सुधारी ॥

बालक के मुख क्षीर दिन्हों, नीर अनन्वा डारी ।  
 आत्मा यह सर्व सुन्दर, चलत पंथ सुधारी ॥  
 नमक खाय हराम किन्हों, कौल दिन्ह बिसारी ।  
 साज बाज बनाय के यह, संग सुन्दर नारी ॥  
 गर्व ते अति गरजि बोलत, कहत बात बिगारी ।  
 जैसे मद्यपि माँति मद ते, देत सभ के गारी ॥  
 पकड़ि यम जब मुसुक किन्हा, तप्त शिला डारी ।  
 कहें 'दरिया' उलटि पलटि प्रान, बहु विधि मारी ॥

( ४ )

नर तुम सतगुरु शब्द ना चिन्हा ।  
 धन सम्पति यह तप का बल है, दया सभनि ते भिन्ना ॥  
 घर में जोरु जबर है बाधिनि, वह कबे नहिं डरती ।  
 जब सुने परमारथ की गति, तबे झपटि के लरती ॥  
 तासो प्रिति करै निसि बासर, बसन झला झलि गहना ।  
 बोय तेरो है प्रान पियारी, वे हाकिम तुम सहना ॥  
 सरिता सोखि समुन्द्रहिं सोखिसि, और सोखिसि मुनि ज्ञाता ।  
 पीयत रूधिर अघात ना कबहीं, यह अचरज की बाता ॥  
 मैन मजीठ महल के भीतर, विषय बेइलि तन फूला ।  
 तामें लता अधिक लपटाना, ब्याधि बड़ा यम सूला ॥  
 ऐ मन मूरख ममिता मद है, चढ़ी चरख चौरासी ।  
 कहें 'दरिया' अजहुँ चित चेतहु, काटि कर्म की फाँसी ॥

( ५ )

नर सभ कहत आपनि बात ।  
 सुघर जन यह ज्ञान बूझत, प्रेम में मिलि जात ॥  
 राम रंग यह मिलित सभनि में, करत आत्मा घात ।  
 जबर यम जब जीव देखत, त्रासहिं मरि जाता ॥  
 घाट सुन्दर बाट देखो, अटकी नाहिं ओरात ।  
 झारि झपटि बिचार दिन्हों, चिन्हों शीतल तात ॥  
 कर्म जारेव भर्म नाहीं, होत द्रुम निपात ।  
 अक्षय छत्र यह फिरत सिर पर, शब्द स्वेत सोहात ॥  
 सिंह ठवनि ठनकि बोले, चलो आपनी घात ।  
 गर्व गढ़ यह गर्द मिलि गौ, भागि कुंजल जात ॥

गहो सतगुरु शब्द सुन्दर, महँगे मोल बिकात ।  
कहे 'दरिया' दरस दिसे, ईश गुण बिलगात ॥

( ६ )

रे नर तोहीं केतिक धीरकारों  
धीक धीक जीवन जीये जग माहीं, मैं मैं करत हमारो ॥  
विषय भाव रस रहि-रहि माँगत, करत गर्व हँकारो ।  
उलटि लगे नहिं चरण कमल पर, लिपटत फिरे बिकारो ॥  
गर्भबास जिन्हि जल जावन दिन्हाँ, रचि-रचि पिन्ड सवाँरो ।  
मरकट मुट्ठी ज्यों गहि के लागेव, ब्याधा बान सर मारो ॥  
चारो पन गवायो गर्वी, भर्मि भर्मि भै हारो ।  
कहे 'दरिया' सर्वस परबस, हाँथ जुवाड़ी झारो ॥

( ७ )

नर तुम ऐता गर्व ना कीजै ।  
केते गर्वी गर्द मिले हैं, रावण सम्पट दीजै ॥  
बादर तड़पे धरती कड़के, लोग सभै डर खाई ।  
जापर परे रसातल जावे, कहाँ तेरी प्रभुताई ॥  
बहे समीर जो वृक्ष उपारे, छाया छप्पर उड़ि जाई ।  
ताहि ऊपर जो परे पषाने, कृषि सभ गलि जाई ॥  
धरती डोले डगमग होखे, करै बहुत नर चिन्ता ।  
दुई पर्वत बिच झोपड़ा छायो, तबै कुशल होय बीता ॥  
सतगुरु निन्दहि बन्दहिं यम के, मुरति में मैल समाई ।  
पत्थर के नाव लोहा के भारा, जल में कहाँ तराई ॥  
कच्चा पिन्ड महल है कच्चा, मद्यपी मद बौराना ।  
कहें 'दरिया' यह काल शिकारी, पहुँचे कसे कमाना ॥

( ८ )

नर तुम साधु कहन के हुआ ।  
ज्ञान न साधत स्वाद सभ चाहत, मन कंठ्रप नहिं मुआ ॥  
जहाँ ले दृष्टि नीचे यह देखो, कनक कामिनि शोभा ।  
निंद परे वोय ग्रास लेतु है, मन माया ते लोभा ॥  
तिलक माला सोभा बहुत सुन्दर, सुन्दर गुदरी लाया ।  
सुन्दर गुदरी ज्ञान यह पेखो, तब मराल गति आया ॥

उल्टा कुम्भ नीर नहिं भरिया, सीधा भये भरि आवे ।  
 कुम्भ के योग यह राग रहित है, आनन्द मंगल गावे ॥  
 पूर्व लहरि काल के देखो, पश्चिम दृष्टि है चन्दा ।  
 तब कनहरिया खेवन लागे, लहरि परि गौ मन्दा ॥  
 पारस बिना कंचन नहिं होखे, फूल बिनु तिल न बासा ।  
 बहें 'दरिया' परिमल है पारस, इमि सतगुरु के दासा ॥

( ६ )

नर तुम ऐसा गुरु ना किजै ।  
 दोजक कारण करे खुसामद, धोती पैसा लिजै ॥  
 शास्त्र साथ बगल तर राखे, गीता को मत ऐसा ।  
 खेले शिकार जंगल जीव मारे, अठई दसई भैंसा ॥  
 संध्या तपणि जपै गायत्री, वाका भेद न पावे ।  
 दिल में दया दर्द नहिं आवे, हरनी खसी खियावे ॥  
 ज्ञान होखे तब मन के चिन्हे, तन मन धन सभ वारी ।  
 होखे मुक्ति दया के सागर, भव से लेत निकारी ॥  
 गुरु शिष्य के एक मता भौ, दोनों पाखंडी भारी ।  
 नाव पथल के चले ना जल में, दुइ कनहरिया हारी ॥  
 वेद पढ़ि-पढ़ि भेद न जाना, मरि-मरि फेरि औतरिया ।  
 कहे 'दरिया' बिनु दया ठौर नहिं समुझि के बाँह पकड़िया ॥

( १० )

नर की देखो यह चतुराई ।  
 भला हुआ से हमने किया, बिगड़े प्रभु सिर लाई ॥  
 निसि बासर सभ उद्यम करतु है, सुत पितु नारी समेता ।  
 साँच झूठ किछू प्रापीत नाहीं, मुक्ति होय भा प्रेता ॥  
 सजन कुटुम्ब समधी जब आवे, प्रेम मगन होय धावे ।  
 षटरस बीजन सीझे रसोई, जासे पति यह पावे ॥  
 बड़ी विपति है कहाँ तक कहिए, गुरु से जाय सुनाई ।  
 कृषि में किछु बरकत नाहीं, दाम चौगुना लाई ॥  
 भरि पेट खाय सोवे निसि बासर, एही भक्ति लव लाई ।  
 धर्मराय जब लेखा मगिहें, तब कहु कौन उपाई ॥  
 चारोपन बीता एहि भाँति, वक्ता बहुत सुबुद्धि ।  
 कहे 'दरिया' नहिं हुकूम धनी का, जंगली जीव कुबुद्धि ॥

( ११ )

नर तुम चिन्ही गुरू किन्हा ।  
 भीतर भरी भँगारी भर्म में, हर बातन में भिन्हाँ ॥  
 बाहर मुरती पथल के रचिया, तापर पाती दिन्हा ।  
 सजीव तोरि निर्जिव की पूजा, जबर से भयो अधीना ॥  
 महिषा मारि देवल के भीतर, पर आतम कहे भिना ।  
 जीव शिव यह रमा सभन्हि में, भानु कला छवि दिन्हा ॥  
 तिलक चर्चेव चारु जनेऊ, अजया के सिर छीना ।  
 जैसे स्वान अपावन राते, यों भच्छहिं बहु मीना ॥  
 गर्वी माते गर्व काया ते, और दैत्य बल किन्हा ।  
 काल शिकारी खेदि के मारे जाल परा यह झीना ॥  
 मरकट मुट्ठी नीके गहि लागी, बूझि ना परे मति हीना ।  
 कहे 'दरिया' नहिं दरद काल के, या बिना दुःख लिन्हा ॥

( १२ )

नर तुम चारो पन बितायो ।  
 वृद्ध भये तन काँपन लागे, तबहुँ माया हितायो ॥  
 डोलत आँगन पगु सो डगमग, डगर ना किन्हुँ कहेवो ।  
 सब मिलि कहा बुढ़ा बौराना, परी नहीं खाट रहेवो ॥  
 मल मूत्र सब परत पलंग पर, बास दुर्गन्ध लहेवो ।  
 नाती पुत परिवार घनेरा, हुकुम ना किछु रहेवो ॥  
 सुख है स्वर्ग नरक दुःख बासा, अघ उर शूल सहेवो ।  
 कहे 'दरिया' परिमल है पारस, सतगुरू ज्ञान लहेवो ॥

( १३ )

ने नर जानिये सुी घरी ।  
 जब मिले सतगुरू दरस दिन्हा परसि पायन परी ॥  
 सुफल ता दिन आनन्द मंगल, मद ममिता जरी ।  
 ऐन और अंजीर शोभा, चंदन चरचि करी ॥  
 जन्म ताको जीवन जग में, जानु शोभा घरी ।  
 खसम खुशी भयो मुझ पर फूल सेजन भरी ।  
 भय भंजन भ्रम नाही, सब कर्म सोधो खरी ।  
 अवरि तन मन दान दीन्हों, दनुज अपनहिं डरी ॥



चार फल यह हाल देखो, जाल यम को तरी ।  
 पुहुँप सेज सुगन्ध सुन्दर, मुक्ति आगे करी ॥  
 बहुत भाँति सुहाग सागर, अमर बर ते बरी ।  
 कहे 'दरिया' नहिं जनम जरा, ताप तीनों हरी ॥

( १४ )

रे नर सुमिरि ले सतनाम के, फेरि जात अवसर तरी ।  
 कर्म कागज हाथ हरिजन, जासु अवघट मरी ॥  
 समुझि जीजै चरण सतगुरु, काटु यम की सरी ।  
 निःलंक तन निर्वान पद यह, प्रेम बाती बरी ॥  
 ब्रह्मा जागेव भर्म भागेव, कर्म काटेव करी ।  
 अमि सरवर पीयन लागेव, मीलेव निर्मल जरी ॥  
 सप्त तन के मिमिरि छूटे, फूटि यम यूथ डरी ।  
 दरस दे प्रतिपाल किन्हों, शक्ति पायन परी ॥  
 गुप्त मंत्र यह यंत्र किन्हा, ज्ञान गुँगा गरी ।  
 त्रिषा परानेव प्रेम रसि बसि, रहत गागरी भरी ॥  
 दीन को दुःख तुरन्त मेटेव, कष्ट कागज फरी ।  
 कहे 'दरिया' दया सिर पर, कृपा करि जन तरी ॥

( १५ )

रे नर सुमिरु नाम प्रतीति ।  
 बिधि भंजन गंजन यम के, सज्जन जन से रीति ॥  
 दान पुन्य समाज यज्ञ यत, रतन गज दिन्हों निति ।  
 निगम नीति पवित्र पूजा, वाही रहि गौ क्रीति ॥  
 योग जाप जल सैन साधेव, डहेव जन कहँ निति ।  
 सतनाम तुले नहिं तौली तूला, टरत नाहीं मीति ॥  
 भूमिदान प्रदक्षिण दिन्हा, सुर सनमुख प्रीति ।  
 बिना भक्ति ना भर्म नासेव, लिन्ह यम जीव जीति ॥  
 गोफा सोफा में पवन साधे, डींभ अधिक अनिति ।  
 तेजि चरण सरोज शीतल, प्यास जात ना सीत ॥  
 जबहीं सतगुरु दरस दीन्हा, दया दर्पण निति ।  
 कहे 'दरिया' सेउ सो दर, ढाहु भर्म की भीति ॥

( १६ )

नर तुम गर्व करो सो झूठा ।

सोना रूपा सहन भंडारा, ले न गया भरि मूठा ॥

हरिणाकुश जो गर्व किया है, गर्व गर्द मिलि जाई ।

नख ते फारि उदर विदारेव, हाँथ के हाथे पाई ॥

रावण गर्वी गर्व कियो है, बाँधेव सुर सभ जानी ।

नाती पूत परिवार समेता, ताकी कहाँ निशानी ॥

अक्षैहिड़ी अट्टाहरह जिन्हि दल साजेव, हय हाथी बहुतेरा ।

सो दुर्योधन गर्द मिलि गौ, बहुरि कियो नहिं फेरा ॥

कंस कसाई कर्म बिकारा, भगिनि बाँधेव बेरी ।

काल रूप कृष्ण तेहिं मारा, कहि कहि ममिता मेरी ॥

राजा पृथु पृथ्वी सब लिन्हा, सागर सात समेता ।

छव चकवे संका करि-करि, सब मिलि गयो निकेता ॥

साँच सोई साधु जन भाखे, करि ले शब्द बिवेका ।

कहे 'दरिया' काया गढ़ भीतर, है सुकृत का रेखा ॥

( १७ )

जैसे हारवा है पोति ।

टूटि के छितराय परे, मानिका बिनु ज्योति ॥

जोरु कहे खसम मेरा, बेटी कहे बाप ।

माय कहे सुत मेरा, त्रिविध तीनों ताप ॥

बिरादरी में बँधा हुआ, जोरु का खुस रंग ।

खाना दाना दीजिए, तो मेरो तेरो संग ॥

साजन अव कुटुम्ब कहते, भली मेरी पाँत ।

झूठी बातें गाँठी बाँधे, दिवस बीति रात ॥

काल तेरो निकट आवत, कोई न जाते साथ ।

जेहू आना तेहू जाना, देखि लीजै हाथ ॥

तरक किजै भीजो नहीं, काटि दीजै जाल ।

कहे 'दरिया' दरस किजै, वाह वाही लाल ॥

( १८ )

एही विधि शब्दहिं करो बिचारा ।

जो आया सो गया न कोई, मरि-मरि फेरि अवतारा ॥

कहाँ वोय राम कहाँ वोय रावण, कंचन कोट उजारा ।  
 कहाँ वोय ग्वाल कहाँ वोय गोपी, कहाँ वोय नन्द कुमार ॥  
 कहाँ वोय चकवे चक्रवर्ती है, तिनहुँ के मार पछारा ।  
 कहाँ वोय कंस कहाँ दुर्योधन, सगरो सैन संघारा ॥  
 कहाँ वोय मीरमलिक जो केते, गोर कफन बीच डारा ।  
 बैटे काजी करे अदालत आपने आप सम्भारा ॥  
 केते द्रव्य दानी भै केते, छलि-छलि सबके मारा ।  
 उत्पति प्रलय आदि अन्त ले, सुधरे हंस हमारा ॥  
 करो अकूक साधु यह ऐसे, मेटि जाय यम जारा ।  
 कहे 'दरिया' कोई शब्द विवेकी, निकलि गया भव पारा ॥

( १६ )

लोगों राम खिलौना किया ।  
 रमिता राम रमै सभ माहीं, घट परिचय नहिं लिया ॥  
 मच्छ कच्छ औ ब्राह्म स्वरूपी, वाको बध जो करते ।  
 तीनों देह धरा रघुनन्दन, पाप किये नहिं डरते ॥  
 वेद कहे पारब्रह्म जो व्यापक, और कोई नहिं दूजा ।  
 रक्ष कहे फेरि भच्छ करतु है, पाहन पाती पूजा ॥  
 काम बीज से जीव जन्माया, माँस मछरिया छीया ।  
 जो रसना हरि नाम जपतु है, सो रसने रस पिया ॥  
 अंकुर भक्ष सब देव करम है, दैत्य कर्म है भिना ।  
 पढ़ि के पंडित खण्डित करते, बड़े जगत में बीना ॥  
 और के राम है हँसी खेलवना मेरो प्राण अधारा ।  
 कहे 'दरिया' कोई आतमदर्शी, जिन्हिं यह ज्ञान बिचारा ॥

( २० )

जीव के दर्द किजे जानि ।  
 आपने में आप देखो, साधु की पहिचानि ॥  
 पाँव में जब काँट चुभे, चुभुकि दीन्हों रोय ।  
 ऐस ही पर दर्द जानो, वादि जन्म न खोय ॥  
 हित बालक जानि आपन, हर्षि हिये लाय ।  
 औरि का जब खाल खैचहिं परा आगे आय ॥  
 और का जब दुःख देखहिं, खुसी होत आनन्द ।  
 उलटि परा तासु ऊपर, ऐसहिं दुःख द्वंद ॥

गर्व ते वोय गर्द मिलिया, दर्द बिना काल ।  
 गैव धक्का परा सिर पर, अजब है यम जाल ॥  
 सत शब्द नकीब कहे ते, नेक कहना बात ।  
 कहे 'दरिया' दर्द चिन्हो शीतल तात ॥

( २१ )

मेरो ऐसहीं प्रतीत ।  
 आपने को ज्ञान कहते, पदुम पावन रीति ॥  
 काम क्रोध यह मोह माया, बहुत खेलहिं दाव ।  
 कैद करी के बाँधिए, जब ज्ञान सतगुरु पाव ॥  
 जीवन जग में थेर जानो, भोर किन्हों बात ।  
 हाड़ चाम और रुधिर तन में, काहे करते घात ॥  
 मीठ कहते तीत लागे, मुख मोरे जात ।  
 तेजि अमृत प्रेम सागर, जानि विषि के खात ॥  
 अन्न फल यह भक्ष किन्हा, साधु सुन्दर मंत ।  
 मीन माँस यह स्वान की गति, तौलि तूला तंत ॥  
 नरक स्वर्ग तो इहई कहिए, मुक्ति को पंथ भिन्न ।  
 कहे 'दरिया' बचन ऐसा, मानिए परमीन ॥

( २२ )

आपनो पै भली भक्ति बिसरी ।  
 पहिले प्रेम न लगा नाम से, पीछे का उसरी ॥  
 दोजक दगा दरोग जगत में, एही माया इश्वरी ।  
 टूटेव नेह खसेव गुरु गमि बिनु, आयो पन तिसरी ॥  
 दिवस बीते धोखा धंधा में, रैनि पलंग पसरी ।  
 जो दम खाली सो यम के लेखा, बाँधि गले रसरी ।  
 अपने हाँथ आपु पगु बाँधेव, कहु कैसे निसरी ।  
 काढ़निहार से पीठ दे बैठा, रोय-रोय पचि मरी ॥  
 मान मर्यादा सब बहुत बड़ाई, पाखण्ड कर्म करी ।  
 जाते मीले माया का मुंदा, पल-पल सोच करी ॥  
 अजहुँ चेतु मुढ़ गवार तैं, मन परतिति धरी ।  
 कहे 'दरिया' दया सतगुरु की, पीयत अमि जरी ॥

( २३ )

कीमि करि प्रेम गली बिसरी ।

बुझि गौ दिया तेल बिनु बाती, यम जियरा पकरी ॥

जेहि तन लायो चोवा चन्दन, पान फूल पगरी ।

जेहि कामिनि संग भोग बिलासेव, सो पल में बिछुरी ॥

कुम्भ के कांच उदक के भरिया, फूट गयी गगरी ।

चलु यम साथ हाँथ किछु नाहीं, माल छूटी सगरी ॥

जैसे बाज बटेरन्हिं मारे, हाँथ पाँव पसरी ।

मेटि गौ गर्व गर्द पल माहीं, टरत न काल घरी ॥

कौआ रोर भये क्षण माहीं, जमा भई नगरी ।

जरि गौ खलरी भस्म उड़ियाना, दिन्हों तिल अंजूरी ॥

मानुष जन्म पदारथ जग में, अपनहिं से बिगरी ।

कहे 'दरिया' नर भक्ति बिहूना साधुन से रगरी ॥

( २४ )

भक्ति बिनु चारो पन गुजरे ।

बाल गोपाल तरुन पन बितेव, बृद्धहु नाही सुधरे ॥

अजया पाली जीभ के स्वारथ, खाहिं भले बपूरे ।

रैनि बीते वेश्या संग राते, इन्हते एहु जुरे ॥

पहिरी पोशाक खास खिजमतिया, संग संग बहुत जूरे ।

साथ लिये श्वान दुई चारी, जंगली जीव तूरे ॥

चढ़ी तुरंग माया मद मातेव, बोलत बैन करे ।

जहाँ-जहाँ सुने साधु की महिमा, जरि-जरि सो बिगरे ॥

झूठि बातें पोथी बाचहिं, बकि बकि ऐहु मरे ।

सो त्रिशुल भया तन भीतर, काँटन से अझुरे ॥

सपने कबहीं दर्द न आवे, सो तन अग्नि जरे ।

कहे 'दरिया' दिल दगा जगाति, यम के हाथ परे ॥

( २५ )

का भव जन्म जगत में पशुआ ।

सुन्दर देह खेह होई जइहें, बाँधि करी यम खसुआ ॥

राजा केते मरि मरि प्रेत भयो हैं, शब्द सुगन्ध न भावे ।

साधु दरस पद पावन परसे, ऐगुन अघ बिलगावे ॥

वेश्या पास जो दास भये हैं, नित्य उठि दरसन सोई ।  
 बाँधे काल कर्म भुगतावे, सीस पटक के रोई ॥  
 नित्य अपराध बध जीव सोई, अंधा गुरु बहिर है चेला ।  
 चतुर चोर जब मारि परेगा, सब तेजि जाहु अकेला ॥  
 मुवा सभै बाँचा कोई नाहीं, जगत भगत क्या राजा ।  
 कोई सिंहासन चढ़ी चला है, कोई जंजीरे ताना ॥  
 संत नकीब साहेब को चाकर, चौड़े कहा पुकारी ।  
 कहे 'दरिया' अब क्या सोचो, बान कसो है कारी ॥

( २६ )

अब तुम चेहुँ-चेहुँ करने लागा ।  
 ज्यों बग ध्यान धरे जल भीतर, हवले जल के पागा ॥  
 बहुत माछ तुम धरि-धरि खाया, कर में जपते माला ।  
 यम का फौज बड़ा जुलबाना, पकड़ि मरोरे काला ॥  
 करि बदफैल सो गया बदी में, सब मिलि वदन निहारा ।  
 रोदन करि-करि हाथ मरोरे, बहुरि चिता पर जारा ॥  
 करिके श्राध किया यह सुकुली, विप्र जेवहिं वहु भाँति ।  
 सजन कुटुम्ब बहुत बटुराने, बोध करे दिन राती ॥  
 महा नरक यह अन्धकूप में, तहवाँ पकड़ि झुलावे ।  
 तले सिस यह पाँव ऊपर करी, बहु विधि गोता खावे ।  
 भक्ति बिहुना दया हीना, जनम जनम का चेरा ।  
 कहे 'दरिया' यम शासन ऐता, अब का करहु निहोरा ॥

( २७ )

अब तुम चेहुँ-चेहुँ करने लागा ।  
 चुंगुल छूटे तो उड़ि के भागे, काल कर्म का दागा ॥  
 मरकट मुट्ठी यह गहि के लागा, कट कटाये के रोवा ।  
 बाजीगर का मरम न जाने, एहि विधि प्रानहिं खोवा ॥  
 ऐसा सुख सपने की सम्पति, एक जगा एक सोया ।  
 अमर कोस मृग मद माते, गीरि परा तब रोया ॥  
 केहरि कूप में प्रतिमा देखे, कूदि परा अरुझाना ।  
 फटिक शिला गज दसनन्हि अड़ि के, मुँह टूटा पछताना ॥

ऐन भवन में श्वान जो परिके, भुँकि-भुँकि प्राणहिं दिया ।

भर्मत फिरे भर्म के लागे, पाहन को जल पीया ॥

अमृत पी के अमर हुआ है, मीच पिया से मूवा ।

कहे 'दरिया' दर भूलि परा है, जीत लिया यम जूवा ॥

( २८ )

अब तुम टेढ़े टेढ़े चलता ।

साधु द्रोह यह मोह माया बसि, यम के धक्का परता ।

नाहि बुझै तो फेरि बुझेगा, अघ पातक में भीना ।

काल जाल तेरो सिर पर फिरे, बाँझि गया जल मीना ॥

मीन माँस यह काया पोषन, जीव घात करि खावे ।

ऐ बेदर्दी दर्द कहाँ है, बाँधा यमपुर जावे ॥

जाकर माल तैं छीन लिन्हा है, धैचन लागे कोरे ॥

झूठि बात मुट्ठी में राखे, साँच सुने दूरि जावे ।

हरि के दूत फिरे हरिकारा, मरकट बाँधि नचावे ॥

रे मन मूरख निगम साखी है, सुनि ले सतगुरु बानी ।

कहे 'दरिया' धन्य-धन्य प्राणी, जिन्हिं सतगुरु मत ठानी ॥

( २९ )

अब तुम चलो सिताब दीवान खाना में, आयो यम जरूरे ।

कागज साफ करो तुम आपन, बाकी है भरि पूरे ॥

क्या तुम खायो खरचेव जग में, मुन्हे गर्ब गरूरे ।

अबरि के बार छूटे नहिं पड़ो, टूटिहें चाबुक चूरे ॥

बिनती करों सुनो यम दूतों, तुमने बने निमेरो ।

किछु-किछु काज तुम्हारो सरिहों, करिहों भक्ति सबेरो ॥

एतना सुनि कोपे यम जालिम, मुस्टिक मारि करेरे ।

चले सिताब तहाँ ले पहुँचे, चित्रगुप्त के डेरे ॥

छूटा महल खजाना घोड़ा, बहुरि कियो नहिं फेरे ।

सिर धुनि-धुनि के रानी रोवे, चाकर बहुत घनेरे ॥

जो किछु अमल कमायो जग में, पायो दरब दरेरे ।

कहे 'दरिया' छूटा जग दावा, भक्ति बिना यम चरे ॥

( ३० )

मुगदर लिए सदा सिर ताने, जीव यम हाथ बिकाना ।  
 अखंडित ब्रह्म नरक में डरिहैं, तब कहु कौन जुबाना ॥  
 सुत, वित, नारि, सजन समधि सभ, मातु पिता हित जाना ।  
 जठर अग्नि में जिन्हि प्रति पालवे, ताकी सुधि भुलाना ॥  
 तन साजे माजे नहिं बनिहैं, चिकने चाम चिकाना ।  
 आठ काठ का पिंजरा तेरो, पल में धुरि धमाना ॥  
 यह तन गृहि ते बेगि निकलिहैं, खाट पड़ी परवाना ।  
 करधन तोर अग्नि में जरिहैं, रोवहिं सभ प्रधाना ॥  
 करिहैं, दुध-श्राध कर्म सभ, वेद बिहित मन माना ।  
 तिल अंजूरी दे गंदा करिहैं, फेरि धंधे लपटाना ॥  
 येहु जड़ जन मरिगौ बरबस, करि-करि गर्व गुमाना ।  
 कहे 'दरिया' कोई दास धनी का, पहुँचे हंस ठेकाना ॥

( ३१ )

पीछे समुझि परेगा भाई ।  
 जब हरि के हरि मुस्टक अइहैं, बाँधि हे मुसुक चढ़ाई ॥  
 अबहीं भोजन करो इच्छा भरि, नित्य नव माँसु बनाई ।  
 जेता जीव झटका से मरिहो, वहाँ लिखा सभ जाई ॥  
 अबहिं रति करो वेश्या से, पातरि भाँड़ नचाई ।  
 दोय परिश्वे बाँये दहिने, पल-पल खबर जनाई ।  
 अबहिं पर धन लूटि ले आवाहु, स्वारथ करण नीका ।  
 चित्रगुप्त जब लेखा मगिहैं, परे बचन सब फीका ॥  
 अबहीं निन्दा करो संतन की, जो तुम्हरे मन भावे ।  
 परग-परग पर काँटा सूली, सो फल आगे पावे ॥  
 संत नकीब साहब को चाकर, बोल दिया सतबानी ।  
 हों हुशियार बार जनि लावो, कहे 'दरिया' सुनु ज्ञानी ॥

( ३२ )

नर सुनि लिजै अमहक पाजी ।  
 अपने मतलब क्या तुम माता, साहेब के करु राजी ॥  
 पाँच पच्चीस काया गढ़ भीतर, तापर मन है काजी ।  
 जीव राजा ले परबस बाँधेव, मोह फौज दल साजी ॥



काम क्रोध का बाण बड़ा है, भैहें कमाने साजी ।  
मोहनी जोहनी जो मुख जोहे, नख सिख सुन्दर नाजी ॥  
ज्ञान घोड़े पर जीन पलाने, लौ लगाम दे ताजी ।  
ताजन मारू चटाक चटक्का, सनमुख नेजा भाजी ॥  
मंडी रहिए मैदान के बीच में, देखत फौजें भाजी ।  
कहें 'दरिया' तेहिं सिर पर साहब, अनहद बाजा बाजी ॥

( ३३ )

बूझेगा कोई दिल दीवाना ।  
दरद हिये जेहिं प्रेम बसत है, सतगुरु शब्द समाना ॥  
निर्गुण सगुण दोय कहतु है, कौन अग्नि ते पानी ।  
कवन पवन पर शब्द बसुत है, कौन पुहुँप की खानी ॥  
निर्गुण मुख रसने नहीं कहिया, सगुण या जग गावे ।  
शास्त्र गीता वेद पढ़ि के, सार शब्द नहिं पावे ॥  
ज्योति-ज्योति सभ ज्योति जपतु है, ज्योतिहिं में निर्बानी ।  
एक सो अनन्त, अनन्त फेरि एक है, बूझो पंडित ज्ञानी ॥  
शून्यहिं के सब ध्यान करतु हैं, पंडित पढ़ि और काजी ।  
कहें 'दरिया' सत शब्द विचारो, नहिं तो काल की बाजी ॥

( ३४ )

जब लागि प्रेम मगन नहीं माता ।  
क्या साखी पद बहु गावे, ऐसे कहें सकल सभ बाता ॥  
आगे दृष्टि पीड़ है पीछे, करे अचानक घाता ।  
तीरथ भरमि-भरमि के मूवा, माया मद चित राता ।  
भर्म कर्म का यह काया है, ज्यों सेवार जल जाता ।  
ज्यों लोहा में मुरचा लागा, यों गलि गया सभ गाता ॥  
ज्यों मृग माते अपने मद ते, अमर कोस नहिं खाता ।  
कहें 'दरिया' सतनाम भजन बिनु, भै गयो प्रलय पाता ॥

( ३५ )

ऐसा कौन करे पहिचान ।  
रेशम डोरी जगत बाँझे, करत विषय पान ॥  
अगम जल यह मीन जीव भै, यम जाले छान ।  
डारि जाल केवट भयो कर्ता, कर्म बंसी तान ।

महा जाले जगत छेकेव, छपे छल ते जान ।  
 त्रिगुन फंदा त्रिविध धारा, धरेव मच्छ बखान ॥  
 तैसे के यह तप्त किन्हा, ताप तायो जान ।  
 उलटि-उलटि अँवटि लिन्हा, टेक टंडस ठान ॥  
 चतुर चोर यह चरख लिए, पारख बिरला जान ।  
 ऐन भवन में श्वान भर्मे, भूँकि त्यागा प्रान ॥  
 आप पहरू कहर साजेव, बाज बटई हॉन ।  
 ऐसे नर सभ भरमत फिरे, मृग मद को ध्यान ॥  
 निगम सोचत पंडित भूले, पाठ दुर्गा जान ।  
 संध्या तर्पण देवा देई, दान पुन्य बखान ॥  
 चीन्हे कर्ता-कर्म नाहीं, भर्म विष की खान ।  
 कहें 'दरिया' ज्ञान गढ़ पर, बिमल ब्रह्म बखान ॥

( ३६ )

जो कोई साधु दरस के जावे ।  
 पग-पग तीर्थ दान पुन्य है, कोटि तीर्थ भरमि आवे ॥  
 दरसन से फेरि परसन हुआ, तामा पारस पावे ।  
 वाका भेद लखे जो कोई, सोना सुगन्ध बनावे ॥  
 जन्म दुर्लभ है शील के सागर, आगर मुक्ति बतावे ।  
 संत के सेवा असंत करतु है, भक्ति महातम पावे ॥  
 अर्थ मिला तब धर्म कथतु है, काम चिन्हे मोक्ष पावे ।  
 चारो फल का येही महिमा, जो कोई अर्थ लगावे ॥  
 जढ़ नहिं जानहिं यह भव भर्मा, चढ़ी चरख पछतावे ।  
 जैसे लागी रहट की घरिया, एक बूड़े एक आवे ॥  
 पशुवत ज्ञान साधु नहिं चिन्हहिं, सुनि के मुँदहिं काना ।  
 कहें 'दरिया' जेहि दया दरद नहीं, यम के हाथ बिकाना ॥

( ३७ )

ऐसो देखु जगत की रीति ।  
 आपने में आप देखो, और मुखन की प्रीति ॥  
 गीद्ध ब्याध बिकार गुन सभ, देखा कोई न जात ।  
 कवन ग्राम जो बसे जहवाँ, कहन की सब बात ॥  
 जात मरि-मरि देखा सभ कोई, विषय बेइलि कुघात ।  
 उतते इत नहिं आवत कोई, जासो पूछिये बात ॥

ब्रह्म व्यापक कहत सभ में, अद्वैत कवने देश ।  
 लेत दिक्षा इच्छा सभ कोई, सुना मुक्ति संदेश ॥  
 दास तुलसी कृति जग में, नित्य करि प्रकास ।  
 अर्थ कहि-कहि मरत सभ कोई, निगम को गुन दास ॥  
 ज्योति मंडल कोटि रबि कहे, अग्नि ऐसो रंग ।  
 कहे 'दरिया' ज्ञान बिना, विविध मन तरंग ॥

( ३८ )

चेतो बरतो करो दया, गर्व करते रावण गया ॥  
 जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप ।  
 जाके हृदय साँच बसतु है, ताहाँ बसहिं वोय आप ॥  
 साँच शब्दहिं परि हरे, झूठहीं निजु करि लाग ।  
 प्रपंची के यह मानिया, एक साधु देखि उठि भाग ॥  
 सभको पारख आइया, साधु पारख नहिं आय ।  
 साहब जब दया कियो, तब गति काहु लखाय ॥  
 चन्द सूरज को पारख, गगन गति लखे आकाश ।  
 'दरिया' को पारख जहाँ, मोतियन को बास ॥  
 रस गोरस को पारख, आनि जिभ्या ले चखे ।  
 शब्द कुशब्द को पारख, श्रवन जो भखे ॥  
 जल थल को पारख है, तासु गति लखि न जाय ।  
 सभके पारस ऐसन है, ज्ञान पारख जो आय ॥  
 मुनि वशिष्ट कथेव, राम अवतार ।  
 तिन्हहु गुरु किन्हा, तरबे का संसार ॥  
 सहस्र नाम शंकर कथेव, ब्रह्म ज्ञान सुकदेव ।  
 श्री कृष्ण गीता भाषा, भाव भक्ति के भेव ॥  
 चार वेद ब्रह्मा कथा, सनकादिक कथेव अगाधि ।  
 अगम भेद सतगुरु कहेव, सो गति बिरला साधि ॥  
 मारकण्डे दुर्गा कहा, सत्य पद गोरखनाथ ।  
 वाही पद ते पद भया, तन मन बिरले किये हाथ ॥  
 जल थल धरती सघन बन, सागर अगम गम्भीर ।  
 केते कविता होय गया, हृद 'दरिया' के तीर ॥

( ३६ )

जन कोई आनन्द मंगल गावे ।

थीरकत फीरे भवन के भीतर, पदुम पदारथ पावे ॥

मैन मजीठ, मइलि सभ छूआ, छटा चमकि घन छावे ।

रोम रोम जाके पद प्रकासित, विरह बिहंसि मिलि जावे ॥

भूमि बिरानी भर्म न राखे, माया नहिं अरुझावे ।

बीज वाये नहिं पेड़ पुरातन, फूल फल सभहि में ढावे ॥

तुरिया तत्व उड़ा बिनु ताजन, एहि विधि तरक बतावे ।

मिला डगर चढ़ा बिनु डोरी, डगमग कबहिं न आवे ॥

जीयतहिं मुक्ति भया मुक्ताहल, मन दृग अंजन लावे ।

हंस बंस सोई मान सरोवर, चुनि-चुनि मोती खावे ॥

पीये प्रेम हुआ मस्त दिवाना, गूंगा शैल बतावे ।

कहें 'दरिया' धन्य धन्य वोय सतगुरु, बहुरि न भव जल आवे ॥

( ४० )

समुझि चलो पंथ सभते न्यारा ।

धन सुत नारि शूल के सागर, यह जनि कहो हमारा ॥

जो आया से पलटि गया है, फीका मुख करि करा ।

कोठा महल अटारी अटल नहिं, भस्म भया सभ छारा ।

कमल सूखे फेरि भवँरा भर्मित, थकित भये तन हारा ।

घर के खोज खबरि नहिं लिन्हा, कहाँ जन्मे केहि बारा ॥

सतगुरु चरण सेवो मति मंदे, गति चाहो भव पारा ।

कहें 'दरिया' दिल दगा दरोग नहीं, नाम गहो तत्व सारा ॥

( ४१ )

अबरी के जन्म सुफल करू आई ।

ज्यों हीरा घन सहे लोहा की, महँगे मोल बिकाई ॥

खसम बिसारि कहाँ तुम जइहो, तेजो चित चतुराई ।

तुम अस जीव घनेरो परे हैं, वह तो एक इकाई ॥

जिन्हि यह नख सिख सिरजन कीन्हा, ताकी सुधि बिसराई ।

मुरति मैलि समानि तन में, जन्म-जन्म जहड़ाई ॥

चार-चरण दोय सीधे होइ हैं, तब कहु कवन उपाई ।

पाँव पकड़ि के मोहकम बाँधे, घास चरन के जाई ॥

कल्प कोटि ले भर्मत फिरे, ठौर कतहिं नहिं पाई ।  
 मानुष जन्म दुलर्भ हौ भाई, बिबरन करो बिनाई ॥  
 सतगुरु चरण मिथ्या जनि जानो, अमर लोक ले जाई ।  
 हंस कर्म सो उज्जवल दासा, कहें, 'दरिया' समुझाई ॥

( ४२ )

तुम तो प्रेम गली मुदि डारी ।  
 जहवाँ कमल भँवर को बासा, सुबुक सकरी अँधियारा ॥  
 गुरु ने चकमक चिनगी दीन्हों, झारन्ह हार अनारी ।  
 तूला तौली लिन्ह नहिं नीके, चकमक चित बिसारी ॥  
 जैसे धातु फिरे पारस से, कुन्दन कनक सँवारी ।  
 ज्यों पथरी जल माह रहे, अग्नि सदा उद्गारी ॥  
 परिमल पारस काठ में लागा, शब्दही बेधु बिकारी ।  
 चुम्बक लगन लगा लोहा में, गाँसी लिन्ह निकारी ॥  
 जाल कुक्कुटी ज्यों जल मँह बासा, ऐसे ही बुद्धि बिचारी ।  
 पर औ अंग पंख भीजे नहिं कबहीं, योग युक्ति अधिकारी ॥  
 सतगुरु दोस देहु जनि कबही, सिक्किल बिना अधियारी ।  
 कहें 'दरिया' जब वा दर पैठो, तन मन धन सब वारी ॥

( ४३ )

ऐगुन कवन कहिए चिंता ।  
 गुरु ज्ञान विमल विराग जाके, चरण कमल पुनीता ॥  
 नाम मणि निजु हृदय राते, जात भव जल जीत ।  
 दया सागर दरस दिन्हों, परसि चरन पुनीत ॥  
 कोटि पाप बिनास मोचेव, रूची राजित प्रीति ।  
 भव से काढ़ि विमान साजेव, संत जन की कृति ॥  
 कंज पुंज वोय जल के ऊपर, लेप लागु ना शीत ।  
 ऐसे जन जग उदित आगर, भगत जन की रीत ।  
 चली नावरी बिन केवट, कम्प करता नीत ।  
 बोझ पर्वत बन भारी, त्रिविध ताप हीं जीत ॥  
 देखिए सर्वज्ञ पूरण, विमल परिमल शीत ।  
 कहें 'दरिया' धन्य सोई, तिनके सतगुरु मीत ॥

( ४४ )

ऐसो काया मध्ये अंक ।

लगेयो अवर झरत जमि पर, जहाँ कमल है बंक ॥

साधु जानहिं सिकम सागर, अर्ध झलकत चन्द ।

सुनत ध्वनि मन मगन गर्जित, अर्ध उर्ध मंद ॥

तहाँ शेष औ महेश ब्रह्मा, चारि वेद निरंत ।

तहाँ मुरली लिये मैन माधो, शक्ति मता संग ॥

त्याग संग्रह शक्ति तहँवा, करत ज्ञानहिं भंग ।

तीन सरिता स्वर्ग धारा, उठत बिबिध तरंग ॥

भर्म भाजन भव के मूल तहाँ, ऐस ही यम त्रास ।

कल्प देखि विकल्प देखो, वाके सुमिरहु दास ॥

सगुण देखो निर्गुण निरखत, ज्ञान का मत भिन्न ।

कहे 'दरिया' दरद न दागा, अंवटि जल बिनु मीन ॥

( ४५ )

भेदिया यह भेद जाने, केदली कपूर ।

भेदिया सो भेद कहिए, कोटि मध्ये शूर ॥

शब्द भेदी शब्द बेधेव, लोहा छेदि पखान ।

निकलंक तो यह तामा बेधेव, बहुरि होय न आन ॥

परिमल बेधेयो काठ में, मूल्य होत चन्दन भाव ।

वासना की सीपित कीजै, राखिए सुढाँव ॥

फूल बेधेयो तिल में, सोई वासना ले जाय ।

ज्यों भृंग बेधेव कीट को, मुख दिन्ह पारस लाय ॥

मुँढ़ बेधेव लाठी में, यह आपनी प्रभुताय ।

चोर निन्दे चाँदनी, यह रैनी को प्रभाव ।

मुखनिन्दे साधु के यह, झूठ के संग धाव ॥

गणिका जो सुत निन्दे, माँथ दे दे हाथ ।

मुढ़ निन्दहिं साधु जन को, लीन्ह सामरि साथ ।

संत तो गरकाब कहिए, भृंग को मति भिन्न ।

कहें 'दरिया' जानि लीजै, जगत मध्ये चिन्ह ॥

( ४६ )

जाको ऐसहीं प्रतीत ।

चित्र भीतर चित चुभेव, तहाँ तेरो मीत ॥

कबीर काया दिल दरिया, सुरसती सुभधार ।  
 उलटि पेखेव तासु में, जहाँ शब्द है तत्व सार ॥  
 मेद अस्थि औ रोम त्वचा, कुसुम ऐसो रंग ।  
 जामाँ भीतर जामाँ देखो, श्वेत सुन्दर संग ।  
 सुरति आगे निरति थाकी, अमर दीसत चन्द ।  
 सिक्किल बिना सु नहीं, नयन तेरो मंद ॥  
 अर्थ खोजत मरत नहीं, घायल घुमिरहीं चोट ।  
 ढाहि के मैदान कीजै, भर्म भारी कोट ॥  
 पार कहते वार कहते, धरनी सोखेव नीर ।  
 कहें 'दरिया' दया सागर, मेंटिया पर पीर ॥

( ४७ )

एही विधि शब्द है सजीव ।  
 सिद्ध सो सिद्धान्त बोले, दधि मथे घीव ॥  
 लगोट बन्द गछोट कसि के, वाहि का गुण गाव ।  
 दधि मथि के घृत लीजे, अग्नि ऊपर ताव ॥  
 प्रेम प्याला मस्त पीवे, छाछि कीजै दूर ।  
 जाहि के तुम खोजत फिरे, हाजिरा हजूर ॥  
 खास है खुसवोय तहवाँ, नूर झलके सोय ।  
 सनदि छापा देखिके, तब हंस विमल होय ॥  
 सुरति पेखो अमर देखो, अजर रेखा ज्ञान ।  
 तरवार का यह मोल किजै, दूर रखिये म्यान ॥  
 तब जनिए जब मिला सतगुरु, पूरा तेरो भाग ।  
 कहें 'दरिया' तख्त बैठो, चिन्हों हंसा काग ॥

( ४८ )

एही विधि साधु हे प्रवीन ।  
 अपने में आप सुमिरहिं, रैन होय या दीन ॥  
 साढ़े तीन से बढ़त नाही, बंधन बहु विधि लाय ।  
 हाड़ चाम रुधिर तन में, ऐसे ही गलि जात ॥  
 अद्वैत ब्रह्म विराग कहते, द्वैत आपु अमान ।  
 वेद से वेदान्त किन्हा, राहु ग्रासेव भान ॥  
 निर्गुण कहते सगुण कहते, निर्गुण आप निराश ।  
 जल के सूखे कमल सूखे, भँवर कहवाँ बास ॥

कहनी कहते जन्म बीता, चतुर बुद्धि के नास ।  
चारि चरण दो सिघ होइहे, दूढ़त फिरे घास ॥  
एक से जीव अनन्त भैगो, गगन नाहिं ओरात ।  
कहें 'दरिया' दरद बिना, भर्मित भव में जात ॥

( ४६ )

नर तुम काम करि लेहु नीका ।  
जाते मिले मुक्ति का साई, सतनाम है टीका ॥  
जनम जनम जहड़ाये जग में, माया के मद माता ।  
अमृत बानी नाम अमोलिक, तेजि पिवे विष ताता ॥  
कच्चा पिण्ड महल है कच्चा, कच्चा रंग बनायी ।  
या जग जनमी जिये ना कोई, काया अमर नहिं पायी ॥  
क्षार सोना भै क्षार रूपा भै, क्षार सुपेति खाटा ।  
भक्ति बिना सब क्षार नजरि में, खोजहु सतगुरु बाटा ॥  
भय गयो क्षार वारि जब दिन्हा, खाक में खाक मिलायी ।  
प्राण पुरुष अनेक घर पैठा, भरमि भरमि भरमाई ॥  
केता कहो हठा नहिं माने, फिर अनइस लपटाई ।  
कहें 'दरिया' यम बाँधि पछरिहें, परा परा छपटायी ॥

( ५० )

संतो साहब के बिसरावन लागा ।  
कामे चोर नेवाले हारिज, इन बातन में जागा ॥  
बेदरदी है दरद न कबहीं, झूठी बातन पागा ।  
मति मराल की गति नहिं आवे, जहाँ कुबुद्धि तहाँ कागा ॥  
ज्यों कुरंग धोखा में धावे, एहिं विधि प्रानहिं त्यागा ।  
तीरथ भरमि-भरमि के मुवा, ज्ञान नाहिं अनुरागा ॥  
सोवत जागत कर्म बिकारा, यहि विधि स्वारथ माँगा ।  
बुन्द बुला तन बिलयमान भै, जड़ की महिमा नागा ॥  
ज्यों मकुर मुरचा ने छेका, सो छवि नाहीं आगा ।  
टूटी डोरी मध्य गगन ते, निकट ते दूरि भागा ॥  
धृक-धृक धृकारों तुझके, ज्यों अलोना सागा ।  
कहें 'दरिया' नर नमक हरामी, ऐगुन तेजु अभागा ॥



( ५१ )

अब तुम भरि-भरि सिकम खाते ।

थोरी अमर गुमर बहु भरिया, करिया कम्प्र कमाते ॥

सुरति निरति में बीच परेगा, सोय सोय जन्म गवावे ।

सोवत जागत चित चेतनि में, दीदम दर्शन पावे ॥

रीमि झिमि आगे नूर बरषे, ऐसा दिल सफाई ।

कागा ते यह हंस हुआ है, बहुरि न भव जल आई ॥

“बेबाहा” है साहब मेरा, दम में दम लगाई ।

जिन्दगी थोरी कुफुर बकता है, मनै सान बाजाई ॥

आप में पेखो मन के देखो, यह मन आपु अनन्ता ।

केते गर्वी गर्द मिले है, बहि बहि गये कुखेता ॥

खबरी करो खबर दार होना है, बहुरि न ऐसन दावे ।

कहें ‘दरिया’ सो हंस हमारा, छपलोक में जावे ॥

( ५२ )

ज्ञानी कैसे होत विज्ञान ।

ज्ञान का जब नास होत है, तब विदेही थान ॥

श्रवण सुने विरह रस बानी, नासा बास सुबास ।

चक्षु देखत सर्व दृष्टि, मानत यम के त्रास ॥

दुःख - सुख औ भूख ब्यापे, पोषड़ चाहत नित ।

रसना षटरस बीजन चाहत, वाही के प्रतीत ॥

परमहंस जो बंस हंस के, क्षीर बिबरन कीन्हा ।

परत हिमि सो गलत जमि पर, पार ब्रह्म हहिं भीन्हा ॥

पुरुष एक है नारी जग सब, जगत इशे साथ ।

आवत जात सो खपत जमि पर, वाहि के गुण गाथ ॥

भक्ति माया बिलग नाहीं, विमल का गुण भिन्न ।

कहें ‘दरिया’ धन्य सतगुरु मानिये प्रवीन ॥

( ५३ )

पिया की घ्रानि अग्र सुबास ।

दृष्टि आगर सृष्टि सब है, जैसे तिल में बास ॥

जैसे परिमल लपट लागेव, कपट काटेव दास ।

जैसे पारस धातु बेधेव, तामा को गुण नास ॥

जैसे कीट से भृंग किन्हो, सर्व गुण निवास ।  
 काया केदली बहुत सुन्दर, किन्ह कपूरे बास ॥  
 जैसे सीप से मोती उपजे, बुन्द को विश्वास ।  
 नख पंक्षी हीरा कीन्हों, ज्योति को प्रकास ॥  
 जैसे भुजंग मणि आगे, सिद्ध विषि को नास ।  
 जतन बहुते युक्ति जानत, लीलत उगिलत ग्रास ॥  
 तैसे साहब हंस किन्हों, काया को प्रकास ।  
 कहें 'दरिया' पारस को गुण, छपलोक में बास ॥

( ५४ )

हमके आतम राम पियारा ॥  
 अबुझा लोग कहाँ तक बूझे, बूझे हंस हमारा ।  
 मच्छ कच्छ बराह स्वरूपी, निगम कहे अवतारा ॥  
 जानि बूझ नर खून करत है, परे नरक के धारा ।  
 महिषा मारि के चरण पुजावहि, पूजा मान तोहारा ॥  
 लेके खरग ताहि सिर झारहिं, ऐगुण भै गो सारा ।  
 आन के राम है हँसी खेलवना, मेरो प्राण अधारा ॥  
 अजया घैचि पत्थर पर मारहिं, पाप भया सिर भारा ।  
 साँच झूठ का करो बिचारा, जाते भला तुम्हारा ॥  
 केता कहों कहा नहिं माने, भूले मूढ़ गँवारा ।  
 कहें 'दरिया' दर यम ने छेका, मुगदर सिर पर मारा ॥

शब्द जग शरह

( ९ )

या जग पारख बिना भुलाना ।  
 निर्गुण सर्गुण यह दुई करि थापहिं, अजपा धरि-धरि ध्याना ॥  
 अद्वैत ब्रह्म सकल घट भीतर, त्रिगुन में लपटाना ।  
 आवे जाय उपजि फेरि बिनसे, जरि मरि गर्द समाना ॥  
 छवो चक्र अरु चारि चतुर दल, वेद मते अरुझाना ।  
 बंकनाल की डोरी धैचे, योगियन युक्ति बखाना ॥  
 सहस पंखुरी दल कमल बिराजित, मन मधुकर लपटाना ।  
 जल के सुखे कमल कुम्हिलाना, तब कहु कहाँ ठेकाना ॥

घट के कर्ता लोक कहतु है, पाँचो तथ्व बिलगाना ।  
 सगुण बिनसि निर्गुण रहित है, गुण बिनु कहाँ समाना ॥  
 करहु बिचार सकल मिलि ऐसे, भेष विविध बाना ।  
 कहें 'दरिया' सतगुरू गमि जाने, पहुँचे हंस ठेकाना ॥

( २ )

जग में अजब कहानी मरन कहिए साँच ।  
 मरना सो जो फेरि ना मरिये, तीनि तापे काँच ॥  
 जन्म जरा मरना की बेरि, कछु ना जाते साथ ।  
 हेम हीरा बाज गज सभ, धैचि लिन्हों नाथ ॥  
 गाड़े धन गहिरे गाड़े, बंधन करते निति ।  
 मीन माँसु है भोग भलाई, येही जग की रीति ॥  
 बारि अनल लगाई दीन्हा, भसम सर्वो अंग ।  
 बहुरि न आयो मंदिर के बीच, कोई न जाते संग ॥  
 आहि आहि चिकार छोड़त, कहाँ सुत गृहि नार ।  
 बदन देखि-देखि रोदन करते, चलहिं हाथ पसार ॥  
 सुर नर मुनि औ ज्ञानी केते, कोइ जन भयो दास ।  
 कहें 'दरिया' भक्ति बिना, हारि यम ग्रीव फाँस ॥

( ३ )

या जग भरमी भरमी के मूआ ।  
 चला बिसारे हाँथ पसारे, ज्यों सेमर का सूआ ॥  
 अमृत वाणी विषि अस लागे, हुआ माया के बँधुआ ।  
 निगह वान तेरो साथ फिरतु है, सुझि परे नाहिं अँधुआ ॥  
 वासन अच्छा बुद्धि है ओछि, मद ममिता भरि लावे ।  
 सो मद्य पिवे रुरि बौराना, झूठ कहन के धावे ॥  
 कुल की कानि जो मान लिया है, लाजे भक्ति ना भावे ।  
 ज्यों तेली का बैल बिचारा, आँखिन पट्टा बँधावे ॥  
 जैसे सोर बटोर जंगल में, ऐसी मजलिस पाई ।  
 साधु द्रोह किन्ह मोह माया बसि, रोय रोय जन्म गँवाई ॥  
 काग कपूता हंस सपूता, जिन्हिं निर्मल गुण गाया ।  
 कहें 'दरिया' सोई संत मंत है, अचल मुक्ति फल पाया ॥

( ४ )

जग में परासहज एक सूला ।

कर्ता कहो कर्म तेहिं लागा, पंडित पढ़ि पढ़ि भूला ॥  
 मूल ऊपर हैंठ डार पत्र है, फूल झरि झरि परा साई ।  
 पंक्षी उड़ि जो चला वृक्ष के, बिचहीं भुजंगम खाई ॥  
 बिनसे काया सुन्य नहिं बिनसे, धरति अमर थापा ।  
 सौदा करहिं साधु नहिं चिन्हहिं, पाप पुन्य दुई तापा ॥  
 घाट बाट अपने सभ रुधैहि, अवघट तरनी लागा ।  
 पानी माह अग्नि का पुंज है, पर्वत से दव जागा ॥  
 अंकुर कहा अंक के लिखा, बंक बिकट है सोई ।  
 आदि अन्त प्रलय तर देखा, बहुरि युगल फेरि रोई ॥  
 वादर देखा सभ दर देखा, वा दर दर्पन सोई ।  
 कहें 'दरिया' नहिं सीस पाँव है, कुशल कहाँ ते होई ॥

( ५ )

जग में भलो कियो नहीं काम ।

मंदिर मोह मदन तन व्यापेवो, बिसरि गयो निजु नाम ॥  
 सुत कलत्र काया के साथी, हय हाँथी अव बाम ।  
 जब आये तब का ले आये, ले न जइहो कछु दाम ॥  
 संत सेवा न चरण चित लायो, कियो ना निजु विश्राम ।  
 दया समेत जो दरसित दिल में, सभ में रमिता राम ॥  
 निगम नीति जो सुनेव श्रवण से, सुझत न आठो जाम ।  
 कहें 'दरिया' तन ममिता मातेयो, वाही रंगीलो चाम ॥

( ६ )

जग में सुख कीजै दिन चारी ।

कैसा दया विवेक है कैसा, धन सूत औ गृहि नारी ॥  
 कैसा मूल डार है कैसा, बीज फूल फल पाता ।  
 कैसी भक्ति ान है कैसा, मीन माँस रस भाता ॥  
 अच्छा गज बाज साज है अच्छा, साजत तन यह सोभा ।  
 अच्छा पलंग बिछौना अच्छा, गणिका ते चित लोभा ॥  
 अच्छा राग है रस की खानी, और रस प्रीया नीका ।  
 कैसा साधु संत है कैसा, लागे बचन सभ फीका ॥

उठि प्रातः तन मंजन करिया, औ षट कर्म है पूजा ।  
सुरसरि के जल अचवन करते, मेरो देव नहीं दूजा ॥  
अच्छा कवि यह कथा कहतु है, आदि अन्त कुल साँचे ।  
कहैं 'दरिया' यम कसे कमाने, एहि विधि भव में नाँचे ॥

( ७ )

जग में जन कोई पारख पाई ।  
वेद कहे यह घट में कर्ता, और वेदान्ती बताई ॥  
निज मन की मथनी मथि किन्हा, कथि-मथि सभे सुनाया ।  
मथि के भागवत मथि के गीता, तबहुँ ज्ञान नहीं पाया ॥  
शेष महेश गनेश जो कहिए, इन्ह सभ जग समुझाया ।  
कहनी कहि-कहि सभ में भाषे, यह भ्रम जाल बनाया ॥  
तीन लोक बिनसन सभ कहते, नहीं बिनसे सो कैसा ।  
निर्गुण सगुण यह हममें तुममें, वह निर्गुण नहीं ऐसा ॥  
अगम कहे फेरि निगम कहतु है, अगम निगम दोय ज्ञाता ।  
ज्ञान गमि नहीं बुद्धि प्रकासहिं, वोए अविगति नहीं राता ॥  
कोटि ज्ञान कहि गये है केते, वक्ता बहुत सुबुद्धि ।  
कहैं 'दरिया' जग पढ़ि पशु केते, जंगली जीव कुबुद्धि ॥

( ८ )

जग में के बसि किन्हों कंद्रप ।  
सुर नर मुनि औ माधो ले के, राम गनेशा गंधप ॥  
धरती शक्ति साधु सभ जानहिं, बुन्द घने घन श्यामा ।  
थाके मेघ करोर जल होय, वोय थाकी नहीं वामा ॥  
ऐसा जाल है जुलुम जगत में, ता बीच बसो बियागी ।  
गृहि के तेजि सेवे वन खंडे, पूरण भया न जोगी ॥  
त्रिगुन तीनि ताप तन व्यापेयो, वाही लपट में आयो ।  
महावीर यह धनुष वाण लिए, उन्ह भी सीस नवायो ॥  
एक से अनन्त अन्त फेरि एक है, रति औ काम समाना ।  
सभ में जीव ब्रह्म किमि कहिए, वह है पुरुष अमाना ॥  
यह दृष्टान्त दृष्टि में आवे, बीज एक घन छाया ।  
छोटा बीज द्रुम हे कैसा, डार पात फूल लाया ॥

खेत आई जो बीज एक रस, कहीं रंक कहीं राया ।  
 उलटि-पलटि के इमि करि बूझे, यही सभ जग जनमाया ॥  
 ताके सभ मिलि कर्ता कहते, कर्म बंधन में आया ।  
 कहें 'दरिया' "सतवर्ग" सदा है ताहि चरण चित लाया ॥

( ६ )

जग में देह धरी सभ नाचा ।  
 चक्की चलते बिरला बाँचे, त्रिगुण गुण है काँचा ॥  
 चौमुख ब्रह्मा चतुर विचक्षण, बंस वंशावली भाषा ।  
 सो हरि बंस पढ़े सभ पंडित, ऐसे सुनि सुनि राखा ॥  
 शंकर के सुत सभ कों जाने, गौरी गणपति पूजा ।  
 आदि अनादि तीनों के गुरु, एहि विधि थापहिं दूजा ॥  
 राम कृष्ण संग शक्ति जो कहिए, ज्ञान कथा उन्हि गीता ।  
 माया प्रचंड बड़ी जग माहीं, एहि विधि सभके जीता ॥  
 सुर नर मुनि के कौन चालवे, भगत जगत है केता ।  
 दोय बैल का हर बना है, बीज बोया सभ खेता ॥  
 आवे जाय जगत की माया, येहि विधि सब कोई लोभा ।  
 कहें 'दरिया' धन्य धन्य वोय साहब, तहां शक्ति नहिं शोभा ॥

( १० )

तेरो कपड़ा नाहीं अनाज ।  
 दया करें बरिसे जब पानी, तबे बने सब साज ॥  
 कंचा पिंड कंचन में लागा, बचन भया सभ भोरा ।  
 कठिन काल आवै सर साजै, तब नाहिं फौज बटोरा ॥  
 खरचहु खाहु दया करु प्राणी, परसहु सतगुरु पांव ।  
 मानुष जनम दुर्लभ है भाई, फिरि नाहिं ऐसो दाव ॥  
 मैं मैं करत महल के भीतर, ममता बेइलि कुगंधा ।  
 छीनि लेहिं तब छेके ना कोई, कलपि मरहुगे अंधा ॥  
 बही बही मुवा बैल की नाई, घरही कोस पचासा ।  
 फिरे फिरंग फहम नाहिं आवै, एहि विधि करे तमासा ॥  
 संत नकीब कहें निसु वासर, सुनो श्रवन सत बाता ।  
 कहें 'दरिया' दर खोजहु प्राणी जेव द्रुम होत निपाता ॥

( ११ )

जग में परी धंधारी शूला ।

अक्षय वृक्ष को मरम न जाने, डार पात फूला ॥

मूल एक डार छितराना, वामे पत्र अनंता ।

तामें भँवरा भरमन लागा, वा फूल नाहिं जनंता ॥

निरंकार अंकार नाहिं चिन्हा, भव भागर में भीना ।

धीमर जाल झीन अति डारेव, बाँझेव मागुर मीना ॥

रमा राम रमे सभ माहीं, वोये साहब नाहिं रमिता ।

वोय तो न्यारे न्यारे कहिये, जीव मन जग में प्रेता ॥

ए बढ़ये एक मंजिल बनाया, विपरिन्ह भांतिन्ह छाया ।

बुंद बुला तन बिलैमान भौ, घर धर आगि लगाया ॥

तब कहा सो अब कहा है, वेद बनौरी गाया ।

कहें 'दरिया' दरपन को सुन्दरि, को कहु पकरि ले आया ॥

साधो सरह

( १ )

साधो शब्द अंकुरी बूझै ।

काशी माँह जो भये कबीरा, ताको, ज्ञानहिं सुझै ॥

विकल्प वृक्ष काया है जाको, अजर नाम सत कहिया ।

साखी शब्द कहे नाहिं कबहीं, सो जिन्दा जग लहिया ॥

देह धरे सो ज्ञान कथतु है, सौच झूठ सो भाखे ।

पोथी पत्रा है बहु तेरा, नाम अमिय कोई चाखे ॥

त्वचा ज्ञान काम जग नाहीं, अरुझे माला धारी ।

भेष विडंबना बहुत बनावे, डस गई नागिनि कारी ॥

कीचड़ में एक मेढ़क होते, बात कहे बहु तेरा ।

झपटा कागा ताहि धरि खाइसि, किन्हा यम पुर डेरा ॥

भग से आये भग में जइहो, छोड़ो चित चतुराई ।

काल के हाथे पटका खइहो, कहें 'दरिया' समुझाई ॥

( २ )

साधो यह भगतों की बातें ।

भग नहिं चिन्हहिं भाव सभ करही, मोहनी माया सो घाते ॥

काया कोट कागज की पुतरी, बुन्द परे भीहिलाई ।

विलयमान होई जैबहु कहवाँ, गुरु शिष्य काले खाई ॥  
 कन्द्रप कहे निकंद न होई, सपने बिन्द जो झरना ॥  
 नयन रूप मँह रहे समाई, उल्टा कुम्भ न भरना ॥  
 छेरि उलटि गीगे धरि खाई, विषय सरोवर साथ ॥  
 मन मकरंद का दोस है भाई, बसे सभन्हि के माथा ॥  
 भव सागर यह भमग की मोटरी, उभि चुभि गोता खाता ॥  
 नाव भला पर केवट नाही, एहिं विधि भव में जाता ॥  
 नीर क्षरी का मर्म न जानहिं, केहिं विधि होहिं निमेरा ॥  
 कहें 'दरिया' तुम भाजु भजन ते, बूड़े भेष घनेरा ॥

( ३ )

साधो हर के पीछे भगता ॥  
 तह-तह करते जन्म सिरानी, मरि गयो सभ जगता ॥  
 जीव दहन करि दरद कहाँ ते, दया गोसाई कैसा ॥  
 अघ पातक में कर्म कमाते, है जैसा का तैसा ॥  
 घर के छोड़ि भये बैरागी, कृषि कर्म हमारा ॥  
 बछरा गाय बिलगि करि बाधहिं, किछु-किछु देहिं अहारा ॥  
 काँध कुदारी बड़े बाकुरे, गर में बाँधहिं माला ॥  
 कथनी अमृत करनी विषि के, बहुत बजावहिं गाला ॥  
 जैसे रोर बटेर जंगल में, सोर लगावहिं निसा ॥  
 भक्ति भाव की मर्म ना जानहिं, बहुते बुद्धि छतीसा ॥  
 काया कबीर औ हंस कबीरा, दोनों करते झगरा ॥  
 कहें 'दरिया' यह मन की अझूरन, बिनु फंदे ज्यों बगरा ॥

( ४ )

साधो कबीरा सकल पसारा ॥  
 कबीरा जोरे बहुत बनौरी, कबीरे कबित उचारा ॥  
 कबीरा वेद कितेबहिं गावे, कबीरा योग दिढ़ावे ॥  
 कबीरा गोफा सोफा में पैठे, कबीरा नाटक लावे ॥  
 कबीरा तीरथ ब्रत के धावे, कबीरा भेष बनावे ॥  
 कबीरा नाँचे कबीरा गावे, कबीरा ताल बजावे ॥  
 कबीरा निर्गुण सगुण के ध्यावे, कबीरा राग मचावे ॥



कबीर कर्म काया में कर्ता, काल दसा लव लावे ॥  
 कबीरा चोर साहु है कबीरा, कबीरा दास कहावे ॥  
 कबीरा कृतम कौतुक लावे, कबीरा संख बजावे ॥  
 कबीरा गुरु करे गुरुवाई, अवघट घाट लखावे ॥  
 कहे 'दरिया' जब कबीरहिं चिन्हे, तब कबीर गुण गावे ॥

( ५ )

साधो: कबीरा राम डोरी में लागा ।  
 जब धैचे तब हुकुम जोगावे, सोवत उठि के जागा ॥  
 कातत-कातत जन्म सिराना, काति लिहंसी ऐना ।  
 पुरिया लम्बी ताना यह बकीरे, एक पलक नहिं चैना ॥  
 बिथुरि बिथुरि के बिथुरि कीन्हों, माड़ी माड़ बनाया ।  
 कबीरा काया कर्म में कर्ता, धन के लेव लगाया ॥  
 दसरथ सुत जो भये जोलाहा, करिगह एक बनाया ।  
 तेहिं करिगह में पाँच प्रानी, तनत बिनत दुःख पाया ॥  
 सझुरत सझुरत नाहिं सझूराना, झीना सूत पुराना ।  
 जोरते जोरते जन्म सिराना, टूट परा यह ताना ॥  
 कबीरा की गति कबीरा जाने कबीरहिं मैं पहिचाना ।  
 कहें 'दरिया' वोय दर-दर फीरे, भेष विविध है बाना ॥

( ६ )

जग में कर्म कृषि वाँम ।  
 शक्ति माया सोक सागर, बड़ा मीठो काम ॥  
 तिलक माला सहज किन्हा, हर बैल औ खेत ।  
 जीव बधन तैं करत प्रानी, मानुष से भौ प्रेत ॥  
 दिवस रजनी नृत्य करते, झाल झारहिं प्रीति ।  
 भेष बहु विधि भर्म बाजी, वाहिं की प्रतीति ॥  
 देन लेन यह बहुत करते, आप मल कह खात ।  
 साँच छोड़ि के झूठ कहते, ऐसहीं मरि जात ॥  
 कहत फिरे मेरी तेरी, किछु नाहिं लिन्हों हाथ ।  
 जासु घर में बोलत डोलत, सो न जइहें साथ ॥  
 देह तो यह खेह होइहें, नेह नाहिं गेह ।

कमल सुखे भँवर उड़ि गौ, बहुत धरि हो देह ॥  
 बाँधिया यम मुसुक कसि के, तप्त शिला डारि ॥  
 काल कर्ता कर्म देखे, विविध भाँतिन मारि ॥  
 साधु कहते स्वाद भीतर, कपट का यह मोट ॥  
 कहें 'दरिया' अहे हीरा, परखिया इमि खोट ॥

( ७ )

भगतों सुनो अमर की बानी ।  
 अमर सदा वोय मरे ना कबहीं, वाकी सीपित बखानी ॥  
 सीता सती यती है केते, इन्ह सभन्हि के खोया ।  
 माया साँपिन नागहिं खाइसि, बाँचे कहाँ तक पोवा ॥  
 महादेव के संग बसतु है, ऐसी गुण की ज्ञाता ।  
 बाधिनि रूप होय ब्रह्मे खाइसि, जाके कहे विधाता ॥  
 काल गोसाई जग में आये, गोपिन संग रंग राता ।  
 वृन्दावन में रास रचो है, एही विधि सभ कोई माता ॥  
 तन छूटे फेरि कहँवा जइहो, जरा मरन है साथी ।  
 कहत फिरे बड़ा गुरु ग्यानी, माया के गुन गाथा ॥  
 "बेवाहा" वोय पुरुष पुराना, दुजा और न कोई ।  
 कहें 'दरिया' हम निश्चय देखा, या जग जात बिगोई ॥

( ८ )

हमने चारो वेद बिचारी ।  
 खाक वाव और आव आतिस है, ऐसा पिन्ड सँवारी ॥  
 बेचुन औ बेनमुन है, वाके रूप न रेखा ।  
 ऐसी वादि तेजहु हे भगतों, यम माँगेगा लेखा ॥  
 हाड़ माँस सी लाद भीतर, तामे कहे गोसाई ।  
 मल मूत्र का झारना झरते, वाकी सिपित बनाई ॥  
 अन्न के टूटे भये बैरागी, चक्की सी चलाई ।  
 पीसते-पीसते चुतर खियाना, घरहुँ की पूँजी गँवाई ॥  
 एही विधि सभके बहिया होते, जल में डारहिं काँटी ।  
 हर बैल के पीछे दवरहीं, भक्ति करत हम वाटी ॥  
 अपना घर में घर बतावे, लोक कहाँ है भाई ।  
 कहें 'दरिया' वोय हंस कबीरा, सो कहवाँ ते आई ॥

( ६ )

अब तुम बहुत चलत हो घाते ।

गवन कहाँ ते कहवाँ जइहो, भगत कहावहु बातें ॥

पढ़ो रमैनी रमा सभन्हि में, भग ते हैं भगवाना ।

पाँच तत्व गुण तीन में नाहीं, वाये तो पुरुष पुराना ॥

येही में उत्पत्ति प्रलय होखे, राम कृष्ण तेहि माँही ।

उलटि जीव जब पीव के देखे, समुझि पकरिहों वाही ॥

मन कर्ता यह जग में वर्ता, मने पढ़ावे गीता ।

आवे जाय जगत की माया, बहुत जन्म होय बीता ॥

घट के भीतर कर्म कमाते, हंस भया नहिं कागा ।

मैन मजीठ चुभा है नीका, समुझि परेगा आगा ॥

कोटि-कोटि है काया कबीरा, अन्त कोई नहिं पावे ।

कहें 'दरिया' यह रहट लगा है, एक बड़े एक आवे ॥

( १० )

भगतन कच्ची बुद्धि बखाना ।

काशी कबीर के काल कहतु है, तुममें काल समाना ॥

काल सोई जेहिं दर्द न व्यापे, बधन करे दिन राती ।

ओय कबीर दया को सागर, बरति रहा बहु भाँति ॥

कृषि कर्म कबहिं नाहिं छूटे, मरकट मूठी बाँधी ।

खुरूपी फरुहा संग लिए हैं, ऐसी भक्ति साधी ॥

काल अहेरी सिर पर फिरे, कहो कहाँ के जइहो ।

हरि बाजी का मर्म न जानों, चौरासी में रहिहो ॥

धर्मदास कंठी नहिं राखा, तोरि दिया ग्रीव फाँसी ।

तुम तो भेष कियो, गश्तिन का, बहुत जीवन को नाँसी ॥

“बेबाहा” बेकिमति जो कहिए, वोय नहिं होहिं कबीरा ।

कहें 'दरिया' जिन्हिं ज्ञान बिचारा, भैगो निर्मल हीरा ॥

( ११ )

यह सभ कहत आपे आप ।

अमर का नहिं भर्म जानत, त्रिविध तीनों ताप ॥

अन्न खावहीं पिवहिं पानी, मशक ऐसी देह ।

हफ्त में चलि जाहुगे फेरि मरे या तन खेह ॥

सात सागर नौ नाड़ी, निर्मल जल है पास ।

इहई भरी पियो भाजन, कहाँ जाते प्यास ॥

घट में साहब मंदिल छायो, बनी बनाई बाट ।

इहई सभ करो सौदा, कहाँ जाते हाट ॥

काहें लघु यह द्रीघ किन्हों, गुरु शिष्य की बात ।

श्वान सूकर सभ में साहब, काहें शीतल तात ॥

लाल तेजि यह काल सुमिरहिं, फंद दिन्हों डारि ।

कहें 'दरिया' ज्ञान बिना, जात भव जल हारि ॥

( १२ )

तुमके काल ठगौरी लागा ।

पुरुष पुरान माया बीच थापहीं, झूठी बातें पागा ॥

भक्त कहावत भक्ति ना जानत, बहु विधि करते साधा ।

ज्यों तेली का बैल घुमरिया, आँखिन पट्टा बाँधा ॥

आपु ठगा फेरि और ठगाया, है चोर दियाने फाँसी ।

तीन लोक माया के भीतर, तुम कहवाँ के बासी ॥

चतुराई यह चरख फिरावे, दर-दर ददरी धावे ।

काल अहेरि सिर पर फिरे, मरकट बाँधि नचावे ॥

साँच झूठ किछु परिचय नाहीं, कहत फिरे हम ज्ञाता ।

पाँच सात के गोहने लावहीं, वोहित जल में राता ॥

लोक वेद किछु नाहीं भाषहिं, देह छूटे कहाँ जइहो ।

कहे 'दरिया' यह काल तमाँचा, चौरासी में रहिहो ॥

( १३ )

अब तुम तो विषय बेइली अरुझाना ।

अमर बेइलि है सुख के सागर, स्वेत ध्वजा फहराना ॥

स्वाद लेवे और साधु कहावहिं, स्वाद गये तब साधा ।

प्रभु कहते नहिं प्रभु पहिचाना, पकड़ि धोवी घर बाँधा ॥

लादी लाद गया यह घाटे, खर के छाँदे छाँदा ।

बहुत बंधन में तु भी अटके, यम जालिम ने राँदा ॥

कहत फिरे मेरे घर मुक्ति, मुक्ति भुक्ति के दाता ।

कृषि करिके अन्न बटोरहिं, बहुत जीवन के घाता ॥

तुम्हरे घर बसे कलवारिनि, मद माया से माते ।  
 ऊपर उज्ज्वल भीतर है करिया, ठोर चलावे घाते ॥  
 हंस कबीर के बंस कहावहिं, भले बने बैरागी ।  
 कहें 'दरिया' यह राम रमैनी, एहिं विधि शब्दहिं पागी ॥

( १४ )

अब तुम भली ठगौरी डारी ।  
 दुवो वोर झुनुका झून-झून बाजे, तहाँ दीपक लेई बारी ॥  
 आपु ठगा फेरि और ठगा है, भक्ति ठगा है काले ।  
 छिटिका परा छटकी कहाँ जइहो, मीन बझा है जाले ॥  
 भले साधु है राम दोहाई, साधु बैल की पीछा ।  
 गावहीं बनौरी बन नहिं सुझै, देहिं सभन्हि के दीक्षा ॥  
 आपे थापे यम से काँपै, घरहीं पुरुष बतावे ।  
 घर जरे तब घूर बूतावे, एहि विधि यम पुर जावे ॥  
 मम हो कर्ता जग में बरता, दुजा कहाँ है साँई ।  
 कष्ट परा छपटाने लागा, छेरि-छेरि मरा गोसाई ॥  
 बेड़ा टूटा सभ कल छूटा, यम ने फन्द पसारी ।  
 कहें 'दरिया' यह काल तमाचा, अपने आप बिसारी ॥

( १५ )

ऐसो सुनो भगतन यह बातें ।  
 हर बैल नहिं तुमको चाहिए, वोयल परेगा घाते ॥  
 हर के पीछे जीवन सिरने, नहीं दरद है बातें ।  
 एता जीव तुम दहन किया है, सो तुम अन्न के खाते ॥  
 साँच छोडि यह झूठ बड़ाई, मद माया ते माते ।  
 चीन्हे बिना तुम बहुत भुलाना, चौरासी में राते ॥  
 लेन देन यह ब्याज बढ़ावे है, ऐसा गुण में राते ।  
 भीतर भरी भँगार भर्म की, ऊपर माजत गाते ॥  
 मोर पंख यह बहुत सुन्दर है, ऐसा भेष सोहाते ।  
 झाल मदरिया झाय झाय बाजे, एहू शब्द दुराते ॥  
 साधु कहावहिं स्वाद न छोड़हिं मुँख ताम्बूले राते ।  
 कहें 'दरिया' औरत को रंग है, ज्यों मेहदी की पाते ॥

( १६ )

ऐसो बड़े भगत हैं पाजी ।

भग के त्यागि माया के त्यागो, साहेब को करु राजी ॥

गाँठी माया जतन करी राखे, गृहि तेजि भये उदासी ।

हर बैल के संग्रह करते, हम सुमिरहिं अविनासी ॥

रोग हुआ तब लोहा से दागे, दगा हुआ सिर भारी ।

आन बैल बेसाहि ले आवहीं, कौन्हीं खोदी-खोदी मारी ॥

पुरातन पेड़ बिनसे नहिं कबहीं, यह द्रुम होत निपाता ।

आवे जाय बिगरूचै ऐसे, मद माया से माता ॥

प्रसाद मिले आत्म के पोखे, कपड़ा तन भरि दीजै ।

फक्का फकर फकीरी सोई है एही विधि अमृत पीजै ॥

झूठ कहे झूठा है सोई, साँच कहे सो साँचा ।

कहें 'दरिया' यह काल तमाचा, फूटि गौ बर्तन काँचा ॥

( १७ )

ऐसो राम रटन का रटिये ।

रटत फिरे बहुते बैरागी, काह बड़े का घटिये ॥

पाखंड भेष धरे मन मूरख, सापीनि सागर झकिए ।

औधा ज्ञान कथ बड़ वक्ता, झूठी बातन हकिये ॥

साखी शब्द सुन्दर बहु गावे, जाय-जाय द्वारे नचिए ।

भगन भया दुनियाँ के ठाकुर, मन माया में मचिए ॥

साधु न चिन्हहिं स्वाद बखानहिं, पुजहिं भूत बैताला ।

कागा काछिया भेष धरे है, भागे देखि मराला ॥

पींगल छंद करहिं प्रबंधे, कबीत रस की खानी ।

वा रस बुड़े बुड़त ना निकले, ताकी जग में मानी ॥

साँच कहे तो हर केहु खीझं, झूठ सभे हितकारी ।

कहे 'दरिया' गुरु ज्ञान बिचारे, सत्य वचन नहिं गारी ॥

( १८ )

तेरी भक्ति हँसी न खेली ।

तिलक माला से तरे न कोई काह बांधे ग्रीव शेली ॥

नाचे काछे ताल बजावे, और चिकनी बहु बातें ।

जैसा नाँचे तैसा काँछे, दुरि करहु बहु घाते ॥

का भौ माथ मुड़ाये चिकने, क्या चिकुर सिर राखे ।  
 क्या मुनि मुन्द्रा कान फराये, क्या मौनी मुँदि आँखे ॥  
 क्या मुख मुरली टेरी सुनावे, वृन्दावन बसु गोपी ॥  
 कहा धतुरा भाँग बुकावे, मन मत भाव तरंगा ।  
 क्या तीर्थ ब्रत के धावे, काह पखारत अंगा ॥  
 क्या आखर के अर्थ बिचारे, क्या गीता पढ़ी बानी ।  
 अपने अंधा आगु ना सुझै, बुढ़ि मुवे बिनु पानी ॥  
 क्या गोफा सोफा में पैटे, काह पवन के साधे ।  
 साधत तन फेरि भया असाधि, ताहि पकड़ि यम बाँधे ॥  
 रहे सम्भारे चले बिचारे, निर्मल पद कह राता ।  
 संशय सागर दुरि करि योगी, कहें 'दरिया' सत बाता ॥

( १६ )

अब तुम दिल की कंठी राखो ।  
 दिल की कंठी टूटे न कबहीं, एही विधि अमृत चाखो ॥  
 यही सुरति पोवो निशि वासर, गनि-गनि वाके गाँथो ।  
 दसो द्वार औ नवो नाटिका, काल कुबुद्धि धरि नाँथो ॥  
 गुदरी ज्ञान फटै नहिं कबहीं, झीन-झीन टोप ही टाको ।  
 बकस दिया सिर ताज बिराजे, अजर नाम है वाको ॥  
 जिकिर करो सभ फीकिर मेटेगा, दीदम दर्शन पावो ।  
 एही सिकिल करो निसि बासर, मुरुचा मैलि छोड़ावो ॥  
 गलताई गरकाब कहावे, गहरि सीपित सुनावो ।  
 नौवति निसान तख्त के आगे, आम खास में आवो ॥  
 एही अकूफ साहब कहि दीन्हा, जो यह शब्द समोवे ।  
 कहें 'दरिया' यह छपा सनदि है, मैली कबहीं न होवे ॥

( २० )

अब तुम दिल का मुरुचा धोवो ।  
 यह तो प्रान बाहर होय खेले, फेरि पीछे जनि रावो ॥  
 दोड़ो गाँठ कपट का ओटा वा घट पैठी नहाई ।  
 त्रिवेणी जहाँ निर्मल जल है, मंजन मैल सफाई ॥  
 मैल मंजीठ रंग सब छूटे, सत का साबुन लइहो ।  
 करो काक भया जब स्वेता, तब हंसा गति पइहो ॥

महा चित्र में चित चुभा है, वा चित मैलि न सोई ।  
 झीं-झीं जंतर तहवाँ बाजै, शब्द अनाहद होई ॥  
 ऐना सिकिल करो निसु बासर, निर्मल ज्योति जगैहो ।  
 अगम निगम तब सुझि परेगा, बहुरि न भव जल अइहो ॥  
 सतगुरु पदुम पदारथ पद है, वाही पद अनुरागो ।  
 कहें 'दरिया' तब समुझि परेगा, प्रेम युक्ति निजु पागो ॥  
 ( २१ )

ऐसी कवन भक्ति भगवंता ।  
 भक्त कहावहिं भक्ति ना जानत, दूढ़त मन अनन्ता ॥  
 गीता पढ़ि मीत के चिन्हा, प्रीति जगत में कीन्हा ।  
 कर्ता कवन काल केहि कहिए, जाल झीनि के बीना ॥  
 आतम घात दया नहिं दीपक, घर अँधियारे सोया ।  
 साहु के माल चोर हरि लिन्हा, फेरि पीछे क्यों रोया ॥  
 गुरु ज्ञान कान में दीन्हा, मंत्र गायत्री सोई ।  
 शक्ति के संग रंग में माते, जन्म पदारथ खोई ॥  
 पंडित कहे पाठ हम किन्हा, औ षट कर्म पुनीता ।  
 गर्जत फिरे गर्व के माते, सो जीव यम ने जीता ॥  
 सतगुरु खोज करहु मन मूरख ममिता मद के त्यागो ।  
 कहे 'दरिया' दर देखि परेगा, येहि विधि जग में जागो ॥  
 ( २२ )

गृही में कृषि करते दास ।  
 आप खावहिं साधु सेवा, ध्यान सतगुरु पास ॥  
 मातु पिता भाई भगिनी, जाति बन्धन कीन्हा ।  
 शादी गर्मी कर्म करते, पंच में परमीन्हा ॥  
 ब्राह्मण भिक्षुक भांट जेते, मांगहि जो आय ।  
 माया भीतर दाया ऊपजे, देय के कछु खाय ॥  
 भक्ति करते जक्त माँही, ऐसही गुण जान ।  
 कहें 'दरिया' दाया सतगुरु, ज्ञान लीजै मान ॥  
 ( २३ )

इह सभ सायरी कवि कथा ।  
 दधि मथि धृत साधु लिन्हों, छाछी को गुन गाथा ॥



वेद मथी वेदांत कीन्हो, भागवत मथि गीता ।  
 गीता मथि के सार कीन्हों, ताहि जग नाहिं हीता ॥  
 नीर क्षरी दुनो संग संसृत, भेद ता बीच राखा ।  
 करहीं विवरन हंस की गति, खैचि जल कह चाखा ॥  
 जीव बुद्धि विकार व्यापिक, संगम सलिता आहा ।  
 पारखी जन जौहर जानहिं, धैचि ज्ञानहिं गाहा ॥  
 कुजल मस्तक होत मुक्ता, चुंगल पार लागा ।  
 बिना पारस मणि ना उपजै, ऐसहीं जन जागा ॥  
 खोजहु सतगुरु युक्ति जानहिं, मुक्ति की गति सोऐ ।  
 कहें 'दरिया' चुम्कब, करम गांसी खोये ॥

## शब्द औघड़ शरह

(१)

ऐसो कौन गुन है सार।

अनाथ सो सनाथ कहते, नाथ कहिये वार॥

पीवहीं अमरी अमर कहते, बजरी बजर अंग।

अजर अमर काहु न देखा, काल करते भंग॥

सर्व माँस यह भक्ष करते, गाय शूकर गीद्ध।

मानुषा तन खाय के यह, भया अघोरी सिद्ध॥

सर्व भग यह भोग करते, बीज करते पान।

वेद से यह अतित गुण है, ऐसही प्रधान॥

पवन पानी अग्नि कहिए, तीनों का गुण भिन्न।

अग्नि में स्नान करते, जैसे जल में मीन॥

दुआ देहीं श्राप काहु, डर खाते लोग।

कहे 'दरिया' काल दीसे, महा नरक अघोर॥

(२)

तुमके साधु कहीं की चुलटा।

काले काले फिरे जंगल में, प्रगट कहीं उलटा॥

जहाँ जहाँ जीव है तहाँ मन है, एव सकल जग बंधा।

निकट रेहे कोई मरम न जाने, हो मृतक तुम अंधा॥

है यह निकट बिकट किमि कहिए, प्रगट सब जग छाया।

बहु बानी तहाँ मन कर्ता है, सामर्थ कहि कहि गाया॥

वेद पढ़ो तो तुमहीं पंडित, दान करो तो दाना।

तुम्हरी बात बूझा हम नीके, करो जीवन कहँ घाता॥

योग करो तो महा योगीश्वर, भोग करो तो भोगी।

स्वर्ग नरक यह दोनों बना है, खाट परे भौ रोगी॥

यहाँ हंस तहाँ निर्मल मोती, जहाँ कुबुद्धि तहाँ कागा ।  
कहे 'दरिया' कोई शब्द विवेकी, राम भजन ते भागा ॥

### शब्द अवधू शरह

(१)

अवधू ऐसा ज्ञान समोई ।

जो कोई गुरु ज्ञानी बूझै, सोई शब्द बिलोई ॥  
सिंह स्यारहिं प्रीति भयो है, दादुल सर्प समोई ।  
सुगना पोसि बिल्ली घर राखा, यह अचरज बड़ भाई ॥  
छागर एक साधु ने खाया, ब्राह्मण खायस गायी ।  
चिरुई के भात चुल्हि ने खायी, दाल जो हँसी ठठाई ॥  
पर्वत बुड़े भूमि नहिं भीजै, कादो बकुलहिं खाई ।  
मच्छा एक छप्पर पर कूदे, अग्नि के ताव देखाई ॥  
सुमेर सुई में आनि समाना, वाके कछु नहिं संका ।  
नदी सुखानी प्यास ओरानी, टूटि गयो गढ़ बंका ॥  
जो यह बूझै परम पद पावे, पर्वत गया बिहराई ।  
कहे 'दरिया' गुन टूट परा है, तीर लगा तब जाई ॥

(२)

अवधू ऐसो शोक के सागर ।

आगर सभते ज्ञान बिराजै, यह तो है भव सागर ॥  
योग करते योगी थाके, भोग करते भोगी ।  
ज्ञान बिना मुनिवर थाके, भै गौ सब कोई रोगी ॥  
दान करते दानी थारके, राज्य करते राजा ।  
वेद पढ़ते पंडित थाके, गणिका के नहिं लाजा ॥  
बैल थाके हरवाह भी थो, धरती हँसि के बोले ।  
सभ घट काल कलोलह खेले, बिनु पगु जग में डोले ॥  
ब्रह्मा ष्णिु महेश्वर थाके, त्रिगुण राम कन्हारि ।  
तीन लोक में आगि लगी है, भागि कहाँ अब जाई ॥

सतगुरु खोज करे जो कोई, सत के नाव बिराजै ।  
कहे 'दरिया' टूटे नहिं फाटे, बिनु गुन जग में छाजै ॥

(३)

अवणू कह सुने क्या होई ।  
जो कोई शब्द अनाहद बूझै, गुरु ज्ञानी है सोई ॥  
थाके बाट चलत ना थाके, थाके मुनिवर लोई ।  
प्यास वाला के मिले ना पानी, अन प्यासे जल वोई ॥  
पहिले बीज फूल तब फल लागे, फूल देखि बीज नसाई ।  
जहाँ बास तहाँ भँवरा नहीं, अनबासे लपटाई ॥  
जहाँ गगन तहाँ पवन न पानी, चाँद सूर्य का मेला ।  
जहाँ सूर्य तहाँ तारा नहीं, यहि विधि अविगति खेला ॥  
जहाँ स्वरूप तब रूप ना देखे, जहाँ छाँह तहाँ धूपा ।  
बिनु जल नदिया मच्छठ बियानी, एक वक्ता एक चूपा ॥  
वृक्ष एक तैतीस तन लागा, अमृत फल बिनु बीया ।  
कहे 'दरिया' कोई संत विवेकी, मूअत उठि के जीया ॥

(४)

अवधू वेद बड़ा जग भारी ।  
मन मुख किछु तीनों कोना, त्रिगुण फंद पसारी ॥  
तीन कनौसी तीनों कोना, त्रय विद्या उचारी ।  
वाका भेद लखे नहिं कोई, आनि ठगौरी डारी ॥  
एक पालै एक प्रलय करई, एक है आतम धारी ।  
जिन्हिं यह पालेयो तीनहिं खायो, मंगल गावहिं नारी ॥  
साहु पइसे, चोर के घर में, दीपक लिन्हो बारी ।  
हाँथ पसारे फोकट बाझा, भरि मुख लागा कारी ॥  
अवन पवन दुई बहे बतासा, पर्वत तीन पौनारी ।  
शिष्य चले गुरु के मारग, चून लिन्हों फूलवारी ॥  
योगी भोगी मुक्ति बतावे, जंतर मंतर डारी ।  
कहे 'दरिया' दर्पण जब फूटा, बहिरे रोय पुकारी ॥

(५)

अवधू यह मुर्दे का गाँव ।

योगी यती तपे सन्यासी, मरि गयो एहि ठाँव ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर मरि गौ, सनकादिक जो कहिए ।

गौरी गणपति फणिपति मरि गौ, अचल ब्रह्म को लहिए ॥

मच्छ कच्छ औ ब्राह्म स्वरूपी, बावन सो मरि गैऊ ।

राम कृष्ण सीता पति कहिए, मरि मरि या जग भैयऊ ॥

कोटि पैगम्बर पीर औलिया, गोरि कफन बिच गैऊ ।

नेकि बदी कागज जग मताहीं, मरि मरि या जग भैऊ ॥

मुवा सभे खोजो यह काके, ऐसा जग है बौरा ।

आपन थीत चिन्हे नहिं मूरख, तीरथ में क्या दौरा ॥

धोखा या जग मारि उड़ाया, धोखा कोई न मारा ।

वेद कितेबे देखा दिल 'दरिया' उत्पति परलय डारा ॥

(६)

अवधू निर्गुण कहि कहि जगत भुलाना, वा गुण कासे कहिए ।

वागुण यह गुण करो बिचारा, भव सागर नहिं बहिए ॥

वह गुण अजर जरे नहिं कबहीं, वाकी छवि जग छाई ।

निर्गुण सगुण दोनों से न्यारा, यह गमि बिरले पाई ॥

वेद पढ़ि पढ़ि पंडित थाके, योगी धरि धर ध्याना ।

तप के साधत तपसी थाके, वा घर काहु न जाना ॥

बिनु पग चले सीस बिनु डोले, बिनु रसना गुण गावे ।

वाका सनदि लखे नहिं कोई, फेरि भव सागर आवे ॥

सौदा करहिं साधु नहिं चिन्हहिं, घृत बिनु छाँछि बिकाना ।

गुरु शिष्य दोनों बाँधे मरि गौ, अंतकाल पछताना ॥

गुड़ देखाई ईट मुख मारै, यह मत काले किन्हा ।

कहे 'दरिया' दर्पण का दर्शन, सो गुण रहित न चिन्हौ ॥

(७)

अवधू सो योगी गुरु मेरा, जो यह पद का करे निमेरा ।

सुरति निरति में प्रेम मगन भौ, अगम अगाधि अपारा ।  
 अजरा ज्योति अमर पुर गाऊँ, समुझि करहु बिचारा ॥  
 ब्रिकसित बारिज बानी निकले, भवन दीपक उजियारा ।  
 अझा झरे अमि रस उहवाँ, कंचन कलस सँवारा ॥  
 श्वेत मंडल ध्वजा सिर शोभै, सहस्र कमल दल फूला ।  
 श्वेत वरण भँवरा तहाँ बैठे, असंख सूर्य एक मूला ॥  
 चाँद सूरज के गमि नहि तहवाँ, को करि सके बखाना ।  
 सत साहब 'दरिया' दिल देखहु, सुमिरहु पद निर्वाना ॥

(८)

अवधू शब्दहीं करो बिचारा ।

सो पद गहो शरण रहु स्थिर, पारब्रह्म ते न्यारा ॥  
 पारब्रह्म यह वारे लटका, अच्युता चूत में डूबा ।  
 अबिनासी हम बिनसत देखा, अचल नहीं चल फूटा ॥  
 बींदरी कहे विधि तेहि लूटा, और जहाँ तक पोवा ।  
 नाथ नाथी के कैद कियो है, इन्द्र मेहेशहिं खोवा ॥  
 बड़ बड़ गिद्ध पकड़ि के बाँधा, किमि करि पर फहरायो ।  
 चुँगत चारा जमि पर रहेऊ, उड़ि कहाँ तुम धायो ॥  
 एक शरण सतगुरु को जानो, सो तुम कीमि करि जायो ।  
 वार पार यह रहट लगा है, एक बूड़े एक आयो ॥  
 सतगुरु शब्द साधि जब आवे, वार पार ते भीना ।  
 कहे 'दरिया' कोई संत विवेकी, निकलि गया प्रवीना ॥

(९)

अवधू वोय साहब है एका ।

जाको हृद बेहद है थम्भा, शब्दहिं करो विवेका ॥  
 वोय तो आये गये नहिं कबहीं, नहिं गर्भ औतारा ।  
 वह तो जिन्द मुआ ना कबहीं, मुआ यह संसारा ॥  
 शक्ति स्वाद उनके नहिं ब्यापेयो, भग ते यह भगवाना ।  
 इन्ह तो मुरली वेणु बजाया, वह तो पुरुष अमाना ॥

इन्हके तो कमलापति कहिए, वोय तो पति है सभका ।  
 लाख चौकड़ी युग यह बीता, वेद कहाँ है तब का ॥  
 सहस्र भग इन्द्र के भैरु, जानत है सभ कोई ।  
 माया रंग रंगेवो सभानि के, उजला मैला होई ॥  
 उनके रूप रेख उजियारा, बिना रूप किमि गावे ।  
 कहे 'दरिया' मून अनन्त कला है, भेद कोई जन पोवे ॥

### शब्द योग और योगी शरह

( १ )

योग जागे काल भागे कर्म कलि कवलेश छूटे, ।  
 युक्ति योगी जानी ।  
 मेरु डंड के साधि साधे अर्ध लेके उर्ध बाँधे, ।  
 जाप अजपा ठानि ।  
 उन्मुनि मुन्द्र शुन्य मेले, पाप पुन्य ते न्यारा खेले, ।  
 पेलु यम की कानी ।  
 गगन गोफा मन्दिर छायो, त्रिकुटि के महल आयो ।  
 सुरति सुषमनि चिन्हि के ले ब्रह्म को पहचानि ।  
 नाम निर्मल निरखि ले तैं तेजु कुल की कानि ।  
 सत्य शेली संतोष झोरि, कर कमंडल सिद्ध पूरा बोलत अमृत बानी ।  
 गहि ज्ञान डंड नौ खण्ड डोले, अबोल भिच्चा सत्य बोले दरस दया मनि ।  
 कहे 'दरिया' ऐसो योगी युक्ता, युक्ति जानि अचेत चेते समुझि बूझे आनि ॥

( २ )

सोई योग योगा न भोगा न भोगी, विषय रस त्यागि, युक्ति जानु योगी ।  
 धरे दृढ़ आसन पवन को उसासन, गगन भवन जागे न रोगा न रोगी ॥  
 लिए गढ़ बंका देखत काल कंपा, सकल भर्म त्यागी बिरह राग रागी ।  
 अजपा जाप जपि ले कमल दल उलटि ले, फेरे मूल मुन्द्र सुरति योग जागी ॥  
 सुरति सुन्य पेखा तहाँ शब्द देखा, गगन झरि, झारु झमके जो मोती चमकन जो लागी ।  
 सोई जन जाने जौहरि पहिचाने, सोई दिल सच्चा जगत जन बागी ॥  
 भया थीर थक्का कहो भेद बंका, कोई मर्द कसि ले माया मोह त्यागी ।  
 कहे 'दरिया' पुकारे जगत ढोल मारे, सोई जन जागे बिरह लगन लागी ॥

( ३ )

यह सब योग करते अवर ।  
 पवन के नहिं मरम जानहिं बसत कौनि ठवर ॥  
 पैठि गोफा पवन साधे, करे सबकी जवर ।  
 मूल मंगल काम थाना, कहाँ वाकी पवन ॥  
 बाँधि आसन निन्द साधे, सुरति सुषमनि मवर ।  
 प्रकृति झालरि लागु पलकहिं, जहाँ जाकी दवर ॥





काया कर्म यह भस्म कर, ब्रह्म अग्नि में सोहुनियाँ ।  
कहे 'दरिया' करू दर्शन परसन, तरक किया जिन्हिं यह दुनियाँ ॥

( ७ )

ऐसो योगी योग युक्ति जानहिं, भजहिं निर्मल ज्ञान ।  
सुनत ध्वनि उन्मुनि पलटे, विमल ब्रह्म अमान ॥  
जाप अजपा जपहु ज्ञानी, सुरति सुषमनि तान ।  
इंगला पिंगला दोनों नाड़ी, रहत एक ठेकान ॥  
बंकनाल तहाँ षोड़स कमल, भँवर बास अमान ।  
चुवत अमि ज्योति जगमग, भँवर बास अमान ।  
चुवत अमि ज्योति जगमग, भँवर गोफा ध्यान ॥  
अर्ध-उर्ध गगन गरजत, बुन्द सिन्धु समान ।  
झरत झरि तहाँ अगम निर्मल, परम पद निर्वान ॥  
खूले मूल सुबास परिमल, दिव्य दृष्टि एकान ।  
कहें 'दरिया' भेद जानु सतगुरु, दूजा कोई न आन ॥

( ८ )

संतो सीपित कहाँ तक कीजे ।  
गुंगा होय गुंगा सो बूझे, सोई अमि रस पीजे ॥  
सोई चन्द सूर्य है अम्बुज, सोई उन्मनि फूला ।  
सोई अजपा दर्शन देखो, दर्पण दरसे मूला ॥  
सोई त्रिकुटी भँवर गुा है, सहस्र पंखुरी लागा ।  
सोइ इंगला पिंगला कहिये, सोई सुषमना जागा ॥  
सोई छव चक्र काया प्रगट है, योगी खोजि खोजि हारे ।  
सोइ नवो नाटिका कहिए, दसवें काम पुकारे ॥  
प्रेम पत्र अमि जहाँ चूभे, षटरस बीजना चाखे ।  
का भव वेद कथे बहु बानी, जब तक साँच न भाषे ॥  
जल में डार फूल हे बाहर, मन मधुकर जहं बासा ।  
कहें 'दरिया' विरला गमि पावे, पहुँचे "पुरुष" के पासा ॥

( ९ )

ऐसो रावल योगी भाई ।  
सार शब्द बुझो सभ हंसा, कहे सुने बनि आई ॥  
योगी के घर योग नहीं है, योगिनि के घर भाता ।  
चीबा के किछु पात नहीं है, मृगा चुनि चुनि खाता ॥

( १० )

एही विधि रमें अकेला योगी ।

सिद्ध हुआ तब साधक खोजे, दुःख सुख ब्यापे न रोगी ॥

आसन बासन पासे राखे, झोरि झारंग साफा ।

जग में डोले आपुहिं बोले, कतल करे सभ काफा ॥

दस बीस घुँघर बाँधे कोइ, झून-झून बाजन लागा ।

तोरते तोरते एक रहा तब, विषि तेजि अमृत पागा ॥

वासर सोवे रैनि में जागे, चोर मूसे नहिं गोटी ।

ताला कुंजी लागु केवाड़ा, कसि के बाँधु लँगोटी ॥

जहाँ बैठे तहाँ सिंह ठवनि होय, चले सुरति के साथी ।

मस्त हुआ तब रस्त छूटा है, ज्ञान गुरु गहि हाथा ॥

मुक्ति जाने तो मुक्ति सदा है, जब चाहे तब पावे ।

कहे 'दरिया' कोई वलि फकीरा, रण जीते सो जावे ॥

( ११ )

है कोई योगी जग में युक्ता ।

पांजी देखि बाजीगर चिन्हे, बिनु चिन्हें नहिं मुक्ता ॥

पहिले चिन्हे काया गढ़ भीतर, को मौनी को वक्ता ।

तब चिन्हे दसो दरवाजा, चिन्हि परा तब भक्ता ॥

द्वार बंद कर कसे कमाने, तीर अचूक न होई ।

चढ़ि मैदान खोवे ममिता के, वा मद पीवे सोई ॥

सुरति साँगि अव ज्ञान घोड़े पर, मंद कबहिं नहिं होई ।

चाबुक चारु चटाक है सुन्दर, लाँघि परा भव सोई ॥

भया हजूरी निकट दूरि नहिं, विकट कबहिं नहिं जावे ।

सोवत जागत नाम धनी का, एहि विधि पद कहाँ पावे ॥

मगु में मगन आनन्द सदा हैं, मंद कबहिं नहिं होई ।

कहें 'दरिया' कोई बली फकीरा, जिन्हिं दुर्मति कहँ खोई ॥

( १२ )

योगी तेजु हठ निग्रह योग ।

ज्ञान भक्ति बिचार देखो, मीन मांस न भोग ॥

पीयत बारुन बूड़न चाहत, विषम सागर सोय ।

कहर है दरियाव आगें, बहुरि चलिहो रोय ॥

नयन तो दुर्बिन करि ले, चिन्ह देवता प्रेत ।  
 खण्ड खण्ड ब्रह्मांड जेते, सर्व स्वर्ग है स्वेत ॥  
 ज्ञान अंकुश हाँथ करि मन, जंजीर जकरे बाँधि ।  
 हंस की गति निर्मल दासा, मान सरवर खानि ।  
 चोंच खोले जहाँ मुक्ता, नीर क्षीरहिं छान ॥  
 युक्ति जाने मुक्त सोई, भुक्ति सदा साथ ।  
 देखि 'दरिया' दया कीजै, परखु हीरा हाथ ॥

( १३ )

योगी तौला तखनी पूर ।  
 चारि मुन्द्र निन्द चारो, हरफ है ममूर ॥  
 मेरू एके डंड एके, खम्भ है दोय रूप ।  
 अजपा में अजब देखो, बैठु गोफा चूप ॥  
 वायें के तुम उलटि पेखो, बीर बाँके बाँधि ।  
 सपने नहिं वीर्य झरते, निन्द के तुम साधि ॥  
 खाक ते यह पाक हुआ, नूर झलके फूल ।  
 फूल फूले भँवर भूले, शब्द है समतूल ॥  
 तेजि गोफा बाहर खेले, जैसे रण महुँ सूर ।  
 हृद में बेहद देखो, जहाँ बाजत तूर ॥  
 नहिं वोय जोगी नहिं वोय भोगी, भेष नहिं भगवान ।  
 कहें 'दरिया' दरस देखो, पुरुष हैं अमान ॥

( १४ )

संतो योगी ज्ञान बिचारे ।  
 अपने उलटि आपु में देखे, ऐसी सुरति सुधारे ॥  
 वेद पढ़ि ते पंडित बूझे, काया परिचय सोधे ।  
 पाँच तत्व का भेद बतावे, तब यह मन के बोधे ॥  
 नव ग्रह बारह सक्रांति, कहि देव सातो बारा ।  
 जवना घर में ग्रहण लागे, ताको करो बिचारा ॥  
 बिनु कर पत्र कूँआ बिनु पानी, बिनु डोरी के भरिया ।  
 ऊपर मूल साखा है नीचे, कवन युक्ति से ढरिया ॥  
 कहें 'दरिया' सतगुरु की महिमा, युग युग संत है सोई ।  
 ऐसा बचन अपेल ना करिये, बुझो मुनिवर लोई ॥

( १५ )

योगी मोसे पुछहु आई।

जो तुम्हारे घर ज्ञान नहीं है, झूठे योग कमाई॥

मन की युक्ति काम नहीं आवे, उल्टा पल्टा जोरे।

बिनु कनहरिया नाव न चलिहैं, औघट ले के बोरे॥

पाँच तत्व का भेद बतावों, जल थर अग्नि आकाशा।

काया परिचय सोधि देखावों, तब तुम होइ हो दासा॥

सुषमनि नाड़ी भेद बताओं, कहों अमि का घाट।

ऊपर मूल साखा है नीचे, ताकर कहि देव वाट॥

कहें 'दरिया' यह योग युक्ति है, सतगुरु भेद बताया।

सूई अग्र द्वार जहवाँ है, तहवाँ सुरति समया॥

( १६ )

है कोई योगी यह मत पावे।

प्रेम पीवे वलि मस्त कहावे॥

मेरु डंड आसन के साथे, पाँच भुजंगम विषि धर राधे।

गगन मंडल बीच आसिक यारा, योग न जाय तेरी युक्ति पियारा॥

मन गयंद ज्ञान के अंकुश, युक्ति जंजीर लगावे।

नाम अमल ते भै मतवाला, झोक में झोक सो आवे॥

अगम पंथ पगु धीरे-धीरे, ज्ञान रतन लिए आवे।

काम क्रोध दुष्ट भयो हीना, जग जीते सो जावे॥

सतगुरु सनदि लखि जब आवे, सोवत जागत पावे।

कहें 'दरिया' किछु संसय नाहीं, बहुरि न भव जल आवे॥

( १७ )

निर्गुण भेद लखे कोई साधो, सर्व संसय बिसरावे।

नेम धर्म षट कर्म पूजा, क्षण मँह सभे दुरावे॥

इंगला पिंगला सूर्य चन्द्रमा, मूल गगन में छावे।

देखि-देखि दर्शन मन मगन हुआ है, बिनु दीपक ज्याति बरावे।

जपु माली माला नहीं डारे, पल-पल अमि दुहावे।

तैं मैं मेटि गया मद ममिता, दोविधा दूरि बोहावे॥

गुरु के वचन राखो सिर ताजे, राजित अनुभव गावे।

अनहद मुरली किन्नर बाजे, बेहद मता बतावे॥

अखण्डित ब्रह्म पंडित सो ज्ञाता, सोहं सुरति समावे ।  
 ज्ञान रतन लिए डोलता फिरता, अचल मुक्ति सो पावे ॥  
 ज्ञानी ज्ञाता सतगुरु खोजो, निरखि निरंतर ध्यावे ।  
 कहें 'दरिया' दधी मथे जो माखन, बास बिमल तब पावे ॥

( १८ )

योगीया मेरो प्रान अधार हो, आय मिले योगी रावला ।  
 जटुवा बटुवा गेरुवा योगी, नाहिं डाले ग्रीव माल हो ॥  
 बाल न भोला न तरुण-वृद्ध योगी, बोलत बैन रिसाल हो ।  
 प्रेम की गाँसी मारिया योगी, निफर गया उर पार हो ॥  
 जो रे जूझा सो तो निमरा, कोई घायल घुमरत वार हो ।  
 गुरु न चेला न शिव शक्ति योगी, आपहिं अगम अपार हो ॥  
 हेला न मेला न तीरथ व्रत योगी, योगी जगत से न्यार हो ।  
 जो आया सो तो मोहि गया, कोई संत विवेक जागि हो ॥  
 कहें 'दरिया' सुनु योगिनि, तुह योग करु पिया लागि हो ।

शब्द संत शरह

( १ )

संतो यह मत वेद बिचारी ।  
 निर्गुण कहे गुण वाके नाहीं, सब विधि सिक्किलि सँवारी ॥  
 रूप न रेख बिना मुख बोले, बिनु चक्षु दृष्टि पसारी ।  
 बिनु करताल बिना पगु धावे, यह मन की अनुहारी ॥  
 पुरुष नहीं तब नरि कहाँ ते, त्रिदेवा अधिकारी ।  
 वह गुण रहित तो यह गुण कैसे, पाँच तत्व उजियारी ॥  
 येही मता जगत सब माँते, योगी यती सभ झारी ।  
 आवत जात परे भव चक्र में, चढ़ी चरख पर हारी ।  
 वह तो अजर जरे नहिं कबहीं, ऐसो काया करारी ।  
 सत स्वरूप अमरपुर बासी, जल थल दृष्टि पसारी ॥  
 संशय सागर सो नहिं परिहें, जिन्हिं निजु निरखि निहारी ।  
 कहें 'दरिया' सतगुरु गुण ज्ञाता, वा गुरु की बलिहारी ॥

( २ )

संतो लाल फूल बिस्वासी ।

सेमर सेई सुगना पछताना, सोई तीर्थ है काशी ॥

जाके फंद अनंत वाण है, पाहन परसि उपासी ।

ऊपर योग भीतर दहु कैसा, तपसी औ सन्यासी ॥

मन नहीं अटके तन नहीं छटके, घट में शक्ति निवासी ।

टक-टक मौनी महा सिद्ध है, कठिन कर्म की फाँसी ॥

बनिता बनी बनारस की यह, नयन बान सर गाँसी ।

भेष अलेष घायल सभ घुर्महिं, नयन लगी नव लासी ॥

ममिता बेइलि लता लपटाना, भटकि परा चौरासी ॥

सरबस हरहीं सोक नहीं हरहीं, गृहि तेजि होहिं उदासी ।

कहें 'दरिया' नहीं इतते उत है, अगिली पछिली नासी ॥

( ३ )

संतो युहु अमर घर जइये ।

तन मन वारि चढ़ो श्रद्धा से, सो फल अमृत पइये ॥

नारि पुरुष स्वाद बिसरावे, सतगुरु शब्द समइये ।

काम क्रोध मद लोभ त्रिष्णा, यह सभ मैलि छोड़इये ॥

बंकनाल उलटि अजपा करू, गगन गोफा घर छइये ।

अर्ध उर्ध सोहं सुरति, दिव्य दृष्टि में दृष्टि लगइये ॥

स्वेत घटा घन मोती झरी है, निर्मल ज्योति बरइये ।

पुरण ब्रह्म पुनीत उदित भै, बहुरि न भव जल अइये ॥

तहाँ सुख राज बिलास पुहुप पर, अमृत पोषन पइये ।

कहें 'दरिया' दया सतगुरु को पास "पुरुष" के रहिये ॥

( ४ )

संत मत जनि जानहु ऐसा ।

कंद्रप उलटि टीका ब्रह्मंडे, ज्योति प्रकाशे तैसा ॥

मन गयन्द ज्ञान के अंकुश, युक्ति जंजीर लगावे ।

सिंह ठवनि यह बोले ठनकि के, रण जीते सो जावे ॥

राव रंक वीर होय बाँके, कड़ी कमान चढ़ावे ।

लड़े लड़ाकू लाखन महँ एका, तीर अचूक चलावे ॥

झरे अमि यह पीवे प्रेम रस, मलक बीते भरि आवे ।

हुआ मस्त मतवाला यह मद, ममिता गढ़ि ढहावे ॥  
 तन मन वारि लगन लाल से, भाल झमके नूरे ।  
 छकित भया छवि छाय चहुँ ओर, ज्ञान भया भरि पूरे ॥  
 बाजे तबल सो हने गगन में, यह संतन की बातें ।  
 कहें 'दरिया' तब भँवर कमल में, उड़ि कतहिं नहिं जावे ॥

( ५ )

संतो साहब दोष न दीजै, कै करनी अपने संग लीजै ।  
 गढ़ भीतर गढ़ पति राजा, वह चाहे आपन सभ काजा ॥  
 जब गढ़पति अंते जाई, तब गढ़ लिन्हों मन मत राई ।  
 कलि कर्म काम का खोटा, यह बाँधु कर्म का मोटा ॥  
 जब कर्म भया सिर भारा, मब बुड़ि मुआ मझधारा ।  
 यह यम जगति का झेला, इन्ह से कौन करेगा मेला ॥  
 जब ज्ञान खरग ले जागा, तब काटु कर्म का धागा ।  
 गढ़ पर जागत रहु निसि बारा, दशो खिर्की भौ रखवारा ॥  
 जब जागत भै गो भोरा, तब कैसे गढ़ चोरा ।  
 जब जानत जानत जाना, गगन गढ़ स्तेत निसाना ॥  
 निसि बासर गढ़ पर गाजा, तब भयो छत्रपति राजा ।  
 तब जीति सके नहिं कोई सब हुकुम भीतर होई ॥  
 तब छूटे फंद बिकारा, कहें 'दरिया' सत शब्द बिचारा ॥

( ६ )

संतो निर्गुण ते गुण न्यारा ।  
 अक्षय वृक्ष वोय फल फूल लागे, पत्र भया संसारा ।  
 ज्योति स्वरूपी कन्या कहिए, तीन देव दरबारा ।  
 मते मताय अपने पहुँ राखा, झुनुँका फंद पसारा ॥  
 वेद कितेब दोय फंद रचिया, पंक्षी जीव बिचारा ।  
 ललचि लगा यह चट दे बाझा, पट दे ब्याधे मारा ॥  
 धोखा देखि सकल जग दवरे, ऐसा पंथ बिचारा ।  
 जीव भयो मीन धीमर के फंदा, ब्रह्मैं बात बिगारा ॥  
 ऐसो गुरु ठगौरी जग में, ठग ठाकुर व्यवहारा ।  
 घर का खसम बधिक होय लागा, कहहु कवन उपचारा ॥  
 आवत जात परे भव चक में, जल में सिपित पसारा ।

कहें 'दरिया' सुनो संत सुजाना, शब्दहिं करो निरुवारा ॥

( ७ )

संतो ! 'दरिया' बड़ा की हद बड़ा, है केहि में बड़ी समाई ।

वाका भेद बिचारो संतो, 'दरिया' उलंघि ना जाई ॥

जेता जल वर्षे धरती पर, नदी नाला बढ़ियाई ।

सो जल जाय मिला दरिया में, घटे बढे नहिं जाई ॥

काके निन्दों काको बन्दों, दरिया हद बनाई ।

जाके उदर सिन्धु बराबर थह केहु नहिं पाई ॥

दरिया बीच बसे एक टापू, कौतुक कला लगाई ।

वह दरिया जो डगमग होखे, सकल श्रृष्टि बहि जाई ॥

'दरिया' गुरु हम कमल स्वरूपी गुरु गमि ज्ञान लखाई ।

'दरिया' दया दीदारि दरस में, प्रेम प्याला पाई ॥

( ८ )

संतो दर्द बूझेगा कोई ।

दिल दिवाना दर्द हिये जेहिं, सहजे सुरति समोई ॥

निर्गुण सगुण यह दोय कहतु है, कौन अग्नि ते पानी ।

कवन पवन पर शब्द बसतु है, कौन पुहुँच की खानी ॥

निर्गुण मुख रसने नहिं कहिया, सगुण या जग गावे ।

शास्त्र गीता वेद पढ़ि-पढ़ि, सार शब्द नहिं पावे ॥

ज्योति-ज्योति सब ज्योति जपतु है, ज्योतिहिं में निर्वानी ।

एक से अनन्त अंत फेरि एक है, बूझो पंडित ज्ञानी ॥

सुन्य ही के सभ ध्यान धरतु है, पढ़ि पंडित औ काजी ।

कहे 'दरिया' संत शब्द बिचारो नाहिं तो काल के बाजी ॥

( ९ )

है कोई संत विवेकी शब्द बिचारा ।

नाम अमल ते भै मतवाला, प्रेम पीवे तसो प्यारा ॥

अर्ध उर्ध के मध्य मानिक है, करे दृष्टि उजियारा ।

बंकनाल नाभी मे लागा, भँवर गुफा की राह सुधारा ॥

खिंचरी भोंचरी चँचरी अगोचरी, उन्मुनि मुंद्रा धारा ।

सरिता तीन मिलि एक संगम, सुघट भरि भरि सारा ॥

निरा आलम्ब निर्बान मई है, निरबिकार निरधार ।





सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	





सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम</			

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	स		







बुन्द बुला तन विलय मान भौ, सदा बिलग है एका ।  
 त्रिविध ताप सभनि कहें व्यापे, करहु न शब्द विवेका ॥  
 सदा अमर है मरे न कबहीं, अमर दोलइचा बैठा ।  
 आवे जाय खपे सो दूजा, योनि संकट में पैठा ॥  
 है सतवर्ग साधु यह जानहिं, वह फूल अजब अनूपा ।  
 कहें, 'दरिया' वोय मरे न जीवे, सो है त स्वरूपा ॥

( ६ )

सोई निर्मल जेहिं मल नहिं होई ।  
 जागृत जिन्द निन्द नहिं सोवहिं, अघ पातक भ खोई ॥  
 ब्रह्म कहे फिरि विष्णु कहतु हौ, शिव शक्ति संग युक्ता ।  
 सिया राम कहे राधे कृष्ण कहे, वह भी जग में भुक्ता ॥  
 तीन लोक माया बसि जाके, मन बस कबहीं ना जावे ।  
 जाके हाथ पवन औ पानी, निगम गमि नहिं पावे ॥  
 जाके हाथ युक्ति अब मुक्ति, पाप पुन्य नहिं तापा ।  
 जाके हाथ काल की चोटी, कंद्रप के दल काँपा ॥  
 अनन्त कहे मन अनन्त कला है, सभके किन्ह अनाथा ।  
 नाथ कहो नाथे यह फिरहिं, किमि करि होहु सनाथा ॥  
 मन मत ज्ञान कहे कवि केता, उग्र ज्ञान है सोई ।  
 कहें 'दरिया' टकसार ठेकाना, वाके ठगे न कोई ॥

( ७ )

साधे! वह नाम जगत से भिन्ना ।  
 यह तो नाम रखा साधुन ने, जहाँ जहाँ प्रभुता किन्हा ॥  
 वोय रिनमोलिक मालिक सभके, मोल कहाँ तक कीजे ।  
 बेकिमती वोय सिपित कहाँ तक, भव में कबहिं ना भीजे ॥  
 निर्गुण कहे फेरि सगुण कहतु है, निर्गुण सगुण दोय गाया ।  
 साहब कहो तो साहब नाहीं, नायक साहब आया ॥  
 योग करे फेरि भोग में आवे, सोग नहीं मुक्तावे ।  
 रज औ बिन्द नरक की काया, यामें सभ गुन गावे ॥  
 ऐसी अकिलि विवेक कहत है, बिबिध अक्षर में पाया ।  
 राम कबीरा ए भी कहिए, तनवा बिनवा लाया ॥  
 फहम कहो तो फहम कहाँ है, रहम किये रहि आवे ।  
 कहे 'दरिया' बिरला दर जाने, या दर बहुत देखावे ॥

( ६ )

ऐसो नापम कवन गुण गावे ।

आवे जाय जगत की माया, भेद कोई जन पावे ॥

मच्छ न कहिए कच्छ न कहिए, ब्राह्म नहीं बिस्तारा ।

निः कलंकी बावन नहिं कहिए, यह भी है औतारा ॥

नरसिंह रूप यह सिंह सही है, गोप परगट होय आया ।

मन के चरित्र चिन्हे नहिं कोई, हरिणाकुश धरि खाया ॥

आतम राम सकल जीव जानी, सकलो सृष्टि सँवारा ।

लंका विध्वंस कियो रघुनन्दन, सो दसरथ के बारा ॥

गोसाई गोपाल जो कहिए, गोबरधन गिरिधारी ।

वृंदावन में रास रचो हैं, सगुण रूप मुरारी ॥

सामर्थ कहे समर जो किन्हा, अविगति बंदी छोरा ।

चिन्तामणि चेतन जो कहिये, सो चिन्ता जग बोरा ॥

दीन दयाल दयानिधि सागर, आगर मुक्ति बतावे ।

दिन मणि दिन रैन है चन्दा, निसि बासर फेरि आवे ॥

अनन्त कहे फेरि एक कहतु है, निर्गुण सगुण मुरारी ।

कहें 'दरिया' मुनि दर्शन खोजत, थाके शेष पुकारी ॥

( १० )

जो किछु दृष्टि देखन में आवे, सो माया को चिन्हा ।

क्या निर्गुण क्या सगुण कहिए, वोय तो दोय से भिन्हा ॥

चिराग जरे प्रकाश कहाँ ते, बत्ती तेल मिलाया ।

जाकि ज्योति जगत में जाहिर, सो भेद गति बिरले पाया ॥

पारस पखाना पारस जो कहिए, सोना युक्ति बनाया ।

जेहिं पार से पारस हुआ, सोई साधुन गाया ॥

परिमल बास परासहिं बेधत, कहबे को चन्दन हुआ ।

जेहिं पारस से परिमल हुआ, सो कबहिं नहिं मुआ ॥

जो पारस यह भुंगा जाने, कीअ से भुंग बनाया ।

वाका भेद लखे नहिं कोई, आपनी जात मिलाया ॥

जल थल जीव सभनि में व्यापक, वेद कितेबहिं भाषा ।

वाकी सनदि कतहीं नहिं आई, गुप्त अमाने राखा ॥

सनदि परी सतगुरु के पाले, भरमि रहा सभ कोई ।

बिरले उलटि आपु कहँ चिन्हा, हंस विमल मल धोई ॥

सो गुरु ज्ञान सदा सिर ऊपर, जिन्हें यह भेद बताया ।  
कहें 'दरिया' यह कथनी मथनी, बहु प्रकार से गाया ॥

( ११ )

साधो ! वोये अजीत है जीते ना कोई ।  
आवे जाय खपे सो दूजा, हारि जीत में सोई ॥  
उन्ह नहिं लंका सैन चलाया, नहिं सागर को बाँधा ।  
वाण धनुष कर कबहिं नं देखा, बिना धनुष सर साधा ॥  
उन्ह नहिं बलि पताले दिया, नहिं वोय बावन होते ।  
शीव शक्ति कबहिं नहिं युगल, नहिं माया संग सोते ॥  
हिन्द राम तख्त के ऊपर, उहवाँ से पगु ढारी ।  
वार पार उनके नहिं कहिए, सर्व दृष्टि उजियारी ॥  
क्षीर छपा उनके नहिं कहिए, क्षीर पीये नहिं खाता ।  
केते बीर धीर भये धरणी पर, जनमि-जनमि मरि जाता ॥  
है यह सांच झूठ जनि जानो, चतुराई दुरि कीजै ।  
कहें 'दरिया' तो हंस हमारा, भव में कबहिं न भीजै ॥

( १२ )

साधो ! ऐसा ज्ञान प्रकासी ।  
आतमराम जहाँ तक कहिए, सभे पुरुष की दासी ॥  
यह सभ ज्योति 'पुरुष' हहिं निर्मल, नहिं तहाँ काल निवासी ।  
हंस वंस जो होय निरदागा, जाय मिले अविनासी ॥  
सदा अमर है मरे ना कबहिं, नहिं तहाँ शक्ति उपासी ।  
आवे जाय खपे सो दूजा, सो तन काले नासी ॥  
तेजे स्वर्ग नरक के आसा, या तन वे बिस्वासी ।  
है छपलोक सभन्हि ते न्यारा, नहिं तहाँ भूख पियासी ॥  
केते कहे कवि कहे न जाने, वाके रूप न रासी ।  
वह गुण रहित तो यह गुण कैसे, दूढ़त फिरे उदासी ॥  
साँचे कहा झूठ जनि जानहु, साँच कहे दूरि जासी ।  
कहें 'दरिया' दिल दगा दुरि करु, काटि दिहें यम फाँसी ॥

शब्द मट्टी शरह

( १ )

पंडित बूझो मन चितलाई ।

शास्तर वेद पढ़ा तुम गीता, तबहुँ न गुरुगमि आई ॥

गुरुगमि ज्ञान गोता जब मारो, तब निजु खुले केवारा ॥

मनमत भरमत धोखा सब त्यागो, तब छूटे तम बेकारा ॥

आदि मट्टी है अंत मट्टी है, मट्टी सबको रवाना ।

मट्टी सबो रचि बनाया, मट्टी सबको गहना ॥

जल मट्टी है थल मट्टी है, मट्टी सब उपजाया ।

बिना मट्टी कहु कैसे बोले, मट्टी बहु गुन गाया ॥

ब्रह्मा मट्टी विष्णु मट्टी, शंकर ऐसो योगी ।

सहस्र अठासी मुनिवर मट्टी, मट्ट सी सी सीगी ॥

कोटि पैगम्बर मट्टी देखा, मट्ट सब नर धावे ।

बिना मट्टी तुम कहवाँ रहिवो, सो तुम भेद बतावो ॥

एक मट्टी तुम देखकर भर्मा, दूसर मट्ट का गहना ।

जहाँ मट्टी नहिं होखे भाई, तहाँ तुम घर बनाना ॥

मट्टी से ताँबा मट्टी काँसा, चांदी सोना जत लाया ।

हीरा लाल मट्टी जत कहिए, मट्टी सी उपाजाया ॥

अंकुर बीज मट्टी से उपजे, मट्टी आदि भवानी ।

मट्टी देखिके निन्दा करते, सो अन्ध जड़ प्रानी ॥

मट्टी घर घर देखा तमाशा, मट्टी सब कोई लीन्हा ।

आदि मता मेदनी है माया, ताको कोई नहिं चीन्हा ॥

नहिं हम हिन्दू तुरूक नहिं कहिये, हिन्दु तुरूक से न्यारा ।

मिट्टी के जामा पेन्हे देखा, मम तो सदा निनारा ॥

ताको गुन हम चीन्हि, निन्दा करे का होई ।

कहें 'दरिया' नर आपु बिलाना, सुन्दर नर तन खोई ॥

**शब्द साधो शरह**

( १ )

साधो ! धोखा के जग धावे ।

पाहन पानी पति यह किन्हीं, अजहुँ गति नहिं आवे ॥

भेष बनाय तिलक औ माला, शेली गूँथि ग्रीव नावे ।

नाचे गावे ताल बजावे, नट के कला दिखावे ॥

सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम

कथनी कथि के मथनी मथि के, घीत कबहिनं नहिं पावे ।  
छाछि पीवे सो मद मतवाला, बाँधा यमपुर जावे ॥  
साँच छोड़ी यह झूठ मिठाई, रसना स्वाद न पावे ।  
पाप पुन्य के मोटरी सिर पर, येहु जीव जहँड़ावे ॥  
आँधर गुरु बहिर हे चेला, चतुराई से खावे ।  
दोनों पगु में बेरी भरि के, काल घसेटत जावे ॥  
कहत फिरे भला गुरु मेरो, चारो फल गृहि पावे ।  
कहे 'दरिया' तब समुझि परेगा, जब यम मुसुक चढ़ावे ॥

( २ )

साधो माल चाहिये की माला ।  
यह तो माला हाट बिकाला, टूटि परा छितराला ॥  
माल नहीं तो माला पेन्हें, ज्यों रंग परखे चाँदी ।  
कुल्फ करे लोहा के ऊपर, है खोआ फेरि बादी ॥  
खोटा परा जौहरि के पाले, पारखी के घर बीका ।  
सोहं जारि अग्नि के भीतर, कुल्फ निकाले फीका ॥  
छल बाजी कोई साधु बिचारे, बिन्दा है पतिबरता ।  
रूप जलन्धर विष्णु कियो हैं, ताहि घटी वोय धरता ॥  
बिन्दा श्राप दिया मुख बानी, पत्थर भये हरि जानी ।  
दोनों परस्पर भया बरोबर, काठ भयी वोय आनी ॥  
ठग होय जगत ठगा बहु तेरा, नीच कर्म सो नीचा ।  
मारे परे बहुरि फेरि आवे, भव सागर के बीचा ॥  
साँच माल साँच घर लहिया, साँच-साँच होय जाई ।  
कहें 'दरिया' कोई तत्व बिचारे, सतगुरु मत के पाई ॥

( ३ )

साधो ! माल चाहिये की माला ।  
माल नहीं तो माला पेन्हे, परधन ठगे दिवाला ॥  
काल नेमि जो भेष कियो है, माला तिलक सँवारी ।  
कला बाजी क्षण माँह बिलाना, चोर मारा परचारी ॥  
मोर ध्वज के हरि ठगा बनाई, कौन किन्ह उन्हिं कर्मा ।  
इच्छा रूप भोजन उन्हिं ठाने, यही बिचारेयो धर्मा ॥

309

सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम

बड़ा होय छोटा के कर्मा, कनउठ सब जग ठानी ।  
 जेसे बावन बलि के द्वारे, लज्जित भये बरदानी ॥  
 जैसे बर दिन्हों बिन्दा के, माँथ चढ़ावों तोहीं ।  
 गले के हार मैं तोहिं बनइहौं, मोहनी मन मोही ॥  
 मन प्रपंच चिन्हें नहिं कोई सतगुरु कहा बिचारी ।  
 कहें 'दरिया' कोई संत विवेकी, ज्ञान बिना सी हारी ॥

( ४ )

साधो ! दे धक्का दोय अवरा ।  
 समुझाये समुझे नहिं मूरख, ममिता मद है बवरा ॥  
 चार चरण दोय सिंधें होइहैं, घास भुसा के दवरा ।  
 हाटे बाटे पूछे बटोही, लिया बदर यह नवरा ॥  
 सन की डोरी मोहकम बाँधे, भला बरद है धवँरा ।  
 होत प्रातः यह खोल दिया है, जाय पशुवन में जवरा ॥  
 काँध जुवाटे रसरी लागी, हरिसा बना सुढ़वरा ।  
 कर गहि पर हथ चाँपन लागे, बड़ा गर्व है चवरा ॥  
 वृद्ध भया तन दाँत खियाना, पुजै कहाँ तक कवरा ।  
 अरइन खोदक पयनन पीटे, चलहु काहें नहिं दवरा ॥  
 फिरे अनेरा कौआ खोदे बड़ी विपती है तवरा ॥  
 कहें 'दरिया' नर भक्ति बिहूनां, अब तन भया मरवरा ॥

( ५ )

साधो ! दोहरी धक्का दीजै ।  
 बहते को बहि जाने दीजे, चौरासी में भीजै ॥  
 दृग दिया यह नाम पेखन के, पेखे वेश्या नारी ।  
 श्रवण में तेरो झूठ समाना, यम के परा बेगारी ॥  
 नासा वास अग्र यह कहिए, साँच सुगन्ध न भावे ।  
 भीतर भरी भेगार भर्म का, वाका बास जो धावे ॥  
 रसना अमृत खटा मीठा है, मीन माँस रस चाखे ।  
 हरि के दूत फिरे हरिकारा, प्राण छूटे कहाँ राखे ॥  
 दस्त किया यह देन लेन को, ऊपरा बीजहिं बोवे ।  
 साधु सेवा नहिं भोजन भवन में, एहिं विधि सरबस खोवे ॥

संत नकीब नेक जग माहीं, सार शब्द गोहरावे ।  
कहें 'दरिया' भै जरा मरन में, फेरि पाछे पछतावे ॥

( ६ )

साधो ! उल्टी चाल जगत में देखा ।  
उल्टी त्रिया खसम नहिं माने, आपु स्वारथ पेखा ॥  
गाजर मूली बैगन कहिए, अंकुर यत है मूल ।  
ताको पंडित दोस लगावहिं, खावहिं विषया शूला ॥  
गौ तन है त्रेन अहारी, वर्षे अमृत धारा ।  
सो दूध ले देवल पूजहिं, खलरी किन्ह बिकारा ॥  
जो नाहर यह बिधि खातु है, मानुष मारी आहारा ।  
सो बाघम्बर बस्तर किन्हा, भुले भेष अचारा ॥  
कोआ कृमि रेशम वस्त्र विष्टा, पाटम्बर पट भारी ।  
सिया वस्त्र छुतिहा किन्हा, भूले मुढ़ अनारी ॥  
दूमा भेड़ी गड़ेरी के घर, सो तुम किन्ह अछूता ।  
तीन तीन ताग काहे के डारहु, तोरि डारहु यह सूता ॥  
पंडित पेड़ छोड़ि डारु धरि, भरम करम में झूला ।  
टूटा डार पात छितराना, उलटि पलटि परा भव शूला ॥  
संत निंदा वेश्या से प्रीति, विषय फल के चाखे ।  
कहें 'दरिया' साधुन की महिमा, निगम साखी जग राखे ॥

( ७ )

साधो ! आदि अन्त सतगुन लहिया ।  
जाके नयन फूटा अभि अन्तर, सो भव चक में बहिया ॥  
पाचों पंडो राम नाम गहिं, कृष्ण भक्त सो भारी ।  
पंडो कौरव युद्ध कराया, पाप ताहि सिर डारी ॥  
पाप दिन्ह फेरि यक्ष कराया, सो गवाही है चिन्हा ।  
सात कोटि भेष अस्सी हजारा, घंट शब्द नहिं किन्हा ॥  
स्वपच भक्त सत उन्ह जाना, त्रिगुन ज्ञान सो नाहीं ।  
श्री कृष्ण औ भक्त युधिष्ठिर, ताहि पकड़िया बाहीं ॥  
स्वपच आनि जो भोजन कराया, आनन्द मंगल होई ।  
घंट बजा आसमान सुनाया, जानत है सभ कोई ॥

धन्य धन्य सो चरण मनाया, जन जनार्दन सोई ।  
 कहें 'दरिया' सत साबुन को गुन, मैलो उज्ज्वल होई ॥  
 ( ८ )

साधो ! कहाँ कुशल जब भव में आवे ।  
 कुशल परे जब सिफित धनी का, सतगुरु पद के पावे ॥  
 कागज की पुतरी तन जानो, वामें कल छतीसा ।  
 आठो जाम बत्तीसो घरी, जब चाहे जगदीशा ॥  
 काम क्रोध औ लोभ माया बसि, ममिता बेइलि कुगंधा ।  
 एक खड़े एक चले जात है, सुझि परे नहिं अंधा ॥  
 वाम काम औ दाम जतन करी, यह सुख बहुत सोहाई ।  
 पल में प्रलय बाँधु जाहुगे, जब रूठे रघुराई ॥  
 साधु संगति नहिं वृषभ की गति, वा मति कहा बिसराई ।  
 चार चरण दोय सिंधे गूंगा, तब कैसे गुण गाई ॥  
 साखी पुरातम गावे सभ कोई, निगम कहे समुझाई ।  
 कहें 'दरिया' चतुराई चूल्हा, तब अमृत फल पाई ॥  
 ( ९ )

साधो ! चतुराई चित बेधा ।  
 देह तेरी नहिं माया मेरी, ऐसा यम ने सेधा ॥  
 वाही ध्यान धरे निसि वासर, जरद रंगीन सफेदा ।  
 गनि गनि धरे माल है मेरी, भक्ति भाव नहिं भेदा ॥  
 मन मतवाला मगन भया है, ममिता मद के पीवे ।  
 दिल की गाँठि छूटि नहिं कबहिं, काह कुट्टन के जीवे ॥  
 विषि की मोटरी सिर के ऊपर, घर की पूँजी गँवाई ।  
 ब्याज बढ़ावे मल के खावे, अघ पातक में जाई ॥  
 पल-पल क्षण-क्षण घटने लागा, बेगि दूत पठाई ।  
 कागज में कछु बाकी निकला, कसि के मुसुक चढ़ाई ॥  
 लाल फूल विस्वास करतु है, सुगना की मति ऐसी ।  
 कहें 'दरिया' दर भूल परा है, बहुरि बने फेरि कैसी ॥  
 ( १० )

साधो ! ऐसही यम शूल ।



झूठी मूठी मरकट की गति, कीर सेमर फूल ॥  
ज्यों कुरंग देखि रफ को, दुखित जल बिनु पीर ।  
उलटि आवहिं पलटि देखहिं, निकट नाहिं नीर ॥  
मृग मद ते दृग न देखे, भर्मित दूढ़त घास ।  
ऐसहीं नर भरमत फिरत, जात यम के पास ॥  
दपटि केहरि कूप झाकेव, निज प्रतिमा ते चूर ।  
ऐसे जढ़ जन जात जग में, केते कहिये कूर ॥  
चार वेद बिचारू पंडित, चाहिए गुण शील ।  
पाहन परसे दरश कहवाँ, बासना बिनु तील ॥  
रूप रेखा विवेक बिना, भेष भर्मित भवन ।  
कहैं 'दरिया' ऐन महल भुँकि, श्वान प्रानहिं गवन ॥

( ११ )

साधो ! सुनि लीजै एक बाता ।  
साह सोई जो पूरा तौले, रहे मगन मन माता ॥  
उन्मुनि की डंडी कीजै, त्रिवेणी की तानी ।  
एक मन पाँच सेर तौलन लागे, ज्ञान की रासि लदानी ॥  
गगन मंडल बिच रचो चवुतरा, भँवर गोो की घाटे ।  
अजपा जाप दुल्लह है जहवाँ, बिक्री करो ओहि हाटे ॥  
आँख मुदि आँधर जनि होखे, चोर माल ले जाहीं ।  
चकमक झारि दीपक तहाँ लेसो, चैतन्य रहु मन माहीं ॥  
सौदा सुलुफ राखो घर भीतर, जाते यम न डंडे ।  
कहैं 'दरिया' सुनो बोधि बनियाँ, अब जनि करहु पाखंडे ॥

( १२ )

बनियाँ साधु संगति नहीं चीन्हा ।  
इधर उधर ठगता फिरे, निसि दिन रहे मलीना ॥  
पाँच तत्व का जामा पेन्हे, सुन्दर तन है नीका ।  
घाट बाढ़ यह तौलन लागे, येहि विधि यम घर बीका ॥  
बनियाइन आय बगल तर बैठी, पारसी बात सुनाई ।  
आगर दीन्हों सिक्का लिन्हों, टका चार कमाई ॥  
दुनियाँ ठगी संतन कहं ठगा, ऐसा सुम्ह बखीला ।  
जीव जनि मारहु मुसुक चढ़ावहु, आगे तप्त है शीला ॥

कर्मट मुट्टी यह गहि कर लागी, ब्याधा धरि के बाँधा ।  
 थड़ थड़ करि नाचन लागा, छीकुनन्हि मारि मारि साधा ॥  
 इत ते उत है उत ते इत है, यम की साँट संघारी ।  
 कहें 'दरिया' नहिं दोस हमारा, साखी है बनवारी ॥

( १३ )

साधो ! सोई चलन यह चलिये ।  
 जासे खुशी रहे सतगुरु को, कंद्रप दल कहँ दलिये ॥  
 कहन सुनन बग बड़े चातुरे, हलुगे जल में जावे ।  
 देखि के मीन मगन मन नाँचे, चिहुँकि चपल होय धावे ॥  
 कहनी कहे कहन नहिं जाने, जब कथनी बनि आवे ।  
 ताल मृदंग समाज राग को, रघुपति को गुन गावे ॥  
 सभ में जीव ब्रह्म किमि कएि, कमला के पद परसे ।  
 उलटि सुरति जब चले गगन के, तब चन्दा घन दरसे ॥  
 कामिनि की छबि छेके ना कबहीं, छकित हुआ मतवाला ।  
 मति मराल यह लाल सोहावन, बोलत बैन रिसाला ॥  
 काँच महल में श्वान जो परिके, भुँकि-भुँकि प्रान गँवावे ।  
 कहें 'दरिया' जब अटल ज्ञान गढ़, तवे विमल पद पावे ॥

( १४ )

साधो ! भव जल सिन्धु अपारा ।  
 कहि-कहि कवि सभ तामें पैटे, कर्ता को गुण न्यारा ॥  
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पैटे, जगता भगता योगी ।  
 देखा देखी सभ कोई पैटे, राव रंक अब भोगी ॥  
 राम पैटे रावण भी पैटे, पैटे कृष्ण कन्हाई ।  
 ग्वाल बाल गोपी सभ पैटे, पैड़े कंस कसाई ॥  
 वेद पढ़ि पढ़ि पंडित पैटे, कागज को घर कीन्हा ।  
 आवत जात बीचें भहराना, कर्ता काल न चीन्हा ॥  
 वार न जाते पार न जाते, बीच बूड़े मझधारा ।  
 चिन्हो केवट जीन्हि जाल बनाया, मच्छा धरि-धरि मारा ॥  
 केता कहों कहा नहिं माने, मन के फन्द बिकारा ।  
 कहें 'दरिया' दर देखि भुलाना, एक ना दोय संसारा ॥

( १५ )

साधो ! मकरी जाल बनाया ।

ऐसा चंदवा गीर्द कियो है, वह सुत कहाँ ते पाया ॥

जो तोरे तो फेरि बनावे, सभका घर में छाया ।

ताके मध्य में आप बिराजै, यहि विधि कौतुक लाया ॥

ऊपर सुन्दर छबि छहलानी, लोभे जन्म गँवाया ।

बहुत भिखारी है कर जोरे, मद्यपि मदहिं मताया ॥

केते योगी पचि पचि मुआ, हरि भक्तन गुण गाया ।

साधु पैटे तस्कर के घर में, कर मीजि-मीजि पछताया ॥

दवरि गये जहँवा जल तीरथ, देह की मैलि छोड़ाया ।

अन्दर की कोई मरम न जाने, मुखचा मैलि समया ॥

क्षण में ऊँचे क्षण में नीचे, नेउरी नट नचाया ।

कहें 'दरिया' कोई ज्ञानी बूझे, विष तेजि अमृत पाया ॥

( १६ )

साधो ! बाहर तत्व बिचारे ।

बावन आखर पारे देखे, पाप पुन्य ते न्यारे ॥

भीन्डी भार उतारन लागे, मंगल गावहिं शोभा ।

मोह गर्व ज्ञानी गौरी पूजत है, कोह बर हम तुम लोभा ॥

गश्ती के घर कसबे होते, कसना कसे पुराना ।

काल अहेरी सिर पर फीरे, मारि लिहिसि मेदाना ॥

अवधु कहे अगोचर बातें, बिना वृक्ष के छाहीं ।

कहें 'दरिया' यह काल ठगौरी, कोई समुझे जगमाँही ।

( १७ )

साधो ! मोह लहरि तन अएऊं

अमृत सींचे मींच भव क्षमा, येहि विधि जग में छयेऊ ॥

शिव के संग जो रही भवानी, भस्म कियो सभ अंगा ।

छूटा समाधि बाँधि नहिं राखा, योग भया इमि भंगा ॥

राम जन्म दशरथ गृहि भयेऊ, कठिन कल्पना भारी ।

पिता मरन सीता हरन राम बन, उल्टी लागी तेहिं कारी ॥

प्रदुमन के सुत हरा दइत ने, कृष्ण विकल बैरागा ।

भया कल्पना सारी महल में, येहि विधि करूणा जागा ।

सुर नर मुनि जग केते गनिये, सीके मोह बिकारा ।

लागी आगि देखा नहिं प्रगट, येहि विधि तन के जारा ॥

दया धरो दिल दृढ़ ज्ञान करू, सीा विधि आगर आई।  
कहें 'दरिया' सतगुरू पद दरसे, आनन्द मंगल गाई॥

( १८ )

साधो ! कोइ न रहा बिनु दाँत निपोरे।  
शेषनाग देव वर्षन लगा, दही जमाया घोरे॥  
रजगुण सतगुण तामस कहिए, तीनों गुण अनीता।  
बाम काम सभ दाम बटोरहिं शक्ति सबनि के जीता॥  
नव नाथ चौरासी सिध्या, ऐसी विधि की धरनी।  
मोहनी माया राम घर शोभे, जयों पावक में अरनी॥  
सफेद गया रंगजेर के घर में, मैन माठ में बोरे।  
वाका रंग छूटे नहीं कबहीं, नव मन साबुन घोरे।  
महा-महाशय बीर धीर सभ, धनुष पनच यह राखा।  
टूआ धनुष देखा हम ज्ञाने, कवि सीा ऐसा भाषा॥  
“पुरुष” एक है माया जगत सभ, वोय साहब अविनासी।  
कहे 'दरिया' हम आँखों देखा, वोय काटहिं यम की फाँसी॥

( १९ )

साधो ! झीनी झीनी जाले बीना।  
बड़ बड़ गीाकुर मगर मच्छा, यह निकलि सके नहीं मीना॥  
मही ऊपर औ इन्द्रलोक ले, तीनों गुण औ तीता॥  
दशे दिशा औ तीर्थ जहाँ तक, सभके सरबस लीन्हा।  
भोग करत यह योग जाल भै, चक्षु किया यह हीना॥  
यह जाल काटहिं साहब सामर्थ, निकलि गया हंस बीना।  
कहें 'दरिया' वादर देखहु, कबहिं ना होत मलीना॥

( २० )

साधो ! पापी से डरिये।  
साँच बराबर धर्म नहीं है, झूठे भूसा भरिये॥  
जहाँ साँच तहाँ आप बसुत है, दुर्मति दुरि करिये।  
झूठ कहै तेहिं काल कूटेगा, अवघट में जा इमि परिये॥  
साँच गोसइयहिं बीच कछु नाहीं, जो कोई हित के धरिये।  
झूठ पछोरे काफी उड़ानी, झगरा का यह करिये॥  
साँच खरचे खाय खिलावे, एक दिन फेरि मरिये।  
झूठी मुठी मरकट की गति, वाहि ते तुम बरिये॥

गुरु सिखावे शिष्य के निसिदिन, सो गुन भव में तरिये ।  
 झूठा गुरु झूठा है चेला, कान फूका का करिये ॥  
 जैसे कलन्दर बंदर बाँधे, येहि विधि भवमें परिये ।  
 कहें 'दरिया' तेहिं काल नचावे, बिनु आगी के जरिये ॥

( २१ )

साधो ! अबला के बल साहब ।  
 जो कोइ गर्बी बड़े जगत में, ता पर हुकुमी नायब ॥  
 हिरणाकुश जो गर्व कियो है, भयो जगत महँ वीरा ।  
 नरसिंह स्वरूप रूप तहाँ प्रकअ, पकड़ि उदर धरि चीरा ॥  
 कंचन कोट रावण बड़ गर्बी, कियो गर्व अभिमान ।  
 यहाँ राम वहाँ रावण कहिये, कियो गर्द पिसि माना ॥  
 कंश अंश काल के कहिए, कालहिं काले झगरा ।  
 झपटेव कृष्ण बाज की नाई, पकड़ि पछारेव बगरा ॥  
 दुर्योधन जोर बहुत कियो हैं, ऐसा कटक ही लाया ।  
 छल बल कृष्ण पंडो के साथी, वो भी गर्द मिलाया ॥  
 नाहक गर्व करे नर लोई, उपजि बिनसि फेरि जावे ।  
 कहें 'दरिया' तब समुझि परेगा, जब यम मुसुक चढ़ावे ॥

( २२ )

साधो ! सीा नहिं भृंग भया ।  
 जेसे दूध को सोधि कांटी में, औटत फाटि गया ॥  
 कीट जो चिन्हा भृंग गुरु है, तन मन दान दिया ।  
 उछलित प्रेम प्रवाह तरंगे, दुर्मति दूरि गया ॥  
 पकरि पंख अंख जिन्हि मुदेव, रंधन सुपट लिया ।  
 जिन्हि यह प्रान प्रिय करि बूझे, झूठा जूझन गया ॥  
 खोटा दिल खोआ मुख वाके, अन्तर कपट रहा ।  
 लोभी लालची माया में चूभे, आपन बात कहा ॥  
 करिके योग भोग में आवे, क्रोधेव काम दहा ।  
 ये दोय वरी जगत में जाहिर, निसि दिन धनुष गहा ॥  
 सतगुरु दरस परस पद पावन, हित करि प्रेम लहा ।  
 कहें 'दरिया' निरदाग सो प्राणी, दगा से दुरि बहा ॥

( २३ )

साधो ! यह फंदा यम जाल को ।

सगुण से त्रिगुण निर्गुण निःअक्षर, चिन्हि ना परा बिनु भालको ॥

तीर्थ गये कहु तीर्थ महातम, देवल देवी हाल को ।

पत्थर पानी बात न पूछे, कहो कुशल घर माल को ॥

माया मंदिर में मोह जो ब्यापेव, सोभा सुन्दर बाम को ।

हय हाथी औ महल खजाना, ये भी अन्त न काम को ॥

पलक मुँदे कहु कल्प केता, चारो युग आठो जाम को ।

जैसे सुगना सेमर के फूल, लाल रंगीले चाम को ॥

जाल अति झीन मीन जीव बाँझे, नीर सुखा सी ताल को ।

अवटि मुवे सभ मुनि के मत मेंच पोवा पोसेव ब्याल को ॥

अविगति की गति मति जब आवे, रतन पदारथ लाल को ।

कहें 'दरिया' धन्य धन्य वोय सतगुरु, मेटा कल्पना शाल को ॥

( २४ )

साधो ! केहि विधि जग में तरते ।

सतगुरु ज्ञान गमि नहिं आवे, भव सागर में परते ॥

एक हाड़ दोय कुत्ता लागा, घींचा घींची करते ।

गुरु शिष्य के बीच में माया, झगरा करि करि मरते ॥

जैसे आग दबी है राखी, हाथ पसारे जरते ।

कपट कतरनी का तरे वाके, जैसा जिन्ह को बरते ॥

झूठी बात जिभ्या में पागे, माले ले ले धरते ।

छीन लेत तब छेके ना कोई, हाय हाय काहें करते ॥

बैल हुआ तब बड़ दुःख भारी, हर के पीछे बहते ।

घास भूसा के ध्यान लगावे, दाँत खियाने चरते ॥

ज्ञान कहे तब अनते चितवे, झाँका झूँकी करते ।

कहें 'दरिया' पन चारो बीता, वृद्ध भये तन गलते ॥

( २५ )

साधो ! तीनो गुण बिनसि गौ ।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कहिए, अमर कवन यह रहिगौ ॥

निरंजन अंजन जेहि नाही, मंज्जन केहि में करिये ।

निराकार आकार नहीं है, केहि विधि भव में तरिये ॥

निरा अवलम्ब अलंम नहीं है, लव लगन कहाँ ते लावे ।

सगुण विनसि निर्गुण गुण रहित है, गुण बिनु ज्ञान न भावे ॥

वेद कहें वाके रूप न रेखा, पाँचो तत्व कहाँ ते ।

उपजि विनसि फेरि कहाँ समाने, लखि नहिं परे जहाँ ते ॥

मूल नहीं तब फूल कहाँ ते, फूल बिनु फल न होवे ।

बीज नहीं तब जन्में कैसे, पत्र बना किमि सोहे ॥

अगम कहे फेरि निगम कहतु है, अगम निगम पथ भारी ।

अचरज बात अचम्भो भाषहिं, बहु विधि वचन सँवारी ॥

योगी यति तपसी सन्यासी, सभके भौ अनुरागा ।

देख परा कि अदेख कहत हो, सुनहु संत सुभागा ॥

परिमल पुरुष मुआ नहिं कबहीं, नहिं हुआ नहिं होगा ।

कहें 'दरिया' पारस बिनु कंचन, करि-करि थाके सभ योगा ॥

( २६ )

साधो ! नीके करो बिचारी ।

गर्भवास में सभ कोई आया, जहाँ लगि जग वपु धारी ।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कहिए, त्रिदेवा अधिकारी ।

राम जन्म भयो दशरथ के गृहि, देवकी के बनवारी ॥

कोटि पैगम्बर पीर अउलिया, गर्भे से पगु ढारी ।

सहस्र अट्टासी ऋषि जो कहिए, सभ के पिता महतांरी ॥

कहीं गोप कहीं प्रगट हुआ है, बिना पुरुष किमि नारी ।

काशी में भौ जन्म कबीरहिं, बाहर दिन्ह निकारी ॥

गुरु थोर शिष्य बहुत उड़ावे, रचि रचि बचन सँवारी ।

मुख तेहुँ तत्व गहिर गम्भीरा, "सतपुरुष" गति न्यारी ।

उपजत बिनसत या जग देखा, 'दरिया' कहा पुकारी ॥

( २७ )

साधो ! धोखा या जग मारा ।

गुरु श्रृष्टि की ब्रह्मा भूले, चारो वेद बिचारा ॥

अक्षय वृक्ष सुख सागर छोड़ि के, त्रिगुण फन्द पसारा ।

तेहि फंदा में या जग बंधा, किमि करि होय उबारा ॥

जो करता यह सीा घट बरता, जरा मरण सौ बारा ।

नरक स्वर्ग कहु काके कहिये, दुःख-सुख किन्ह पसारा ॥

कौन गुरु है कौन चेला है, कवन बूढ़ को बारा ।

आपे नाव केवट है आपे, आपे खेवनि हारा ॥  
 गुड़ दिखाय ईट मुख मारे, भूले मूढ़ गँवारा ।  
 वृषभ चारि चरण जब होइहैं, बोझ परा सिर भारा ॥  
 सतगुरु वचन वचन सत यह मानो, निसिवासर हुसियारा ।  
 कहें 'दरिया- चित चुतु अचेता, उतरहु भव जल पारा ॥  
 ( २८ )

साधो ! पाखन्डी क्या जीवे ।  
 पाखंड करते जनम सिंरानी, नित्य उठि विषि के पीवे ॥  
 दही सोहारी शक्कर समेता, दूध पीवे भरि कूँजा ।  
 अपने सरस निरस नहिं बूझे, दूजै पाहन पूजा ॥  
 ऊपर हंस भीतर है कागा, कर्म कमाते खोटा ।  
 आगे नाथ न पीछे पगहा, येहि विधि गदहा मोटा ॥  
 मांसु मछरिया भोजन करते, रसना स्वाद बखाना ।  
 आपु खावे औ शिष्य समेता, येहि भक्ति मन माना ॥  
 ज्ञान सुने फुफुकार करत है, झूठी बातन ज्ञाता ।  
 काम क्रोध हंकार भरा है, जैसे मद्यपि माता ॥  
 साँच बोले तेहि मारन धावे, अन बोले बनि आवे ।  
 कहे 'दरिया' चढ़ी नाव पथल के, बूड़त जल में जावे ॥  
 ( २९ )

साधो झूठ बोले सो मीठा ।  
 झूठी मूठी खोल के देखो, आँधर हो की डीठा ॥  
 जेसे मृग धोखा में दवरे, जल बिनु प्रानहिं खोया ।  
 मन नहिं चीन्हे कैसा मन है, तीर्थ फीरि-फीरि रोया ॥  
 प्रतिमा देखि केहरि कूदा, कूप है बहुत सकेता ।  
 उगी चुभि के प्रानहिं खोया, येहि विधि मरि भव प्रेता ॥  
 मस्त गयन्द यह फिटिक शिला में हनि के दर्शन दिया ।  
 कवन मारे वह आपे मुआ, धोखा प्रानहिं लिया ॥  
 जैसे सुगना सेमर सेवत, ठोर के मारे रूआ ।  
 सीस पटक के रोवन लागे, इमि करि हारे जूआ ॥  
 न कहे बैकुण्ठे जइबो, गुरु ने मंतर दिया ।  
 कहें 'दरिया' क्या स्वाद बखाने, रसना रस नहिं पीया ॥  
 ( ३० )



साधो ! कबहीं न भव में परिये ।

साँच साहेब रहनी है साँचा, दुर्मति दुरि करिये ॥  
काल्ह करे सो आज करो, यह सुनो नर औ नारी ।

सर्वस त्यागि चलोगे बन्दे, हाँथ जूवाडी झारी ॥  
एक मूवा एक करने चाहे, यम ने फन्द पसारी ।  
अमर कोस मृग मद माता, पाँव कुल्हारिन्ह मारी ॥  
लेने देन यह झूठा झगरा, सौदा बहुत पसारी ।  
नर अकेला यम ने मारा, जिन्ह निजु खसम बिसारी ॥  
यम की साट सहोगे मूरख, बड़ा कल्पना कारी ।  
चार चरण दोय सीधे होइहैं, बोझ परा सिर भारी ॥  
महानरक यह अंधकूप में, अब कहु कवन निकारी ।  
कहा हमारा गाँठी बाँधहु, 'दरिया' कहा पुकारी ॥

( ३१ )

साधो ! ज्ञानी गहरि गम्भीरा ।

यह संसार कहीं रत्नाकर, कहिं कौड़ी कहिं हीरा ॥  
वशिष्ठ व्यास और ब्रह्मा नारद, सुकदेव की मति धीरा ।  
शास्त्र वेद पढ़ा बहु ज्ञानी, सभके मुँख में गीरा ॥  
ध्रुव प्रह्लाद नाम देव भक्ता, काशी में भयो कबीरा ।  
योगी यति तपे सन्यासी, औ जग में बहु बीरा ॥  
खाली नाहिं सबहिं भरि पूरा, सरिता सब जग नीरर ।  
कच्ची पक्की जग हाट पसारा, हृद 'दरिया' के तीरा ॥

( ३२ )

साधो ! अगम निगम गुण गायो ।

लीखत पढ़त सभ सेवक थाके, यह गुण बचन सुनायो ।  
कलम न गहें नहिं कर कागज, लिखनी लीखे सो दूजा ।  
तूला तौलि दोनों दिसि तखनी, रती ना घटे से पूजा ॥  
वशिष्ठ वयास मुनि नारद सुकदेव, इन्ह भी कथा बखानी ।  
औ मुनि गनों जगत के केते, यथा जेते गुरु ज्ञानी ॥  
शेष सहस्र फणि दृष्टि श्रृष्टि ले, सभ मुख बोले बानी ।  
कथि मथि कहेव छन्द प्रबन्दे, अविगति गति नहिं जानी ॥  
अव नग लाल हीरा मणि मोती, सीाके पारख आई ।

साधु पारख बिरला जन जाने, जाके सुमति समाई ॥  
 आदि अन्त औ मध्य मनोहर, मन सभ लीला बनाई ।  
 लगी खुमारि सब मद माँते, मुरली मधुर सुनाई ॥  
 साधु के दरसन सिन्धु बरोबर लख केहु नहिं पाई ।  
 जो परखे सो मत मे आवे, खोजत अन्त न पाई ॥  
 कलि के कवि सभ मलित मगन हैं, सत पद नाहिं विवेका ।  
 कहें 'दरिया' मन अनन्त कला है, जब सुधरे तब एका ॥

( ३४ )

साधो राम कहन की बातें ।  
 जेव बग ध्यान धरे जल भीतर, ठोर चलावे घाते ॥  
 कर्म कमाई काया गढ़ भीतर, विषय विरह रस माते ।  
 भीतर भरी भेंगार भरम की, ऊपर माजहिं गाते ॥  
 नौगुन कांध जनेऊ सुन्दर, धोती पोथी चाँते ।  
 चंदन चर्चित तिलक बनाए, मुख तमोल है राते ॥  
 चौका चंदन कटोरी किन्हों, फूल चढ़ावहिं बाते ।  
 कर में माला सुरति है कतहीं, रचि रचि बैन सोहाते ॥  
 सास्तर वेद पढ़ा बहु बानी, व्याकरण की बातें ।  
 कहें 'दरिया' बिनु भक्ति ना बचिहो, यम जीव करहिं निपाते ॥

शब्द पंडित शरह

( १ )

पंडित बूझो शब्द बिचारी ।  
 राज गुरु राजन्हिं शिष्य किन्हा, बोझ लिये सिर भारी ॥  
 जो जो खून करे वह राजा, सो तोहरे सिर डारी ।  
 जैसे बधिक सावज के मारे, इमि करि काल पछारी ॥  
 लोह के नाव पखान के भारा, चला केवट जल हारी ।  
 बुड़त भव जल थाह न पावे, सिष करै नर नारी ॥  
 नहिं परमारथ स्वारथ नीका, आतम घात बिगारी ।  
 झूठ वचन मन मगन रहत हो, सत वचन है गारी ॥  
 निगम नेति यह विमल पुनीता, रचि रचि बैन सँवारी ।  
 गीता अर्थ गुप्त करि राखहिं, मुनि मत फंद पसारी ॥  
 सतगुरु शब्द सत इह मानों, बाँधहु गाँठ संभारी ।

भव के बीच कबहिन नहिं बुड़िहो, 'दरिया' कहें पुकारी ॥

( २ )

पंडित घट-घट बोलनिहारा ।

अनबोले से कैसे बनिहें, शब्दहिं करो विचारा ॥

पाहन काटि मुरति जो किन्हों, को तुम काटनि हारा ।

हाथ पाँव तुम सभे बनाया, बोलता बिना नकारा ॥

तासो विनय करो कर जोरे, तुम मेरो करतारा ।

वोय मौनी तुम बोलनिहारा, भलि मति गई तुम्हारा ॥

अजया सुत चढ़ावहु तापर, रक्षा करहु हमारा ।

पर सुत मारि पुत्र के कारन, करम चढ़ा सिर भारा ॥

जीव मारन के धर्म कहतु हो, अधरम का संसारा ।

वेद पुरान पढ़ा तुम पंडित, करि दोविधा जीव मारा ॥

ऐसे बूड़ि मुवे भवसागर, फेरि पशुआ अवतारा ।

कहें 'दरिया' जेहिं दया दरद नहिं, परे नर्क के धारा ॥

( ३ )

चरि वेद बिचारु पंडित कया मछे सार ।

काया में सार पढ़ो सास्तर, वेद महिमा इन्हते पार ॥

चारि नाड़ी षोड़स दल है, चक्र छव निषेद ।

पाँच मुन्द्रा जुक्ति जानहिं, जोगिया निजु भेद ॥

महा मुन्द्रा सुन में जहाँ, सुरति सुषमनि घाट ।

सहश्र दल के खुलेव, जहाँ मुक्ति को निजु बाट ॥

सेंधु सरगे जोति जगमग, उदित भये चंद ।

कहें 'दरिया' भेद एतना, करम काल निकंद ॥

( ४ )

पंडित बूझो शब्द बिचारं ।

आवे जाय खपे सो दूजा, माया को बिस्तारं ॥

मोय दशरथ के कुल नहिं अवतरिया, नहिं सीता पति प्यारं ।

बावन रूप नहिं बलि के छरेव, नहिं हरिनाकुश फारं ॥

जल परवान कबहीं नहिं बाँधिया, नहिं लंका को जारं ।

कौन बुड़ा कहु काके तरिया, कवन भया भव पारं ॥

नहिं गोपिन के नाँच नचायो, नहिं मुरली मुख धारं ।

नहिं गोबरधन करगहि लिन्हों, कहु किन्ह कंस पछारं ॥

वोये हारे जीते नहिं कबहीं, धावै नहिं धारं ।

है जेहूँ भरि पूरा, परहित है हितकारं ॥

मातु पिता कुल वाके न कहिये, नहिं कर लीन्हों सारं ।

कहें 'दरिया' वोय मरे न जीवे, निरगुन पुरुष निनारं ॥

( ५ )

पंडित कहो कवन गुन हीता ।

आदि ब्रह्म की मरम न जानहिं, ममिता मद के जीता ॥

त्रिगुन तीनि ताप तन व्यापेव, भरम करम में बीता ।

सरगुन कहो फेरि निर्गुन निरंतर, सर्व रूप महिं प्रीता ॥

गीता पढ़ि पढ़ि अर्थ लगावहिं, सर्वादिक सर्व पुनीता ।

दया ना दरस कवन पद परसे, करसित काल अनीता ॥

जीव सभन्हि के शीव न कहिये, पीव प्रान है मीता ।

जरत मरत फिरि गिरत परत है, जनमत है नैनीता ॥

कवि सभ कहहिं कथा एह जानहिं, मथि माखन निजु घृता ।

नहिं वोह दुःख ना दही दरस है, पारस प्रेम गनीता ॥

हरि के भक्ति जगत सभ जानहिं, झीनी जाल विनीता ।

कहें 'दरिया' हरि कहा गवन करू, गर्भ बास फिरि लीता ॥

( ६ )

पंडित सतपुरुष हहिं भिन्ना ।

जो बिनसे सो सत न कहिये, सो पद तुम लव लीन्हा ॥

नहिं उन्ह आया गया नहिं कबहिं, जोइनि संकट नहिं भर्मा ।

कर गहि बान रावन नहिं मारेव, इह माया को धर्मा ॥

नहिं मुरली घर नंद के लाला, नहिं गोपिन्हि संग खेला ।

नहिं कंस गहि केश पछारेव, इह त्रिगुन का मेला ॥

निकलंकी काहु लखि में ऐऊ, उन्ह भी तेग उबाहा ।

मच्छ कच्छ बाराह सरूपी, उन्ह भी देत समाहा ॥

राम कृष्ण हहिं मन से करता, बावन होय बलि जाँचेव ।

प्रबल माया कोई अंत न पावे, एहि विधि सभ मिलि नाँचेव ॥

वपू क्रोध से काम क्षेमा है, अमृत पीवे सो धीरा ।

कहें 'दरिया' इह उपजनि बिनसनि, खपे जग बहु बीरा ॥

( ७ )

पंडित अचर बात अनूपा ।

बाधिनि एक तीनि डवरु बियानी, तीनु तीनि सरूपा ॥

चीतन जने तीनि सांपिन राखा, बिनु पंखे उड़ियावे ।

तिन्हके खाये अवरि के खाइसि, भेद कोई जन पावे ॥

मधु राखत मांछी के खाइसि, खाइसि मुस मंझारा ।

करम का मोट ऊंट सिर ऊपर, खाइ गई तन सारा ॥

मेढक और भुवंगहि खाइसि, नेउरी मारि निकारी ।

महिषा अव महिषाइनि खाइसि, हस्ती पकरि पछारी ॥

बड़ बड़ गीध पकरि के खाइसि, अव गरूर बड़ ग्याता ।

तासे प्रीति करे मन मूरख, जैसे मदिपी माता ॥

सापिनि चिन्हे सोई जन बाँचे, ताके निकट न आवे ।

कहें 'दरिया' जो शब्द विचारे, सतगुरु मत के पावे ॥

( ८ )

बुझ बुझ पंडित पद है उल्टा, डार्ह पताल सोर है सुल्टा ।

चीवा चारु डारु छितनारा, सुर नर मुनि महि खोजत हारा ॥

बिनु दल कवल फुले बहु भांती, तामें भवर बसे दिन राती ।

उल्टा वेद पंडित के खाई, ताके पाप परोसिया जाई ॥

साहु के माल चोर धरि साधा, साहुनि कूदि साहु कह बाँधा ।

सिंह सियार कहे दुनों भाई, 'दरिया' बीच लरहु जनि आई ॥

( ९ )

सुनहु पंडित अचरज बाता, सेसनाग देव बरिसु विधाता ।

जब वरिसे तब होखे सुखारी, घर घर बीच बोवे बनवारी ॥

कहीं अवई कहीं बीज संयोगा, खेतहिं आये जो परिगो रोगा ।

जब उपजे तब काटे सोई, घर नहिं खरचि परोसिन रोई ॥

चीक चोर मिलि खेती करहीं, पवा के सरबस मुसवा हरहीं ।

वेद बिरह रस दियहु सम्हारी, 'दरिया' दिल हरि चरित्र बिचारी ॥

( १० )

पंडित बूझो शब्द बिचारा ।

अपने पढ़ो बुझो नहिं मंदु, करि षट कर्म अचारा ॥

चारि वेद है तोहरे पासे, श्रवन नैन सुधारा ।

सुछम वेद मुख होत न बानी, किमि करि लीखि पसारा ॥

सास्तर मथि के गीता कीन्हों, गीता मथि के सारा ।

दही मही माखन जब लीन्हों, बरे दीपक उजियारा ॥  
 हमरे तन रूधिर जो कहिये, तोहरे दूध के धारा ॥  
 हाड़ चाम हमरे जो कहिए, तोहरे कनक बोखारा ॥  
 आपन ब्रह्म चिन्हे नहिं मूरख, कहे तीनि बरन ते न्यारा ॥  
 तीनि बरन कवन दे आया, तुम कवने पगु ढारा ॥  
 पाखण्ड कर्म तेजहु बहु कर्मा है सत कर्म करारा ॥  
 कहें 'दरिया' सुनु पंडित ज्ञानी, जाते होय उबारा ॥

( ११ )

पंडित छूत कैसे छितरानी ।  
 गोरा अंग हुआ नहिं काला, तीता भया नहिं पानी ॥  
 अच्छा प्रसाद छुवत नहिं बिनसे, यह सभ मन के भर्मा ।  
 हममें तुममें एक बिराजे, एह पाँचो निःकर्मा ॥  
 मीन मांस जो सीझे रसोई, तरपन बहु विधि लाई ।  
 वाके संत छुवे नहिं कबहिं सो अमृत करि पाई ॥  
 हंस दशा की गीध कर्म है, की लघु पतन का नीका ।  
 सतगुरु वचन माने नहिं मूरख, एहि विधि यम घर बीका ॥  
 को मलेक्ष मल काको लागा, कवन विप्र को जाया ।  
 रहा असाधु साधु भव कैसे, तिलक जनेऊ नाया ॥  
 करि स्नान डिंभ धरि बैठे, पूजा बहु विधि लाई ।  
 कहें 'दरिया' दृष्टान्त अपावन, सो पावन करि पाई ॥

( १२ )

पंडित छूति से नर्क ना परई ।  
 रज बिंद एह सभ की काया, नवो नाटिका झरई ॥  
 छुतिहा अन्न न छुतिहा पानी, छुतिहा कर्म बिकारा ।  
 मीन मांस की हड़िया छुतिहा, एहि विधि करो बिचारा ॥  
 बिल्ली एक शहर में पैठी, सभ की हड़िया चाटी ।  
 अन्दर की कोई मर्म न जाने, नेम करत हम बाटी ॥  
 मक्खी उड़ी बिध्न पर बैठी, सो थारी पर आई ।  
 हमके तुमके छुई गई है, यह षट कर्म बनाई ॥  
 एक अछूत सतनाम सही हैं, भरम भूत धरि खाई ।  
 कहें 'दरिया' जिन्हिं ततु विचारा, दुर्मति दुरि सभ जाई ॥

( १३ )

पंडित कहो गगन की बातें ।

सास्तर वेद पढ़ा तुम गीता, बहुत गर्ब ते माँते ॥  
 कहाँ ते रबि एह शशि सागर, भव उड़िगन किमि कर ऐऊ ।  
 कहाँ ते ध्रुव चले नहिं कबहीं, अचल सभन्हि मिलि कहेउ ॥  
 कहाँ नीर पवन का मेला, महि मंडल परचंडा ।  
 दस अवतार खंडा इह किन्हने, कवन पुर्ष नहिं खंडा ॥  
 कहाँ ते शिव सक्ति के किन्हा, के रति काम बनाई ।  
 दहेव सभनि मिलि तीनों देवा ले प्रभुता सभी गँवाई ॥  
 निःकल्प कहो सो तो कल्प सभन्हि के, काहि कल्प नहिं काला ।  
 एह सभ हीरा जग्त में, कवन बेधे नहिं काला ॥  
 निःकर्म कहो सो तो कर्म में आया, बादि वेद सो झूठा ।  
 कहें 'दरिया' एक साच साधु कहें, झूठ सभन्हि के मीठा ॥

( १४ )

पंडित अचरज कहा न जाई ।

अपने पढ़ो बुझो नहिं कबहीं, तुमके को समुझाई ॥  
 कवन कर्म है कवन धर्म है, कवन पाठ है पूजा ।  
 हममें तुममें जल में थल में, ब्रह्म एक की दूजा ॥  
 हाड़ी हाड़ षट कर्म अचारा, सो घर काल कसाई ।  
 अण्डुज पिण्डुज उखमज कहिए, कर ते कला बनाई ॥  
 अंकुर भक्ष सभ देव कर्म है, नीत नव वेद लगाई ।  
 ऐसो भोजन साधु की संगति, मांसु श्वान धरि खाई ॥  
 ऋगु जुग साम वेद पढ़ि पंडित, दिक्षा बड़न्ह के दीन्हा ।  
 शिष्य के सिखवहिं राजस तामस, पाप आपन सिर लीन्हा ॥  
 सत वचन में हित करि भाखों, लगे सभन्हि के तीता ।  
 कहें 'दरिया' जो बूझि भुलानी, जाय पढ़ो तुम गीता ॥

( १५ )

पंडित क्रोध करहु जनि भाई ।

क्रोधे सुर नर मुनि नष्ट गये हैं, बाँधे यमपुर जाई ॥  
 तन्त्र बुझो ज्ञान बिचारो, वेद कहे सो कीजै ।  
 धर्म कहो अधरम किमि कहिये, जीव दया जो दीजै ॥  
 महा पुनीत भये कुल अपने, छत्तीस वर्ण को राजा ।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम					



एह भव सागर आगर आगे, अविगति गति नहिं पाई ॥  
 निगम नेति भल जामें, मीन मांसु रस भोगा ।  
 कहें 'दरिया' अघ पातख परबल, भक्ति बिना सभ रोगा ॥

( १८ )

पंडित भीतर पैठा की बहरा ।  
 एक एक कल्प बीता ब्रह्मंडे, उभे घरी एक पहरा ॥  
 अगम अगोचर बाट में बूड़ा, उड़ि कतहीं नहिं गयेउ ।  
 जैसे बावन बलि के छरिया, एहि विधि भर्म भुलैउ ॥  
 इन्द्र जाल अति हुकुंम जगत में, सभकी मति भौ उल्टा ।  
 चढ़ी चरख पर घूमन लागे, फिरि बुद्धि भै गौ सुल्टा ॥  
 मन के चरित्र चिन्हें नहिं कोई, कहि कवि जन भौ ज्ञाता ।  
 प्रबल माया को मरम न जाने, एहि विधि भव भर्म राता ॥  
 मानुष दिल जब फिरे फिरंगा, उल्टा गंगा बहई ।  
 पूर्व के भानु पश्चिम जनि ऊगे, उत्तर के दक्षिण कहई ॥  
 बिनु उपदेश दूरि की कहनी, कहि कवि कथा सुनावे ।  
 कहें 'दरिया' सपने की संपत्ति, हाथ कछु नहिं आवे ॥

( १९ )

पंडित निर्गुण नाम निषेदं ।  
 निर्गुण ब्रह्म सगुण सो कैसे, यह अचरज बड़ भेदं ॥  
 यह तो सर्व बन्धन में कहिए वह तो है निःछन्दं ।  
 ऊँ कार ते प्रकट है माया, जिन्हि यह कंस निकन्दन ॥  
 वह तो जरा मरन ते बाहर, त्रिगुण गुण ते रहितं ।  
 ज्यों प्रतिबिम्ब सबन्हि में भाषे, अचल ब्रह्म सो कहितं ॥  
 वह निरलेप निरामय कहिये, कर्म भर्म सब ब्रजितं ।  
 सर्व सम्पूर्ण उदित कला है, नाम साधु जन भनितं ॥  
 योगी यती तपे सन्यासी, कर्म काण्ड करि बादं ।  
 पंडित पढ़े पुराण परायण, भेष बोले सब नादं ॥  
 चौगुण वेद भने चतुरानन, जीव चाहे नव निहं ॥  
 कहें 'दरिया' दीदार दरश बिनु, किमि कहिये वह सिद्धं ॥

( २० )

पंडित तेजहु बाद विवादं ।

खोजु सजीवन जो जग मूलं, सोई सदा सुख नादं ॥  
 त्रिवेणी के मध्ये त्रिकुटी जो कहिये, त्रिकुटी के मध्ये मूलं ।  
 मूल के मध्ये फूल जो कहिये, तहाँ भँवर स्थूलं ॥  
 गगन के मध्ये मगन जो कहिये, मगन के मध्ये ईशं ।  
 ईश के मध्ये मोती झलके, मोती के मध्ये दीशं ॥  
 ज्ञान के मध्ये ब्रह्म जो कहिये, ब्रह्म के मध्ये चितं ।  
 चित के मध्ये प्रीति समानी, मेदि गौ गीत कबितं ॥  
 अर्ध के मध्ये उर्ध जो कहिये, उर्ध के मध्ये साधं ।  
 साध के मध्ये सिद्ध जो कहिये, तहाँ पवन पति राधं ॥  
 अखण्डित ब्रह्म पंडित सो ज्ञाता, जो जाने यह भेदं ।  
 सोरह शक्ति समानी तन में, 'दरिया' ज्ञान निषेदं ॥

( २१ )

वेद पढ़े का गुन पंडित ।

एके ब्रह्म सकल घट भाषत, अब कहिये किमि खंडित ॥  
 ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य सूद्र सभन्धि, हिन्दु तुर्क किमि कहिए ।  
 मिट्टी एक नाना बिधि बासन, एक जिमि पर रहिये ॥  
 एक जल पुरइनि है एके, एके पाँवरि बहु भाँती ।  
 एके कँवल भँवर है एके, को महि जाति अजाती ॥  
 अस्ति एक मेद है एके, एके त्वचा तीनि गुन लागा ।  
 एक रंग रूधिर है एके, एके आतम जागा ॥  
 एक भूख प्यास है एके, एके दुःख सुख व्यापा ।  
 एके दया धर्म है एके, एके पुन्य औ पापा ॥  
 एके कलम कागज है एके, एके कोरान पुराना ।  
 कहें 'दरिया' जब दोबिधा तेजिहो, तब प्रभू के मनमाना ॥

( २२ )

पंडित छीर दुनों है मीठा ।

गाय महिषी बीच कछु नहीं, महा पदारथ दीठा ॥  
 एके चाम रूधिर है एके, दूनों त्रेन अहारी ।  
 यम शासन यह आगे होगा, कहि कहि बात बिगारी ॥  
 गाय के कैसे हत्या भै गौ, भइसि के कहे अनिथ्या ।



इह मत जानू अमर होय रहना, काल चपेटे चटका ॥  
 निगम साखी बोले इह पुरो, संतन्हि सभ के हटका ।  
 कहें 'दरिया' सतनाम भजन बिनु, जाये भवन भर्म भटका ॥

( २५ )

पंडित सर्व मई भगवाना ।  
 भग में आवे भग में जाते, ऐसी सिपित बखाना ॥  
 पुराण अठारह पढ़ि के पंडित, ब्याकरण के साधा ।  
 आतम राम दिवाकर जैसे, ये ११ हैं प्रबंधा ॥  
 जीव कहे फेरि शिव शक्ति है, पर दृष्टान्त सोहावन ।  
 सर्व मांसु मीन के कहिये, गीता कहे अपावन ॥  
 सो तुम भोजन भाव से करते, अति पुनीत प्रसिद्धं ।  
 मति मराल की कागा कहिये, महि देखा है गीधं ॥  
 मलेश सोई जो मल के खावे, सो मल कबहिं ना धोवे ।  
 दीक्षा देहिं मगन सब कोई दोनों घर के खोवे ॥  
 दया नहीं तब धर्म कहां ते, किमि करि होहिं पुनीता ।  
 कहें, 'दरिया' जो बुद्धि भुलानी, जाय पढ़ो तुम गीता ॥

( २६ )

पंडित पढ़ि गुन भये बिलाई ।  
 ज्यों मंजार चूहा के पावे, पकरि तुरंते खाई ॥  
 जब अजया मूड़ी आई, लरिकन दुंद मचाई ।  
 तनिक तनिक लरिकन को दिन्हों, सर्व सगौती खाई ॥  
 एक अचरज कहबे जोग नाही, को ब्राह्मण को अहे कसाई ।  
 दोबिधा करि करि दोनों मारहिं, वोय लहुरा तुम जेठो भाई ॥  
 दुर्गा पाठ जो घर घर बाँचहिं, गीता अर्थ छिपाई ।  
 कहें 'दरिया' तब समूझि परेगा, जब यम मुसुक चढ़ाई ॥

( २७ )

पंडित मृतलोक है कैसा ।  
 धरती न मुवा अकाश ना मुवा, पवन मुवा नहिं ऐसा ॥  
 इह चिंता सभ सागर कहिये, साधु जानहिं कोई मर्मा ।  
 अपने उल्टि बूझे नहिं मूरख, कागद में का भर्मा ॥  
 तामें नरक सरग सब कहते, बहु परिपंच सुनावै ।







सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				
सतनाम	जल बिनु मीन, प्राण बिनु काया, कमल भँवर बिनु बास सब छीजै । मणि बिनु फणिक चन्द बिनु रैनि, प्रीति बिनु भक्ति ठवर कहाँ कीजै । माया मन्दिर बास बिनु परिमल, द्रुम पत्र बिनु छाँह किमि कीजै । सीप बिनु मोती, गजमुक्ता बिनु जौहर, जौहर बिनु लाल किमि लीजै । कहें 'दरिया' दरश परस बिनु, ब्रह्म ठवर कहाँ कीजै । ( ७ )	सतनाम	जब धरेवो ध्यान तब गर्जि ज्ञान, भव ज्ञान सर्व झल झलकत चन्देवो । पांच तत्व गुण तीन पचीसों, तैंतीस तौलि काटि कलि कन्देवो । चारि अवस्था तीनि गुण है, तेल तूरी बरि ब्रह्म अनन्देवो । भयेव पुनीत पाय परम पद, ज्ञान दीपक तिमिरि सब रन्देवो । संशय रहित साद पद अमृत, जागृत जिंद काटि यम फन्देवो । कहें 'दरिया' तेहि तरनी ताहि चढ़ि, गयऊ अमर पुर ब्रह्म अनन्देवो । ( ८ )	सतनाम	झरि झरि परत सुरंग रंग तहाँ, त्रिविध ताप तन कबहिं न तापेवो । अलि सघन घन बुन्द अखिन्डित, मंडित चहुँ ओर भर्म न ब्यापेवो । अमरलोक तहाँ शोक न सागर, आगर सबते दुर्मति काँपेवो । चन्द न सूर्य न गणपति गौरी, णपति तहाँ न वेद अलापेवो । पुहुप बिमान अमान छत्र सिर, छाप रहे छबि अपनहिं आपे । कहें 'दरिया' जेहि मति मराल भौ, ज्ञान गमि करि पुण्य न पापेवो । ( ९ )	सतनाम	अगम निगम कबि कहेवो सभन्हि मिली, ज्ञान चिराग भगती पद जावो । अक्षै वृक्ष त्रिया साखा सघन घन डार पात फल फल लावों । कोई निर्गुन निरंकार कथनी कथी, बिना अंकार कहो कीन्ह पावो । चन्द सूर दुवो विमल प्रगट है, अवनी पताल गगन छबि छावो । एक से अनन्त अनंत गुन अतीत है, प्रीति पंथ कोई संत समाएवो । कहें 'दरिया' भवो भंजन की गति, प्रीति पाँी कोई संत समाएवो । ( १० )	सतनाम	लाल हीरा मनि मोती मुकता, ज्योति प्रगास भान छबि छायो । फनि मनि बरत रहत मनि मस्तक, योग बिराग ज्ञान पद गायो । केदली कपूर कर्म कहँ नासेवो, दास पास फल आमृत पायो । भृंगा भाव भरम सभ त्यागेवो, प्रेम पागि सभ जुगुति बनायो । चुंमक चुभे लोहा मंह जैसे, चंचल चीत अस्थिर घर पायो ।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				

336



कहें 'दरिया' सतगुरु की महिमा भृंगा मद घानि घन विविधि सोहायेवो ।

( ११ )

जब दिन मनि दीन प्रगास, कमल दल फूलेवो ।

तब खुलेवो कमल कपाट, भँवर रस भूलेवो ।

उछीलेव प्रेम प्रवाह सघन, सलिता सेंधु महँ मिलेवो ।

भवो झनकार उचार गगन में, मनि मानिक झरि झुलेवो ।

हंस बंस गुन गहिर ज्ञान भवो, इमी करि बग नाहिं तुलेवो ।

'दरिया' दरस पारस रस आमृत मेटि सकल सब सुलेवो ।

( १२ )

जब दिन मनि भै प्रकाश, त्रिमिर सब छुटेवो ।

सभ खुलेवो कमल कपाट, भंवर रस लुटेवो ।

मुदेव मदन मद मंदु, कदम भटकावो ।

सो घटेवो नाहिं अमृतधार, प्रेम रस जुटेवो ।

भवो ब्रह्म निर्लेप, पनच सब फुटेवो ।

सो हरेवो सभे जम जूथ, गर्व गढ़ टुटेवो ।

कहें 'दरिया' धन जीवन जिंद फन्द सीा काटेवो ।

( १३ )

सरपुर नरपुर नागपुर, कला काम बन सर सजेवो ।

सनकादि आदि औ ब्रह्म राम सम, जल थल जीव काहि नाहिं भजेवो ।

अनल अंगार वारी त्रेन तन, मन का लपट काहिं नाहिं रंजेवो ।

जुगुती योग भोग जिन्हि त्यागेवो, निर्मल ज्ञान दीपक ताहां दीजेवो ।

त्रिविधि बेकार बारि समुद्र सम, लहरि उत्तंग तरनी ताहां सजेवो ।

कहें 'दरिया' सतगुरु प्रताप जीती, निशान ज्ञान धुनि बजेवो ।

( १४ )

कन्द्रप काहि ना काबु कीन्हों जग में, जाल ब्यापी तन मुनी मत रंजेवो ।

शंकर शक्ति छेड़ि पत साधेवो, बाँधेवो पवन काम दल भंजेवो ।

जब लागेवो पुहुप सर निपट निरंतर, खुलि गयो नेत्र काम तन छूटेवो ।

श्रृंगी ऋषि कुंज बन बैठेवो ऐंठी, मेटेवो गनिका प्रिया पगेवो ।

स्वारथ स्वाद जानु तन आपन, मन के फन्द बिरला जन जगेवो ।

कहें 'दरिया' जग कनक कामिनी, हाथ पसारी कहु कीन्ह नाहिं मगेवो ।

( १५ )

अचरज सोई बाचु जन जग में, यम जालिम कंदर्प तन जगेवो ।



कहें 'दरिया' भवो भंजन की गति, जल सेंधु ले संभेल पटकेवो ।

( २० )

प्रह्लाद भगत को भेव किन्हों, निजु सेवा निरंजन जगेवो ।

हरिनाकश जरो बरो तन तामस, देखि गर्व तन संजेवो ।

बांध्यो खम्भ स्वर्ग कर लिन्हों, अति प्रहार तन मंजेवो ।

अगम अगोचर परगट खीं ले, तड़पि तेज होय भंजेव ।

नामदेव से नाहिं दोसरो, राम नाम निजु भंजेवो ।

सुल्तान पकरि जब जोर, सोर जगत महं बजेवो ।

गाये जीयाए पियाये बछरा, सुल्तान मोरि मख लजेवो ।

कहें 'दरिया' दल दुष्ट निकंदन, कठिन काल सिर ठंठेवो ।

( २१ )

कबीर सोर जोर जगत महँ, शाह सिकन्दर लगेवो ।

भराए जंजीर त्रिशुल शरीर के, लाए मतंग ना डगेवो ।

सोअल सिंह जगाये जगत महँ, देखत कुंजल भगेवो ।

लीन्ह बचाये चाह चौगुन करी, प्रेम प्रीति नाम निजु पगेवो ।

मर्द होये मिलि गर्द पलक में, उल्टी दाग धरि दगेवो ।

तोरेव तखत ना राखा जमनपुर, बहुरि पंथ फेरि बगेवो ।

'दरिया' कहर बहर के भीतर, सतनाम निजु जगेवो ।

मेरे पीर बीर बड़ बाँको, झाँकत नैन शो बेन बीरग्यो ।

( २२ )

आदि ब्रह्म एह बादि सकल जीव, खाधि अरवाधि निगम कहि दीन्हों ।

ज्ञान गीता कवि कहेवो कृष्ण एह, मथि के वेद विमल रस लीन्हो ।

सुखदेव सत ब्रह्म तन ब्यापे, पाप निपाती बाम दूरि कीन्हो ।

कबीर बीर गुरु ज्ञान गीता, जीति जगत सत पंथ जो लीन्हों ।

मारकण्डे के डंडे काल ने, डगमग पंथ में दुर्गा कीन्हों ।

'दरिया' दरस परस पद पावन, हरषि संत जन आमृत चीन्हवो ।

( २३ )

दल मलित भये सब दूत, शो दैत निकंदेवो ।

परेवो हाँक सभ वाक डगर में, दनुज दैत सभ रंदेवो ।

पुहुमि भार उतारि लंकपुर जारेवो, हनेवो सभ दुर्जन दल भंजेवो ।

तुरेवो चाबुक चरि चौहट, काटि काल सिर खंडेवो ।

गये कल्पना कल्पतरु शो, सन्त मंत सुनि सभै अनंदेवो ।

कहें 'दरिया' धन जागृत जिंद, जीवन मुक्ति नाम निजु बंदेवो ।

( २४ )

मन मस्त मदन जब चढ़ेव गगन, तब ज्ञानहिं टारेव ।

तब धरेव धरम नाहिं, धीर सो फौज बिडारेव ।

तब हारि तेग गहु, ज्ञान मदन कहें मारेयो ।

तब धीरज धरम, दवरि फौज हँकारेवो ।

तहाँ बाजती नौबति, नया निशान तवल झनकारेव ।

तब भयेवो अमल सभ शहर बहर जहाँ लागी झारेवो ।

भये अटल पुर राज जबहिं, घट निरमल तब बारेवो ।

कहें 'दरिया' धन ज्ञान बान, मनबाजी आपु संभारेवो ।

( २५ )

जब गहेव तेग, बेगि दल साजेवो ।

तब बाजति नौवत निशान, गगन छवि छायो ।

तब घेरेवो कोट सभ चोट गोलन्ह की, वोअ कतहीं नहिं गढ़ि ढहायेवो ।

तब छेकेव शहर बहर दरवाजा, दर पर हुकुम हाकिम चलि आयेवो ।

तब चुकेव दाम चौगुना चाबुक चरि चौहट, वोह सभनि मिलि टका भरायेवो ।

तब भागेवो भूत बैताल काल सभ, सर्व सर्ग लेहिं ठवर कतहिं नाहिं पायो ।

कहें 'दरिया' धन धन वोये साहेव, मनसफदार सीनी मीलि मंगल गायेवो ।

( २६ )

सूर न सरबर करहिं स्यार से, सिंह ठवनि धरि हतेवो मतंगेवो ।

शब्द सांगि समसेर ले, सनमुख जबर कालधरि कीवो गतंगेवो ।

झपटि बाँझ जब चढ़ि गगन के, पर परिंद सभ भएवो पतंगेवो ।

पेखो हाक सभ वाक डगर में, डगमग सुनि भवो दनुज उतंगेवो ।

सत भगत जगत के जीति, प्रीति पद पावन प्रेम रतंगेवो ।

कहें 'दरिया' दल संत मंत सुख, सर्व ज्ञान भवो भरम गतंगेवो ।

( २७ )

जब चलेव पवन ब्रह्मण्ड खण्ड तब, काल डंड डगमग कीन्हा ।

तब धरेवो धरनी पर धीर बीर एह, सिंह झपटि कुंजल हीना ।

तब भयो प्रचंड अखण्ड खण्डित नहिं, मेंरु मंडल प्रकट कीन्हा ।

तब कंद्रप कंद मंद भवो त्रिमिरी, त्रिगुन पार पगु इमि दीन्हा ।

तब झरत झरी झंकार झलकत, पलक प्रेम आमृत चीन्हा ।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम</			



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मनि झलकत पल्लव जल जलज, जब अलि भँवर वाशन तीरीतं । बिलगि बिहरि फेरि उलटि कंज पर, लपटि बशतु सजल जल नीतंग । बासर उलटि पलटि फेरि रजनी, सजल जल सुखद दिन बीतंग । जो जन जानि भजे सतनाम हिं, अवरि कहाँ कोई मीतंग । चरन सरोज सकल भ्रम नासेव, आमृत तेजि पिये जनि सीतंग । 'दरिया' दरस परस पद पावन, करम काटि यम जालिम जीतं । ( ३७ ) जिमि चलेव पंथ रवि रंगि को त्रिमिरी नासी, प्रगट सभनि घट इमि कर व्यापेवो । राम रंग जल भंग ना कतहीं, होत तरंग गुन अतीत अलापेवो । जल थल जीव शीव शक्ति मीलि, स्वारथ लागि सभनि दिन खेपेवो । जहां पशु घात अघात पाप करि, पाप पंडित करि धरम जोकेवो । वोयेल काल यम जाल बिदित है, पाप पुण्य अनेग मन तापेवो । कहें 'दरिया' एह निगम नेति कथी, पंथ विमल गुन बैन अलापेवो । ( ३८ ) भरम करम, करम सब जारेव, भयो ब्रह्म भरि पूर सुरसरि लीजै । तहाँ तब तबल निशान बान, ज्ञान धुनि दुंदुभि दीजै । तब टारेवो फौदी, कहर की मैन मारि गढ़ लीजै । चढ़ि गव गगन में, मगन अमी रस पीजै ब्रह्मण्ड खंड निःकलंक नाम सो, प्रेम नाहिं छीजै । कहें 'दरिया' सोई संत मंत निःलेप, पार पुरइनि नहिं भीजै । ( ३९ ) सकुंच मीन बिनु, सीप बिनु मोती, सतगुरु बिना मुक्ति पद छीजै । नख बिनु हीरा शंख समुंदर बिनु, जल बिनु पुहुमि पत्र कहाँ कीजै । कपूर बिनु केदली दूध बिनु घृत, घानि बिनु भंवर बास कहाँ लीजै । शक्ति शिव बिनु, जीव बिनु ब्रह्म, हंश बिनु बिबरन छीर किमि कीजै । सत बिनु संत मता त्रिगुन बिनु, नट बिनु कला कवन कह कीजै । कहें 'दरिया' अंकुर बिनु बीज, बिना कर्म करता फल दीजै । ( ४० ) खलिक बिनु खलक, खलक बिनु खालिक, मालिक महरम प्याला पीजै । दृष्टि में सृष्टि, सृष्टि में सागर, सागर में सलिता सम कीजै । फूल बिनु बाग, बाग बिनु माली, मेंहदी लाल पात सम लीजै ।	सतनाम				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

343

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम



( ४६ )

गज मुकुता जग कैसे उत्पत्ति, कहीं ना सकेवो कै पंडित जीतेवो ।  
 बरसु सेवाती निरमल जल जब, जावत जल में कुंजल रीतेवो ।  
 चुंगल चिड़िया चोच चित गही, मीत मिलेवो तबहिं मनि दीतेवो ।  
 'दरिया' दरपन दरसन नाहिं, तो परसु कहां ते कहीं कवि बीतेव ।

( ४७ )

सत चरन सुमिरु जब ज्ञान नाम, सिंह प्रताप व्याघ्र दुरि भंजेवो ।  
 सतगुरु सत चरन गोहरावो, काल ब्याल धृत मुख लजेवो ।  
 सरन शिष्य जानि जिन्हि आयेवो, कोटि गयंद यूी सब छीजेवो ।  
 राखहिं सरन सत जो जान, कदम थीर डगमग नहिं कीजै ।  
 बचा सत सिंह बस जानेवो, दुरमति दूरि कुंमति धरि मीजेव ।  
 कहें 'दरिया' धन जागृत जिंद, नाम छत्र सिर कालहिं नीजेवो ।

शब्द झूलना अष्टपदी

( १ )

आशिक है रे आशिक है रे, आशि मासुक साहेब गनी ।  
 प्रेम प्याला जिन्हि चाखिया रे, लज्जत कहां सीफत धनी ।  
 मस्त हाल हुआ खुशीह है रे, निहाल कीया सभ बात बनी ।  
 हांका हरदम फक्कर है रे, रहम मिला हम यार जानी ।  
 भिस्ति बास हुआ आम खास मेरे, खुशी वोये बड़ी अग्र धनी ।  
 कहें 'दरिया' दिल दीजिये रे, जीवन थोरा अधीर फनी ।

( २ )

किसुन कांध बनी मेथुरा शहर मेरे, रंग मची चाहु लागु झरी ।  
 मुख तान के सुन बेवान लागा, एह आये खड़ी नाहिं लाज डरी ।  
 भूषण बसन अलग छूटे, खलक देखे नाहिं मुख फेरी ।  
 कोकिल बैन नैन बिशाला, एह काम का बान ते तान मारी ।  
 त्रिगुन लीला एह मोह माया, कोई जोह देखे एह ज्ञान करी ।  
 माया के रंग अजब है रे, जीव जाए पतंग दीपक जरी ।  
 निर्गुण पुरुष निर्बान सही, आवे जावे नहिं देह धरी ।  
 कहें 'दरिया' सुमिरु वाही, समुझि पड़े रहनी खरी ।

( ३ )

अजी नंद के लाल हैं बाल सखा सभ, काम कला एह रंग डारी।  
 बहर दरियाव शहर के बीच, आशिक नैन में लाज टारी।  
 कमला खड़ी सभ फौज भरी, कलोल कला गहि बाँह धरी।  
 नैन बान का तान वे सुन साधी, सीा ज्ञान गया हरि आपु हारी।  
 सोई रंग लागा एह जाल जंजाल, चाखे जगत जहर भारी।  
 चाखे जहर राखे कवन, कहर दरियाव में नाव परी।  
 हम वोये नहीं हम तुम नहीं, हम आये जगत में ज्ञान झरी।  
 कहें 'दरिया' अटल धनी, त्रिगुण तेजी सतनाम तारी।

( ४ )

जिन्हिं कंस के मारि निकंद किया, चहल बाजी सो जानिया रे।  
 जिन्हिं तेग गहा कर आपु लिए, किरतम सोई जग मानिया रे।  
 अनंत कला होए बुद्धि छले, ताहाँ जाए बरत के टारिया रे।  
 बावन हुआ बलि जांचेव को, ताहाँ बांधि पताल में डारिया रे।  
 एक नाच नाचे बृन्दावन में, एह संग लिए सखियन के रे।  
 एह तान करे किरतम बाजी, मोहन माला ग्रिव डालिया रे।  
 ब्रह्म ज्ञान बिना किछु ध्यान नहीं, त्रिगुन नदी मो हारिया रे।  
 कहें 'दरिया' कर्ता करार, वाही सुमिरु को पार है रे।

( ५ )

कहीं वेद कितेव कहिं तापिया ताप कहिं, जोगीया जाप कहीं फिरत लंगा।  
 कहीं सेवड़ा सेख कहिं डंड धारी कहीं, सेवता बन खंड राज त्यागा।  
 कहिं पंडिता पोथीया ज्ञान गीता लिए, अर्थ बिचारि निज स्वाद पागा।  
 कहीं मौन मौनी हुआ जटा सिर भारीया, जारिया तन के राज मांगा।  
 कहिं जंगम जोगिया खाक तन में मले, बांधिया पांव के उर्थ टंगा।  
 कहीं दानिया दान दे दाया दीदार में, गर्विया गर्व ते आपु जागा।  
 इतना भेष अलेष के देखिए, काल के जाल में सभे दागा।  
 कहें 'दरिया' कोई संत जन जौहरी, सुमिरु सतनाम निजु मुक्ति पागा।

( ६ )

कहिं जोगिया योग ते युगुति करे, कहीं लाय कपाट गगन तारी।  
 कहीं ध्यान प्रगट ले ज्ञान गावे, कहिं ताल मृदंग ले झाल झारी।  
 कहिं झूलना झूले रेशम डोरी, कहिं पंच अग्निनी जल साध बोरी।  
 कहिं कर माला तिलक देवे, तीरथ भरम में आपु हारी।  
 कहिं भूख मारे, कहिं पियास टारे, कहिं अपने आपु से तन जारी।

बहु रंग का पेखना सब है रे, एह जानि जहान में जीव हारी।  
सहज सुरति है मूल में रे, दिव्य दृष्टि में दृष्टि ना दृष्टि टारी।  
कहें 'दरिया' जनि पचि मरो, शब्द का सांगि ले जगत झारी।

( ७ )

भगती करो भरम छोड़ो, करम में मति तुम बूड़ि मरो।  
माया मोह के कारने रे, सतनाम से मुख तुम मति फेरो।  
दाया करो दीदार चाहो तो, नारी का फंद में मति परो।  
जेंवो काँच महल में श्वान भूँके, एह जान दिये बिना ना टरे।  
ऐसी माया संसार हे रे, बार बार के जार में जीव जरे।  
फहम कीजै शब्द लीजै, जेंव काटि बेरी जीव आए तरे।  
एह मन बाजी चित्र है रे, झाई देखि के केहरि कूप परे।  
फिटिक शिला दरश देखै, जाहाँ जाए गयंद दशन अरे।  
मन बाजी तैसी है रे, सतनाम बिना जीव कैसे तरे।  
तुम झारू शब्द निर्वाण गाहो, तुम ढाहु भर्म के मति डरो।  
तुम छोड़ि दे लाज मुक्ति के खोजु, अजर अमर अडोल है रे।  
कहं 'दरिया' दिल देखि बिचारी, दाया तकथ अनमोल है रे।

( ८ )

जन जानि के नाम परतीत करो, सतगुरु सेवा सरन मेरे।  
साफी बैन सो संत सदा हैं, काल कुबुद्धि के मारिये रे।  
रहनी रहो धरनी धरो, कछोट लंगोट के बाँधिये रे।  
सोई जीव जीवन छपा सनदी एह, दीदी दरस में हेरिये रे।  
सिद्धांत सोई फुरसत फहम, अलसत के टारिये रे।  
अकीन इमान जौहर जाहिर, दोजक सवाल नाहिं डारिये रे।  
हाजिर हजूर बैठे तकथ पर, वाहि के क्यों ना जाँचिए रे।  
कहें 'दरिया' दरस साई, दाया करे कमीना रे।

( ९ )

घोरा तेज चलाक मैदान में रे, ज्यों खैंचि कमान पनची आरे।  
सनमुख शहीद मुसुक के कारने, देखि बिचारी जीव वारि डारे।  
वाह वाह किया सभ तेजि दिया, सोई जानि लिया शब्द के रे।  
जिन्हिं आपहिं आये सनमुख दिया, जुग युग जीवे कवन मारे।  
तेहि आये साहेब नेवाजी लिया, रहम करम में आसीया रे।  
तारीफ किया छपलोक दिया, ज्यों धन तुम, धन तुम, धन प्यारे।

बहु तारीफ की राह है रे, कोई आए जगत में जीति झारे।  
कहें 'दरियाव' शहीद मर्दान है तुम्ह एक तुम ना एक दम टारे।  
( 90 )

हरदम दारु हरदम दारु, हरदम दारु हम जानिया रे।  
एक तन कीजै ही माम दीसत, खमीर सभ वो करि डारी।  
सबुर लीजै सफा कीजै, पिये कोई दिल दर दरदा रे।  
एक नूर जहूर कफा कतल, एक दीदम झलक में आइया रे।  
दुई चश्मे दिल ऐनक सार, महरम हुआ सभ बात मेरे।  
करार कमान चढ़ि रहे, वोलि मस्त हुआ मैदान मेरे।  
यह खाक से बंदा पाक हुआ, सीा काम किया है अपना रे।  
कहे 'दरिया' दरगाह दाखिल, हक हका कर्तार है रे।

( 99 )

हरदम में दम लगाये ले रे, जहाँ दम लगा तहाँ गमि पेखा।  
अर्थ उर्थ के मूल में साधि ले रे, तहाँ होत झनकार सत शब्द रेखा।  
अष्ट दल कमल के खुले कपाट, सहस्र दल कमल में भँवर पेखा।  
तहाँ सेत घटा चमके छटा, तहाँ सेत मोती अगम लेखा।  
ताहाँ चीत चकोर चुंगन लागा, गगन मगन चित चुभि राखा।  
ताहाँ वेद कितेब के गम नाहिं, निः तत्व सरूप शब्द देखा।  
सत सतनाम पहचानि ले रे, एह सत बिना सभ है धोखा।  
कहें 'दरिया' कोई संत जन जौहारी, जिन्हि एह मन के तौलि राखा।

( 92 )

तुम खेलु चौगान मैदान में रे, एह ढाहु भरम की भीस्ति प्यारा।  
सत शब्द अनूप है रे, कोइ जाए मैदान में गोए मारे।  
लागी लगन मन्त्र न है रे, जिन्हि ददनी कंद के दूरि डारे।  
जाए जाये सुरति गगन मेरे, जाहाँ घेरि घटा चहुओर फेरे।  
सेत छापा देखि काल काँपा, सिरे जाए जाहाँ अमान प्यारे।  
तारीफ किया तेहि जन के रे, जिन्हि टेरि तमासे हेरि मारे।  
वाह वाह किया तेजि दिया, तुम जानि लिया शब्द सारे।  
कहें 'दरिया' साहेब रहम, भरम करम के जानि झारे।

( 93 )

सत सिलाह सुरति नेजा, जहाँ जाये साहेब भेंट कीता।  
घोरा ले सिर पाव समसेर है रे, तुम करो सलाम मैदान दीता।  
यह सूर शहीदा का काम है रे, जिन्हि मंडि मैदान में खेत जीता।



खुद पाक अल्लाह को याद करो, कोरान पढ़े इलिम लेवे ।  
 पंज निमाज है पंज बखत में, एह चीक चोभ बंग दीये ।  
 मनि मुरदार हरमत लख, अरस के सवाल में प्रेम पीवे ।  
 शराब शराब फुरमावता नाहिं, एह जीयता जान जबह कीये ।  
 नबी रसूल नहिं चर्ब चाखा, एह रुखिया रोटिया जीव जीये ।  
 जाकी खून है वाकी गर्दन, दोजख जार में जा रंग जाये दीवे ।  
 ऐसो जुलुमी को बिहिस्ति कैसे मिले, एह जुल्मी जोए के फीट पीवे ।  
 कहें 'दरिया' साहेब धनी, नजर निगाह में नेक लिये ।

( १८ )

अजुद के साफ जीकिर साबूत, फिकिर गले नाहिं साँच है जी ।  
 मोलना मन महरम महजुद है, अलीफ निशान में सो काजी ।  
 पीर सोई ना पाक चाखे नाहीं, हक हरदम में बंग साजी ।  
 हका हका फकर फकर, अलख पलक में तन ताजी ।  
 हरदम में दम दाखिल हुआ, मोस्किल कतल काफा इया जी ।  
 सुल्तान सोई तन मन फक्कर, एह नेक निगाह नजरि राजी ।  
 हुजरा हाजिर कदम कादिर, दीदार दीदम कुफुर भाजी ।  
 कहें 'दरिया' दर्वेश सोई नाहिं खून करता करस माजी ।

( १९ )

कहीं हंस मिले कहीं काग काछी, हंस के बरन अबरन गती ।  
 मुख लाल सोहावन बैन बोले, एह चाल चले अजब जती ।  
 नासा श्रवन सुंदर रेखा, झलकत नैन हीरा जोती ।  
 सखर गंभीर के तीर रहे, जल रंग जमीन में चुँगु मोती ।  
 काग कछिया एह भेष धरे, चंचल चपल नाहिं थीर रती ।  
 बुबास के ठवर में दवर करे, कहीं जाए बिगिंधि में ठोर गोती ।  
 हंस मिले हंसन पारख, नीर और छीर विवरन गती ।  
 कहें 'दरिया' जाके नाम निः अक्षर संत सार हुआ सुबद्धि सती ।

( २० )

शबद की सांगि समसेर तुम पकड़ि ले, सुरति नेजा निर्बान कीता ।  
 रोपेवो दुवो खम्भ घोड़ा झारि ले, झपटि के प्रेम पाखरि पहिराव दीता ।  
 मंडि मैदान गगन के बीच में, चित चाबुक चटकाए लीता ।  
 सूर के मुख पर नूर झमकी, सनमुख समसेर लेवार कीता ।  
 वाह वाह धन धन जीवन है रे, जिन्हि मुक्ति मैदान में जान दीता ।

फकर फारीक फरमोस नाहिं दीन में, लीन दरवेश सभ काम कीता ।  
 सोइ वोलि साहब के पास है रे, जिन्हि आपना जान हजूर दीता ।  
 वोई दिल खासा यार है रे, कहें 'दरिया' पहचानि लीता ।

### शब्द उल्टी बानी

( १ )

ज्ञानी शबदहिं करो बिचारी ।

बाट चले तेहि काँट चुभि गौ, उबट चला भौ न्यारी ॥  
 अँधरहिं सूझे दूर देश ले, बहिरा सुने अगोचर ।  
 बौधा रहा से अकथ कथतु है, चतुरा भौ गौ भोचर ॥  
 अर्थ रहा निःअर्थ सो भै गौ, बिना अर्थ निजु माले ।  
 वक्ता रहा से बहि छितराना, गूँगा बोले बहु हाले ॥  
 जहाँ शून्य तहँ कह कह नहिगौ, बिना कम्प उजियारी ।  
 अग्नि के पुंज तहँ मीन उमंग है, यह अचरज बड़ भारी ॥  
 आस रहा सो निरास सो भै गौ, बिना आस ताहाँ आवे ।  
 चलता रहा से मृतक भै गौ, मृतक उठि के जावे ॥  
 बेध रहा निरबेध सो भै गौ, बिना बेध सो झरई ।  
 कहें 'दरिया' एह जग के कौतुक, सोइ तरनी भव तरई ॥

( २ )

साधो विदरी घर घर रोवे ।

आपन बात कहे साधुन्ह से, साधुन्ह मखा पोवे ॥  
 अग्नि बिना उन छपर जराया, धरती बरिसे पानी ।  
 पानी से तीन मेढक निकला, उन भी कथा बखानी ॥  
 गदहा मुख में वेणु बजावे, करहा पढ़ते गीता ।  
 भैंस पदुमनी नाचन लागी, यह कौतुक होय बीता ॥  
 बासर सोवे रइनि में जागे, सोखेव सागर साता ।  
 वोहि सागर में पानी न कहिये, सुन्दर पर्वत पाता ॥  
 तेहि पर्वत पर छेरि बियानी, नाम रखा सोन गौरी ।  
 सुर नर मुनि सब करे चरौरी, लड़्डू खायसि बौरी ॥  
 जो देखे सो सगुन विचारे, ठोके आपु भतारा ॥  
 बकुला एक माछी घेरि बैठी, सबकी मुक्ति बतावे ।  
 बिनु बैकुन्ठ तुम्हें ना छोड़िहों, झाल मजरिया गावे ॥

ऐसे मगु में मगन सभे कोई, बिरला गया पराई।  
कहें 'दरिया' बिनु फाँसे पकरेसि, अपने घर में लाई॥

( ३ )

जतन बिनु मृगा सभे नचाई।  
रास बिरानी राखन चाहे, घर का खेत चराई॥  
देखत देख अदेख न कहिए, नदी किनारे आई।  
दुर्म बिना एक फूल सोहावन, मृगा चुनि चुनि खाई॥  
पनच बिना धनुही एक कहिए, गांसी कीलि ना वाके।  
कर बिना यह कसे कमाने, सोई सिपाही बाँके॥  
जब मारा तब गिर पड़ा है, वाके पाँव ना शीशा।  
घाव लगा मरा नहिं कबहीं, सोई सभन्हिं में दीसा॥  
उमड़ि सिंधु जब चला सरग के, बुन्द में जाय समाई।  
गज गयंद चिऊंटी में पैठा, अचरज कहा न जाई॥  
ऐसा बान धनुष जब होखे, तब गुन जाय समाई।  
कहें 'दरिया' नर बड़ो बनौरी, जीव सो चुन चुन खाई॥

( ४ )

जग में अजब कहानी आई।  
वृषभ घर घर सगुन करतु हैं, भिंडी वेद सुनाई॥  
ऊपर कोल्हू तेली है नीचे, कातरि कौतुक लाई।  
जाठ बिरानी दर में राखा, पकड़ि मंजारे खाई॥  
चादर ओढ़े बाधिनि आई, परदे बात जनाई।  
चूहा घर में नाचन लागे, बिल्ली ताल लगाई॥  
वामी में एक विष घर पैठा, जहाँ मेढक का बासा।  
मेढक उलटि भुअंगहि खाइसि, हमसे कौन तमासा॥  
ब्याघ्र कहे सुनो रे बटई, हम एक अदल चलाई।  
स्वान हमारे घने सीख है, नित नै मांस पठाई॥  
ज्ञानी ज्ञाता जो कोई बूझे, सीधे शब्द बनाई।  
कहें 'दरिया' उल्टा से सुल्टा, यह सी गतिहिं समाई॥

( ५ )

जग में परी एक धंधारी।



वक्ता बूड़े बाट के भीतर, अनवक्ता भौ हारी ॥  
 अगिनि के पुज भँवर तहँ लोभे, भालु से कीन्हें यारी ।  
 मेढक कूदि सर्प सिर बैटे, हमके काहें बिसारी ॥  
 धोबी धोवे मैलि नहिं राखे, बिनु जल आनि पखारी ।  
 आन के धोवे आपन घर खोवे, यहि विधि परा बेगारी ॥  
 झीना सूत नजरि नहिं आवे, कपड़ा बिनु बिचारी ।  
 जो रे बिना सो लगा गोसाई, वा के बहू ना वारी ॥  
 भिंडी भरम करम में जागे, सिर पर कमरी कारी ।  
 काली कमरी कागा खाया, कल सभ कीन्ह उजारी ॥  
 गस्ती के घर कसबे होते, फिर परा पगु हारी ।  
 कहें 'दरिया' सोई हाट तमाशा, खाट लिए सिर भारी ॥

( ६ )

साधो ! खाया खेत घेराने ।  
 सभ मिलि यतन किया बहुभांती, मृगा बहुत सयाने ॥  
 बाहर बाहर फिरे शिकारी, अन्दर मरम न पावे ।  
 धनुहा लीलि गया वह सावज, बान कहाँ ते लावे ॥  
 भालू दवरि के घर में पैठा, कौआ फंदा लाया ।  
 माछी सभ मिलि मंगल गावै, बस्तु अनूपम पाया ॥  
 मूस कहे सर्वो घर हमरे, बिल्ली देवघर पोते ।  
 हम तुम मिलिकर करों सगाई, खेत कौन यह जोते ॥  
 त्रिवेनी तीनों के खाइसि, बड़ी तीर्थ है गंगा ।  
 मच्छ कच्छ घरियार बियानी, मांस अहारी भंगा ॥  
 अपने मत में सभ कोई जागे, पहरु जाय पुकारा ।  
 आगि लगाय घर सोवे प्रानी, यहि विधि होय उबारा ॥  
 करम लिखा फल सभ कोई ढूँढे, कागद गया भूलाई ।  
 लिखन वाला सोई गया है, शीश बिहीना खाई ॥  
 जगता भगता सभ कोई ज्ञाता, बुझो शब्द लवलाई ।  
 कहें 'दरिया' दर करे दिवानी, वा दर खबरि न पाई ॥

( ७ )

साधो या घर अजब तमाशा ।



ऊपर धूर नीचे बहे सरिता, सागर को जल थोरा ॥  
 काठ बिना एक सुन्दर तरनी, कनहरि को गुन सांचा ।  
 भव में लेप लगे ना कबहीं, जो रे चढ़ा सो बांचा ॥  
 कंचन कांच एक मोल बिका, खाक भया अनमोला ।  
 सौदा करते बैल बिकाना, घर घर वक्ता बोला ॥  
 मृगा चरे द्रुम ना पतई, पद अनुरागहिं ज्ञाता ।  
 चला शिकारी सावज मारे, सावज उलआ खाता ॥  
 झीनी जाल बाझे जीव मीना, जोरे बिना सो छूटा ।  
 उबट चला घर पहुंच बटोही, बाट चले तेहिं लूटा ॥  
 बिनु गागरि पानी भरि लावे, लेंजुर कुँआ समानी ।  
 तीन जना में झगरा लागा, बुझहु पंडित ज्ञानी ॥  
 गूंगा होय भर्मि कर पहुँचे, बहिरा करे विचारा ।  
 गुरू रहा घर छोड़ के भागा, शिष्य भया करतारा ॥  
 दाव खेले तेहि ज्ञाता कहिए, निरदावे सो भव भूला ।  
 कहें 'दरिया' जो शब्द विचारे, मेटि जाय यम शूला ॥

( १० )

उल्टा पल्टा ज्ञानहिं जान ।

जब कहा तब किया न कोई, अब क्या जब पूँजी खटान ॥  
 छेरि बियानी डँवरु ऐसा, अति छबि सुन्दर नीका ।  
 दुन मुन दुन मुन फिरे डगर में, फिर वाही कर बीका ॥  
 गगन गरजा सिंधु सरग ले, चहुँ दिशि रहु छितराई ।  
 दुई शिकारी तामें पैठा, खोजत अंत न पाई ॥  
 कथनी मथनी ब्रह्मा के घर, हारि रहा नहिं मिला ।  
 बिना रूप का राग सुनावे, दुइ पर्वत है खीला ॥  
 जो आया सो गया न कबहीं, घर घर माखन बीका ।  
 बाके सब मिलि चाटन लागे, अंत काल भौ फीका ॥  
 ऐसी अकथ कहानी जग में, माछा कूदन लागा ।  
 कहें 'दरिया' वोहि धरे न कोई, केवट उठ के भागा ॥

( ११ )

साधो एक वन झाकर झुवा ।

लावा तीतर तेहि माँह भुलाने, सान बुझावे कौआ ॥  
 बिल्ली नाचे मूस म्रिदंगी, करहा ताल बजावे ।  
 दबकत छपकत चीता आवे, तीनु जना धरि खावें ॥  
 गदहा वेद उचारन लागे, रोरन तान सुनाया ।  
 भैंस पदुमनी नाचन लागी, भैंसे युगल बँधाया ॥  
 सर्पा नृप से सिखवन लागे, लेहु न मम उपदेशा ।  
 डैन पसारे गरूड़ा आया, लीलि गया धरि केशा ॥  
 घर जरे तब घूर बुतावे, आगी खाया पानी ।  
 तीन लोक में ढूँढन लागे, घर में बैठी रानी ॥  
 मोटरी फाटी टाटी उड़िगौ, टंडा गयो बिलाई ।  
 कहें 'दरिया' यह जग के कौतुक, जल देखि मीन पराई ॥

( १२ )

जग में अजब कहानी देखा ।  
 कहे सुने कैसे बनि आवे, बिरला जन कोई पेखा ॥  
 परबत परबत फिरे मछरिया, अगम बहे जल जहवाँ ।  
 धीमर जाल लिये कर फिरे, तीतिर बाझे तहवाँ ॥  
 घायल हुआ तेहिं चोट न लागा, बिनु घायल सो मुआ ।  
 निरपछ रहा सो उड़कर भागा, पकड़ा पंख ना सुआ ॥  
 बटर्ठ कहे बाज हम मारब, मेढक कहे भुजंगा ।  
 स्यार कहे हम सिंह से लरबों, लोमरि तड़पे गंगा ॥  
 प्यास वाला पानी नहीं चाहे, निर्मल बहे जल धारा ।  
 निरप्यासा निर्मल जल देखे, सोखे सिंधु अपारा ॥  
 दूध बिना जो दही जमाया, अन जामन नहीं मुआ ।  
 कहें 'दरिया' अब सभ दर त्यागो, होनी हुआ सो हुआ ॥

( १३ )

साधो घीव देत घोर नरियाई ।  
 घृत मिला तब मृतक भागा, छांछि चली बढ़ियाई ॥  
 वेद मथा तब भेद मिला है, अति छवि सुन्दर नीका ।  
 बक्ता रहा सो बहि छितराना, नायब के कर बीका ॥  
 सिर पर खाट हाट में फीरे, सौदा बहुत बड़े बिकाना ।  
 धर्म करो यह दया सोई है, बकुला सयाना ॥

जल बिनु तरनी तरक ना लागी, कनहरि उठि के भागा ।  
 एक भी पैठा दुइ भी पैठा, पैठा बहुत अभागा ॥  
 गोह गर्व ते गर्जत फिरे, गर में बाँधे बाना ।  
 इधर उधर ताना तनियां, अझुरा सूत पुराना ।  
 सिंह सियारे परी लराई, मारि किहिसि पिसमाना ।  
 कहें 'दरिया' यह अजब कहानी, सुना वेद पुराना ॥  
 ( १४ )

साधो वेद बनौरी सुना ।  
 बनत बनत यह बनि परेगा, बिगरे पाप न पुना ॥  
 अगुआ एक आगेहि आया, घर घर आग लगाया ।  
 माड़ौ जरिगौ कलशा फूटिगौ, दुलहिन मंगल गाया ॥  
 दुलहा संग भागि बरियाते, कागा नेवते आया ।  
 चीकस बीच में फूलि के बैठे, हम भी भोजन पाया ॥  
 महरा एक पैठा जल भीतर, तिन्हे मच्छा धरि खाया ।  
 वाके लगुवा दूढ़न लागे, खबरि कतहिं नहिं पाया ॥  
 सिंह शार्दूल घर आनन्द बधाई, हम तुम्ह मंदिर छाई ।  
 छागर छेरि राखा घर भीतर, बाहर सब गुन गाई ॥  
 विपरीत भांति पेड़ पुरातन, तामें पाँवरि आई ।  
 कहें 'दरिया' पाँवरि के भीतर, भौरी जाल बनाई ॥  
 ( १६ )

साधो या जग में ठग ठाकुर ।  
 केवटा पैठा जल के भीतर, लीलि गया तेहि भाकुर ॥  
 अब्दुल्लह दुलहिन चित राता, दुलहिन बनी बहु भांति ।  
 निशिवासर तेहि संग बसतु है, चिन्हें न जाति अजाति ॥  
 जल के रंग जलही मिलि गैउ, जल रंग मिलि भौ श्रृंगा ।  
 पवन के रंग पवन मिलि गयेऊ, चुनि-चुनि खावे पाता ।  
 घाव करे कोई मरम न जाने, बिनु चिन्हे उत्पाता ॥  
 छेरि उलटि बिगे कहँ पकड़ा, बिगे कहँ बहुत अनंदा ।  
 हमरे महल करो सुख राजू, तोरि सको नहिं फन्दा ॥  
 चकई एक चुप होय बैठी, चकवा करे पुकारा ।  
 कहें 'दरिया' नहिं वा दर जानूँ, या दर तू दरबारा ॥  
 ( १७ )

साधो या बन में बनवारी ।

झाल मजरिया बाजत आवे, मोहन मदन मुरारी ॥

मने गावे मने बजावे, मने खेले शिकारा ॥

नेउरी घूम-घूम नाचन लागी, पकड़ा नन्द कुमारा ॥

भालू भरम से दौरत फिरे, लाल मनोहर आया ॥

दाँत निपोरे करहा आया, बहुत बिसुनु पद गाया ॥

गोपी दौरि के नाचन लागी, पहिरे अगिनि की सारी ॥

सिंह शार्दूल दोनों हरवाहा, बोवत खेत कुदारी ॥

दाँड़ मिजि तौलन लागा, एक मन पांच पसेरी ॥

कुछ वोया कुछ जतन करतु है, फिर वाही की चोरी ॥

ऐसा चरख घुमाया जग में, जो घूमा सो मुवा ॥

कहें 'दरिया' पीछे पछताना, ज्यों सेमर का सुआ ॥

( १८ )

बन में बाघ चरावे गाई ॥

इधर उधर लिये फिरे, साँझे देत ढुकाई ॥

बकरी ले बिगे को सौंपा, जतन करो नहिं छोटों ॥

एको रोंआ जो बिस्तुर होइहें, धरि-धरि मुगरिन पीटों ॥

भूंसहिं लेई मंजारहिं सौंपा, राखो माल हमारी ॥

तौल देउं जो घटिहों कबहीं, गहुअन दांत उपारी ॥

उल्टा पल्ला ज्ञान हमारा, साधुन्ह को मति ऐसा ॥

कहें 'दरिया' उल्टा से सुल्टा, है जैसा का तैसा ॥

( १९ )

संतो सुनि लेहु राम दोहाई ॥

पोथी पत्रा पांडे लिए, ताल मछरिया खाई ॥

पंडित के एक गौवा होती, कान खुर नहिं पोंछी ॥

कँटिया दूध देवे ना कबहीं, सीग चलावे घोंची ॥

मियाँ ने एक मुर्गी पाली, पाँव शीश नहिं ठोरी ॥

अलह नाम लेवे ना देबे, ठोर चलावे चोरी ॥

काजी कहे जो हद हम कीन्हा, मति कोई झगरा लावे ॥

झगरा झाँकत बगरा उड़ि गौ, शीश बिहिना खावे ॥

भक्ता भक्तिन बंधल बाटे, अच्छो खाट बिनि लावे ॥

वोह खटिया पर सूते ना कबहीं, हाट तमासा धावे ॥

हिन्दु कहे ज्ञान हम सीखा, मुसलमीन कहे महरम ॥

कहें 'दरिया' यह कहर खोदाई, चलो सिताबे चहरम ॥

( २० )

साधो नीर क्षीर दही जमाया ।  
 अग्निनी के जोरन तामें दीन्हा, निर्मल बाती आया ॥  
 चार मसाला तामें लागा, या घट प्रकट देखो ।  
 ज्ञान विचारे निर्मल भै गौ, वाही जन के लेखो ॥  
 परिमल अग्र बास तहँ धाया, निज अपने घर टीका ।  
 तीता पानी निर्मल भै गौ, हर बातन महँ नीका ॥  
 कीट पड़ा भृंग के पाले, कीट से भृंगा होई ।  
 गाफिल गंदा रंदा यम ने, वाके पूछे न कोई ॥  
 अपना रंग रंगे अरुझाना, लील के दागी दीन्हा ।  
 कागा ते यह हंसा होइगौ, मैन मजीठहिं चीन्हा ॥  
 नदी अनेक मिली सागर में, खारो जल भौ जैसे ।  
 कहें 'दरिया' पारस को गुन है, तामा कंचन भौ तैसे ।

( २१ )

साधो सुनु अविगति की बातें ।  
 गत में आया गतहिं समाया, फिर वा गति में राते ॥  
 गढ ते गढुआ भेड़ि भई है, भें भें करने लागी ।  
 काम क्रोध यह सभ में ब्यापे, बिरला जन कोई त्यागी ॥  
 गइया एक जो फिरे शहर में, एहुँ युग युग जीवे ।  
 छांद बाँध कछु वाके नाहीं, रूधिर जल के पीवे ॥  
 वृक्ष कहे मंगर हम मारब, मंगर बिच्छा खाते ।  
 डार पात फूल सभे सुखाने, एहुँ मरि मरि जाते ॥  
 एक सो अनन्त अंत फिरि एक है, एक में अनन्त समाना ।  
 रेख रूप कुछ वाके नाहीं, ब्रह्म वेद बखाना ॥  
 करे अकूफ फहम जो आवे, जढ़ से काह बसाई ।  
 कहें 'दरिया' यह ज्ञान गाँसी है, पाहन पर मुरि जाई ॥

( २२ )

साधो नउवा नगर जनि बूड़े ।  
 मूड़े सो जाके छूरा नाहीं नाव खोजत जक्त बूड़े ॥  
 कर विहिना कसे कमाने, सीस बिहीना लरता ।  
 काया स्वरूपी मार ले आवे, यहि विधि जग में बरता ॥  
 अग्निनी बिनी उन्हीं छपर जराया, ऐसो जुल्मी जागा ।  
 जरा सभे बाँची एक रानी, वाके आँच न लागा ॥

वोय रानी के राजा ब्याही, ता पर कहे कुमारी ।  
 खसमहिं बाँधि पलंग पर डारे, यहि विधि परा बेगारी ॥  
 हरि की भक्ति सीा जग जानहीं, घर की चरखी खटाना ।  
 जब लागि सभ मिलि देहिं दोहाई, तब लागि शहर लुटाना  
 बढ़िया अरसी मांजत फिरे, घर-घर भया मोआसा ।  
 कहें 'दरिया' यह सैन राम को, देखा अजब तमाशा ॥

( २३ )

साधो गल चमरा है गाधू ।  
 धोबिया के घर धर्म खोजतु है प्रभु आये घर साधू ॥  
 मोर पच्छ पर भौरा भूले, मौने भै गौ बौरी ।  
 उल्टा कुंभ भरे जल माँहि, बकुला खोजे झौनी ॥  
 मूस मंजारहिं भई सगाई, मिलि जुलि मंगल गाई ।  
 सर्पा आगे नेउरी नाचे, चील्ह जो नेवते आई ॥  
 ब्याघ्र के घर पढ़े पुराने, दादुल भै गौ वक्ता ।  
 कीचस आगे चिखुर बियानी, भालु बनी है भक्ता ॥  
 आगि लगाय के घर में बैठे, बाहर पहरू बोले ।  
 नवो नाड़ी का कोठा बहत्तर, दशो दुआरा खोले ॥  
 हँसि के पैटे रोय के निकले, ऐसी हरि की बाजी ।  
 कहें 'दरिया' सत शब्द बिचारो, पंडित हो या काजी ॥

( २४ )

साधो बड़ा वचन है भारी ।  
 माया लता इह द्रुम ग्रीद है, विविध रचा फुलवारी ॥  
 ऊपर मूल इह डार पत्र है, छाया सघन है शोभा ।  
 जीव पंछी इह मन मधुकर है, कहीं घ्राणि में लोभा ॥  
 बीज से बीज इह फैल परा है, बुंद बुला जिमि आई ।  
 चले जात फिर बिलेमान होय, रचि कै फेरि बनाई ॥  
 मैं मैं करे माया है मेरी, कवतुक कला इह लाई ।  
 छल बल ते इह छीनि लेत है, कर मीजि फिरि पछताई ॥  
 आया कहाँ ते गया कांहा फिरि, भर्मि भर्मि भव भटका ।  
 बाजीगर के हाथ डोरी है, यम साटिन्ह से सटका ॥  
 गया अचेत चेत कछु नाही, साहब सुरति बिसारी ।  
 कहें 'दरिया' दाया इह जापर, भव से लेत निकारी ॥



( २५ )

साधो इह मत समझो जूरी ।

गंगा समात देखा गागरी में, गागरी बहुत गरूरी ।  
गंगा कहे गागरी सुनु बौरी, फिनि सेउ आस हमारी ।  
मोह मता तेजसि ते आपन, सागर कहिए भारी ॥  
कोटि क्रम धोवै सागर में, छूत पाप सभ नासे ।  
सो सागर में छूति ना कहिए, दुर्मति दुबिधा भासे ॥  
गागरि गर में फूटि गई है, सागर ग्रीद में फेरे ।  
कहें 'दरिया' सो बड़ा सेयाना, जाके भर्म न घेरे ॥

( २६ )

साधो तन ते सूत अरुझाना ।

बैठी पेवनी तोहि सझुरैहों, बीनी दीहो चरखाना ॥  
नरी नरी में नरी भरइहों, ढरकी तेल चिक नाना ।  
उपर नचनियाँ नाचन लागी, ठोकि के बीनों सुजाना ॥  
अछो कपरा तन भरी का, करो सखी मनमाना ।  
तामें जरद किनारी लागी, देखत छवि छहलाना ॥  
कुल की कानि कवे जनि राखो, पिया मुख प्रेम समाना ।  
धुँघट खोलि नाचो मैदाने, तबे सोहागिनि जाना ॥  
ऐन अंजीर साफ करु नीके, देखत जीव ललचाना ।  
साहब दुलह दुलहिनि के दील, जो जाके मनमाना ॥  
अमर लोक में अमर बिछवना, ब्रीगसे पुहुप बेवाना ।  
कहें 'दरिया' जोलहे ना बीना, वाकी सिपित बखाना ॥

( २७ )

सिंह सुता रहा कि चलता ।

गज गयंद इह गर्व गरूरी, झारि झपटि के लरता ॥  
रोगी भोगी जागन लागे, वेद विहिति कर साधा ।  
पांचो इन्द्री पठ निग्रह करि, धनुष पनाचे बाँधा ॥  
सोवल सिंह जगावै मति कोई, भागि कहाँ फिरि जइहो ।  
तीनि लोक में ठवर कहाँ है, सीस पटकि के रोइहो ॥  
सिंह सपूता कुल के आगर, कर्म कनवड़ा भागा ।  
मृतक छोड़ि जीवत के खावै, ऐसो संत सुभागा ॥

सिंह मांद में देखा न कवहीं, ऐन चौहटे टीका ।  
 रहे बेकैद करार कमाने, हाट कतहिं नाहिं बीका ॥  
 अपने मगु में मगन सभे कोई, गगन काहाँ ठहराया ।  
 कहें 'दरिया' कोई मस्त फकीरा, या झरि बिरलन्हि पाया ॥

( २८ )

हरिजन सब मिलि गावै बनौरी ।  
 बिना खसम उह ब्याह करतु हैं, ऐसी जग में बौरी ॥  
 लगन धराया मंगल गाया, पाँच सखी मिलि झौरी ।  
 सजन कुटुम्ब के नेवतत फिरे, ऐसी बनी ठगौरी ॥  
 खंभ बिना माँडो इह ताने, कलशा लिखा चितौरी ।  
 पगु नाहिं शीश मुख नाहिं रसना, का सिर बाँधिहो मौरी ॥  
 श्रवन सुना देखा नाहिं दुलहा, ऐसी बात अनौरी ।  
 काके संग तुम कोहबर जैबहु, मृगा गया चरौरी ॥  
 पगु बिनु चले शीश बिनु डोलै, ऐसी बात बेडौरी ।  
 गाँव ना ठाँव ठवर नाहिं कतहीं, टुनुकि टुनुकि चलु नेउरी ॥  
 करहु अकूफ फहम जब आवै, चिकन रचा सीा चौरी ।  
 कहें 'दरिया' इह अजब कहानी, बिनु देखै सीा दौरी ॥

( २९ )

हरिजन यह कौतुक नाहिं नीका ।  
 कागा मगन भया माधो से, यह दह बकुला टीका ॥  
 समधी घर पर भेजा सजन घर, रंझै वेद उचारी ।  
 माछी मगन मनोरथ गावै, सुदीन भला पग ढारी ॥  
 लंगर कहे झगरा हम छोड़ल, अब ना करबे खेती ।  
 सिधरी सबै स्वर्ग कै जइहैं, यह गुन देब ना सेती ॥  
 लागी लवर दवर बन भीतर, मृगे रोवै पुकारी ।  
 कहवे ब्याघ्र हम सभ गुन आगर, तुमके लेब निकारी ॥  
 बटई बाट रोकि के बैठी, ऐंठि फेकिसी एक धागा ।  
 निरमल रहा सो निरपछ भागा, बाझ गया बिच कागा ॥  
 साँच कहों तो हर कोई खीझै, झुठी वचन सुलेखा ।  
 कहें 'दरिया' पर्वत पर कवला, यह गमि बिरलन्हि पेखा ॥

( ३० )

केवटा जल में पैठु सम्भरी ।

मगुर माछ तोहि धरि खइहें, बहुत जाल धरि फारी ॥  
 जल में बाहर फिरि आवे, पर्वत चुंगहिं पाता ।  
 अन्न ना खाये पिये ना पानी, बिनु मद फिरे सो माता ॥  
 उलटी नाव गये जल भीतर, ऊपर माड़ो छाया ।  
 चूँटी कहे स्वर्ग के जइबे, अग्निनी कि ताव देखाया ॥  
 सीधरी एक बकुला धरि खाई, इंद्र लोक फिरि आई ।  
 भाग भला यह भोग बना है, अँधरे अर्सी पाई ॥  
 तुम रीती तीया आदि होती, कतनो जल मह धोवे ।  
 आपु विचारे साधु भला है, गस्ती के घर खोवे ॥  
 मगुर माछ के एहि करनी, वेद विमल सभ भाखा ।  
 कहें 'दरिया' सभ भगत जग्त में, विंदरी को रस चाखा ।

( ३१ )

महतो खेती करो सम्भारी ।  
 चित्रगुप्त जब लेखा मगिहें, पगु में बेरी डारी ॥  
 बहुत बीज तुम ऊसरे बोया, कुछ जन्मे कुछ अवइ होइ ।  
 जो उपजा सो चिरईनि खाया, घर में बिल्ली भोई ॥  
 भाँति भाँति यह बकुला बैठा, चिकनी कथा सुनाई ।  
 धरम करो यह रक्षा होगा, श्वानहिं नेवति जेंवाई ॥  
 माड़ो छाया खबरि पठाया, गीध नेवति सभ आई ।  
 कौआ सभ मिलि मंगल गावहिं, भली बरात बनाई ॥  
 माड़ो जरिगौ कलसा फूटि गौ, दुलहा चला पराई ।  
 घेरि पकरि के भेड़िन्ह छेका, दुलहिन सोर लगाई ॥  
 भैंस पदुमनी बीच में बैठी, गीरह गाँठि लगाई ।  
 कहें 'दरिया' यह जग का कौतुक, गदहा वेद सुनाई ॥

( ३२ )

नर के कवतुक देखहु आई ।  
 जो रे देखे ताहि कोई ना माने, अनदेखे पतियाई ॥  
 राम भजन ते ग्रह ने ग्रासेव, बिनु जल बहु पवनारी ।  
 जो रे मुआ तेहि खोजन लागे, गहिरे पैसि सम्भारी ॥  
 जहाँ गहिर तहाँ पानी नहीं, ऊँचे पर्वत भीजा ।  
 जहाँ पानी तहाँ नाव भुलानी, केवट से का खीजा ॥



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम				



निशिदिन हेरों उत्तर बाट, इंगला पिंगला सुषमनि घाट ॥  
 आश्विन मास आस मम पूज, बीते कृष्ण शुक्ल पक्ष दूज ।  
 “सत्पुरुष” गृह लिन्ह निवास, कहें ‘दरिया’ सुनो रोपन दास ॥

### शब्द प्रकृति के

अस्थी मेद रोम त्वचा और नस प्यारे ।  
 इनमें कछु नहीं तेरो पृथिवी गुन न्यारे ॥  
 रक्त पीत बीज रम लार मुख केरा ।  
 यह पाँचो गुन पानी केरा ॥  
 सो तो नहीं तेरा ।  
 भूख नीदी तेज तृषा आलस अलसाई ॥  
 इह पाँचो गुन अग्नि के, नहीं, तेरो कछु भाई ।  
 उठे परे दौरि चले गावे सुख माने ।  
 यह पांचो गुन पवन के, तू अपने करी जाने ।  
 काम क्रोध लज्जा भय रागन्देष सांचे ॥  
 इनमें कछु नहीं गगनो गुन पांचे ।  
 पाँच पचीस गुन तीनि है पांच ततु उजियारे ॥  
 ‘दरिया’ दिल दर्शन देखों, सतनाम सारे ।